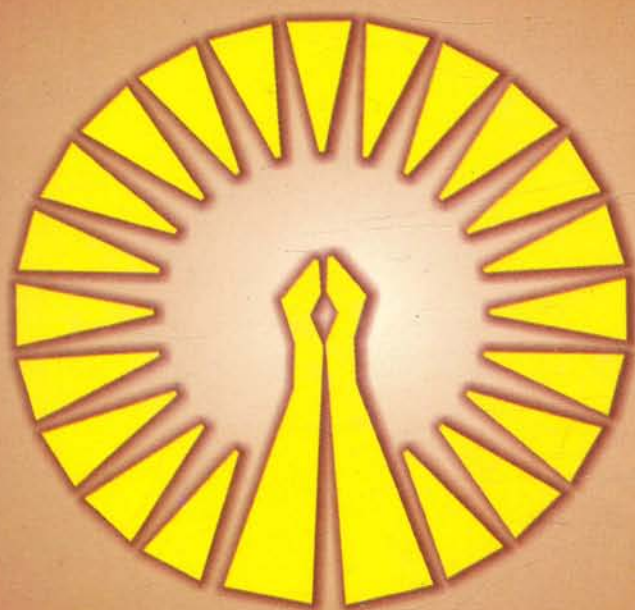


तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था



जयाचार्य

प्रवाचक
आचार्य तुलसी

प्रधान सम्पादक
आचार्य महाप्रज्ञ

संगठन की दृष्टि से सुदृढ़ संविधान आचार्य भिक्षु की अलौकिक देन है। यह संविधान उन्होंने उस वातावरण में दिया था जब सम-समायिक सम्प्रदायों में एक ही संघ में अनेक आचार्य हो जाते थे और आचार्य के अधीनस्थ साधु भी अपने अलग-अलग शिष्य बनाते थे, वैसी स्थिति में चालू प्रवाह को मोड़ देकर उन्होंने जो कार्य किया, वह इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। छोटे से समूह में प्रारंभ किया हुआ वह प्रयोग आज लगभग ७०० साधु-साध्वियों में भी उसी प्रकार चल रहा है।

उस प्रयोग के विभिन्न बिन्दुओं से परिचित होने के लिए यह पुस्तक एक आदर्श का काम करेगी।

तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में

जय वाङ्मयः ग्रन्थ-९

तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

प्रवाचक

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

प्रधान सम्पादक

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

सम्पादक

मुनि मधुकर

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूँ (राजस्थान)

प्रबंधक-सम्पादक
श्रीचंद रामपुरिया

ISBN--81-7195-098-1

सौजन्य : स्व. श्री रेखचंदजी सिंघी की
पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र
श्री पूनमचंद एवं सुपौत्र
श्री किरण, प्रकाश, राजेश सिंघी
(श्रीडूंगरगढ़—जलगांव)

प्रथम संस्करण : १९६३
द्वितीय संस्करण : २००४

मूल्य : २५०/— (दो सौ पचास रुपया मात्र)

मुद्रक : कला भारती
नवीन शहादरा, नई दिल्ली—३२

प्रकाशकीय

यह ग्रन्थ श्रीमद् जयाचार्य विरचित निम्न १० कृतियों का संग्रह है :

- १—लिखतां री जोड़
- २—गणपति सिखावण
- ३—शिक्षा री चोपी
- ४—उपदेश री चोपी
- ५—टहुका
- ६—मर्यादा मोच्छव री ढाळां
- ७—गण विशुद्धिकरण हाजरी
- ८—परंपरा री जोड़
- ९—लघुरास
- १०—टाळोकरों की ढाळ

इन कृतियों का विस्तृत परिचय सम्पादकीय में दिया जा रहा है, अतः उनके विषय में यहां कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

श्रीमद्जयाचार्य का जन्म नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियों में अपना उपनाम 'जय' रखा इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रख्यात हुए। आप जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य थे। आप की जन्म भूमि मारवाड़ का रोयट ग्राम था। आपका जन्म सं० १९६० की आश्विन शुक्ला १४ की रात्रि में कर्क लग्न में हुआ था। आप ओसवाल थे। गोत्र से गोलछा थे। आपके पिताश्री का नाम आईदानजी गोलछा और मातुश्री का नाम कल्लूजी था। आप तीन भाई थे। बड़े भाइयों के नाम क्रमशः सरूपचन्दजी और भीमराजजी थे।

आपके ज्येष्ठ भ्राता सरूपचन्दजी ने सं० १८६९ की पौष शुक्ला ९ के दिन साधु-जीवन ग्रहण किया। आपने उसी वर्ष माघ कृष्णा ७ के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। दूसरे बड़े भाई भीमरामजी की दीक्षा आपके बाद फाल्गुन कृष्णा ११ के दिन सम्पन्न हुई और उसी दिन माता कल्लूजी ने भी दीक्षा ग्रहण की। इस तरह सं० १८६९ पौष शुक्ला ८ एवं फाल्गुन कृष्णा १२ की पौने दो माह की अवधि में माता सहित तीनों भाई द्वितीय आचार्य श्री भारमलजी के शासन-काल में दीक्षित हुए।

साधु-जीवन ग्रहण करते समय जयाचार्य नौ वर्ष के थे। दीक्षा के बाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराज जी को सौंपे गये। वे ही आपके विद्या गुरु रहे।

आगे जाकर आप एक महान् अध्यात्मिक योगी, विश्रुत इतिहास-सर्जक, विचक्षण साहित्य-स्रष्टा एवं सहज प्रतिभा-सम्पन्न कवि सिद्ध हुए।

सं० १९०८ माघ कृष्ण १४ के दिन तृतीय आचार्य ऋषिराय का छोटी रावलिया

गांव में देहान्त हुआ। आप चतुर्थ आचार्य हुए।

आचार्य ऋषिराय के देवलोक होने का समाचार माघ शुक्ला ८ के दिन बीदासर पहुंचा, जहां आप विराज रहे थे। सं० १९०८ माघ शुक्ला १५ प्रातः काल पुष्य नक्षत्र के समय आप पदासीन हुए। पट्टोत्सव बड़े हर्ष के साथ मनाया गया। आचार्य ऋषिराय ने ६७ साधुओं एवं १४३ साध्वियों की धरोहर छोड़ी।

आपने जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य पद को ३० वर्षों तक सुशोभित किया। आपका स्वर्गवास सं० १९३८ की भाद्र कृष्ण १२ के दिन जयपुर में हुआ।

श्रीमज्जयाचार्य ने अपने जीवन-काल में लगभग साढ़े तीन लाख पद्य-परिणाम साहित्य की रचना की। जैन वाङ्मय के पंचम अंग 'भगवई' का आपका राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती जोड़' राजस्थानी साहित्य का सबसे बड़ा ग्रन्थ माना जाता है। यह ५०१ विविध रागनियों में गेय गीतिकाओं में निबद्ध है। श्रीमद् जयाचार्य की साहित्यिक रुचि बहुविध थी। तेरापंथ धर्म संघ के संस्थापक आदि आचार्य श्रीमद् भिक्षु के बाद आपकी साहित्य-साधना बेजोड़ है। आप महान् तत्त्वज्ञानी थे। जन्मजात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव संस्मरणात्मक जीवन-चरित्र लिखने की आपकी प्रवीणता अनोखी थी। आप बड़े कुशल संघव्यवस्थापक और दूरदर्शी आचार्य थे। आपकी कृतियों का सौष्ठव, गांभीर्य एवं संगीतमयता—ये सब मनोमुग्धकारी हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'जय वाङ्मय' के ९वें ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो रहा है। यह ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा एवं व्यवस्था विषयक श्रीमद् जयाचार्य की सर्व कृतियों का संग्रह है। इस में समाविष्ट कृतियां प्रथम बार ही प्रकाश में आ रही हैं, अतः यह संग्रह अपने आप में अपूर्व है।

२६ नम्बर, १९८३

—श्रीचन्द्र रामपुरिया

द्वितीय संस्करण

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी के अवसर पर पुनः प्रकाशन हो रहा है। प्रस्तुत द्वितीय संस्करण की निष्पत्ति में शासन-गौरव मुनि मधुकर जी का जो बहुमूल्य योग रहा है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं। श्रद्धेय आचार्यवर एवं युवाचार्य वर को जलगांव मर्यादा महोत्सव पर यह ग्रंथ समर्पित कर जैन विश्व भारती परिवार प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा है।

मंत्री

भागचंद बरड़िया

सम्पादकीय

आज से करीब ५७ वर्ष पूर्व जयपुर में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने तेरापंथ धर्म संघ की व्यवस्था की परिचय पाकर अणुव्रत-अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी से कहा था—‘महान् आश्चर्य है कि जिस समाजवादी व्यवस्था को हम देश में लाना चाहते हैं वह आपके श्रमण संघ में दो सौ वर्षों से चल रही है।’ इस व्यवस्था का इतिहास भी बड़ा अनूठा है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक स्तर पर ऐसी व्यवस्था कभी नहीं रही जिसमें जीवनोपयोगी सभी साधन सब को समान रूप से उपलब्ध हुए हों और सब का पारस्परिक स्तर समान रहा हो, यद्यपि इस प्रकार की परिकल्पना तो अनेक बार होती रही है। अतीत में महान् दार्शनिक प्लेटो ने समाजवादी व्यवस्था का प्रतिपादन करते हुए अपनी ‘रिपब्लिक’ पुस्तक में ऐसे समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की थी, लेकिन यह व्यवस्था अधिकार-सम्पन्न वर्ग के लिए ही थी। उसमें दासों के लिए शूद्र जैसा ही स्थान था। वे उस व्यवस्था से अछूते ही थे।

इससे पूर्व प्रिंस क्रोपोटकिन आदि कुछ विचारकों ने सामाजिक स्तर पर कई बातें रखी थीं, किन्तु वे भी यथार्थ की अपेक्षा कल्पना पर ही आधारित थी अतः सामाजिक जीवन का माध्यम नहीं बन सकी थीं।

हां, जर्मन में मार्क्स ने जरूर एक योजना प्रस्तुत की थी जिसे वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया गया, किन्तु वह भी वहां पर फलीभूत नहीं हो सकी।

यह भी एक आकस्मिक संयोग था कि ठीक इसी समय भारत के राजस्थान प्रान्त में समाजवादी व्यवस्था का सामूहिक प्रयोग श्रीमद् जयाचार्य ने अपने तेरापंथ संघ में प्रारम्भ किया।

अब से २४३ वर्ष पूर्व वि० स० १८१७ में आचार्य भिक्षु ने धार्मिक जगत् में एक नई क्रान्ति की थी। उस क्रान्ति के संवाहक के रूप में प्रारम्भ में १३ साधु तथा १३ ही श्रावक थे। उसी संख्या के आधार पर एक सेवक कवि के द्वारा इसका तेरापंथ नामकरण श्रवण कर आचार्य भिक्षु ने इसका अर्थ किया—‘हे प्रभो ! यह तेरापंथ’— प्रभो ! यह तुम्हारा पंथ है, हम तो इसके पथिक हैं। और उसी निश्चय के आधार पर उनके कदम मंजिल की ओर बढ़ चले। धीरे-धीरे विविधमुखी विरोधों के बावजूद परिस्थितियां बदलीं और संगठन वृद्धिगत होने लगा। तब दूरदर्शी आचार्य भिक्षु के मस्तिष्क में एक विचार कौंधा।

उन्होंने संगठन को अनुशासित एवं व्यवस्थित बनाने के लिए सर्वप्रथम सं० १८३२ मृगसर कृष्णा २ के दिन एक लिखित लिखा। लिखित क्यों लिखा, इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा—‘मैंने यह उपक्रम शिष्यादिक के ममत्व-परिहार के लिए, संयम-विशुद्धि के लिए तथा सभी अनुशासन एवं न्यायमार्ग पर चलते चलें, इसलिए किया है।’

उस लिखित को तत्कालीन साधुओं को एकत्र कर सुनाया। सभी साधुओं ने सहर्ष इस पर सहमति प्रदान करते हुए अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए। वह हस्ताक्षरांकित पत्र आज भी हमारे संघीय पुस्तकागार में सुरक्षित है।

इस प्रकार सामूहिक सहमति प्राप्त होने पर आपने उसे लिखित- 'संविधान' का रूप दे दिया। उसके बाद समय-समय पर अनेक लिखित बने। सबसे अंतिम लिखित सं० १८५९ का है। वही तेरापंथ का मौलिक संविधान है। उसके आधार पर प्रति वर्ष मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है। उसकी कुछ धाराएं ये हैं :-

१. समस्त संघ एक आचार्य की आज्ञा में रहे।
२. सभी साधु-साध्वियां विहार, चातुर्मास, आदि आचार्य की आज्ञा से करें।
३. दीक्षा आचार्य के नाम पर हो, कोई अपना शिष्य-शिष्या न बनायें।
४. आचार्य योग्य व्यक्ति को ही दीक्षित करे। दीक्षित करने पर भी अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दे। दीक्षार्थी को नवपदार्थ का प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य कराया जाये।
५. वर्तमान आचार्य अपने गुरु-भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी नियुक्त करे तो समस्त संघ उसकी आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य करे।
६. संयोगवश एक या अधिक साधु संघ से पृथक् हो जाये तो उन्हें साधु न सरथा जाये और उनसे सम्पर्क न रखा जाये।
७. कर्मवश कोई संघ से पृथक् हो जाये तो संघ के साधु-साध्वियों के अंशमात्र भी अवर्णवाद न बोलें।
८. किसी भी साधु-साध्वी के प्रति शंका पैदा हो, उस ढंग से न बोलें।
९. श्रद्धा, आचार या सिद्धान्त से सम्बन्धित कोई नया प्रश्न उठे तो आचार्य तथा बहुश्रुत साधु मिलकर विचार-पूर्वक उसका समाधान करें। अगर समाधान न बैठे तो उसे केवलीगम्य कर दें, पर अंशमात्र भी खींचतान न करें।

संगठन की दृष्टि से इतना सुदृढ़ संविधान आचार्य भिक्षु की अलौकिक देन है। यह संविधान उन्होंने उस वातावरण में दिया था जब सम-सामयिक सम्प्रदायों में एक ही संघ में अनेक आचार्य हो जाते थे और आचार्य के अधीनस्थ साधु भी अपने अलग-अलग शिष्य बनाते थे, वैसी स्थिति में चालू प्रवाह को मोड़ देकर उन्होंने जो कार्य किया, वह इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। छोटे से समूह में प्रारम्भ किया हुआ वह प्रयोग आज लगभग ७०० साधु-साध्वियों में भी उसी प्रकार चल रहा है।

इस प्रयोग के ठीक एक शताब्दी बाद जयाचार्य ने इसे और अधिक विस्तार दिया। संविधान के अनुसार व्यक्तिगत शिष्य बनाने की प्रथा तो अपने आप समाप्त हो गई थी किन्तु व्यक्तिगत पुस्तकों की परम्परा चालू थी। अतः किसी के पास आवश्यकता से

अधिक पुस्तकें थीं तो किसी के पास बिल्कुल ही नहीं। जयाचार्य के मन में यह बात अखरती थी अतः एक दिन आपने अग्रणी साधु-साध्वियों के सामने एक प्रश्न रखा—आप लोगों के साथ रहने वाले साधु-साध्वियां किसकी निश्रा में हैं ?

सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया—आचार्य श्री की निश्रा में। तब आपने दूसरा प्रश्न किया—पुस्तकें किसकी निश्रा में हैं ? सबने उत्तर दिया वे तो जिसके पास हैं, उसी की निश्रा में हैं। जयाचार्य—तब आप अपनी निश्रा की पुस्तकें दूसरे साधु-साध्वियों से कैसे उठवाते हैं ? अब से जो व्यक्तिगत पुस्तकें रखेगा, वह उनका भार स्वयं उठाएगा। अपने साथ वाले साधु-साध्वियों से नहीं। जयाचार्य की इस आकस्मिक घोषणा से सभी अग्रणी स्तब्ध हो गये। कुछ व्यक्तियों ने विनय-पूर्वक पूछा—गुरुदेव ! अकेले हम इतनी पुस्तकें कैसे उठाएंगे ? आप आज्ञा दें, वैसे करें। तब जयाचार्य ने कहा—तो फिर संघ को समर्पित क्यों नहीं कर देते ? संघ अपने उसकी व्यवस्था करेगा।

उसी दिन से अनेक अग्रगण्य साधुओं ने अपनी-अपनी पुस्तकें लाकर जयाचार्य को तथा साध्वियों ने महासती सरदारांजी को सौंप दी। जयाचार्य ने उन सभी पुस्तकों को ग्रहण कर अपेक्षानुसार समर्पकों को देकर शेष पुस्तकें अन्य सिंघाड़ों में वितरित कर दीं और एक मर्यादा बना दी कि अब सभी पुस्तकें संघ की होंगी। अतः चातुर्मास के बाद जब आचार्य के दर्शन करें, तब उन्हें वापिस सौंपना होगा। इसका फलित यह हुआ कि सामूहिक रूप से काम आने वाली सभी वस्तुओं पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहा।

दूसरा कदम था—श्रम संविभाग के संबंध में। प्रारम्भ से यह परम्परा चली आ रही थी कि कुछ सामूहिक कार्य दीक्षा-पर्याय में छोटे साधुओं को ही करने होते थे, भले ही वे वृद्ध क्यों न हों !

जयाचार्य ने उसको बदलकर उसके स्थान पर सभी सदस्यों के लिए श्रम करना अनिवार्य कर दिया।

इस प्रकार स्थान, आहार एवं धर्मोपकरण आदि किसी वस्तु पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहा, और एक धर्म सम्प्रदाय में अनायास ही एक ऐसी व्यवस्था का प्रादुर्भाव हो गया, जिसे समाजवाद के समकक्ष रखा जा सकता है।

समाजवादी व्यवस्था का प्रथम सूत्र है कि जीवन के साधनों पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होना चाहिए। वे समष्टिक हैं, उसी के रहें, उसके अंग रूप में समान रूप से आवश्यकतानुसार सब के काम आएंगे। कोई किसी से सम्पन्न या विपन्न नहीं रहे। तेरापंथ साधु संघ में आज लगभग सात सौ साधु-साध्वियां हैं, उनमें किसी का भी आवश्यक धर्मोपकरण, आहार एवं आवास पर कोई स्वामित्व नहीं है। वे अणगार हैं, उनका अपना कोई आवास नहीं है। जहां भी जाते हैं, किसी का आवास मांग कर उसकी अनुमति से अपने नियत समय तक रहते हैं। उठते हैं, सोते हैं। आवश्यकतानुसार वस्त्र

याचित करते हैं। उसका भी संविभाग होता है। किसी के पास प्रमाण से अधिक वस्त्र नहीं हो सकता और दूसरे से कम भी नहीं। आहार भी गृहस्थों के यहां से माधुकरी वृत्ति से थोड़ा-थोड़ा अनेक घरों से याचित करते हैं ताकि किसी पर भार न पड़े। प्राप्त आहार का संविभाग होता है।

भगवान महावीर ने कहा—‘असंविभागी न हु तस्स मोक्खो’—असंविभाग को मोक्ष नहीं मिलता। संविभाग के इस नियम का तेरापंथ में दृढ़ता से पालन होता है।

तेरापंथ के साधु-साध्वी देश भर में विहरण एवं चातुर्मास प्रवास करते हैं। हर दल के साथ वस्त्र, पात्र, पुस्तक आदि धर्मोपकरण होते हैं जो उसकी जीवनचर्या के लिए आवश्यक होते हैं, लेकिन किसी का उन पर अधिकार नहीं होता। वे संघ के अधिकार में होते हैं। चातुर्मास एवं विहारोपरान्त आचार्य के उपपात में आने पर दल का अग्रणी सहवर्ती साधुओं को उनके साथ के समस्त धर्मोपकरणों को तथा स्वयं को भी आचार्य के चरणों में समर्पित कर कहता है—‘गुरुदेव ! ये आपके साधु-साध्वियां, ये धर्मोपकरण, पुस्तकें, पात्र-वस्त्रादिक और मैं स्वयं को आपके चरणों में उपस्थित करता हूं। अब आप जैसी आज्ञा देंगे, वैसा ही करूंगा।’ यह समर्पण किसी व्यक्ति या व्यक्तियों का दूसरे व्यक्ति के आगे नहीं, व्यष्टि को है।

दल के अग्रणी का भी अपने सहवर्ती सन्तों पर कोई स्वामित्व नहीं। सब साधु-साध्वियां एक आचार्य के शिष्य हैं, परस्पर गुरुभाई हैं। कोई किसी को अपना शिष्य नहीं बना सकता। आचार्य को ही दीक्षा प्रदान करने का सर्वाधिकार है। आचार्य की आज्ञा से आवश्यकतानुसार कोई भी साधु-साध्वी दीक्षा दे सकते हैं। लेकिन शिष्य रूप में नहीं, अपने ही एक कनिष्ठ गुरु भाई के रूप में धर्म संघ के सदस्य के रूप में सबको समान अधिकार है। सत्ता का स्रोत आचार्य हैं, उसकी आज्ञा प्रधान है। उसके द्वारा नियुक्त अग्रणी उसी की सत्ता का संवाहक होता है। संघ में किसी का किसी पर अधिकार नहीं है। सब अन्ततः एकमेव आचार्य को, धर्म संघ को ही समर्पित है। अपनी व्यक्तिगत सत्ता का सम्पूर्ण विसर्जन समाजवादी व्यवस्था की अनिवार्य शर्त है, जिसका श्रेष्ठतम रूप तेरापंथ धर्म संघ में मिलता है।

विषमता का एक स्रोत पद होता है। तेरापंथ में कार्य का सम्यक् विभाजन है, उत्तरदायित्व का वितरण है, किन्तु पदों की व्यवस्था नहीं है। आचार्य स्वयं ही अपने उत्तराधिकारी को मनोनीत करता है जो उसके बाद अपना पद ग्रहण करता है। पद के लिए कोई उम्मीदवार नहीं हो सकता। धर्म संघ की व्यवस्था इतनी समतामूलक है कि विशेषाधिकार एवं पद का यहां अस्तित्व ही नहीं है। सेवा के लिए यहां भरपूर स्थान है, सत्ता के लिए किंचित भी नहीं। सेवा सब के लिए अनिवार्य है। रुग्ण एवं ग्लान साधु-साध्वियों की सेवा का दायित्व सब पर है, उसमें किसी को किसी भी आधार पर मुक्ति

नहीं है। सेवा एवं परिचर्या का दायित्व साधु-साध्वियां सहर्ष ग्रहण करते हैं। वृद्ध, अक्षम एवं रुग्ण साधु-साध्वियों के लिए स्वास्थ्य लाभ एवं सेवा का केन्द्र है जहां उनकी परिचर्या नियमित रूप से होती है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था में रुग्ण एवं अक्षम व्यक्तियों के लिए इतनी सुचारु एवं व्यापक व्यवस्था मिलनी दुर्लभ ही होगी।

इन सभी व्यवस्थाओं को जमाने में जयाचार्य की क्रान्तदर्शी मेधा का महान् योगदान है। आपने आचार्य श्री भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओं को व्यवहारिक रूप देने के लिए समय-समय पर अनेक आयामों को मूर्त रूप दिया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में मर्यादा और व्यवस्था से संबंधित आपकी ऐसी ही १० कृतियां संकलित की गई हैं।

१. लिखतां री जोड़
२. गणपति सिखावण
३. शिक्षा री चौपी
४. उपदेश री चौपी
५. टहुका
६. मर्यादा मोच्छव री ढाळां
७. गण विशुद्धिकरण हाजरी
८. परंपरा री जोड़
९. लघु रास
१०. टाळोकरों री ढाळ।

इन कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. लिखता री जोड़

तेरापंथ के प्रथमाचार्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी ने अपनी पैनी दृष्टि से संघ सुरक्षा के लिए समय-समय पर अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया और संबंधित व्यक्तियों को सुनाकर उनकी मौखिक ही नहीं, लिखित सहमति भी प्राप्त की। इसलिए राजस्थानी भाषा में इन मर्यादाओं को 'लिखित' नाम से अभिहित किया गया। श्रीमज्जयाचार्य ने उन लिखितों की सुरक्षा तथा वे संघ के सदस्यों की स्मृति में सहज रूप से रह सकें इस दृष्टि से उन्हें पद्य-बद्ध कर दिया। इस कृति में स्वामीजी के १० लिखितों का पद्यानुवाद है, जिसमें दो लिखित व्यक्तिगत हैं, एक मुनि अखेराम जी के लिए तथा दूसरा साध्वी फत्तूजी के लिए। शेष आठ में कई साध्वियों के लिए, कई साधुओं के लिए तथा कई साधु-साध्वियां दोनों के लिए हैं, जिन्हें १९ गीतिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं—इस ग्रन्थ में ढालों का क्रम लिखितों की रचना संवत् के क्रम से था। तदनुसार व्यक्तिगत लिखित पहले आते थे। पर लिखितों की सामूहिकता

और मौलिकता को ध्यान में रखते हुए संपादन के समय उस क्रम में कुछ परिवर्तन किया गया है। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

ढाळ प्रथम—इसमें ३९ पद्य हैं। इसकी रचना सं० १९११ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में बुधवार के दिन हुई है। स्थान का उल्लेख नहीं है। इसमें मुनि भारमलजी (द्वितीयाचार्य) के सं० १९३२ मृगसर कृष्णा ७ के दिन उत्तराधिकार पत्र के रूप में लिखे गए नियुक्ति पत्र का अनुवाद है। साधु-साधवियों के लिए सामूहिक रूप से लिखा गया स्वामीजी का यह प्रथम लिखित है। तत्कालीन सभी साधुओं की सहमति से इसे लिखा गया है।^१ यह लिखित हमारे संगठन का प्रथम मौलिक संविधान है। इसके माध्यम से संयम साधना में बाधक तत्त्वों के निरसन की व्यवस्था, विनय-मूल धर्म की प्रतिष्ठा तथा सभी को न्याय मिल सके, ऐसे उपायों का दिग्दर्शन है।^२

ढाळ २—३१ गाथाओं वाली इस ढाळ की रचना सं० १९१४ कार्तिक क० ११ बीदासर में हुई है। इसमें सभी साधवियों के लिए सं० १८३४ ज्येष्ठ शुक्ला ९ के दिन किए गए लिखित का अनुवाद है^३। यह पारस्परिक व्यवहार में होने वाली त्रुटियों के निरसन के लिए अच्छे पथ-प्रदर्शन का सा काम करती है।

ढाळ २—२३ गाथाओं वाली इस ढाळ की रचना सं० १९१४ फा. कृ. १३ बीदासर में हुई है। इसमें संवत् १८४१ चैत्र कृष्ण १३ के दिन साधुओं के लिये बनाए गये लिखित का अनुवाद है। इसमें दोषों के प्रतिकार के विभिन्न सूत्रों की ओर इंगित किया गया है।

ढाळ ४.५—११ और ३५ गाथाओं वाली इन दोनों ढाळों की रचना एक ही दिन में स. १९१४ फा. शुक्ला १ बीदासर में हुई है। इसमें सं० १८४५ जे. शुक्ला १ के दिन लिखे गए लिखित का अनुवाद है। संघ का कोई साधु अस्वस्थ या अचक्षु हो जाए, वैसी स्थिति में प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य हो जाता है कि वह उसकी अग्लान भाव से सेवा करे, उसका वैराग्य और समाधि बढ़े वैसा कार्य करे। उसे अक्षम और रुग्ण समझ कर

१. ऋष भीखण सर्व साधां भणी, पूछी धर अहलाद।

सर्व साधु साधवियां तणीं, बांधी वर मरजाद

(ढाल १, गाथा १६)

२. तिण सूं ममत शिखादिक तणी, मिटावण तणीं उपाय।

चारित्र चोखो पाळण तणीं, उपाय कियो सुखदाय॥

विनय मूल ए धर्म नै, न्याय मार्ग चालण रो उपाय॥

(ढाल १, गा० १२, १३)

३. संवत् अठार चोतीस में, समणी नो सुखकार

भिक्षु लिखत कियो भलो, निमुणो सहु नर नार॥

(ढाल० २। गा०१)

संलेखणा (अंत समय की तपस्या) करने की भी प्रेरणा न दे। विहार के समय उसका वजन ले तथा अन्य अपेक्षाओं को पूरा करे ताकि किसी भी स्थिति में साधुत्व के प्रति उसके परिणामों में उच्चावच भाव न आए।^१

ढाळ ६,७—छठी ढाळ में ४४ पद्य हैं। इसकी सं० १८१४ कार्तिक शुक्ला १४ बीदासर में हुई है। ७ वीं ढाळ में ३५ पद्य हैं, इसकी रचना १९१४ पोष शुक्ला ४ को चूसू में हुई है। दोनों ढाळों में सं० १८५० मा. कृ. १० के दिन साधुओं के लिये किए गए लिखित का अनुवाद है।

ढाळ ८ से ११—८ वीं ढाळ से ११ वीं ढाळ की रचना सं. १९१४ में क्रमशः चैत्र कृष्णा ६, बैसाख कृष्णा ३, बै. कृष्णा ४ तथा बै. कृष्णा ७ के दिन सुजानगढ़ में हुई।

इनमें साध्वियों के लिये सं. १८५२ का. कृ. १४ के दिन बनाए गए लिखित का अनुवाद है। इसमें साधुत्व के प्रति आस्था, पारस्परिक विश्वास, साधु-साध्वियों के गांव में रहने की स्थिति में व्यवस्था तथा ढीठ प्रकृति वाली आर्याओं के लिये बनाई गई विशेष मर्यादाओं का विवेचन है। इन ढाळों में क्रमशः १८, १९, २४ और ३६ पद्य हैं।

ढाळ १२ से १६—इन पांचों ढाळों में सं० १८५९ में बनाए गए लिखित का अनुवाद है। इनका रचना-काल, स्थान तथा पद्य संख्या इस प्रकार है :

१२—	१९,१४	बै० कृ०	१०	सुजानगढ़।	पद्य—१४
१३—	"	बै० कृ०	१४	" ।	पद्य—१७
१४—	"	" "	" "	" ।	पद्य—१३
१५—	"	बै० शु०	४	लाडनूं ।	पद्य—२२
१६—	"	जेठ कृ०	८	" ।	पद्य—३७
१७—	"	मा० शु०	६	रतनगढ़ ।	पद्य—३५

इसमें आचार्य श्री भिक्षु द्वारा सं० १८२९ फा० शु० १२ 'बूसी' गांव में मुनि अखेरामजी (लोहावट) के लिए व्यक्तिगत रूप में किए गए लिखित का अनुवाद है।

मुनि अखेरामजी दीक्षित होने के कुछ वर्षों बाद कई कारणों से संघ से अलग हो

१. कारणिक जाणो, आंख्यादिक गरढ़ गिलाणो, जद और साध अगिलाणो।

वियावच करणी हित ल्याई॥

उण नैं संलेखणा केरी, ताकीदी नहिं देणी छै निज तन मन नै घैरी।

वधै वेरागो, करणो तिण रीत सुमागो, अति आणी हरख अघागो॥

वियावच करणी हित ल्याई॥

रोगियो होवै तो तायो, उण रो बोझ उपाड़णो उणरा चढ़ता परिणामों।

रहे ज्यूं करणो, उण में जाणो सुध चरणो, तसु छेह दे ना परहरणो॥

पवर ए रीत सुगण भाई॥

ढाळ ४, गा० २, ३, ४

गये, पर कई दिनों बाद विचारों में परिवर्तन होने से पुनः संघ में आने के लिए प्रयास करने लगे। आचार्य भिक्षु उन्हें पूरा विश्वास होने होने के बाद ही वापस लेना चाहते थे। अतः उक्त लिखित की रचना हुई। मुनि अखेरामजी ने सभी उल्लिखित शर्तों को हस्ताक्षर पूर्वक स्वीकृत किया तब उन्हें संघ में सम्मिलित किया गया।

ढाळ १८- इसमें ६८ पद्य हैं। इसकी रचना १९१४ फा० कृ० ८ बीदासर में हुई। फत्तूजी आदि ४ साध्वियां अन्य सम्प्रदाय से भैक्षव गण में आने के लिए तैयार हुईं। दीक्षित करने से पूर्व स्वामीजी ने उनकी कसौटी करने की दृष्टि से आचार-विचार से संबंधित विशेष शिक्षाएं प्रदान की और कुछ बन्दोबस्त किए। यह सं० १८३३ मिगसर कृष्णा २ के दिन लिखे गए उस लिखित का अनुवाद है।

ढाळ १९- इसमें ३० पद्य हैं। इसमें उक्त सभी लिखितों का संक्षिप्तीकरण निचोड़ प्रस्तुत किया गया है।

२. गणपति सिखावण

गणपति सिखावण कृति कलेवर की दृष्टि से छोटी होते हुए भी भावों की दृष्टि से अलौकिक और अद्वितीय है। इसकी रचना मुख्य रूप से युवाचार्य श्री मधराजजी को माध्यम बनाकर की गई है, किन्तु अनागत सभी आचार्यों के लिए भी वह दिशा-दर्शक है, ऐसा स्पष्ट उल्लेख है—

“पद युवराज शिष्य मधराज भर्णी ए शिक्षा सारो।

बले अनागत गणपति है, तसु एहिज सीख उदारी।”

इसमें आचार्य को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करते हुए संघ संबंधी छोटी से छोटी प्रवृत्ति पर भी विशेष ध्यान रखने की प्रेरणा दी है और गणवृद्धि की दृष्टि से ऐसे अनेक तथ्यों की ओर इंगित किया गया है जो बड़े मनोवैज्ञानिक और मनन करने योग्य हैं। इन तथ्यों के पीछे जयाचार्य के अनुभव बोल रहे हैं। इसकी रचना सं० १९२० चूसू चातुर्मास में हुई है। इसमें ८७ पद्य हैं।

३. शिक्षा की चौपी

संघ की व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करने की दृष्टि से श्रीमज्जयाचार्य ने समय-समय पर विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण शिक्षाएं प्रदान की हैं। इसमें संगीत के माध्यम से मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक पद्धति से जिस प्रकार अनेक तत्त्वों को हृदयंगम कराने का प्रयास किया गया है, वह अपने ढंग का अनूठा एवं नई स्फूर्ति भरने वाला है। कई स्थलों को पढ़ते समय तो ऐसा लगता है, मानों हम कोई चलचित्र देख रहे हैं।

‘खोड़ीली प्रकृति’ और ‘चोखी प्रकृति’ शीर्षक ढालों में सुविनीत और अविनीत व्यक्ति की प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण इसका जीता-जागता उदाहरण है। इसी प्रकार चवदहवीं ढाल में गुरु-शिष्य संवाद के रूप में कुछ जीवन व्यवहारोपयोगी प्रश्नों को उभार कर जिस प्रकार समाधान प्रस्तुत किया गया है उसे पढ़कर हृदय गद्गद हुए बिना नहीं रहता।

सुविनीत और अविनीत के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कुछ पद्य लिखे गए हैं वे नई उपमाओं से उपमित होकर इतने सरस बन गए हैं कि उन्हें पढ़ने में सूक्तियों का सा आनन्द आता है। नमूने के तौर पर तीन पद्य प्रस्तुत हैं—

काच भाजन अविनीतछो, कहो चोटां खमै केम।

सहै चोटां तो वनीत ही, के हीरा के हेम॥

(ढाल १९ गा० ७)

काच के बर्तन पर कोई चोट लगाए तो वह सहन नहीं कर सकता, फूट जाता है। किन्तु स्वर्ण और हीरा चोटें खाकर दुगुनी चमक के साथ सामने आता है। इसी प्रकार सद्गुरु की शिक्षा रूपी चोट से अविनीत दुःख पाता है और सुविनीत मुस्कराता है।

अवनीत गोळो मैण नों, तप्त गळै तत्काळ।

सुविनीत गोळौ गार नों, ज्यूं धमै ज्यूं लाल॥

(ढाल १९ गा० ८)

मोम का गोला अग्नि का ताप लगते ही पिघल जाता है किन्तु मिट्टी के गोले को जितना अधिक ताप लगता है उतना ही मजबूत होता है। यही स्थिति अविनीत और सुविनीत की है।

अविनीत वृक्ष एरंडियो, अस्थिर ते करै कोप।

सुविनीत कल्पतरु समौ, विनय नों बगतर टोप॥

(ढाल १९ गा० १९)

अविनीत एरंड वृक्ष की तरह थोड़ा सा हवा का झोंका लगते ही अस्थिर हो जाता है किन्तु विनयी सुविनीत कल्पवृक्ष की तरह अडिग एवं मनमोहक होता है।

इसमें ३२ ढालें हैं निजमें ७१५ पद्य हैं। इसकी पहली ढाल की रचना सं० १९१२ मृ० कृ० १० तथा २३ वीं ढाल की रचना सं० १९३७ फा० शु० ४ की है। कुछ ढालों में रचना-समय का उल्लेख नहीं है। इस कृति की रचना एक साथ न होकर आवश्यकतानुसार समय-समय पर हुई है। बाद में सब को संकलित कर एक रूप दिया गया है।

इस कृति का संक्षिप्त विषय-क्रम इस प्रकार है—

ढाल १ अनुशासन की आराधना क्यों और कैसे ?

” २ क्षुद्र प्रकृति वाले व्यक्ति का चित्रण।

” ३ अच्छी प्रकृति वाले व्यक्ति का चित्रण

- ” ४ आचार्य के प्रति शिष्यों का कर्तव्य
- ” ५ सुविनीत कौन ?
- ” ६ मर्यादा-विवेक
- ” ७ साध्वियों को शिक्षा
- ” ८ साधुओं को शिक्षा
- ” ९ चारित्र रत्न की निर्मलता के लिए कुछ सूत्र
- ” १० अविनीत-सुविनीत परीक्षण
- ” ११ मर्यादा विवरण
- ” १२ परिचय (स्नेह राग) परिहरण शिक्षा
- ” १३ टालोकर (बहिर्भूत व्यक्ति) को शिक्षा
- ” १४ गुरु-शिष्य संवाद
- ” १५ सामूहिक शिक्षा मर्यादाओं के सन्दर्भ में
- ” १६ सुख, प्रकृति-परिवर्तन से
- ” १७ दलबन्दी के दुष्परिणाम
- ” १८, १९ सुविनीत प्रशंसा
- ” २० संविभाग के गुण-दोष
- ” २२ भिक्षु गण नन्दन-वन
- ” २३ टालोकर प्रकृति चित्रण
- ” २४, २५ संघ स्तवना
- ” २६ संघ में रहते हुए दोषों का प्रायश्चित्त कैसे और कितना ?
- ” २७ उच्चता की परख
- ” २८ दुष्कर्मों का दुष्परिणाम
- ” २९ ईर्ष्या परिहारिणी शिक्षा
- ” ३० गुण प्रशंसा
- ” ३१ साधक प्रशंसा
- ” ३२, ३३ संयम शिक्षा

४. उपदेश री चौपी

इस कृति में उपदेशात्मक विविध विषयों पर १५ ढालें हैं, जिनके २५३ पद्य हैं। अन्त में गीता के १२ वें अध्याय के कुछ श्लोकों का अनुवाद है। कई ढालों के अंत में नाम तथा रचना-संवत्, स्थान आदि का उल्लेख नहीं है। इसमें कुछ पद्य इतने मार्मिक हैं कि सीधी चोट करते हैं प्रमादी व्यक्ति को चेतावनी के कुछ पद्यों का हार्द इस प्रकार है—

बड़ा^१ आश्चर्य है कि रोग, जरा और मरण जैसे तीन-तीन भीषण शत्रु तुम्हारे पीछे चले आ रहे हैं। यह तो इनसे छुटकारा पाने के लिए पलायन का अवसर है, फिर भी अरे मूर्ख ! तुम सोए पड़े हो ?

० चांद और सूरज दो बैल हैं, दिन और रात्रि घड़माल हैं। जलरूपी आयु कम होता जा रहा है। यह मृत्यु एक विकराल रेहट है।^१

ढाल दूसरी में—सुमति और कुमति का पार्थक्य दिखलाने की दृष्टि से देवरानी और जेठानी का रूपक अपने ढंग का एक नया उपक्रम है।^२

सुपात्र और कुपात्र के नीर क्षीर विवेक संबंधी कुछ पद्यों का निष्कर्ष इस प्रकार है—

० तैल ज्यादा होने पर मिट्टी में नहीं डाला जाता। बीज बहुत होने पर ऊपर में नहीं बोए जाते।

० सोना अधिक है, इसलिए क्या कोई बेड़ी बनाएगा ? दूध है, इसलिए क्या कोई सर्प को पिलाएगा ?

० हाथी अधिक हैं तो क्या उन्हें कोई भार ढोने में काम लेगा ? धन बहुत है तो क्या कोई कुपात्र पोषा जाएगा ?^३

धर्म वहां होता है जहां विवेक है। विवेक के बिना केवल धार्मिक कहलाने वाला मजाक का पात्र बनता है। इसी तथ्य का द्योतक एक बहन को संबोधित कर लिखा गया व्यंग्य कितना मार्मिक है^४ :—

१. ० तीन अरि लारे लग्या, रोग जरा मरण जान।

इण न्हासण रे अवसरे, क्यूं सूतो मूढ अयाण॥

० बळद जेम चन्द सूर छै, दिवस रात्रि घड़माल॥

जळ आयु ओछो करै, ए काळ रेंट विकराल॥

२. उपदेश री चौपी, ढाल २, गा० १-५

३. जो तेल घणो तो, बेलू मांही न डोलै।

बहु बीज हुवै तो, उषर में न झकोलै।

घणो स्वर्ण हुवै तो, सांकल केम करावै।

बहु दूध हुवै तो सर्प भणी किम पावै॥

घणा गजेन्द्र हुवै तो, भार अर्थ स्यूं वावै

तिम धन बहु है तो, किम कुपात्र पोषावै॥ (ढाल ५, गा० २, ३, ४)

४. ० कजिया झगड़ा राड़, करवा तीखी घणी, मुंहडे मुंहपति बांध, बाजे बाई समझणी।

० गाळ्यां-गीत सराप, निन्दा करै पर तणी, पर नां मर्म प्रकाश, बाजे बाई समझणी।

० बाझ क्रिया देखाय, फिरे श्रावका वणी, अन्तर कपट विशेष, बाजे बाई समझणी।

० नवकरवाळी हाथ, कै ली निन्द्या तणी, अहो निश पर नी बात, बाजे बाई समझणी।

(ढाल १४, गा० १, ५, ६, १४)

बहिन समझदार कहलाती है, पर.....

- ० मुंह पर मुख-वस्त्रिका बांध कर भी लड़ाई झगड़ा करने में बहुत तेज है, गालियों के गीत गाती है, अभिशाप देती है तथा दूसरों की निन्दा एवं मर्म प्रकाश करती है, फिर भी समझदार कहलाती है!
- ० केवल बाह्याचार करके श्राविका बन जाती है, पर भीतर में कपट चलता है, फिर भी समझदार कहलाती है!
- ० हाथ में निन्दा की माला (नवकरवाली) है तथा रात-दिन दूसरों की बात करती है फिर भी समझदार कहलाती है!

इस प्रकार 'उपदेश री चौपी' में स्थान-स्थान पर सांसारिक सुखों की नश्वरता तथा दुष्कर्मों के परिणामों के हृदयस्पर्शी विवेचन से अध्यात्म की ओर मोड़ने का अभिनन्दनीय प्रयास है।

५. टहुका

टहुका राजस्थानी भाषा में कोयल की 'कुहुक' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मधुर होने के कारण 'कुहुक' की तरफ हर व्यक्ति सहजतया आकृष्ट हो जाता है। उसी आकर्षण-शक्ति की समान-धर्मिता को ध्यान में रखते हुए श्रीमज्जयाचार्य ने इस रचना का नाम 'टहुका' दिया है, ऐसा लगता है।

श्रीमज्जयाचार्य व्यवस्था-कुशल आचार्य थे। उन्होंने अपने जीवन-काल में इस दृष्टि से अनेक प्रयोग किए। उन प्रयोगों को सर्वसाधारण के गले उतारने के लिए आवश्यक था कि उसके संबंध में बार-बार चेतावनी दी जाए। 'टहुका' उसी श्रेणी का एक प्रयोग है। इसमें भोजन, पानी-वजन तथा सेवा आदि के संबंध में की गई व्यवस्थाओं और संविभाग में निष्ठा पैदा करने के लिए आवश्यक निर्देश (Suggestion) हैं खाली पेट वे अच्छे ढंग से हृदयंगम हो सकते हैं। इसलिए प्रतिदिन भोजन के लिए बैठते समय इसका अनिवार्य रूप से वाचन किया जाता था। यह क्रम काफी दिनों तक चला। बाद में व्यवस्था जम जाने पर बन्द कर दिया गया।

राजस्थानी गद्य में यह 'टहुका' वि० सं० १९११ बै० शुक्ला १० गुरुवार के दिन लिखा गया। इसके साथ कुछ धाराएं १९११ चैत मास की भी जोड़ी गई है।

६. मर्यादा मोच्छव री ढाळां

शीतकाल का समय हमारे धर्मसंघ की भावी नीति-निर्धारण का एक महत्वपूर्ण समय होता है। इस अवसर पर दूर-दूर से समागत साधु-साध्वी वृन्द के वार्षिक-विवरण

का लेखा-जोखा सामने आता है। उसके आधार पर आचार्य संघ की सारणा-वारणा करते हैं। विविध विषयों पर चिन्तन मनन और शिक्षा गोष्ठियां चलती है तथा मर्यादा-महोत्सव (माघ शुक्ला सप्तमी) के दिन आचार्य एक-एक अग्रणी को संबोधन-पूर्वक अग्रिम विहार का निर्देश देते हैं। इसी दिन आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादा-पत्र का वाचन होता है। आचार्य नवनिर्मित गीतिका के माध्यम से उसका हार्द समझाते हैं। प्रस्तुत प्रकरण में जयाचार्य द्वारा लिखित मर्यादा-महोत्सव की ८ ढालें हैं।

	रचना संवत्	पद्य
ढाल १	१९१५ मा० शु० १	११
" २	१९२१	१३
" ३	१९२२ मा० शु० ६	३४
" ४	१९२३ मा० शु० ६	११
" ५	१९२४ मा० शु० ६	१६
" ६	१९२६ मा० शु० ६	१३
" ७	१९२९ मा० शु० ७	२४
" ८	१९३० मा० शु० ७	१८

मर्यादा-महोत्सव की इस कड़ी में प्रति वर्ष के क्रम से कुछ और ढालें होनी चाहिए, पर मुझे नहीं मिली है।

७. गणविशुद्धिकरण हाजरी

स्वामी भीखणजी ने अपने जीवन-काल में जो मर्यादाएं बनाई थीं, उनको जयाचार्य ने विभिन्न वर्गों में संकलित कर उनका विस्तृत भाष्य करते हुए एक शिक्षात्मक ग्रन्थ बना दिया। संघ विशुद्धि को दृष्टि से उसका बड़ा महत्त्व था। अतः सभी साधु-साध्वियों की हाजरी (उपस्थिति) में वह सुनाया जाने लगा। इसीलिए उसका नाम पड़ गया 'गणविशुद्धिकरण हाजरी'। बाद में संक्षिप्त रूप में मात्र 'हाजरी' नाम ही रह गया। वे हाजरियां २८ हैं। उनमें स्वामीजी द्वारा लिखित मर्यादाओं के अंश यथाप्रकरण उद्धृत किए गए हैं। इस दृष्टि से उन्हें शिक्षा और मर्यादाओं का सुन्दर सम्मिश्रण कहा जा सकता है।

संघ में साधु-साध्वियों को किस प्रकार रहना चाहिए, संघ और संघपति के साथ उनका कैसा संबंध होना चाहिए, शासन-हितैषियों को टाळोकरों का ससर्ग क्यों वर्जित करना चाहिए आदि संघीय जीवन की अनेक आवश्यक सूचनाओं तथा शिक्षाओं से गृहस्थों को भी परिचित रखना आवश्यक होता है। हाजरियों द्वारा यह कार्य सुचारू रूप

से सहज ही सम्पन्न किया जा सकता है।

हाजरी का प्रारम्भ संवत् १९१० पो० कृ० ९ शनिवार के दिन बड़ी रावलिया (राज०) में हुआ था और उस समय प्रतिदिन के क्रम से ये सभी हाजरियां एक महीने में सुनाई जाती थीं। इनका ग्रन्थाग्र ३२८७ है।

८. परम्परा री जोड़

किसी भी व्यवस्था को लम्बे काल एक व्यवस्थित रखने के लिए विधि-विधानों की अत्यन्त अपेक्षा रहती है। उनके बिना सामुदायिक जीवन में पग-पग पर अव्यवस्था का खतरा बना रहता है। इस खतरे से बचने के लिए ही भगवान महावीर से लेकर अब तक अनेक नियमों की संरचना हुई है। छेद सूत्र को इसी कोटि में ले सकते हैं। सामयिक परिस्थितियों के संदर्भ में कई नए प्रश्न भी उठ खड़े होते हैं, जिनके संबंध में आगम मौन है। वैसी स्थिति में स्पष्ट उल्लेख न होने से उन्हें सुलझाने के लिए पूर्व परम्परा की ओर झांकना पड़ता है।

प्रस्तुत कृति ऐसे ही अनेक प्रश्नों का समुचित समाधान प्रस्तुत करती है। इसका संक्षिप्त विषयानुक्रम इस प्रकार है। कृति के प्रारंभ में जीत व्यवहार अर्थात् आचार्य द्वारा निर्णीत परम्परा को पुष्ट करते हुए स्थानांग व्यवहार तथा भगवती सूत्र के प्रकरणों को उद्धृत कर स्पष्ट किया है।

बुद्धिमान आचार्य पांच व्यवहारों के आधार पर शुद्ध नीति से जो निर्देश देते हैं उसके अनुसार प्रवृत्ति करने वाला श्रमण आराधक होता है।

ढाल १ नित्यपिंड आहार कैसी स्थिति में कब लिया जा सकता है ?

एक घर में अनेक बार गोचरी की जा सकती है।

ढाल २ शास्त्रीय अनेक बातों का सप्रमाण स्पष्टीकरण।

ढाल ३ टालोकर रूपचन्दजी और अखेरामजी द्वारा उठाए गए १५९ बोलों में से कुछ बोलों का स्पष्टीकरण।

ढाल ४ तथा ५ गोचरी संबंधी कल्पाकल्प व्यवस्थाओं का निराकरण।

ढाल ६ दायक (दाता) और देय (वस्तु) का शुद्धाशुद्धि विवेक।

ढाल ७ साधु कौन-कौन सी वस्तु अपने हाथ से ले सकता है और कौन-कौन सी नहीं ले सकता ? आदि आदि।

रचना संवत् तथा पद्य-परिमाण।

ढाल १ सं० १९१४ बै० कृ० ९, लाइन

” २ सं० १९१५ मृ० कृ० ८

” ३ सं० १९१५ मृ० शु० ३

- ” ४ सं० १९१५ फा० कृ० ३, लाडनू
 ” ५,६ सं. १९१६ मा० कृ० ८, लाडनू
 ” ७ लाडनू

इन सातों ढालों में ३३ दोहे, ३८१ गाथा, तथा २२ पद्य-परिमाण वार्तिका है। इसका समग्र ग्रन्थाग्र ४३६ है।

९. लघुरास

जयाचार्य की कृतियों में ‘लघुरास’ का अपना स्वतन्त्र महत्त्व है। तत्कालीन ६ बहिर्भूत साधुओं (१ चतुर्भुजजी, २ कपूरजी, ३ जीवोजी, ४ संतोजी, ५ छोगजी, ६ किस्तूरजी) से संबंधित विभिन्न तथ्यों का सुन्दर विश्लेषण इस कृति में हुआ है। कुछ तथ्य तो इतने समीचीन चित्रित हुए हैं कि आज भी उनकी पुनरावृत्ति तदनुरूप देखी जाती है। इस रास की मुख्य ढाल एक ही है। बीच में आचार्य भिक्षु और मुनि हंसराजजी की ढालों को अन्तरढाल के रूप में उद्धृत किया गया है। इस रास में १४४० पद्य हैं। प्रारंभिक १२२६ पद्यों की रचना वि० सं० १९२३ बैशाख शुक्ला ८ के दिन हुई है। स्थान का नाम नहीं दिया गया है।

जयाचार्य ने अपने सहज शब्दों में संघ से बहिर्भूत व्यक्तियों की विचारधारा का जो चित्र खींचा है, वह वास्तव में ही अनूठा और मनोवैज्ञानिक है। बहिर्भूत साधु पग-पग पर स्खलित होता है। उसकी मानसिक और वाचिक वृत्तियाँ कितनी अस्थिर होती हैं? समय-समय पर वह किस प्रकार आत्मवञ्चना और वाग्बिडम्बना करता है? अपने स्वार्थों की अप्राप्ति में अधीर होकर वह किस प्रकार संघ और शास्ता पर झूठे दोषारोपण करता है? छिपे-छिपे संघ के साधुओं में मनोभेद पैदा करने के लिए वह कितनी कुटिल प्रवंचनाएं रचता है? आदि समस्त तथ्यों का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ विश्लेषण प्रस्तुत कृति में किया गया है।

१०. टालोकरों की ढाल

आचार्य श्री भिक्षु ने संघ के साधु-साध्वियों के लिए जहां व्यवस्था की है, वहां उन्होंने संघ से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्तियों के लिए भी कई मर्यादाएं और कुछ मौलिक सुझाव प्रस्तुत किए हैं। साधारणतया देखा जाता है कि गण से बहिष्कृत व्यक्ति अपने दोषों को न देखकर संघ में ही दोष निकालने का प्रयास करता है। पर क्या नींव के बिना भी कभी मकान खड़ा रह सकता है? वातूल आते समय कितना तेज आता है पर उसकी यह स्थिति कितनी देर रहती है, यह सभी जानते हैं।

प्रस्तुत कृति में टालोकरों से संबंधित मर्यादाओं का विश्लेषण तथा उनके द्वारा

होने वाली हरकतों का चित्रण हैं यद्यपि इस कृति में किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया गया है किन्तु इतिहास के अवलोकन से जो इसके नायक सिद्ध होते हैं वे हैं—तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचन्दजी के पास सं. १८८० में दीक्षित होने वाले जयपुर के मुनि श्री फतेचन्दजी। ये जाति के सरावगी थे। स्त्री को छोड़ कर वैराग्य भाव से दीक्षा ग्रहण की थी, किन्तु छिद्रान्वेषी प्रकृति के होने के कारण थोड़े दिनों के बाद ही संघ के अन्दर दलबन्दी सी करते हुए छुप-छुप कर गण के साधुओं के अवर्णवाद बोलने लगे और मतभेद डालने लगे। पर यह बात कब तक छिपी रह सकती थी? पता लगने पर पूछा गया तो इन्होंने शंकाएं रखीं। उनके समाधान के साथ प्रायश्चित्त दिया गया। पुनः वैसा करने का प्रत्याख्यान करते हुए एक लिखित भी लिखा। किन्तु अपनी प्रकृति नहीं बदल सके और सं. १८९० में अलग हो गए और तीन दिन तक बहुत अवगुण बोले। संघ में ३२ दोष निकाले। इन्हीं सारे प्रसंगों की इस ढाल में विस्तृत चर्चा और स्पष्टीकरण है। इसको १ ढाल है जिसमें १५ दोहे, ३ सोरठे तथा १८० गाथाएं हैं तथा ९ पद्य परिमाण वार्तिका है। कुल मिला कर इसके २०७ पद्य हैं। सं. १९३३ चै. शु० २ के दिन इसकी सम्पूर्ति हुई।

उपसंहार

इस प्रकार इन अलग-अलग कृतियों में तेरापंथ संघ में अनुशासन और व्यवस्था संबंधी अनेक आवश्यक बातों का सुन्दर समावेश हुआ। ये कृतियां क्रमबद्ध नहीं लिखी गई हैं, अतः कई स्थलों पर पाठकों को पुनरावृत्ति का भी आभास होता है। पर यह तात्कालिक नई-नई व्यवस्थाओं को जमाने की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक था। श्रीमज्जयाचार्य ने अपनी सूझबूझ और दूरदर्शिता से दुर्गम पथ को भी सरल एवं सार्वजनिक बना दिया। उस पथ को सजाने, संवारने में इन कृतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

श्रीमज्जयाचार्य के शताब्दी-समारोह के पुण्य प्रसंग पर उनके बहुमुखी विशाल राजस्थानी साहित्य का परम श्रद्धेय आस्थाकेन्द्र युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी एवं महामहिम युवाचार्य श्री (वर्तमान में आचार्यश्री) महाप्रज्ञ के निर्देशन में सांगोपांग सम्पादन हुआ। मुझे भी इस ग्रन्थ के माध्यम से उस कार्य में सम्पृक्त होकर श्रीमज्जयाचार्य के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करने का सहज मौका मिला। इसके लिए अपने आपको कृतार्थ मानता हूँ।

अपनी बात

इस ग्रन्थ के सम्पादन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य पाठ-निर्धारण का था। यद्यपि मुनिश्री नवरत्नमलजी की देख-रेख में अत्यन्त परिश्रम-पूर्वक इसमें समाविष्ट कृतियों की पांडु लिपियां पहले ही तैयार हो चुकी थीं, फिर भी मूल प्रतिलिपियों से उनका मिलान और शंकास्पद स्थलों को पाठ्य निर्धारण-कार्य दुरुह और श्रम साध्य था। विविधमुखी प्रवृत्तियों में अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी श्रद्धेय गुरुदेव श्री तुलसी ने उसके लिए मुझे

मुक्त समय प्रदान किया, इससे मेरा कार्य काफी सुगम हो गया। पूज्य प्रवरों के प्रति अपनी भाव-भीनी श्रद्धा समर्पित करता हुआ यह कामना करता हूं कि मेरे हर क्षेत्र में इसी तरह वरद सान्निध्य तथा प्रेरक संबल प्राप्त होता रहे और मैं अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहूं।

प्रथम बार यह पुस्तक 'जयाचार्य शताब्दी समारोह' (अनुशासन-वर्ष) के संदर्भ में सन् १९८३ में प्रकाशित हुई थी। यह सुखद संयोग की बात है कि अब इसका पुनर्मुद्रण 'आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी' के शुभ अवसर पर हो रहा है।

आचार्य भिक्षु अनुशासन के पुरोधा थे। वे तेरापंथ धर्म संघ को अनुशासन का उदाहरण बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने विभिन्न प्रयोग किये तथा प्राण संचारक बहुमूल्य सूत्र प्रदान किये। वर्तमान परिस्थिति में उनकी अत्यन्त अपेक्षा लग रही है।

यह कृति जन-जन में अनुशासन, मर्यादा एवं संगठन के प्रति जागरूकता पैदा करने में हेतुभूत बने, इसी शुभाशांसा के साथ.....।

मुनि मधुकर

वि० सं० २०६० माघ शुक्ला ३

जलगांव (महाराष्ट्र)

अनुक्रम

	पृष्ठ
१ लिखतां री जोड़	१
२ गणपति सिखावण	५५
३ शिक्षा री चोपी	६४
४ उपदेश री चोपी	१३४
५ टहुका	१५९
६ मर्यादा मोच्छब री ढाळां	१६५
७ गण विशुद्धिकरण हाजरी	१८०
८ परंपरा री जोड़	३२९
९ लघुरास	३६९.
१० टाळोकरों की ढाळ	४१९
परिशिष्ट	
१—'लिखतां री जोड़' से संबंधित	४३६
२—'गणपति सिखावण' से संबंधित	४५८
३—'टहुका' से संबंधित	४६४
४—१५९ दोषों की विगत	४६५

लिखतां री जोड़

ढाल : १

दूहा

१. असल धर्म महावीर नों, निमल माग निकलंक।
जमल ज्ञान अरु चरण युग, कमल जेम निरपंक॥
२. शरण स्वाम शासण सुजस, धरण दुधर शिव धाम।
वरण अमर-वधु वसुधरा, तरण भवोदधि ताम॥
३. अंग अनंग सुचंग अति, वच वर रुचिर विसाल।
अवलोकी आगम अनघ, मुनि भिक्षु गुणमाल॥
४. संवत् अठदससय - सतर, समचित कर सुविचार।
निरवद दान दया निमल, वर वारुं व्रत धार
५. विविध सुविध मर्याद सुध, स्थापन कर स्थिर भाव।
भिक्षू प्रकट्या भरत में, सांप्रत तरणी नाव॥
गणपति गुणाकर शोभता।

मुणिन्द मोरा । धिन-धिन भिक्षू स्वांम हो ॥धूपदं॥

६. ऋष भीखण सर्व साधां भणीं। पूछी धर अह्लाद हो।
सर्व साधु साधवियां तणीं, बांधी वर मरजाद हो॥
७. ते साधां नैं पूछ नैं, साधां कनां थी कहिवाय।
आगल ते लिखिये अछै, मर्यादा सुखदाय॥
८. सर्व साधु नैं साधवी, भारमल जी री आंण।
विहार चोमासो करणो तिको, करणो आण प्रमाण॥
९. दिख्या देणी ते इण विधै, भारमल जी रे नाम।
सर्व साधु साधवियां तणीं, मरजादा अभिराम॥
१०. चेला री नैं कपड़ा तणीं, साताकारिया खेत्रां नीं ताहि।
आदि देइ बहु वस्तु नीं, ममत करी मन मांहि।
११. जीव अनंत मूर्छा थकी, चारित्र रत्न गमाय।
नरक निगोद मांहि गया, इम भाख्यो जिनराया॥
१२. तिण सूं ममत शिषादिक तणीं, मिटावण तणीं उपाय।
चारित्र चोखो पाळण तणीं, उपाय कियो सुखदाय॥

१. लिखत देखें-परिशिष्ट १ ३. लय: सीहल नृप कहै चंद नै

२. युगल।

- १३ विनय मूळ ए धर्म नै, न्याय मार्ग चालण रो उपाय।
कीधो छै समय देखी करी, इम कह्यो लिखत रे मांय॥
- १४ भेषधारी विकला भणीं, मूंडी नै भेळा करंत।
ते शिषां रा भूखा एक-एक रा, अवर्णवाद बोलंत॥
- १५ ते मांहोमांहि फारा-तोरो करै, करै कजिया^१ राड असमाध।
एह चिरत त्यां रा देखनै, बांधी छै मर्याद॥
- १६ शिष शाषा रो संतोष कराय नै, सुखे संजम पाळण रो उपाय
साधां पिण इमहिज कह्यो, रहिणो भारमल जी री आज्ञा मांय॥
- १७ शिष करणा ते सर्व ही, भारमलजी रै नाम।
अखंड आण .तसु पाळवी, ए मर्याद अमाम॥^२
- १८ भारमलजी रजाबंध होयनै, और साधु नै सुन्याव।
चेलो सूपे तो करणो अछै, बीजूं करण रो कियो अटकाव॥^३
- १९ भारमलजी पोता रे चेलो करै, ते पिण तिलोकचंद चंद्रभाण।
आदि बुधवान साधु कहै, ओ संजम लायक जाण॥
- २० प्रतीत आवै बीजा मुनि भणीं, तो करणो शिष सोय।
जो प्रतीत आवै नहीं, तो नहि करणो कोय॥
- २१ कोई अजोग हुवे कीधां पछै, तिलोकचंद चंद्रभाण आद।
छोड़णो बुधवंत रा कहण सूं, माहै न राखणी व्याध॥
- २२ नव पदार्थ ओळखायनै, दिख्या देणी वर नीत।
आचार पालां तिम चोखो पालणो, एहवी बांधी परंपरा रीत॥
- २३ भारमलजी री इच्छा हुआं, गुरु भाइ चेलादिक नै सूल^४ ॥
टोळा रो भार सूंपै तदा, ते पिण करणो कबूल॥
- २४ ते पिण रीत परंपरा, सर्व साध-साधवियां नै सार।
एकण री आज्ञा में चालणो, एहवी बांधी छै रीत उदार॥
- २५ कोई गणमांहि सूं फारा-तोरो करी, नीकळै इक दोय आद।
घणी धुरताई करै, बुगलध्यानी ह्वै, त्यानै न सरधणा साध॥
- २६ च्यार तीर्थ में गिणवा नहीं, चतुरविध संघ रा निंदक असार।
वांदे पूजै एहवा भणीं, ते पिण आज्ञा वार॥
- २७ काम पडै चरचा बोल रो, किण नै छोड़णो मेलणो तोला।
करणो बुधिवंत नै पूछ नै, इमहिज सरधा रो बोल॥

१. कलह।

३. निषेध।

२. श्रेष्ठ

४. व्यवस्थित रूप से।

- २८ जे कोई याद आवै बलै, ते पिण लिखणो तास।
ते पिण सर्व कबूल ही, करणो आण हुलास॥
- २९ सर्व साधां रा परिणाम जोयनै, रजाबंध कर बाध।
यां कनां सूं पिण कहिवाय नै, बांधी 'ए' मरजाद॥
- ३० परिणाम जिण रा मांहिला, चोखा है जो ताम।
ते मतो' इण मांहै घालज्यो, सरमा-सरमी रो नहीं काम॥
- ३१ मूँढे और मन में और ही, इम तो साधु नै करवो छै नाय।
बलि इण लिखत में खूचणो, काढणो नहीं छै काय॥
- ३२ पछै कोई और रो और ही, बोलणो नहीं छै ताम।
अनंता सिद्धां री साख सूं, ए पचखांण अमाम॥
- ३३ संवत अठारै बत्तीस में, मृगसर विद सातम सार।
लिखतु ए ऋष भिक्खन तणों, हेठे साधां रा अक्षर उदार।
- ३४ साख एक थिरपाल नीं, लिखतू बले वीरभाण।
ऊपर लिखियो ते सही, इम हिज हरनाथ पिछाण॥
- ३५ इम ही सुखराम लिख्यो सही, लिखतू तिलोकचंद जाण।
ऊपर लिखियो ते सही, लिखतू इम ही चंद्रभाण॥
- ३६ अखेराम अणदा तणां, इमहिज अक्षर जोय।
आप-आप रा हाथ सूं, अक्षर लिखिया सोय॥
- ३७ वर्ष बत्तीसे स्वाम जी, बांधी ए मरजाद।
जोड़ करी मैं तेहनी, जयजश हरष समाध॥
- ३८ अक्षर भिक्खू स्वाम ना, ए लिखत लिख्यो निज हाथ।
जोड़ करी ते देखनै, गणपति जय साख्यात॥
- ३९ संवत् उगणीसै ग्यारे समे, जेठ शुक्ल बुध ताय।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय थी, जयजश हरष सवाय॥

लिखित सं० १८३४ री जोड़

ढाळ : २

दूहा

- १ संवत् अठार चोतीस में, समणी नो सुखकार।
भिक्षु लिखत कियो भलो, निसुणो सहु नर-नार॥
'स्वाम भिक्षु वच हिय धरणां, स्वाम भिक्षु वच हिय धरणा।
सुगुरु आण मर्याद अराध्यां, भवदधि सैं तरणां॥धूपदं॥
- २ सर्व आरजियां रे लज्जा,
एक लिखत कीधो ते निसुणो अजा भणीं, अज्जा-
क्रोध वस तूंकारो देवै,
पंच-पंच दिन पंच विगै रा त्याग तिके लेवै।
जिता तूंकारा जे काढ़े,
जिता पंच-पंच दिवस विगै रा त्याग सिरै चाढ़ै।
वयण इसड़ा नहि उच्चरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- ३ बलै बोले जो ते अजिया,
तूं झूठा बोली एहवा वच भाखे तज लजिया।
जिता दिन पंच-पंच जाणी,
पंच विगै रा त्याग तास बोली ए अलखाणी।
डंड आयां मोसो बोलै,
सुगन जन दूषण से डरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- ४ टोळा ना संत आरजियां नी,
ग्रहस्थ आगै करै उतरती निंघा दुख खाणी।
तास घणी अजोग जाणेणी,
एक मास ना त्याग विगै पांचूं नहीं देणी।
करै निंघा जितरी विरिया,
जितरा मास विगै पांचूं रा त्याग अनुसरिया।
इसा अवगुण नै परहरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- ५ बात अजिया री मांढेमांढि,
उण रो 'परतो' वच' उण आगै कहै जु दुखदाइ।

१. लय : सुगुरु की सीख हिये धरणा।

२. हीनता-सूचक वचन।

६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- उण रो वलि मन भागै जेहवो,
 वचन कहीनै मन भागै तो दंड इसो देवो।
 पनर दिन पंच विगै केरा,
 ए पचखाण अछै तिण ने निंदै तसु अधिकेरा।
 दोष छोड़यां शिवपद वरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- ६ मांहोमां कहै इसी वाणी,
 तू संसां^१ री भागल एहवो वचन वदै ताणी।
 तास दिन पनरै लग त्यागो,
 जिती वार कहै जिता पनर दिन त्याग तणों मागो।
 आंसू काढै जितरी बेलो,
 दश दिन त्याग विगै रो के दिन पनर मांहि बेलो।
 अमल चित अंगीकार करणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- ७ इत्यादि वच करड़ा काठा,
 कहै तसु प्राछित यथाजोग है मिटै लखण माठा।
 कहुआ ए विगय तणां त्यागो,
 इच्छा उण री हुवै जदी पाळी टाळै दागो।
 साधां सेती मिलियां पहिला,
 त्याग विगै रा तास पाळणा मन शुद्धि कर महिला^२।
 इसी विध अवगुण अपहरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- ८ विगय नहीं टाळै धर रागो,
 अपर अजा नै यूँ नही कहिणो तू पाळईज त्यागो।
 साधां सूं मिलियां कहिवेसी,
 साधां री इच्छा आवै ते अपर दंड देसी।
 ते पिण द्रब^३ क्षेत्र काल परखो,
 साधां री इच्छा आवै तो विगै त्याग-अधिको-
 करासी ते पिण कर निरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- ९ आरजियां रे मांहोमांहि,
 साधु-साधवियां नै नहि कल्पै नही शोभै क्यां ही।
 लोकां ने अणगमती लागै,
 जातदिक रो जेह खूँचणो सुण्यां द्वेष जागै।

१. प्रतिज्ञा

२. अन्तरंग

३. द्रव्य

- इसी भाषा पिण जो कैवै,
मुनि इच्छा आवै जितरा दिन विगय त्याग देवै।
तकै पिण कबूल ही करणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- १० जिका आरजियां नै ज्यां ही,
और आरजियां साथै मेल्यां नां कहिणों नांही।
आण लोपी नै नही जावै,
पंच विगै रा त्याग न जावै जितरा दिन पावै।
और बली दंड जठा बारै,
अविनय अवगुण दूर करी गुरु आणा शिर धारै।
वयण सतगुर नां अनुसरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- ११ साधां रा मेल्यां विण अज्जा,
और तणी अज्जा अन्य साथै जाये तज लज्जा।
जिता दिन रहै तास पासो,
पंच विगै रा त्याग तिता दिन अवगुण दुख रासो।
अपर वलि प्राछित है भारी,
ते तो दंड जठा वारै है आणा अधिकारी।
आण लोप्यां सैं दुःख भरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- १२ आरजियां जिण साथै मैली,
अथवा माहोंमांही आरजियां चोमासे भेळी।
तथा भेळी शेषे काळो,
तसु दोष हुवै तो साधु मिलियां कहिणो ततकाळो।
कदा न कहै तसु पख बतियां,
उतरो ही प्राछित उण नै छै सुणज्यो सहु सतियां।
सखर आणा ना ल्यो सरणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥
- १३ पछे बहु दिन आडा घाली,
साचो अथवा झूठ कहै तो उवा जाणै बाली।
तथा जाणै जिन आणंदी,
छद्मस्थ तणे व्यवहार बहु दिन सूं कहै ते मंदी।
राग अरु द्वेष वसै भाखै,
निज स्वारथ न कहै नै, स्वारथ नहीं पूगां आखै।
तास परतीत नहीं करणा, सुगुरु आण मर्यादा०॥

१४

बली गृहस्थ्यां मांहे खारे,
जणाय आमना एक-एक री आसता उतारे।
तिका आर्या महादुखकारी,
तिण में तो अवगुण बोहलाइज छै अति ही भारी।
फतूजी नै मांहे लीधा,
लिखत तिको सहु समणी नै कबूल छै सीधा।
तसु विरला जाणें निरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१५

बलै बहु बोल अनेकां री,
करडी मर्यादा बांधै ते कबूल छै ज्यां री।
त्याग नां कहिवा रा त्या ही,
कर्म जोग किण ही सूं च आचार पलै नांहि।
मांहे मां स्वभाव अण मिलती,
तसु साधु काढै गण बारै तथा क्रोध वस थी—
अलग हो छांडै गण सरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१६

दूर ह्वै गण थी अपछंदी,
ते तो झूठ अनेक वदै कर्मा वस मति मंदी।
आल कूड़ा-कूड़ा देवे,
अथवा भेषधार्यां में जावै कलुष भाव वेवै।
कियो संसार अनंत आरै,
कपट अनेक प्रकार केलवै चरित्र नै हारे।
तास संगत सेती डरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१७

टाळोकर कर्म वसै झोलै,
विविध झूठ ते तो बोलेइज का नहीं पिण बोले।
इसी जे निलज^१ भेष भंडी,
तसु बात भेषधारी भारीकर्मा मानै खंडी।
जीव उत्तम तो नहीं मानै,
टाळोकर नै दूर तजी नै आप हुवै कानै^२।
इसी विध भिटै जनम-मरणां, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१८

टोळा सूं छूट हुवै कानै,
बात मानै तसु मूरख कहीजे चोर कह्या त्यानि।
आळ दे अनेक अनेको,

- सूँस करण नै त्यांरी होवे कर्म कुमत रेखो।
तो ही उत्तम तो नहीं माने,
इत्यादिक घणां छै अवगुण जग निंदे ज्यां ने।
इसा तो काम नहीं करणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- १९, एतावत गण ए गुणखाणो,
ए थी टल्या पछै अवगुण बोलण रा पचखाणो।
अनंता सिद्ध साख त्यागो,
ए लिखत सहु आरजियां नै वचायो सुध मागो।
प्रथम तसु पासै कहिवाई,
मर्यादा बांधी ए सखरी सुगुणा सुखदाई।
अधिक हियै हरष थकी धरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- २० लिख्या लिखत रै परमाणे,
सघली आय्या नै चालणो शिर धारी आणे।
अनंता सिद्धां री साखे,
सघला रे पचखांण अछै तन-मन सूं अभिलाखे।
हुवै जिण रा शुद्ध परिणामो,
मतो घालज्यो लिखत प्रमाणे जो चालो तामो।
सरमासरमी रो नही छै कामो,
जावजीव रो काम अछै आणा ए अभिरामो।
संवत् अठारै चोतीसै,
जेठ सुधी नवमी तिथि नीकी वच विसवावीसै।
उमंग धर नै ए आदरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- २१ लिखतू सुजाण तज दंभा,
लिखतू मटू लिखतू कुसला लिखतू कसूंभा।
लिखतू जीउ लिखतू नंदू,
लिखतू गुमाना लिखतू फतू नै लिखतू अखू।
लिखतू अजबा लिखतू चंदू, आप-आप तणा कर सूं लिखिया अक्षर सुखकंदू।
लिखत भिक्खू कर नो देखी, जोड़ करी है जय-जश गणपति संपति हित पेखी।
विमल चित सूं हिवडै धरणा, सुगुरु आण मर्याद०॥
- २२ वर्ष चउदे नै उगणीसै, फागुण विद ग्यारस मंगलवर जोड़ी गण ईसै।
स्वाम वचनामृत सुविसाली, पवर जोड़ जय गणि वृद्धिकारक परमप्रीत पाली।
थया बीदासर में थाट, इकतालीस समण सौ अजा नित्य प्रति गह घाट।

सोरठा

- २३ लिखत फतू^१ मांहि, बारै बोल कह्या अछै।
वरस तेतीसै ताहि, निरणो कीज्यो जोयनै॥
- २४ ऊभी नै अवलोय, जो कीड़ी सूझै नहीं।
विहार-सक्ति घट्या सोय, संलेखणा मंडणो मही॥
- २५ ए दोनू बोल अवलोय, फतूजी नै ईज छै।
अवरां रे नहिं कोय, न्याय पैताळी लिखत में॥
- २६ आंख्यादिक वृद्ध गिलाण, कारणीक जे कोई हुवै।
व्यावच तसु अगिलाण, करणी रूडी रीत सूं॥
- २७ संलेखणां री सोय, ताकीदी करणी नही।
वैराग वधै ज्यूं सोय, बीजा नै करणो सही॥
- २८ विहार करण री रीत, काची निजर हुवै तदा।
बहु खप कर धर पीत, चलावणौ तेह नै सही॥
- २९ लिखत पैताळी मांय, इण विध आख्यो स्वाम जी।
ते बिहुं बोल इण न्याय, फतूजी नैइज छै॥
- ३० बीजा जे दस बोल, सगळी अज्या नै अछै।
लिखत अनेरा तोल, तेह में दस नीं रहिस छै॥
- ३१ तेतीसा लिखत नीं जोड़, मम कृत सोरठिया दुहा।
द्वादस तणों निचोड़, निरणय कीजो देखनै॥

ढाळ : ३

दूहा

१ वर्ष इगतालै स्वामजी, बांधी ए मर्याद।
चित लगाई सांभळो, सरखरी भाव समाध॥

- ‘सुगुणा स्वामजी, भिक्षू लिखित किया भारी।
नगीना नाथ जी, बांधी दृढ़ मरजाद उदारी ॥धुपदं॥
- २ साध मांहो-माहै भेला रहै, त्यां दोष किण ही में देखी।
तो ततकाल धणी नै कहिणो, ते पिण अवसर पेखी ॥
- ३ दोष भेळा नहीं करणा जिण नै, धणी भणी कहवता।
प्राछित लैवे तो पिण गुर नै, कहि देणो कर खंता ॥
- ४ जो प्राछित नही लेवै तो, प्राछित तणां धणी नै आरे—
कराय जे-जे बोल लिखी नै, सूप देणो तिण वारै ॥
- ५ इण बोल तणों प्राछित थां नै, गुर देवै ते दंड लीजो।
जो इण रो प्राछित नहीं होवै, तो ही गुरा नै कहिजो।
- ६ थे गाळागोळो मत कीजो, थे नही कहिसो तो धर रागो।
तो म्हारा कहिवा रा भाव छै, हूं नही काढूं आघो ॥
- ७ संका सहित दोष भ्यासे तो, संका सहित कहि देसूं।
निसंकपणे दोष जाणूं छूं, ते निसंकपणे कहिसूं ॥
- ८ नहीं तो अजे पाधरा चालो, इण विण तिण नै कहिणो।
पिण दोष भेळा नहीं करणा, प्रगट लिखत में वेणो ॥
- ९ जो उ आरै नहीं होवै तो, ग्रहस्थ पका है त्याने।
जणावणो उण बैठाइज, कहिणो पिण नहीं छानै ॥
- १० चोमासा री एह वारता, जो हुवै शेखे काळो।
तो किणनैई नहीं कहिणो, गुरु हुवै जठे आवणो न्हालो ॥
- ११ पिण सतगुर रे पास आयनै, वैदो^२ घालणो नाहि।
गुरु किण नै साचो करै, किण नै झूठो करै इज त्याहि ॥

१.लय : हठीला कान जी छल्ला में नहीं छोड़ूं ।

२. कदाग्रह।

- १२ सतगुर तो इण बात मांहि नहीं, कदाचित अहिलाणे ?
 एकण नै झूठो जाणे, एकण नै साचो जाणे ॥
- १३ ते पिण निश्चै नहीं वारता, ते किण विध दंड देवै ।
 विगर आलोया दोयां री, निश्चै बतका किम कहिवै ॥
- १४ पाछै तो सतगुर नै बुध सूं, द्रव्य खेत्र काळ भावो ।
 जाणी नै दोनूं संतां रो, करणोइज छै न्यावो ॥
- १५ पिण उण नै तो एक दोष थी, दोय दोष दिल धारी ।
 भेळा नहीं करणा छै तिण रा, ए वर न्याय विचारी ॥
- १६ घणां दोष भेळा कर आसी, तो उ तो हाथां सूं ।
 झूठो पड़सी सही जाणजो, साचो हुवै क्यांसूं ॥
- १७ पछै तो केवळ ज्ञानी जाणे, छद्मस्थ तणें ववहारो ।
 भेळा दोष करै तिण मांहि, छै अवगुण नो भंडारो ॥
- १८ ए लिखत ऋष भीखन रो, संवत् अष्टादश इकतालो ।
 चेत विद तेरस तिथि नीकी, निर्मल न्याय निहालो ॥
- १९ लिखतू ऋष हरनाथ उपरलो—लिखयो सही ते जाणो ।
 लिखतू ऋष भारमल उपर—लिखयो सही प्रमाणो ॥
- २० लिखतू अखेराम उपरलो—लिखयो सही ते वारू ।
 लिखतू ऋष सामजी उपर—लिखियो सही उदारू ॥
- २१ लिखतू ऋष खेतसी ऊपर—लिखयो सही ते जाचो ।
 लिखतू ऋष रामजी ऊपर—लिखयो सहीज साचो ॥
- २२ लिखतू ऋष सिंघजी ऊपर—लिखियो सही सुजाण ।
 लिखतू ऋष नानक जी ऊपर—लिखियो सही प्रमाण ॥
- २३ संवत् उगणीसै नै चवदे, विद तेरस फागुण मासो ।
 गणपति जयजश संपति जोड़ी, बीदासर सुख वासो ॥

लिखित सं० १८४५ री जोड़(१)

ढाल : ४

दूहा

१ पैताळीसै वर्ष स्वामजी, साधां रे मरजाद।
सरस लिखत निसुणो सहु, आणी अति अहलाद॥

‘स्वाम भिक्खू वच सुखदाई रे। स्वा०।

अखंड आण मरजाद अराध्यां शिवपुर नीं साई॥धूपदं॥

२. सर्व साधां रे मर्यादा-बांधी ते कहिये छे निसुणो छोड़ी विषवादा।
कारणिक जाणो, आंख्यादिक गरढ गिलाणो, जद और साथ अगिलाणो।
वियावच्च करणी हित ल्याई॥
- ३ उण नै संलेखणा केरी, ताकीदी नहि देणी छै निज तन-मन नै घेरी।
वधै वेरागो, करणो तिण रीत सुमागो, अति आणी हरष अथागो।
वियावच्च करणी चित ल्याई॥
- ४ उण रे विहार करण नी रीतो, निजर कची हँ तास भरोसे ना रखणी नीतो।
घणी खप^१ करनै, तसु चलावणो पग भर नै, आगल मारग अनुसरनै।
इसी विध चलणो हित ल्याई॥
- ५ रोगियो होवै तो तामो, उण रौ बोज उपाड़णो उण रा चढता परिणामो-
रहै ज्युं करणो, उण में जाणो शुध चरणो, तसु छेह^३ दे ना परहरणो।
पवर ए रीत सुगुण भाई॥
- ६ हरष वैराग हियै आणी, संलेखणा मंडे तो पिण उण री व्यावच ठाणी।
कदा इक जणो उचट होयो, त्यां सगलां नै रीत प्रमाणे करणी है सोयो।
करै जो नांही, नखैद नै त्यां ही, करावणी ते पांही।
करावै आप किसै न्याई॥
- ७ कारणीक रोगी नै लेणो, रीत प्रमाण आहार सहु भेळा हो कहै ते देणो।
बलि किण ही रो, अजोग स्वभाव तिणी रो, बेठण वालो नहीं जिणी रो।
तसु संग ले जावै नाहि॥
- ८ तदा उ पैला नै ताहि, घणीं परतीत उपाय घणीं बलै करणी नरमाइ।
जोड़ कर केणो, इसी विध वदणो वेणो, थे मोय निभावो सेणो।
कहि इम तसु साथै जाई॥

१.लय : महिला मन अन्तर की आडी रे।

३.किनाराकशी।

२.परिश्रम पूर्वक।

- ९ चलावै ज्यूं चलणो तेह नैं, कार्य जिको भळावै ते तो करणो छै जेह नैं।
घणों रीझाई, तन मन सुंकर नरमाई, परतीत अधिक उपजाई।
इसी विध रहै ते न्याई॥
- १० इसी नरमाइ नी शक्ति, नहीं है तिण नै संलेखणा मंडणो है युक्ति।
हिया में धारे, वेगो निज कार्य सारे, अपनी आतम निस्तारे।
पवर पिंडत-मरणो पाई॥
- ११ मरण पिंडत 'के' नरमाई, दोय बोल में एक बोल पिण आरै नांहि।
उणी सूं आमो, अति कलेश कर नै तामो, कुण कादे जन्म निकामो।
बाहिर तुस काढ देणो ताहि॥

ढाळ : ५

'स्वाम भिक्खू नी मर्याद सुणजै। धुपदं॥

- १ एकल होवण तणीं चित आणी, इसड़ी सरधा धारै।
टोळा मांहे जे बेठो रहै छै, ते दोनूई जन्म बिगाड़ै॥
- २ म्हारी इच्छा आसी ज्यां लग, रहिसूं टोळा मांढो।
म्हारी इच्छा आसी जद हूं, एकल होसूं ताढो॥
- ३ इसरी सरधा धारै अबुद्धि, रहै टोळा रे मांढो।
ते तो निश्चै असाध कहीजै, विवेक विकळ कहिवायो॥
- ४ संजम सरध्यां पहिला गुणठाणां रो-धणी कहीजै तासो।
दगाबाजी ठागा सूं रहै मांहे, न करणो तिण रो विसवासो॥
- ५ इण विध दगाबाजी करै तिण नै, जाण राखै गण मांढो।
त्यां नै पिण महादोष कहीजै, प्रतख ही देखायो॥
- ६ कदा जो गण में दोष जाणे तो, टोळा मांहे नहिं रेणो।
एकलो होय संलेखणा करणी, एह लिखत में वेणो॥
- ७ वेगो आतमा रो सुधारो हुवै, ज्यूं करणो अति प्रीत।
आ सरधा ह्वै तो मांहे, राखणो रूड़ी रीत॥
- ८ गाळागोळो कर में जो रहै तो, राखणों नहीं तिबारे॥
उत्तर देणो तुरत तिणी नै, काढ़ देणो गण वारै॥
- ९ पछै इ आळ देइ निकळे ते, किस्सा काम रो तामो।
इण विध स्वामी प्रगट लिखत में, आखी बात अमामो॥
- १० टोळा मांहे तथा गण 'सू' दूर ह्वै, कर्म जोग मंद भागो।
संत अज्जा रा अंसमात्र पिण, अवगुण बोलण रा त्यागो॥
- ११ साध-साधवियां री अंसमात्र पिण, संक पड़ै ज्यूं वाणो।
अथवा आसता उत्तरै ज्यूं पिण, बोलण रा पचखाणो॥
- १२ गण सूं फाड़ सागै ले जावण रा, त्याग अछै शुद्ध मागो।
कदाचि उ आवै तो ही उण नै, साथै ले जावण रा त्यागो॥
- १३ टोळा मांहे नै बारै निकळ्यां पिण, अवगुण बोलण रा त्यागो।
मांहोमां मन फाटै ज्यूं बोलण रा, ए पिण त्याग सुमागो॥

१.लय : कुविसन केरो संग न कीजै ।

१६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ जे कोई बोल आचार श्रद्धा रो, बोल सूत्र नो विमासो।
अथवा कल्प रा बोल तर्णी पिण, समझ पड़ै नही तासो॥
- १५ गुर तथा भणणहार मुनि भाषै, तेहिज वच मान लेणो।
नही तो केवळियां नै भळावणो, प्रगट लिखत में वेणो॥
- १६ टोळा मांहि पिण अवर साधरै, नांहि घालणी संको।
बलि किण रो मन भांगणो नाहि, रहिणो सरल अबंको॥
- १७ टोळा मांहि पिण जे साधां रा, मन भांगी बेसर्मा।
आप-आप तणै जिलै करे तसु, कहिये भारीकर्मा॥
- १८ विसवासघाती तिण नै कहिये, अधिक अजोग अन्याई।
घात-पावड़ी -इसड़ी करै ने, अनंत संसार री साई १॥
- १९ उचम ए मर्याद प्रमाणै, किणसूं जो चालणी नावै।
तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै, इम भिक्खू फुरमावै॥
- २० धनै अणगार तो नव महिना में, कित्याण आतम नों कीधो।
ज्यू इण नै पिण आतम सुधारो, करणो छै प्रसिद्धो॥
- २१ आत्म सुधारे पिण अप्रतीतकारियो, काम न करणो काचो।
रोगियो विचै तो स्वभाव अजोग नै, मांहि राख्यो नही आछो॥
- २२ यां बोलां री मर्याद बांधी ते, शुद्ध पाळणी लिखिया प्रमाणो।
अनंत सिद्धां री साख करी नै, सगळां रे पचखाणो॥
- २३ ए पचखाण चोखा पाळण रा, हुवै जिण रा परिणामो।
ते मन शुद्ध कर आरै होय जो, इम कहै भिक्खू स्वामो॥
- २४ विनय मार्ग चालण रा परिणाम होवै, गुर नै रिझावण होयो।
संजम पाळण रा परिणाम हुवै ते, आरै होयजो सोयो॥
- २५ ठागा सूं टोळा मांहि रहिणो नहीं छै, जिण रा चोखा परिणामो।
होवै ते तो आरै होयजो, ए अक्षर लिखत में आयो॥
- २६ समचै आचार तर्णी मर्यादा, आगै साधां रे बांधी।
ते तो कबूल छै सहु संतां रे, धारणी समचित साधी॥
- २७ बलै कोई आचारज बांधै, मर्यादा धर प्यारो।
याद आवै ते पिण कबूल करणी, आणी हरष अपारो॥
- २८ लिखतू ऋष भीखन रो छै, ए संवत् अठारै सारो।
वर्ष पैताळीसै जेठ सुदि वर, एकम तिथी उदारो॥

- २९ ए मर्याद ऋष भारमल, हरख सूं अंगीकार कीधी।
 ए मर्याद ऋष सुखराम, अंगीकार कर लीधी॥
- ३० ए मर्याद ऋष अखेराम, अंगीकार कीधी आछी।
 ए मर्याद ऋष स्वामजी, अंगीकार करी जाची॥
- ३१ ए मर्याद ऋष खेतसी, अंगीकार करी वारू।
 ए मर्याद ऋष रामजी, अंगीकार करी चारू॥
- ३२ ए मर्याद ऋष नानजी, कीधो छै अंगीकारो।
 ए मर्याद नै ऋष नेमे, अंगीकार करी सारो॥
- ३३ ए मर्याद ऋष वेणे, अंगीकार करी सोयो।
 आप-आप रा कर सूं अक्षर, लिख दीधा अवलोयो॥
- ३४ भिक्खु स्वाम भली पर बांधी, मर्यादा सुखकारो।
 तसु कर ना अक्षर अवलोकी, जोड़ी जय गणि सारो॥
- ३५ संवत् उगणीसै नै चवदे, सुदि एकम फागुण मासो।
 जय गणपति सुख संपति जाझी, बीदासर सुखवासो॥

ढाळ : ६

१ स्वाम भीखण जी शोभता, अठारै सय पचास।
लिखत कियो मरजाद वर, सुणजो आण हुलास॥

‘भीक्खू सीखडली रे॥ धूपदं॥

- २ सर्व साधा नै सुध आचार, पाळणो धर अहिलादो जी रे।
हेत मांहोमां अधिक राखणो, जिण ऊपर बांधी मर्यादो रे॥
- ३ आप मांहै अथवा टोळा रा, साध-साधव्यां माह्यो।
साधुपणों सरधो तिको टोळां में, रहिजो हरष सवायो॥
- ४ कोई कपट दगा सूं साधा भेलो, रहैं नर मूढ़ अजाणो।
अनंत सिद्धा री आण छै तिण नै, पंच पदां री आणो॥
- ५ जे कोई साधु नाम धराय, असाधां भेलो रहियां।
अनंत संसार वधै छै तिण रे, प्रगट स्वाम इम कहियां॥
- ६ जिण रा चोखा परिणाम छै ते, प्रतीत इती उपजावो।
साध-साधव्यां रा अवगुण बोल नैं, खोटा मत सरधावो॥
- ७ किण ही ना परिणाम फाड़ नै, मत भांगी नै वाधो।
खोटा सरधावण तणां त्याग छै, ए भीक्खू मर्यादो॥
- ८ किण सूं साधुपणों पळतो नहीं दीसै, तथा न मिलै सभावो।
तथा कषाय धेठो जाणी नै, कोई कने न राखै चावो॥
- ९ तथा खेत्र आछो न बतायां, वस्त्रादिक कारण माणी।
तथा अजोग जाण करैं न्यारो, तथा दूर करतो जाणी॥
- १० इत्यादिक कारण अनेक ऊपनै, हुवै टोळा सू न्यारो।
किण ही साधु नै साधवियां ना, अवगुण नहीं बोलणा लिगारो॥
- ११ हुंतो नै अणहुंतो खूंचणो, काढण रा त्याग ‘सुं’ भागो।
‘रहिसे-२’ संका घाल नै, आसता उतारण रा त्यागो॥
- १२ कदा कर्मजोग तथा क्रोध वस, सहु गण नै असाध केवै।
असाधुपणों बली सरधी आप में, नवो साधुपणो लेवै॥

- १३ तो पिण अठीरा साधु-साधव्यां री, संका घालण रा त्यागो।
खोटा कहिण रा त्याग ज्युं रा ज्युं पाळणा, ए भिक्खू वच शिव मागो॥
- १४ म्है तो फैर साधपणों लीधो, सूंस कीया म्है आगै।
अब म्हारै अटकाव नहीं छै, यूं पिण कहिण रा त्यागो॥
- १५ संत-सत्यां नी अधिक आसता, उतारणी नहीं जाणो।
असाधपणों सरधै संक पडै ज्युं, बोलण रा पचखाणो॥
- १६ किण ही साधु आर्या में दोष देखे तो, तुरत धणी नै केणो।
अथवा आय गुरां नै केणो, ओरां आगै न वदणो वेणो॥
- १७ घणां दिन आडा घाली नै, दोष बतावै कोई।
धणी ले तो दै उणनै, नहीं प्राछित रो धणी ओ ही॥
- १८ प्राछित रा धणी नै याद आवै तो, दंड उण नै पिण लेणो।
नहीं लेवै तो उण नै मुसकल, ए पिण भिक्खू वेणो॥
- १९ कोई सरधा आचार तणों नवो, बोल नीकळै ज्यां ही।
बड़ा थकी ते बोल चरचणो, ओरां सूं चरचणो नांही॥
- २० पिण ओरां सूं चरच ओर रे, नाहि घालणी संको।
बड़ा जाब दैवे निज हियै वैसे तो, मान लेणो तज बंको॥
- २१ नहीं वैसे तो केवळियां नै, भळावणो तज सल्लो।
गण में भेद पाड़णो नाहि, मांहोमां न बांधणो जिल्लो॥
- २२ मिल-मिल नै मन आप तणों, उचक्यो टोळा सूं त्यांही।
अथवा संजम पळै नहीं तो, किण नै साथे ले जावणो नांहि॥
- २३ अनंत सिद्धां री साख करी नै, साथे ले जावण रा पचखांणो।
स्वाम भिक्खू नी ए मर्यादा, उत्तम न खंडे आणो॥
- २४ कोई दिख्या लेतौ देख न्यारो होय, न करणो शिष धर रागो।
नवो मार्ग काढी नै आप रो, मत जमावण रा त्यागो॥
- २५ ए सुध सरधा आचार पालणो, निरमल चित्त शिव मागो।
किण रो मन हुवै जुदा होण रो, तो परती^१ कहिण रा त्यागो॥
- २६ जिण रो मन हुवै रजाबंध, चोखी तरै चरण सुहायो।
साधपणो पळतो जाणै तो, रहिणो टोळा मांहो॥
- २७ आप मांही अथवा पेला में, साधुपणो सुध जाणो।
तो टोळां में रहिणो सैमल^२, ठागा^३ सूं रहिण रा पचखांणो॥

१. नीचा दिखाने वाली बात। २. शामिल।

३. दगाबाजी।

- २८ ठागा सूं रहण रा अनंता सिद्धां री, साख करी पचखांणो।
इण विध स्वाम प्रगट लिखत में, वारू दाखी वाणो॥
- २९ टोळां में रहि लिखै-लिखावै, कोई देव ते ले जाणो।
यां नै पिण संग ले जावण रा, ए पिण छे पचखांणो॥
- ३० परत पाना ते बड़ा तणी-नेश्राय जाचणा जाणो।
आप तणीं नेश्राय जाचण रा, ए पिण छै पचखांणो॥
- ३१ अजाणपणें जो जाच्या किण ही, तो पिण बड़ा रा जाणे।
यां नै पिण संग ले जावण रा, ए पिण छे पचखांणो॥
- ३२ पात्र लोट जाचै टोळा में, बड़ा तणी नेश्रायो।
बड़ा देव ते ते पिण लेणा, विण आज्ञा लेणा नाह्यो॥
- ३३ गण बारै नीकळियां ते पिण, ले जावणा नही सागै।
नवो वस्त्र हुवै ते पिण, टोळा वार ले जावण रा त्यागो॥
- ३४ लिखत पचासै ए मर्यादा, बांधी स्वाम सुग्यानी।
हलुकर्मी सुण-सुण मन हरषे, सुवनीतां मन मानी॥
- ३५ सुवनीत संत श्रावक नै, ए मर्यादा लागै मीठी।
अवनीत सुणी तसु अवगुण सूझै, लागै अग्नि अंगीठी॥
- ३६ सुण अवनीत तणीं मुंह बिगडै, विनयवंत सुण हरखै।
सुवनीत नै अवनीत तणां, अहिलाण उत्तम ए परखै॥
- ३७ विनयवंत मर्याद अराधै, इहभव तसु जस थावै।
परभव सुर, शिव नां सुख पावै, च्यार तीर्थ गुण गावै॥
- ३८ अवनीत ए मर्याद उलंघै, इहभव फिट-फिट होवै।
परभव नरक निगोद तणां दुख, दोनूं जन्म बिगोवै॥
- ३९ गण थी नीकळ अवगुण बोलै, कुल नै लगावै दागो।
स्वाम तणी मर्याद उलंघै, निपट निरलजो नागो॥
- ४० कर्म जोग गण थी नीकळ नै, उत्तम फिर शुध थावै।
गांव-गांव निज अवगुण निंदे, प्रतीत इण विध आवै॥
- ४१ गोशाळो केवळ पामी नै, गाम-गाम इम कहिस्यै।
प्रतनीकपणां सूं बहू दुख पावै, नरक तिर्यच विशेषे॥
- ४२ आचार्य नै उपाध्याय नों, प्रतनीक कोई मत होयो।
गाम-गाम जन नै इम कहिसी, सूत्र भगवती^१ जोयो॥
- ४३ तो निज आत्म अवगुण निंदत, लाज सरम नहीं ल्यावै।
टाळोकर नै चोड़ै निषेदे, बलि सुण-सुण हरषित थावै॥
- ४४ उगणीसै चवदै चौथे कार्तिक सुद, बीदासर सुखवासो।
जयजश संपति सरस जोड़ ए, छासठ ठाणा चोमासो॥

ढाळ : ७

१ लिखत पचासो नो बली, कहियै छै अधिकार।
भिकखू स्वाम तणी भली, मर्यादा सुध सार॥

‘स्वाम भिकखू नी मर्यादा सुणीजे ॥धूपदं॥

- १ बड़ा तणै नामै दीक्षा देणी, आप-आप रै शिष्य करवा रा त्याग।
आगै पाना में मर्यादा लिखी छै, ते लोपण रा त्याग वारू शिवमाग॥
(जो किण ही) मर्यादा उलंघी आज्ञा में न चाल्यां, अथवा किण रा देख्या अथिर परिणाम।
अथवा टोळा में टिकतो न देख्यां, तो ग्रहस्थ नै जणावा रा भाव छै ताम॥
- ४ साधु-साधवियां नै जणावा रा भाव छै, पछै कोई कहोला टोळा मांहि—
तथा लोका में आसता उतारै, तिण सूं घणा सावधान चालजो ताहि॥
- ५ एक-एक नै चूक पड़्या तुरत कहिजो, कजियो म्हां तांइ म आणजो तिलमात।
उठै रो बोल उठैज निवेरणो, पूछ्यां अणपूछ्यां कहणी बीती बात॥
- ६ कोई टोळा मां सूं टळै संत-सत्यां रा, अवगुण बोलै तथा दोष बताय।
तिण री कही तो मांनणी नाहीं, तिण नै झूठो बोलो जांणणो मन मांय॥
- ७ साचो हुवै तो ज्ञानी जाणै, पिण छद्मस्थ रै बवहार जाणणों झूठो।
एक दोष सूं बीजो भेळो करै तो, तिण नै कहिजै अन्याई नै महादूठो॥
- ८ परिणाम जेहनां मेला होसी ते, साध अनै आर्या रा ताम।
छिद्र जोय-जोय भेला करसी, ते तो भारीकर्मा जीवां रा छै काम॥
- ९ सरल आतमा रो धणी ते इम कहिसी, कोई ग्रहस्थ संत-सत्यां रा दूजा नै।
सभाव प्रकृति तथा दोष कहै तो, तिण नै यूं कहिणो, म्हांनै कहो थे क्यां नै॥
- १० कहो तो धणी नै, के कहो स्वामीजी नै, ज्यूं यां नै प्राछित दे करै सुध निसंक।
न कह्या दोषीला रा सेवणहार थे, स्वामीजी नै न कहिसो तो था मै इज बंक॥
- ११ थे म्हांनै कह्या सूं कांइ हुवै छै, इम कहि आप न्यारो हुवै ताहि।
पैला रा दोष धारी भेला करै ते, एकंत मृषवादी छै अन्याई॥
- १२ किण ही नै खेव काचो बतायां सू, (किण नै) कपड़ादिक मोटो दीधा द्वेष जाग।
इत्यादिक कारणै कषाय उठै जद, गुरवादिक री निंदा करवा रा त्याग॥

- १३ एक-एक आगै अवगुण बोलण रा, माहोंमां मिल नैं जिलो बांधण रा त्याग अनंता सिद्धां री आण छै तिण नै, ए स्वाम वचन धारै मुनि महाभाग ॥
- १४ गुरवादिक भेळो रहै आपरै मुतलब, पछै आहारादिक थोड़ा घणा रो ले नाम। बलै कपड़ादिक रो नाम लेई नै, अवगुण बोलण रा त्याग छै ताम ॥
- १५ बलै इण सरधा तणां भाया रे, तंतू ठिकाणा छै तेह विमास। बिना आज्ञा जाचण रा त्याग छै, ए स्वाम वचन हियै धारो हुलास ॥
- १६ नेड़ा दस-विस कोसां ताइ वस्त्र जाचै, चोमासो उतरियां ताहि। बड़ा आगै ते आण मेलणो, आप रै मेलै^१ वावरणो नाहि ॥
- १७ वावरै तो सहु कपड़ा माहिलो, ठलको^२ हुवै ते वावरणो जाण। पिण महीं कपड़ा नै वावरणो नही छै, ए पिण जाणजो स्वाम भिक्खू नी वाण ॥
- १८ गुरवादिक जो अळगा हुवै तो, मांहोमांहि सरीखो बांट लेणो। अधिको चावै तिण नै परतो देणो, ए पिण जाणजो भिक्खू ना देणो ॥
- १९ डाहा हावै ते विचार जायजो, न रहै उपगार हुवै तो ही लूखै खेत। उपगार न हुवै तो ही आछै खेत्त पड़ रहै, इण विध करणो नहीं छै तेथ ॥
- २० चौमासो तो अवसर देखै तो रहिणो, पिण शेखै काल रहिणो चित धरणो। किण री खावा-पीवादिक री संका पड़ै तो, उण नै साधु कहै ज्यूं करणो ॥
- २१ दोय जणा तो विचरै नै मोटा-मोटा खेत्त, साताकारिया आछा-आछा सुखदाई। लोलपी थका जोवता फिरै रहै त्यां, गुरु राखै ज्यां नहि रहै इम करणो नांही ॥
- २२ घणा भेळा रहता दुख वेदे, दोय जणां में सुख वेदंत। लोळपी थको यूं करणो नहीं छै, ए स्वाम वचन धारै मुनि मतिवंत ॥
- २३ आपरा किण ही नै परत नैं पाना, उपगरण देवै तो आघा^३ इज देणा। न्यारो हुवै जद पाछा मांगण रा त्याग छै, आसंग है तो दीजो पाछा नही लेणा ॥
- २४ ते पिण गुरु री आज्ञा बिना देणा नहीं छै, वनीत अवनीत री चोपी में दाख्यो। आठमीं ढाळ री तेबीसमी गाथा, इहां पिण आग्या विण देणो तो अंस न आख्यो ॥
- २५ आर्या सूं देवो नै लेवो, लिगार मात्र न करणो कांइ। बड़ा तणीं बलै आगन्या विना, आगै आर्या हुवै त्यां जाणों नाहि ॥
- २६ जाय तो एक रात्रि तिहां रहिणो, पिण अधिक न रहिणो ते ग्राम मांहि। कारण पड़्यां जो तिहां रहै तो, गोचरी रा घर बांट लेणा छै ताहि ॥
- २७ पिण नितरो नित पूछणो नांही, कनै पिण वैसण देणी नांही। बलै ऊभी पिण रहण न देणी, चरचा बात नहीं करणी कांइ ॥

१. अपने-अपने ।

३. पूरा।

२. सामान्य।

- २८ बड़ा गुरवादिक तणां कह्या थी, अनै कारण पड़ियां री बात न्यारी।
स्वाम भिक्खू री छै ए मर्यादा, आज्ञा सूं रह्यां न दोष लिगारी॥
- २९ सरस आहार मिलै ते ग्रामे पिण, आज्ञा बिना रहिणो नही कोय।
बलै कोई करड़ी मर्यादा बांधां, तिण में पिण ना नही कहिणो सोय॥
- ३० आचार री संका पड्या थी बांधै, बलै कोई बोल याद ज आवै।
जे लिखा ते सर्व कबूल कर लेणो, ए स्वाम वचन धार्यां सुख पावै॥
- ३१ ए मर्यादा लोपण के रा, अनंत सिद्धां री साख करै पचखाण।
जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते, अंगीकार कर लीजो जाण॥
- ३२ सूंस पाळण रा परिणाम हुवै ते, मन शुद्ध कर नै आरै होयजो।
सरमासरमी रो काम छै नही, इण विध स्वाम कह्यो ते जोयजो॥
- ३३ संवत् अठारै नै वरस पचासै, महाविद दशम तिथि सुखदाय।
लिखत ए ऋष भीखन रो छै, इण विध स्वाम कह्यो लिखत मांय॥
- ३४ लिखत पचासा री ढाल दूजी ए, गणपति जय करी जोड़ उदार।
पोह सुदि चोय उगणीसै चवदै, जयजश आनंद-संपति सार॥
- ३५ समण बावीस नै तेपन समणी, ठाणा गुण्यासी जबर मुनि मेल।
भिक्खू भारीमाल ऋषराय प्रतापै, चूरू शहर थई रंगरेल॥

ढाळ : ८

दूहा

१ संवत् अठारै बावनै, सतियां रे सुखकार।
मर्यादा बांधी मुनि, भिक्षू गुण-भंडार॥

'भिक्षू दिसावंत भारी क, भिक्षू दिसावंत भारी।
सतियां रे मर्यादा सखरी, बांधी सुखकारी॥धूपदं॥

२ सतियां सर्व तणै सुखदायक, मर्यादा बांधी।
सुध आचार पाळणो चोखो, सखर चित्त सांधी॥

३ आपस मांहि हेत राखणो, हरष अधिक आणी।
तिण ऊपर मर्यादा बांधी, शिवपुर नी नीसाणी॥

४ गणरा संत-सत्यां में संजम, सरधो सुखदाइ।
आपस मांहि संजम सरधो (ते) रहिजो गण मांहि॥

५ काइ कपट-दगा सूं साधवियां रे, भेळी रहै जाणो।
अनंत सिद्धां री आण छै, पंच पद री आणो॥

६ समणी नाम धराय असाधवियां सूं रहै भेळी।
अनंत संसार बधै छै तिणरे, जिनवर तसु हेली॥

७ जिणरा चोखा परिणाम हुवै, प्रतीत उपजाओ।
(किण ही) संत-सत्यां रा अवगुण, कहि खोटा मत सरधावो॥

८ मन भांगी फारण के रा, त्याग सखर जाणो।
खोटी सरधावी नै फारण के रा, पिण पचखाणो॥

९ किण ही सूं साधुपणों, पळतो दीसै नाही।
तथा सभाव मिलै नहीं किण सूं प्रकृति दुखदाई॥

१० तथा कषायण धेठी, जाण कनै को ना राखै।
तिण नै अळगी करै टोळा थी, विनय सुगुण पाखै॥

११ तथा खेव आछो न बतायां, वस्त्रादिक काजै।
अजोग जाण गण सूं अळगी, करती जाणै साजै॥

१२ इत्यादिक अनेक कारण सूं, गण सूं है न्यारी।
(तो किण ही) संत-सत्यां रा अवगुण, बोलण रा त्याग तंत सारी॥

१.लय-चेत चतुर नर कहै तनै सतगुर किस विध.....।

- १३ हुंतो नै अणहुंतो खूंचणो, काढण रा त्यागो।
 'पिट्टी मंसं न खाइज्जा', दशवैकालिक^१ सागो॥
- १४ रहिसै-रहिसै लोकां रे दिल, न घालणी संको।
 आसता उतारण तणां त्याग छै, मेट देणो बंको॥
- १५ कदा कर्म जोग तथा कषाय नै, वस, द्वेष धरी हिरदी।
 सहु टोळा रा संत-सत्या नै, असाध जो सरधै॥
- १६ असाधुपणों बलि आपस मांहे, पिण सरधि ह्वै न्यारी।
 अथवा भेषधारायां में जावै, कर्म-रेख कारी॥
- १७ तो पिण अठी रा संत अनै, साधवियां री सोयो।
 अवगुण बोलण तणां त्याग छै, भिक्षू वच जोयो॥
- १८ उगणीसै चवदै चैत कृष्ण छठ, लिखत बावना री।
 प्रथम ढाळ जोड़ी जय गणपति, संपति सहचारी॥

१. दसवेआलियं ८।४६

ढाळ : ९

- स्वाम' सोहंदा महासुख कंदा, चित निर्मल पूनम चंदा।
सतियां री मर्यादा बांधी, अधिक गुणे कर ओपंदा॥ धुपदं॥
- १ किण ही साधु आर्या मांहि, देख्यां दोष तुरत त्यां ही।
धणी भणी कहणो कै गुर नै, अवरां नै कहिणो नांही॥
- २ किण ही स परिणाम टोळा सूं, जुदा हैण रा हुवै सागो।
जब पिण तिण नै ओरां केरी, परती कहण तणां त्यागो॥
- ३ आपस मांहि अथवा टोळा रा, संत-सत्यां नै सलहिजो।
साधपणों चोखो शुध जाणों, तिका टोळा मांहि रहिजो॥
- ४ ठागा सूं तिण नै टोळां मांहि, नहीं रहिवो छै जाणों।
अनंत सिद्धां री साख करी नै, छै तिण रे ए पचखाणों॥
- ५ पाना टोळा मांहि लिखै ते, साधु-साधवी मन साचै।
गणपति आणा सूं तसु देवै, अथवा ग्रहस्थ कनै जाचै॥
- ६ गण सूं टळ नै जुदी हुवै ते, साथ ले जावण रा त्यागो।
पाना संप देणां संता नै, ले जावण रो नाही मागो॥
- ७ गण में पात्रा लोट करै, जाचै ते नहीं ले जावण'रा।
टोळा री नेश्राय अछै ते, गण में छै त्यां लग उणरा॥
- ८ वस्त्र ऊजळो नवो अछै ते, कपड़ो वावरीयोज न छै।
ते पिण साथ ले जावणो नांही, टोळा री नेश्राय अछै॥
- ९ पानां परत जाचणां ते पिण, बड़ा तणीं नेश्राय जाचै।
आप णीं नेश्राय तिके पिण, नाहि जाचणां मन साचै॥
- १० कर्म-जोग टोळा बारै, नीकळ जो अपछंदी थाई।
अथवा गण बारै काढै (तो), उपगरण साथ लेणां नाहि॥
- ११ गण मांहि उपगरण किया ते, टोळा री नेश्रा केणा।
बारै लै जावण तणां त्याग छै, बड़ा भणीं सूपे देणा।
- १२ आगै कागद मांहि आर्या रे, जे मर्यादा बांधी।
सगळार्ह ते त्याग पाळणां, समचित स्यूं आत्म सांधी॥

- १३ किण नैं आछो खेत्र बताया, राग-द्वेष मन में करनैं।
 बात चलावण तणां त्याग छै, अमर्ष भाव हियै धर नैं॥
- १४ खेत्र आश्री कपड़ा आश्री, आहार-पाणी आश्री सागो।
 बले ओषदादिक आश्री पिण, बात चलावण रा त्यागो॥
- १५ कहै तिहां चौमासो करणो, सेखे काले पिण सोयो।
 बड़ा कहै तिण खेत्र विचरणो, ए मर्यादा अवलोयो॥
- १६ कपड़ो गृहस्थ पासै जाचै, वावरवा री विध त्यांही।
 बड़ा तर्णी आज्ञा विण ते पिण, वसतर वावरणों नांही॥
- १७ कदा बड़ा जो अळगा^१ होवै, वस्त्र चाहीजे जरूर ते।
 ठलको-ठलको तो वावरणो, महीं^२ तो आण लेइ बरते॥
- १८ किण नैं माहिं मोटो दीधां री, बात चलावणी छै नांही।
 प्रगट अक्षर ए लिखत मांहि छै, स्वाम वचन भाख्या ज्यांही॥
- १९ उगणीसै चवदै वैसाख, कृष्ण पख वर तिथ तीज भली।
 द्वितीय ढाळ बावना लिखत री, जयजश संपति अधिक फली॥

१. दूर।

२. बारीक।

ढाळ : १०

दूहा

१ लिखत बावना री भली, कहियै तीजी ढाळ।
स्वाम तणीं मर्याद वर, पाली ते गुण-माल॥

‘सतियां ! स्वाम मर्यादा आराधियै रे॥ धुपदं॥

- २ सतियां ! सुगुर तणीं आणा विना रे, संता भेळी न रहिणो ताहि रे।
सतियां ! आज्ञा विण पास न बेसणो रे, कनै उभी पिण रहिणो नाहि रे॥
- ३ सतियां ! देवो-लेवो उपगरण नो, ओ तो करणो नहीं कोय।
सतियां ! मुनि नै सुणै तिण गाम में, जाणो नही अवलोय॥
- ४ सतियां ! जाण्यां बिना जावै कदा, अथवा मार्ग में हुवै गाम।
सतियां ! एक रात्रि सुं अधिको तसु, रहिवो नहीं तिण ठाम॥
- ५ सतियां ! कारण पडियां रहै कदा, तो गोचरी ना घर ताहि।
सतियां ! बांट लेणां तिण अवसरै, नित रो नित पूछणों नाहि॥
- ६ सतियां ! वंदना करण जावै तो अलग सूं, (वंदना) कर पाछो बलणो सताब।
सतियां ! अधिक उभो रहणो नहीं, एहवो लिखत माहै छै जाब॥
- ७ सतियां ! कोई समाचार साधां तणां, पूछणा है तो अलगी सोय।
सतियां ! पूछी नै बलणो^२ सताब^३ सूं, पिण उभो न रहिणो कोय॥
- ८ सतियां ! सतगुर रा कह्यां थकी, बले कारण पडिया ताम।
सतियां ! बात न्यारी दै तेहनीं, इम लिखत में कह्यो भिक्खु स्वाम॥
- ९ सतियां ! किण ही संत अनै सतियां मझे, दोष देख्या कहिणो ताहि।
सतियां ! अथवा कहिणो गुर आगलै, और किण ही आगै कहिणो नाहि॥
- १० सतियां ! रहिसै-रहिसै किण ही भणीं, और भूंडी जाणै ज्युं तास।
सतियां ! करणो नही छे तेह नै, ए स्वाम वचन सुप्रकाश॥
- ११ सतियां ! किण ही आरज्यां जाण नै, दोष सेव्यो हुवै जो ताहि।
सतियां ! (तो) पानां मांहि लिखियां बिना, विगै तरकारी खांणी नाहि॥

१. लय : हंसा नदीय किनारै रूखड़ा रे

३. शीघ्रता ।

२. वापिस होना

- १२ सतियां ! कदा कारण पड़ियां ना लिखै, और आर्या नै कहिणो जोय।
सतियां ! सायद^१ कर नै वेगो लिखणो पछै, लिख्या विना नहीं रहिणो कोय॥
- १३ सतियां ! आय गुरां रे आगलै, मूढा सूं न कहिणो विण आण।
सतियां ! अजोग भाषा नहीं बोलणी, मांहोमां खोटी वाण।
- १४ सतियां ! कोई साधु अनै साधवियां तणां, ओगुण काढै तो सुणवा रा त्याग।
सतियां ! इतरो कहिणो तेहनै, 'स्वामी जी नै कहिजो' सुद्ध भाग॥
- १५ सतियां ! जिण रा परिणाम टोळा मझे, होवे रहिण तणां निकलंक।
सतियां ! ते गण माहै रहिजो सही, पिण मन में न राखणो बंक॥
- १६ सतियां ! (पिण) टोळा बारै हुवां पछै, संत-सत्यां रा जाण।
सतियां ! अनंत सिद्धां री साख सूं, अवगुण बोलण रा पचखांण॥
- १७ सतियां ! कोई टोळा बारै नीकली तणीं, मानै उणा लखणो ही वाय।
सतियां ! कै मानै भेषधारी (भागल) धर्म रा, पिण उत्तम जीव तो मानै नाय॥
- १८ सतियां ! बलि कोई याद आवै कदा, ते पिण लिखणो लेख।
सतियां ! बलै करड़ी-करड़ी मर्याद नै, ऐ तो गणपति बांधै बिशेख॥
- १९ सतियां ! अनंत सिद्धां ही साख सूं, त्यां में पिण नटवा रा त्याग।
सतियां ! अरै^२ हैजो परिणाम है तिका, नहीं सरमासरमी रो माग॥
- २० सतियां ! आज पछै किण ही आर्या रे, अजोगाई कीधी जो काय।
सतियां ! प्राछित तो देणो तसु रे, हेलणी चिहु तीर्थ मांय॥
- २१ सतियां ! बलै च्यार तीर्थ माहै निंदणी रे, पछै कहोला म्हानै भांडे जाण।
सतियां ! करै फितूरो मांहरो रे, तिण सूं पहिलां रहिजो सावधान॥
- २२ सतियां ! सावधान जो ना रही रे, तो भूडी दिसोला लोकां मांय।
सतियां ! पछै कहोला म्हानै कढो नहीं रे, तिण सूं पहिला दियो है जताय॥
- २३ सतियां ! लिखत ऋष भीखन तणों रे, बावनै संवत् अठार।
सतियां ! सतियां फागुण सुदी चवदश दिनै रै, ए स्वाम वचन श्रीकार॥
- २४ सतियां ! तीजी ढाळ बावना लिखत नीं रे, जोड़ी उगणीसै चवदै उदार।
सतियां ! चौथा कृष्ण वैशाख में रे, जय-जश गणपति संपति सार॥

ढाल : ११

दूहा

१ लिखत बावना री हिवै, चौथी ढाल समाध।
धेठी अज्जा ऊपरै, बांधी ए मर्याद॥

‘स्वाम के वच प्यारे ।

आ तो स्वाम मर्यादा भारी, सासण सुखकारी ॥ धुपदं॥

२ किण ही आय्या नै मांहोमांहो, ऊपजै एहवा अध्यवसायो।

स्वाम के वच प्यारे ।

३ कारण विण ले कारण रो नामो, औरां आगै करावै कामो॥

४ बलै कारण रो नाम जतावै, औषध सूंठादिक उन्हों आहार ल्यावै॥

५ इत्यादिक संक मेटण रो उपायो, मर्यादा बांधी छै ताह्यो॥

६ जितरो गोचरी आप न उटै, तिण सूं विमणो^२ ऊठणो पूटै।

७ विहार माहै बोझ उपड़ावै, विगै त्याग जिता दिन पावै॥

८ बलै उण रो बोझ पिण पाछो, ओ तो विमणो उपाड़णो जाचो॥

९ आहार आछो जो लेवै, तिण रो पाछो विमणो टाळ देवै॥

१० किण रो बहिर मांगै नै ल्यावै, तो पिण विमणो टाळणो भावै॥

११ विगत लिखिये छै तेहनीं, आ तो खोड़ मिटावण जेहनी॥

१२ पांच लूंग खाय तो तिण नै, इक दिन विगै टाळणो जिणनै॥

१३ टका भर निज पांती रो आवै, घृत तिण दिन टाळणो चावै॥

१४ इम बीजाई बोल विशेषो, लिखिये छै त्यांरो पिण यो लेखो॥

१५ अधेला भर सूंठ लेवा रो, इक दिन सपी टाळणो त्यांरो॥

१६ अधेला भर अजमा रो, टका भर सपी टाळणो ज्यांरो॥

१७ खांड सूं दुगुणो घी जाणो, मांगी आणै तो टाळणो पिछाणो॥

१८ मिश्री सूं चौगुणो घृत सारो, मांगी ल्यावै तो टाळणो जिवारो॥

१९ गुळ सुं दुगुणो घृत टाळो, अथवा गुळ बरोबर घृत न्हालो॥

१. लय : ज्यांरो सोहे केसरिया साड़ी लियां फिरत राधिका प्यारी।

२. दुगुणा।

- २० दूध-दही सू दुगुणो तेहिज देखो, अध सेर दूध-दही रो दिन एको॥
 २१ पैला आगै उपगरण उपड़ावै, तसु घृत इक दिन टळावै॥
 २२ आथण रो उन्हों आणै, आंख्यां में काजल माणै॥
 २३ पीपलामूळ टांकरो^१ जाणी, चक्षु में औषध रो पिछाणी॥
 २४ तीन वार दिसां जावै, दूजै दिन इक टक लूखो खावै॥
 २५ राते दिसां जाय तिण रै, बे दिन लूखो जिणरे॥
 २६ गूतो^२ पीवै धर रागो, तिण रै दिन पनरै विगै रा त्यागो॥
 २७ जिण रो कारण जाणै उघारो, अथवा उण नै धेठी न जाणै लिगारो॥
 २८ तथा सरल जाणै तिण नै सारी, अथवा गुर कहै तिण री बात न्यारी॥
 २९ लिखतू आर्या मेणां, लिखतू अजा धनु केणा॥
 ३० लिखतू सदा सुखदाई, लिखतू बना कहिवाई॥
 ३१ लिखतू अजा बरजु जाची, लिखतू बीजा बना साची॥
 ३२ लिखा बावना री चौथी ढाळ, जोड़ी गणपति जय सुविसालं॥
 ३३ ए चौथी ढाळ माहि मर्यादं, तिण रो बिरला परमार्थ लाधं॥
 ३४ कारण बिना कारण रो ले नाम, तिण ऊपर मर्यादा छे ताम॥
 ३५ कारण विण कारण रो नाम, रात्रि दिसा जावै ताम॥
 ३६ तिण नै बे दिवस लूखो दाख्यो, पिण सर्व अज्जा रो न भाख्यो॥
 ३७ इमहीज दिन में दिसा तीन वार, दूजै दिन एक टंक लूखो धार॥
 ३८ ए पनरइ बोल धेठी रा, पिण म जाणो सहु-समणी रा॥
 ३९ उगणीसै चवदै वैशाखै, सातम विद अभिलाखै॥
 ४० भिक्खू भारीमाल ऋषरायो, जय जोड़ी है तास पसायो॥
 ४१ शहर सुजानगढ़ रंगरेला, हुआ संत-सत्यां रा मेला॥
 ४२ पणवीस संत सकज्जा, सखर पचासी अज्जा॥

१. वृक्ष वाला पीपलामूळ।

२. थोड़े काल की ब्याई हुई गाय-भैंस का दूध।

ढाळ १२

दूहा

- १ वर्ष गुणसठै स्वाम जी, बांधी वर मर्याद।
श्रोता चित दे सांभळो, आणी अति अहलाद॥

‘देखो प्रबल प्रज्ञा भिक्खू स्वाम की।

विविध मर्यादा बांधी वारू, वारी हो स्वामीजी थांरा नाम की ॥धूपदं॥

- २ अरे सुगुणा ! ऋष भिक्खण सगलां संता रे, मर्यादा बांधी छे ज्यां रे,
संबत् अठार बत्तीसै त्यारै।

ते तो सर्व कबूल सुजाणं, तिण मर्याद थकी निकसांण,
तिलोकचंद नै चंदरभाणं।

ए मर्यादा लोप निकलिया, भागल हूवा कर्मा छलिया,
ते तो जिन मार्ग सूं टळिया।

दोषण तेह नै मोटो लागो, दशमा प्राछित नो तसु दागो
दीधा विण लेवा रा त्यागो।

एह त्याग छै सहु संतां रे, ॥देखो०॥

- ३ हिवै आगली वर मर्यादिं, कायक फैर नवी सुख साधं,
बांधी ते लिखिये आराधं।

सर्व संत सतिया रे ताह्यो, पूछी नै या कनै कहिवायो,
मर्यादा बांधी सुखदायो।

आगल लिखिये छै ते मर्यादा ॥देखो०॥

- ४ सगला संत सती सुखदायो, भारमलजी री आज्ञा मांढ्यो,
रुड़ी रीते चलणो ताह्यो।

शेखै काळ विहार सचेती, चोमासो करणो सुभ खेती।
भारमलजी री आणा सेती।

आज्ञा विना कठेइ न रहिणो छै ॥देखो०॥

- ५ दिख्या देणी ते पिण जाणी, भारमल जी रे नाम कहाणी,
 दिख्या देइ संपणो आणी।
 ममता वस्त्र अनै चैलां री, वलि साताकारी खेलां री,
 इत्यादिक अनेक बोलां री।
 ममता कर कर डूबा जीव अनंता॥देखो०॥
- ६ ममता कर कर जीव अनंता, चरण गमाई नै मति भ्रंता,
 नरक निगोदा माहि भमंता।
 बलै भेषधारां रा सोयो, एहवा चैहन प्रतक्ष अवलोयो,
 तिण सूं शिष्य प्रमुख नहीं जोयो।
 ममता मिटावण रो उपाय कीधो॥देखो०॥
- ७ ममता मिटावण तणों सुहायो, शुद्ध चारित्र पाळण रो ताह्यो,
 उपाय कीधो छै सुखदायो।
 विनय मूल वर सखर सधीको, न्याय मार्ग निरमल रमणीको,
 ते चालण रो उपाय तीखो।
 निरपक्ष पणां थी एह कीयो छै॥देखो०॥
- ८ विकळा नै मूंडै भेषधारी, भेळा करै अधिक दुखकारी,
 शिष्यां तणां भूखा अविचारी।
 एक-एक रा अवगुण बोलै, फाड़ा तोड़ो कर मोह झोले,
 कजीया राड़ करंता डोले।
 एहवा चिरत देख मर्यादा बांधी॥देखो०॥
- ९ शिष साखा रो वर संतोषो, सुखै चरण पाळण रो चोखो,
 उपाय कीधो छै निरदोषो।
 संत सत्यां पिण इमज जणायो, भारमलजी री आज्ञा मांह्यो,
 चालणो रूडी रीत सवायो।
 शिष्य करणां ते भारमलजी रे करणा॥देखो०॥
- १० अवरां रे चेला करवा रा, जावजीव लग त्याग उदारा।
 ए मर्यादा महासुखकारा।
 भारमलजी शिष्य करै सुहायक, बुधवंत साध कहै ओ लायक,
 जो प्रतीत आवै सुखदायक।
 एहवो भारमलजी नै चेलो करणो॥देखो०॥

- ११ बीजा साधां नै समभावै, प्रतीत जो तिण री नहीं आवै
तो नहि करणो छै प्रस्तावै।
कियां पछै कोई अजोग होयो, ते पिण बुधवंत मुनि कहै सोयो,
छोड़ देणो तसु कहिण सुजोयो।
किण ही धेषी रा कह्या सूं छोड़णो नाहि॥देखो०॥
- १२ नव पदार्थ नै ओळखाई, दीक्षा देणी छै सुखदाई,
आचार पाळा छां हिव ल्याई।
तिण हिज रीत पाळणो चोखो, इण माहैं कोई जाणो जोखो,
ते हिवड़ां कहिजो तज दोखो।
पछै मांहोमांहि तांण न करणी॥देखो०॥
- १३ जो किण नै भ्यासै दोष विपरीतो, तो खंच नहीं करणी ए नीतो,
करणी बुधवंत री प्रतीतो।
भारमलजी री इच्छा थाई, जद चरण लघु शिष्य नै हित ल्याई,
अथवा चरण वृद्ध गुर भाई।
सूं पै गण रो भार समाधी, सर्व संत सतियां गुण साधी,
एकण री आज्ञा आराधी।
चलणो है तसु आण प्रमाणे, असमात्र नहीं करणी ताणो,
एहवी रीत बांधी छै जाणो।
संत सत्यां रो मार्ग चाले जठा तांई॥देखो०॥
- १४ गुणसठा लिखत री पहिली ढाळ, उगणीसे चवदै गुणमाल,
विद वैशाख दशम तिथि न्हाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद, रची जोड़ जय संपति साध,
सहर सुजानगढ़ अविराध।
संत सती एक सो दस हुंता॥देखो०॥

ढाळ १३

दूहा

१ लिखत गुणसठा री हिवै, सुणजो दूजी ढाळ।
भिकखू स्वाम तणा भला, गूथूं वचन विशाल॥

- 'स्वाम भिकखू नीं रे आछी, कांई बुद्धि उत्पत्तिया भारी।
जबर मर्यादा रे जाची, कांई बांधी अधिक उदारी॥
भक्ति विनय रस रे भणियो, ते अखंड मर्यादा अराधै।
सखर गुणी जन रे सुणियो, ते सकल मनोरथ साधै ॥धूपदं॥
- २ असुभ कर्म रे जोग सूं कांई, गण मां सूं कोई साध।
फाड़ातोड़ो कर निकळै, कांई एक दोय त्रिण आद॥
फिट-फिट जग में रें थावै, अवनीतपणां नै प्रसंगो।
दुख बहु दुर्गति रे पावै, इम जाण मर्याद म लंगो॥
- ३ बहुत धुरताई ते करै, बुगलध्यानी हुय जाय।
तसु साधु नहीं सरधणा, चिहुं तीर्थ में न गिणाय॥
- ४ यां नै चतुरविध संघ ना, निंदक जाणवा छार।
एहवा नै वांदै तिको, छै जिण आशा बार॥
- ५ कदाचित कोई फेर सुं, दिखया ले तज लाज।
अवर संत छै तेहनै, असाधु सरधावण काज॥
- ६ तो पिण उण नैं साधु नहि सरधणो, जिन वच न्हाल।
उण नै छैडवियां थकां, ऊ दे काढ़ै आळ॥
- ७ तसु एक बात पिण नाहि मानणी, उण तो अनंत संसार।
दीसै छै आरै कियो, अवगुण रो भंडार॥
- ८ कदा कर्म धको दियां, टळै टोळा सूं कोय।
तो उण रे टोळा तणां, संत सत्यां रा सोय॥
- ९ अंसमात्र अवगुण बोलण रा, हुंता अणहुंता जाण।
अनंत सिद्धां री आण छै, तिण नै पंच पदां री आण॥

१.लय- कोरो कांसो जळ भर्यो कांइ धरती सोस्यां जाय वारु दखिण री चाकरी।

३६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १० पांचूं पदां री साख सूं, त्याग अवगुण रा जाण।
(किण ही) संत सत्यां री, संक पडैज्यूं बोलण रा पचखांण॥
- ११ कदा विटळ उ होय नै, भांगै सूस अयाण।
तो हळुकर्मी नै न्यायवादी तो, मूळ नै मानै वाण॥
- १२ उण सरिखो विटळ कोई मानै, ते लेखा में नांहि।
इस विध भिक्खू भाखियो, प्रगट लिखत रे मांहि॥
- १३ हिवै किण ही नै छोडणो, पडै मेलणो ताम।
किण ही चरचा बोल रो, पडैं किंवारे काम॥
- १४ तो बुधवान मुनीश्वरु, विचार नैं तिण वार।
करणो इम भिक्खू कड्यो, अखर लिखत में सार॥
- १५ बले सरधा रो बोल पिण, बुधवंत हुवै ते सोय।
विचार नै संचै तदा, बैसाणणो अवलोय॥
- १६ जो कोई बोल वैसे नहीं, तो तांण न करणी रंच।
केवळिया नै भोळावणो, पिण अंस न करणी खंच॥
- १७ लिखत गुणसठा री कही, दूजी ढळ सुभाष।
उगणीसै चवदै समै, वदि चवदश वैशाख॥

ढाळ १४ दूहा

- १ लिखत गुणसठा री हिवै कहियै तीजी ढाळ।
भिक्षू स्वाम तणां भला, वारू वचन विशाल॥
- ‘वर भिक्षू नी मयादि, अखंड आराधिये।
ते सुगुणा सुवनीत कै, शिव पद साधिये॥ ध्रुपदं॥
- २ बीस कोस चालीस, अथवा अळगी दूर सूं।
वारू कर चउमास, उतरिया जरूर सूं॥
- ३ अथवा शेखे काळ, तंतू जाचियो महीं।
आप मतै फाड़ तोड़, बांट पहिरणो नहीं॥
- ४ कदा जरूर रो काम, पड़ै तो तिण अवसरै।
जाडो-जाडो बांट लेणो, महीं परिहरे॥
- ५ तंतू महीं गणि आंण विना बांटणो नहीं।
महीं तो गणपति पास, आण मैलणो सही॥
- ६ आचार्य जथा जोग, इच्छा आवै ज्युं दियै।
ते लेणो तिण री बात, पाछी ‘न’ चलाविये॥
- ७ इण नै तंतू सार, महीं दीधो सही।
इण नै मोटो दीध, एम कहिणो नहीं॥
- ८ कर्म धको किण वार, देवै किण ही भणीं।
ते टोळा सूं न्यारो, पड़ै चूकै अणीं॥
- ९ अथवा टोळा वार, काढ़ै तिण नै कदा।
तथा आपहीज न्यारो, हुवै ग्रहै आपदा॥
- १० तो इन सरधा रा जाण, भाई बाई हुवै तिहां।
रहिणो नहीं तिण ठाम, टालोकर नै तिहां॥
- ११ एक भाई बाई, त्यां पिण रहिणो न अछै।
वाटै वहतो एक रात्रि, ते पिण स्व इछै॥
- १२ रहै कारण सूं तो पंच, विगै नै सूंखड़ी।
खावा रा छै त्याग, अनंत सिद्ध साखे करी॥
- १३ लिखत गुणसठा री ढाळ, तीजी वैसाख में।
विद चवदश सुखकार, उगणीसै चवदै समै॥

१. लय-काया करै रे पुकार जंगल विच क्यूं धरी

३८ तेरापंथ : मयादा और व्यवस्था

ढाळ १५

दूहा

- १ लिखत गुणसठा री हिवै, चौथी ढाळ सुचंग।
मर्यादा पाळै मुनि, विमल चित्त जल गंगा ॥

'स्वाम थारी उत्पतिया बुद्धि भारी, हूं वारी२ हो स्वाम बांधी दूढ़
मर्यादा उदारी। हूं वारी हूं वारी हो स्वाम आप शासण रा सिणगारी॥धूपदं॥

- २ टोळा मांहै उपगरण करै ते, परत पाना लिखे सागो।
परत पात्रादिक गण मांहै जाचै, सर्व साथै ले जावण रा त्यागो॥
३ एक बोदो३ चोलपटो नै बोदी पछोवडी, बोदो रजोहरणो ताहि।
मुखपति नै वलि खंडिया उपरंत, साथै ले जावणा नाहि॥
४ गण री नेश्राय रा उपधि सहु, संतां रा ते किम राखै।
और अंस मात्र ले जावण रा त्याग छै, अनंता सिद्धां री साखै॥
५ कोई पूछै यां खेत्रा में रहिण रा, क्यूं पचखांण कराया।
तिण ने कहिणो रागा-धेखो बधतो जाण नै, त्याग कराया सुखदाया॥
६ वलै कलैस नै वधतो जाण नै, उपगार घटतो जाणी।
इत्यादिक बहु कारण आलोची, त्याग कराया पिछाणी॥
७ तिलोक चंदरभाण नै दशमो प्रायछित, दियां विण लेवा रा त्याग है ज्यांही।
अै तो दोनूं महा दगादार छै, मांहि लेवा जोग नांहि॥
८ वलै कोई याद आवै ते लिखणो, तिण रो पिण जे वेणो।
ना कहिवा रा त्याग छै सहु रे, सर्व कबूल कर लेणो॥
९ सर्व साधां रा परिणाम जोय नै, रजाबंध कर सांधी।
यां कना सूं जूदो-जूदो कहिवारी, ए मर्यादा बांधी॥
१० परिणाम जिण रा चोखा हुवै ते, या मर्यादा तमाम।
बलि यां सूंसा में अरै होयजो, सरमासरमी रो नहीं काम॥
११ मूंहढे और नै मन में और, इम तो साधु नै 'न' करणो ज्यांही।
इण लिखत में खूंचणो न काढणो कोई, और रो और बोलणो नांहि॥

१. लय-झिरमिर झिरमिर मेहा बरसै आंगण हो गयो आलो,

२. पुराना।

- १२ अनंता सिद्धां री साख करी सहुरे, पचखाण ए जाण।
ए पचखाण भांगण रा अनंता, सिद्धां री साख सूं पचखाण॥
- १३ किण ही अनेरा टोळा मांहे, जावा रा पचखाण॥
मर खपणो, पिण सूस न भांगणो, एहवा अखर लिखत में जाण ॥
- १४ ओ एहवो लिखत लिखतू ऋष भिक्खन रो, संवत् अठारै सो सार।
गुणसठै महासुदि सातम शनि, हेठे साधां रा अखर उदार॥
- १५ लिखतू ऋष सुखराम, ऊपर लिखियो ते सही पिछाणो।
लिखतू अखेराम ऊपर लिखियो, तेह सही कर जाणो॥
- १६ लिखतू ऋष खेतसी ऊपर, लिखियो ते सही साचो।
लिखतू ऋष नानजी ऊपरलो, लिखियो ते सहुरे ही जाचो॥
- १७ लिखतू ऋष सुखा ऊपर लिखियो सही, लिखतू ऋष उदैराम।
लिखतू खूसाल ऋष लिखियो सही, लिखतू ओटा ऋष ताम॥
- १८ लिखतू ऋष रायचंद ऊपर लिखियो ते सही सुजाणो।
लिखतू डूंगरसी लिखतू भगा ऊपर, लिखियो ते सही पिछाणो॥
- १९ केयक संत स्वामी पास न हुंता, तिण वेला अखर किया नाही।
तिण सूं केयका रा नाम न घाल्या, त्यां पछै लिख्या ते नही इण मांहे॥
- २० आप आप रा कर सूं अक्षर, साधां लिखने ताह्यो।
ए मर्यादा अंगीकार कीधी, भिक्खू वयण धार्या सुखदायो॥
- २१ भिक्षु कर ना अक्षर देखी, जोड रची सुखकार।
उगणीसै चवदै मास वैशाखै, शुक्ल चौथ शनिवार॥
- २२ बावीस बाणू मुनि अज्जा लाडणू, सरस जोड जय साजी।
भिक्खू भारीमाल ऋषराय प्रतापै, जय जश संपति जाझी॥

ढाळ १६

दूहा

- १ वर्ष गुणसठै स्वाम जी, बांधी वर मर्याद।
ते पिण कर गणपति तणै, सखरी भाव समाध॥
- 'भिक्षु भजलै रे घर भाव॥ धूपदं॥
- २ साधु-साधवी नी मर्यादा, बांधी भिक्षु स्वाम।
एक दिवस माहै घी लेणो, वे पइसा भर ताम॥
- ३ च्यार पइसा भर मिष्टान, विगै लेणो उनमान।
मिश्री नै गुल खांड पतासा, आदि देई सहु जान॥
- ४ अधसेर दूध दही तिम गिणणो, तिम अधसेर ही खीर।
तिम अधसेर धनागरो जाणो, गणपति आण सधीर॥
- ५ खाजा सांकुली पापड़ीयादिक, पाव तणै उनमान।
पाव सीरा लापसी कहियै, चूरमादिक पहिछाण॥
- ६ एह मांहिली विगै कदाचित थोड़ी थोड़ी आय।
पाव तणां उनमान माहै, लेखव लेणी ताय॥

सोरठा

- ७ खाजा सांकुली आदि, पाव कढ़ा छै स्वाम जी।
सीरा लाफी चूरमादि, ए पिण पाव कढ़ा जुदा॥
- ८ खाजा सांकुली पाहि, फीकी कड़ाई विगय है।
वलि अल्प घृत गुलरी ताहि, तेल तणीं पिण तिण मझे॥
- ९ सीरा लापसी मांहि, खांड तणी वस्तु सहू।
वलि बहुत घृत गुल री ताहि, मालपुवादिक तिण मझे॥
- १० खाजा सांकुली मांहि, अल्प घृत नीं जे लापसी।
अति घृत वाली ताहि, सीरा में गिणणी सही॥
- ११ कदाच जो नहिं आय, सीरादिक नीं जे विगय।
तो अधसेर लिवाय, खाजा सांकुली आदि जे॥

१. लय: सीता आवै रे घर राग.....।

- १२ कदाच थोड़ी आय, खाजा सांकुली नीं विगय।
तसु बदलै न लेवाय, सीरादिक अति घृत तर्णी॥
- १३ ढाळ मांहि विस्तार, भिक्षु कृत मर्याद जे।
जय गणि तिण अनुसार, न्याय सोरठिया में कह्यो॥
- १४ पाव-पाव पहिछांण, ए दोनूं इ जु जुई।
अधिक भोगवै जाण, तो ते बीजे दिन नहीं॥
- १५ 'उपवास तर्णै पारणै च्यार, पइसा भर घी कहिवाय।
बीजा बोल कह्या उतराइज, गणपति रहिस बताय॥
- १६ छठ अठम दशम तर्णै पारणै, षट पइसा भर घी ताय।
बीजा बोल कह्या इतराइज, गणपति कहै ते न्याय॥
- १७ पंच आदि मोटी तपसा रे, पारणै एम कहौज।
आठ पइसा भर घृत आख्यो, बीजा बोल उतराइज॥

सोरठा

- १८ आख्यो भिक्खू एम, बीजा बोल उतरा अछै।
घृत बधायो तेम, बीजा बोल न बधारणा॥
- १९ भारीमाल ऋषराय, जय गणी नीं पिण आण ए।
गणपति आणा मांय, दोष कोई मत जाणजो॥
- २० 'कदा टका भर सेती अधिको, जाणी नै घृत खाय।
तो दूजै दिन घृत न खाणो, छै ए निरमळ न्याय॥
- २१ और दूध दही सुंखडियादिक नी, मर्यादा शुद्ध जाण।
अधिक लिया दूजै दिन तेही, विगय तणा पचखांण॥
- २२ दोय त्रिण दिन लगै कदाचित, जो सपी न खाधो होय।
तो चार पइसा भर घृत लेणो, निमळ चित्त सुजोय॥
- २३ अथेला तथा पइसा भर थी, वधै बांटतां ताहि।
तो एकण नै देणो उतरो, दूजै दिन देणो नाहिं॥
- २४ आहार कदा नहीं मिलियक रो मिलियां जोग।
घी खांडगुळादिक अधिक लेण रो, नहीं अटकाव प्रयोग

१. २. लयः सीता आवै रे धर राग.....।

सोरठा

- २५ आटादिक रै मांहि, अथवा आटादिक विना।
अल्प आहार जो आय, तो अधिक विगै री आगन्या॥
- २६ अधिक विगै रे काज, मिल्यां आहार नहीं छोड़णो।
अधिक विगै नो साज, आहार अल्प मिलवै दियो॥
- २७ ^१आचार्य पासै साधु-साधवी, शेखे काळ चोमास।
रहै त्यारै मर्याद नहीं ए, सूंस नहीं ए तास॥
- २८ साधु-साधवी कदै घणा हुवै, कदेयक थोड़ा थाय।
कदै आहार बहुत आवै, कदेयक थोड़ो आय।
- २९ तेह तणों अवसर आचारज, देखी लेसी ताम।
त्यांरो कोई बीजो साधू, लेण न पावै नाम॥

सोरठा

- ३० इण अक्षरे कर तास, शेष काळ चौमास में।
साधवियां गणि पास, रह्या स्वाम नीं आगन्या॥
- ३१ गणि आज्ञा बिना शेष काळ, चोमास रहै जितरा दिन रूस।
त्याग सूखड़ी पंच विगय नां, जावजीव ए सूंस॥
- ३२ कोई गण मांहि थकी टळी, नीकलै, अथवा काढ़ै बार।
तो पिण तिण नै त्याग अछै, ए जावजीव लग सार॥
- ३३ यूं कहिणो नहीं भेळा थकां, म्हारै था त्याग सुमाग।
अबै म्हारै कोई सूंस नहीं, इम पिण कहिवा रा त्याग॥
- ३४ कोई लोलपी थको कदाचित, विगै खावा री हूस।
टोळा बारै टळै कर्म वस, तिण रे पिण ए सूंस॥
- ३५ वर्ष गुणसठै स्वाम भिखनजी, बांधी ए मर्याद।
संवत् मिति रो नाम नहीं, पिण हुंती धारणा याद॥
- ३६ संवत् उगणीसै चवदै विद, अष्टमी पहिलो जेठ।
भिक्षू भारीमाल ऋषराय प्रतापै, जयजश संपति भेट॥
- ३७ समण तीस इक सो इक समणी, सखर संपदा सार।
जयवर गणपति संपति जोड़ी, लाडनूं शहर मझार॥

ढाल : १७

दूहा

- १ अखेराम जी गण थकी, टर फिर आवत ताम।
भिक्षू लिखत कियो इसो, सुणो राख चित ठाम॥

- १ ए तो स्वाम बड़ा सुखकारी रे, भिक्षू नी बुद्धि भारी।
आ तो उत्पतिया अधिकारी रे, निपुण न्याय नेतारी^१ ॥धूपदं॥
- २ अखेरामजी रा गण मांहै, आवण रा परिणामो।
बलि परिणाम संजम पालण रा, देख्या अति अभिरामो॥
- ३ पिण अप्रतीत घणी ऊपनी, जो गण सूं अभिलाखै।
ए प्रतीत पूरी उपजावै, अनंत सिद्धां री साखै॥
- ४ तो टोळा मांहि फिर लेणां, तसु बिध सुणो उदारु।
सभाव आप रो फेर बड़ां रे, छांदे^३ चालणो वारु॥
- ५ चारित्र सुद्ध पालणो चोखो, मुनिवर नों आचारो।
दीठोईज अछै नहीं छानो, आछी रीत उदारो॥
- ६ कदाचित ए टोळा सेती, न्यारा टळै स्वमेवां।
तो च्यांरू ही आहार तणां, पचखांण करै तो लेवां॥
- ७ खुणस^४ धरी नै अधिक खूंचणो^५, काढी नै ततखेवां।
अळघा ह्वेण तणां पचखांण, करै तो मांहै लेवां॥
- ८ संलेखणां संथारो संत, करायां तुरत करेवां।
ते पिण नां कहिवा रा त्याग-करै तो गण में लेवां॥
- ९ धेठापणो^६ सभाव में, अविनीतपणें बलि देखे।
अथवा मुनि रे चित नहीं वैसे, अवगुण जाण विशेष्टे॥
- १० इत्यादिक अनेक बोलां सूं, छांडै संत सुभेवा।
तोच्यारआहार मुख में धालण रा, त्याग करै तो लेवां॥

१.लयः ए तो जिण मारग रा नायक रे.....।

२. अधिकारी

३. अधीन

४. आक्रोश।

५. बुद्धि।

६. धृष्टता।

- ११ टोळा मांहि पत्र लिखे ते, सगळाइ साधां रा।
साध साधवी श्रावक श्रावका, काढे खूचणां त्यां रा॥
- १२ दोष तथा अणुहुंतो पर नै, भ्यास्यां दंड धरेवां।
पिण ना कहिवा रा त्याग, करै तो गण में लेवां॥
- १३ जिण साध साथे मेल्यां तसु, हुकम प्रमाणे रहणो।
तेहनीं आज्ञा नहीं लोपणी, आण प्रमाणे वहिणो॥
- १४ जे कोइ संत साथै ले जावै, रजाबंध^१ तसु करणो।
अंसमात्र ओळमो^२ आवै, ज्यूं मूळ न ही आचरणो॥
- १५ प्रतीत आ उपजावणी पूरी, सखरी रीत सदीवा।
आज पंचमा आरा मांहि, भारीकर्मा बहु जीवा॥
- १६ सुध आचार पळै नहीं त्यांसूं, न फिरै निज स्वभावो।
पछै कर्म उदै सूं एहवी भाषा, बोलै असुभ प्रभावो॥
- १७ एकल ह्येण तणां परिणाम, हुवै जद बोले वायो।
साधपणों गण में नहीं दीसै, हूं किम रहूं गण मांझो॥
- १८ इम कही बहु उपद्रव करै, वलै अवरणवाद वदैवा।
इणविध करवा रा पचखांण, करै तो मांहै लेवां॥
- १९ सरधा में फेर पड़चां, बुधवंत री प्रतीत सूं मानेवां।
ए पिण ना कहिवा रा, त्याग करै तो मांहै लेवां।
- २० आचार विरुद्ध नहीं चालणों, चूक पडै तो मुनि नै कहैवां।
तांण करि तोड़ण रा त्याग-करै तो मांहै लेवां॥
- २१ ओ 'मुनि री' इच्छा आवै, जिण रीते वरतेवां।
पाछो 'ओरो'^३-ऊतर करण रा, त्याग करै तो लेवां॥
- २२ गण सूं तो नहीं ह्येणो एकलो, तथा बे तीन भिलेवां।
आदि देइ अलगो न ह्येणो, ए त्याग करै तो लेवां॥
- २३ सर्व सरीर पोता रो छै ते, तजी मान अहंकारो।
थिर चित संता कार्य थापणो, आणी हरष अपारो॥
- २४ निज मन सूं ढीला, जाणे तो, चिहुं, त्रिण आहार तजेवां।
किण सूं मिल नै जूदा ह्येण रा, त्याग करै तो लेवां॥
- २५ तवन सझाय वखांण सूत्र नों, काम भलाय कहैवां।
छती सक्ति नां कहिवा रा, पचखांण करै तो लेवां॥

१. वचनबद्ध

३. प्रत्युत्तर।

२. उपालम्भ।

- २६ अंसमात्र धेठापणों रे, मान अहंकार न धरणो।
तुरंग^१ खिण रंग विरंग न करणो, जो बंछै भव तिरणो॥
- २७ इत्यादिक बहु बोल याद, आवै ते बले लिखेवां।
तेह नां पिण नां कहिवा रा, पचखांण करै तो लेवां॥
- २८ एहवी ए प्रतीत पकावट, उलट धरी उपजावै।
तो सगलां नै प्रतीत आवै, इम भिक्खू फुरमावै॥
- २९ समत् अठारे गुणतीसे, फागुण सुदि वारस सारो।
वृहस्पतिवार लिखतू ऋष भीखन, दूसी गाव मझारो॥
- ३० ए लिखत थिरपाल फतेचन्दजी, हरनाथ भारमलजी नै।
तिलोकचंदजी नै पिण ए, संभलायो हरष धरी नै।
- ३१ पाछे कह्या लिख्या तिके रे, बोल सारा इ तामो।
अखेराम सांभळ नै, ए अंगीकार किया छै आमो॥
- ३२ चरण संघात त्याग कर, साधां नै प्रतीत उपजाइ।
लिखतू अखेराम ऊपरलो, लिख्यो सही छै ताहि॥
- ३३ ए दोनूं इ गाथा तणां रे, अक्षर अति अभिरामो।
अखेरामजी निज कर सेती, लिख दीधा छै तामो॥
- ३४ उगणीसे चउदे समे रे, महा सुदि छठ गुरवारो।
जय जश गणपति जोड़ करी ए, आणी हरष अपारो॥
- ३५ चउतीस संत अठ्यासी समणी, रतनगढ़ रंग रेला।
ठाणां एक सो बावीसा सूं, मंडिया जबरा मेला॥

१. तरंग।

ढाळ : १८

दूहा

- १ बावीस टोळा मांहिली, फतू आदि दे च्यार।
भिक्षु गण आवी तदा, कीधो लिखत उदार॥

‘जोय जो रे नीत निपुण स्वामी तर्णी रे॥धूपदं॥

- २ आर्या फतूजी आदि च्यासूं भणीं रे, दिख्या दीधां पहिली सीखमाण सार रे।
आचार गोचर विधि लिखिये अछै रे, ते चरित्र संघाते त्याग रे॥
- ३ ऊभी नै कीडी जद सूझे नहीं, तो संलेखणा^२ मंडणो हरष अपार।
विहार करण री सकत हुवै नहीं, जद पिण संलेखणा सुविचार।
- ४ आर्या रो विजोग पड़्यां कल्पे नहीं, जद पिण संलेखणा सुविशेष।
ए बोल तीजा में भिक्खू भाखियो, नहि कल्पै जद संलेखणा ए रेस॥
- ५ चोमासो करणो साधु कहै जिहां, रहणो साधु कहै ज्यां सेखे काळ।
चेळी करणी साधां रा कहण सूं, आजा विण करणी नहीं निहाल॥
- ६ शिष्यणी कीधां पछै पिण अर्जिका, साधपणां लायक न हुवै सनूर।
साधां रा चित मांहि बेसे नही, तो संता रा कह्या सू करणी दूर॥
- ७ जो साधां री इच्छा आवै एहवी, जुदो करावै विहार सुजोय।
और आरजिया साथै जुइ^३, मेले तो नां नहीं कहिणो कोय॥
- ८ साध साधवियां रो कोई खूंचणो, दोष प्रकृतादिक रो ताहि।
अवगुण देखै कहिणो गुरां भणीं, पिण गृहस्थादिक आगै कहिणो नाहि॥
- ९ आहारपाणी न कपड़ादिक मझे, उपजे लोळपणां री संक।
तो साधां नै प्रतीत आवै जिण विधै रे, जिण विध करणो छाडी बंक॥
- १० अमल तम्बाखू वस्त्र आदि दे, लेणो रोगादिक कारण ताहि।
पिण विसन^४ रूप तो ते लेणो नहीं, लिया इ सझे ज्यूं करणो नाहि॥
- ११ वलै सर्व साधु नै साधवियां भणी, आचार गोचार मांहि सुविहांण।
ढीला पड़ता देखै तिण अवसरै, अथवा संका पड़ती मन जांण।

१.लय : श्री जिणवर गणधर मुनिवर...

३. अलग।

२. अनशन की पूर्व तैयारी के लिए की जाने वाली तपस्या।

४. व्यसन।

- १२ जद समचै साध अनै सतियां भणी, करली^१ मर्यादा बांधै सार।
तो पिण नां नहीं कहिणो एह में, जब बांधै ते कर लेणी अंगीकार॥
- १३ इत्यादिक सीखामण साचै मनै, चारित्र संघाते सखर सुजाण।
अंगीकृत कर लेणी आछी तरै, जावजीव लगै ए पचखांण॥
- १४ संवत् अठारै तेतीसे समै, मिगशिर बिद बीज अनै बुधवार।
अंगीकार करायो लिखत बंचाय नै, अदरायो सामायिक चारित्र सार॥
- १५ छेदोपस्थापनी चारित्र बली दियो, जद पिण एहिज लिखत वंचाय।
हरष सूं अंगीकार कीधो अछै, च्यांरू इ आय्या चित चाय॥
- १६ संवत् उगणीसै चवदै समै, बिद फागुण छठ अनै गुरवार।
जोड़ कीधी बीदासर सहर में, जयजश गणपति संपति सार॥

सोरठा

- १७ लिखत तेतीसा मांहि, मर्यादा फतू तणी।
सहु समणी नी नांहि, केइ बोल सघला तणां।
- १८ वर चोतीसे स्वाम, लिखत सहु समणी तणों।
कीधो अति अभिराम, अक्षर छै तिण में इसा॥
- १९ फतूजी नै गण मांय, लीधा जद कीधो लिखत।
ए मर्याद सोभाय, सहु समणी नै कबूल छै॥
- २० इण विध आख्यो स्वाम, वरस चोतीसा लिखत में।
पिण बहु बोल तमाम, सघळी समणी रै नहीं॥
- २१ ऊभी नै अवलोय, जो कीड़ी सूझै नहीं।
विहार सगत घट्यां सोय, संलेखणा मंडणो सही॥
- २२ ए दोनूंइ बोल अवलोय, फतूजी नै ईज छै।
अवरां रे नही कोय, न्याय पैतालीसा लिखत में॥
- २३ आंख्यादिक वृद्ध गिलाण, कारणीक जे कोई हुवै।
व्यावच तसु अगिलाण, करणी रूडी 'रीत' सूं॥
- २४ संलेखणा री सोय, ताकीदी करणी नहीं।
वैराग बधै ज्युं जोय, बीजा नै करणो सही॥
- २५ विहार करण री रीत, काची निजर हुवै तदा।
बहु खपकर धर 'पीत', चलावणो तेह नै सही॥

१. कडी ।

- २६ पैताळीसा लिखत मांय, इण विध आख्यो स्वामजी।
ते बिहुं बोल इण न्याय, फतूजी नै ईज छ ॥
- २७ वले फतूजी रा लिखत माय, तीजो बोल कह्यो इसो।
विरहो आघ्यां रो थाय, जद करणी संलेखणा ॥
- २८ ए रीत सहुनीं जाण, विरह थया दोयां भणी।
कल्पे नहीं पिछाण, संलेखणा करणी सही ॥
- २९ साधां नै पिण ताम, पैताळीसा लिखत में।
इमहिज भिक्षु स्वाम, आखी तास संलेखणा ॥
- ३० कदाचि टोळा माहि, दोष जाण्यां रहिणो नहीं।
एकल होय नै ताहि, संलेखणा करवी कही ॥
- ३१ आत्म तणों कित्याण, देगो करणो तेह नै।
ए सरधा शुद्ध जाण, है तो गण में राखणो ॥
- ३२ गाळागोळो कर कोय, रहै तो तसु नहिं राखणो।
काढ देणो तसु सोय, पछै इ आळ दे नीकलै ॥
- ३३ लिखत पैताळीसा मांय, इण विध दाख्यो स्वामजी।
एकल भणी सुहाय, संलेखणा करवी कही ॥
- ३४ ए सरधा सुखदाय, शुद्ध कही भिक्षु स्वामजी।
संलेखणा बिन ताहि, नहीं रहिणो एकल भणी ॥
- ३५ सहु समणी नै ताम, दोयां नै कल्पे नही।
संलेखणा अभिराम, लिखत तेतीसा में कही ॥
- ३६ बोल तीजा रो न्याय, आख्यो म्हे विस्तार कर।
हिव आगल कहिवाय, बोल चोथो नै पांचमों ॥
- ३७ चोमासो सेखे काळ, रहिणो साध कहै जठै।
सहु समणी नै न्हाळ, बोल चोथो नै पांचमो ॥
- ३८ चेली करणी ताहि, साधां रा कह्यां थकी।
विण आज्ञा करणी नाहि, ए छठो बोल सहु तणे ॥
- ३९ लिखत बतीसा मांय, शिष्य सहु भारीमाल रे।
करणा कह्या सुहाय, अवर तणें करणा नहीं ॥
- ४० भारीमाल 'रजाबंध' होय, शिष्य सूपै जो अवर नै।
तो तसु करणो सोय, विण आज्ञा करणों नहीं ॥

- ४१ तिण सू फतूजी रा लिखत माहि, छठा बोल माहै कह्यौ।
चेली करणी ताहि, साधां री आज्ञा थकी॥
- ४२ बोल सातमां मांय, कीधां पछै अजोग है।
तो देणी छिटकाय, साधां रा कढ्यां थकी।
- ४३ ए पिण सहु नै जाण, न्याय गुणसठा लिखत में।
बुद्धवंत कहै पिछण, (तो) अजोग नैं नहिं राखणो॥
- ४४ हिवै बोल आठमां माहि, आरजियां साथै जुई।
मेल्या नटणो नाहि, ए पिण बोल सहु तणों॥
- ४५ लिखत गुणसठे तास, आचारज री आंण सू।
शेखे काळ चोमास, विण आज्ञा रहिणो नहीं॥
- ४६ संत सत्यां रो जाण, दोष प्रकृत ओगुण तिको।
गुरु नै कहिणो आंण, न कहिणो ग्रहस्थादिक आगलै॥
- ४७ नवमो बोल निहाल, ए पिण छै सघलां तणें।
पचासै बावनै न्हाल, प्रगट अक्षर है लिखत में॥
- ४८ संत सत्यां रो कोय, दोष तुरत कहिवो तसु।
तथा गुरां पै सोय, अवर भणीं कहिवो नहीं॥
- ४९ हिवै दसमों बोल कहिवाय, लोळपणो जाणै मुनी।
वस्त्र अन्नादिक मांहि, तो प्रतीत उपजावणी॥
- ५० ए पिण सहुनों जाण, न्याय कहुं हिव एहनों।
लिखत गुणसठे आण, भाखी संत सत्यां भणी॥
- ५१ बीस कोस चालीस, अथवा अलगी दूर है।
चोमासो उतरचां दीस, अथवा सेखे काळ में॥
- ५२ कपड़ो जाच्यो होय, फाड़-तोड़ ते वस्त्र नै।
वैत^१-वैत नैं सोय, आप मते नहीं पहिरणो॥
- ५३ काम पड़ै जरूर रो ताय, तो जाडो-जाडो वांटणो।
महीं आचार्य रै पाय, आण मेलणो आगलै॥
- ५४ आचार्य इच्छा जोग, इच्छा आवै ज्यूं दियै।
ते लेणो तज सोग, पाछी बात न चलावणी॥
- ५५ वरस गुणसठे स्वाम, संत सत्यां नै वारता।
आखी इण विध ताम, वस्त्र ममत मेटण भणी॥

१. बांट-बांट कर।

- ५६ लिखत पचासा मांहि, आख्यो मुनि नै इण विधे।
किण री खावा पीवादिक री ताहि, करणो बड़ा कहै ज्युं तेह नै॥
- ५७ लिखत बावना मांहि, आरजियां नै इम कह्यो।
आहार आश्री मांहो मांही, बात चलावण रा त्याग छै॥
- ५८ शेखेकाळ चोमास, करणो बड़ा कहै जटै।
इत्यादिक सुविमास, विविध वारता त्यां कही॥
- ५९ हिवै बोल इग्यारमो जोय, अमल तमाखू आदि दे।
(लेणो) रोगादिक कारण सोय, विसन रूप लेणो नहीं॥
- ६० सहु समणी नै सोय, आचारज नीं आण ए।
आज्ञा सूं लै कोय, दोष नही छै तेह में॥
- ६१ मुनि नां लिखत मझार ए वस्तु वरजी नहीं।
(तिण सूं) सुगुर आण श्रीकार, आज्ञा विन लेणो नहीं॥
- ६२ वस्त तमाखू आदि, सूत्र मांहि वरजी नहीं।
गणपति बांधी मर्याद, आचारज रै हाथ है॥
- ६३ बोल बारमो सार, संता नै सतियां भणीं।
आचार गोचार मझार, ढीला पड़ता जाण नै॥
- ६४ सासण निमल समाध, सर्व संत सतियां भणीं।
करली बांधै मर्याद, तो पिण नां कहिणो नहीं॥
- ६५ सीख इत्यादिक सार, चरण संघात सुहामणी।
कर लेणी अंगीकार, जाव जीव पचखांण छै॥
- ६६ अठार तेतीसै सार, विद बीज बुद्ध मृगसर मझे।
ए लिखत वंचाय अंगीकार, कराय सामायक आपियो॥
- ६७ बले छेदोपस्थापनी फेर, दीधो लिखत वचाय नै।
कियो अंगीकार चित्त घेर, हरष सहित च्यारूं अजा॥,
- ६८ उगणीसै चवद उदार, फागुन विद अष्टम शनी।
जयजश गणपति सार, सरल जोड़ बीदासरे॥

(लिखतां रो निचोड़)

ढाळ १९

‘प्रणमूं गणपति संपति करणा ॥धुपदं॥

- १ भिक्खू भारीमाल ऋष नृप भारी, स्वामी न्याय मार्ग ना नेतारी।
सुखदायक स्वाम तणा सरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २ अखेराम जी नै गण मांहि लिया, भिक्खू बारै बोलां रा करार किया।
लिखत गुणतीसै अनुचरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ३ (भिक्खू) विविध मर्यादा बांधी भारी, एक गणपति नाम संपति सारी।
लिखत बतीसा मांहै निरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ४ फतूजी नै पिण मांहि लिया, भिक्खू बारै बोलां रा करार किया।
तेतीसै स्वाम वयण तरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ५ अज्जा क्रोध वसै देवै तूंकारो, पंच दिवस पांचू विगै परिहारो।
आंसू काढै तो दस दिन उच्चरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ६ ग्रहस्थ आगे उतरती रो एक मासो, विगै पांचू त्याग कढ्यो तासो।
लिखत चोतीसा मांहै वरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ७ ओरां में दोष देखी सेणो, तिण नै कही पानां में लिख लेणो।
इकतालीसा लिखत में ए निरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ८ गण बाहिर तथा मांहि जाणो, अंसमात्र उतरती रा पचखांणो।
पैताळीसै कढ्यो तिम पग धरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ९ आप में तथा गण में ताढ्यो, संजम जाणो तो रहिज्यो गण माढ्यो।
ठागां सूं रढ्यां पापे पिंड भरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १० दगाबाजी सूं रहै तिण नै जाणो, अनंत सिद्धा रो साख सूं पचखांणो।
बलै अनंत संसार संचरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ११ दोष तुरत धणी नै कढ्यो पेखी, तथा गुर नै कहै ते निरा पेखी।
घणां दिन सूं कढ्यो तो कुगति परणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥

१. लय-भारीमाल भजो भवियण प्राणी.....।

५२ तेरापंध : मर्यादा और व्यवस्था

- १२ गुरु आज्ञा विण इक निस उपरंत, एक ग्राम न रहै समणी संत।
पचासै बावनै ए सहु निरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १३ कर्म जोगे गण बार थयो, तो गुणसठा रा लिखत में एक कछो।
सरधा रा क्षेत्रां में नहीं फिरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १४ कर्म जोगे गण बार थया नै जाणो, अंस ओगुण बोलण रा पचखांणो।
हुंता अणहुंता पिण नहीं उचरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १५ गण में पाना लिख्या जाच्या जाणो, ते साथै ले जावण रा पचखांणो।
त्याग अनंता सिद्धां री साख भरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १६ मर्याद ए सुखदायो, पचासा गुणसठा लिखत मांछो।
अखंड आराध्या ऊवरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १७ कर्म वस गण बाहिर हुवै मंदा, एक दोय आदि जे अपछंदा।
एहवा नै साधू नां गिणणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १८ नहीं गिणणा च्यार तीर्थ मांछो, चिहुं संघ रा निंदक कछा ताछो।
एहवा पासथा नैं नहीं आदरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- १९ त्यां नै वादै ते पिण आज्ञा बारो, लिखत बतीसै गुणसठै अधिकारो।
स्वाम वचन हृदय धरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २० बोल सरधा आचार तणों कोइ, गुर बुधवंत संत कहै सोइ।
ऊचरंग सेती आदरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २१ कोइ बोल न वैसे दिल मांछो, तो केवलियां नै भलाय देणो ताछो।
खंच अंसमात्र पिण परहरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २२ और साधु रे नहीं घालणी संको, बलै मेट देणो मन रो बंको।
स्वाम वचन है सुख सरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २३ जिलो बांधण रा पचखांणो, अनंता सिद्धां तणी आणो।
पैताळीसै पचासै गुणसठै निरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २४ आर्या रो विजोग पड़्यां वरणी, नहीं कल्पै जद संलेखणा करणी।
तेतीसा लिखत मांछै वरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २५ दोष जाणै जो गण मांछो, तो टोळा मांछै रहिणो नाछो।
एकलो होय संलेखणा धरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २६ आ श्रद्धा हुवै तो गण मांछै रैणो, गाळा गोळो कर रहै तो उत्तर देणो।
लिखत पैताळीसै उच्चारणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २७ इण लेखे कारण पड़िया सोयो, दोय समणी इक मुनि नै जोयो।
संलेखणा ना कछा सरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥

- २८ इत्यादिक बहु मर्यादो, अति हरष धरी नै आराधो।
 थारा मिट जाय जन्म मरण फिरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- २९ उगणीशै चवदे वैशाखो, छठ सुकल लाडणूं अभिलाखो।
 ठाणा एक सो अठारै सुख सरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥
- ३० भिक्खू भारीमाल नैं ऋषरायो, जय गणपति संपति सुखदायो।
 स्वाम वचन धार्यां तिरणा, प्रणमूं गणपति संपति करणा॥

गणपति-सिखावण

दूहा

- १ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, समणी संपद हाथ।
तो नेठाउ^१ पंच ते, अधिक म संपै आथ॥
- २ कोइ समणी नै गणी, संपै सत्यां सवाय।
अन्य अज्जा वा मुनि भणीं, तर्क न करणी ताय॥
- ३ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, जे कोइ दीक्षा देह।
सिख-सिखणी^२ लेणा उरा, इण में गुण अधिकेह॥
- ४ अधिक गुणी मुनिवर अज्जा, संपै तसु कर दीख।
ते अन्य नै तसु ईसको, नहीं करवूं ए सीख।
- ५ तथा द्रव्य क्षेत्रादिके, गणि सोंपै तसु दीख।
करै तास कोई ईसको, ते अवनीत अलीक॥
- ६ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, त्रिण मुनि जे अगवाण।
गाहा^३ पणवीस बहुलपणै, बलि द्रव्यादि^४ पिछाण॥
- ७ जिता दिवस अगवाण बण, विचरै जे सिंघाड़।
तेता दिवस गिलाण^५ नीं, व्यावच^६ करणी सार॥
- ८ तथा करावै कार्य अन्य, तसु पेटे^७ विख्यात।
बलि गुण जाणै तिम करै, (पिण) संपति राखै हाथ॥
- ९ अधिक गुणी मुनिवर कन्है, जो न लिखावै गाह।
अन्य मुनि नै तसु ईसको^८, करिवो नहीं सुराह॥
- १० इमज गणी पासे रह्यां, एक साज रे मांय।
बहु अज्जा नहीं राखणीं, कारणीक विण ताय॥

१. साधारणतया

२. शिष्य-शिष्या

३. गाथा-लिपिकरण का एक माप तेरा-
पंथ श्रमण-संघ की एक ऐसी पूंजी,
जो लिपिकरण सेवा आदि के द्वारा
अर्जित की जाती है।

४. द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव आदि को देखकर

५. रुग्ण

६. सेवा

७. बदले में

८. ईर्ष्या

- ११ गणी समीपे बहु रहै, तो बहु साज करेह।
 पिण इक साजे बहु अज्जा, नेठाउ मत देह॥
- १२ प्रकृति तनु रोगी विरध^१, जो तिण ने सोंपेह।
 तास निभावा अधिक दै, अवसर देखी जेह॥
- १३ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, चतुरमास उतरेह।
 बाहुल्य दरसण विन किये, विचरण आण म देह॥
- १४ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, संत सती गुण गेह।
 विण कारण इक ग्राम में, रहिवा आण म देह॥
- १५ गणवृद्धि चाहो सुगणपति, संत सती गुण गेह।
 परिचय रूपज सेव नी, तूं आणा मत देह॥
- १६ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, चतुरमास उतरेह।
 संत सती आवै तसु, पूछा सर्व करेह॥

गणी^२ गुण धारी रे २।

वर जय गणपति जी हरख सीख हितकारी रे, गणी०॥

ए समण-सत्यां नी, संपति अविचल सारी रे ॥गणी०॥

मरजाद पढायां अति गण वृद्धि उदारी रे, गणी०॥धूपदं॥

- १७ चउमासो उतरियां आवै मुनिवर अज्जा ज्यांरी रे^३।
 तास हकीगत^४ सर्व पूछणी, ए नीती निरधारी रे॥
- १८ संत सती चउमासा पाछै, दरसण करै तिवारी।
 पुस्तक पढ़े विण सूप्यां तसु, च्यार आहार परिहारी॥
- १९ सेखैकाळ^५ विचरिया त्यांरी, पूछा कीजै सारी।
 चउमासा री इमज बारता, पूछ करै निरधारी॥
- २० घृत, माखण, पय, दही, - लकारज^६, ओखधि करै तिवारी॥
 विगय मर्याद थी अधिक न लेणी, पूछा काजै सारी॥
- २१ गणपति पे चउमासो धारी, विहार कियौ सुखकारी।
 चउमासा पहिलां वा पाछै, विचर्या क्षेत्र मझारी॥
- २२ जे जे रात्रि रह्या जे क्षेत्रे, पूछ करै निरधारी।
 इक-बे-त्रिण-निसि प्रमुख मास लग, कारण अधिक विचारी॥

१. वृद्ध

४. विवरण

२. लय : हींडे हालो रे।

५. चतुर्मास के अतिरिक्त आठ महीने

३. जिस समय

६. मैथी आदि के लड्डू

- २३ मुनि अज्जा मिलिया त्यां भेळा, रह्या किती निशि धारो।
गांम विषे गांमादिक बाहिर, पूछा कीजे सारी।
- २४ वस्त्र पात्र रोगान पत्रादिक, संत सत्यां नै सारी।
दीधो लीधो सर्व हकीगत, पूछ करै निरधारी॥
- २५ गणि आणा विण समणी पासे, पात्र रंगावे धारी।
वस्त्र सिंवावै तसु दंड दीजे, उभय भणीं तिहवारी॥
- २६ वलि पूछै थे विहार करी ने, जे ग्रामादी मझारी।
उसण आहार^१ आथण^२ रा ल्याया, कै नही ल्याया धारी॥
- २७ उसण ल्याया तो तेह ग्राम में, तुम्हे गया किणवारी^३।
दोढ पोहर चढियां वा पाछै, किती मजल करी धारी॥
- २८ विहार करी गोचरी तणीं जे, वेळां आवै सारी।
सुखे^४ आथण रा उसण मंगावै, तसु दंड दीजे भारी॥
- २९ साध साधवी करै चउमासो, पृच्छा ज्यां खेत्रां री।
विगयादिक नो दायक कुण-कुण, अधिक हरष मनवारी^५॥
- ३० सेखेकाळ चउमासो मेलै, संत सती सुखकारी।
तसुधणियाप^६ न करणी त्यांनै, सहु गणि नामे धारी॥
- ३१ गणि बांचण पोथ्यां दै तिण नै, तसु धणियाप निवारी।
मुनि, अज्जा, पोथ्यां जो मांगे, सूपै विनीत तिवारी॥
- ३२ मांग्यां सेती ह्वै बेराजी, तहनै मती बधारी।
बुध सूं खोड़^७ मेट तसु खेत्रज, देख भळावै धारी॥
- ३३ आज्ञा सासण ऊपर दृष्टज, अनुकूल नीत उदारी।
प्रकृति देखी खेत्र भळावै, खळ गुळ न ही इकसारी॥
- ३४ विगय तणीं ओखध कीधो, तेहथी दुगुण दिन धारी।
एक सप्पी^८ उपरंत न लेणी, विगय लिखत अनुसारी॥
- ३५ तंतू^९ जाचै तास नाम लिख, गणि नै कहै तिवारी।
ते पिण पूछी लिख्यो वांचजे, आलस अंग निवारी

१. गर्म आहार सं० २०१६ तक सायंकाल के समय सामूहिक रूप से गोचरी नहीं होती थी। अतः लम्बे विहार में पहुँचने में विलंब हो जाने से भोजन आदि पर्याप्त नहीं मिल पाने की स्थिति में गर्म आहार लिया जा सकता था।

२. सायंकाल

३. किसी समय

४. स्वस्थ अवस्था में

५. भावना भाने वाला

६. स्वामित्व

७. त्रुटि

८. घृत

९. वस्त्र

- ३६ संत सती चउमासा मांहि, चउत्थ^१ छठादि^२ उदारी।
ते पिणं लिखियो पत्र वांचजे, सुरत राखजै भारी॥
- ३७ कारण आथण असण मंगायां, पंच विगय परिहारी।
पत्र लिख्यौ वांचे बलि इमहिज, कारण नित पिंड आहारी॥
- ३८ अज्जा कोइक अधिक कठोरज, वचन बोलै अविचारी।
लिखयो वांचजे तसु दंड दीजै, पूछा कीजै सारी॥
- ३९ संवत उगणीसै नै दसके, स्वाम लिखत री सारी।
प्रवरहाजरी-जय जस गणपति, कीधी अधिक उदारी॥
- ४० नित्य हाजरी^३ वांचै कै नही, पूछ करै निरधारी।
तसु मुख आगल संत सती जे, सुणैक न सुणै सारी॥
- ४१ विहार कारण विन मुनि अज्जा, परठै असन^४ तिवारी।
दूजे दिन तसु घृत नहि लेणो, लिख्यौ वांच सुविचारी॥
- ४२ जे गांम में अज्जा छै त्यां अन्य, अज्जा आयां सारी।
तसु आज्ञा विन व्यंजण विगय, न लेणो लिख्यौ विचारी॥
- ४३ दीक्षा दै गुरु पे रहिवा रा, दै परिणाम उतारी।
तिण नै बलि चारित्र देवा नीं, आण म दिये लिगारी॥
- ४४ ए गणपति अनुकूल अछै के, प्रतिकूल छै दुखकारी।
उंडी दृष्टि करी ओळखजै, सहज म गिणै लिगारी॥
- ४५ संत सति गणपति सूं अनुकूल, करब^५ बधरै भारी।
दिन-२ अनुकूल अधिको वरतै, तास निरत^६ दिलधारी॥
- ४६ गणपति नो प्रतिकूल छै तेहने, ओळख करे विचारी।
कुरब वधावा लायक नहीं ए, जाणी तसु दुखकारी॥
- ४७ आपस में जिल्लो कोई बांधे, ओळखजै तसु जारी।
तेहनें भेला तूं मत राखै, अवसर देख उदारी॥
- ४८ कटमी^७ बात करै सांसण री, ते छै जनम बिगाड़ी।
तिणनै रूड़ी रीत ओळखजै, धिग् तिण रो जमवारी॥

१. उपवास

२. दो दिन का तप

३. गण विशुद्धि के लिए आचार्य भिक्षु
निर्मित मर्यादाओं के आधार पर बनाया
गया शिक्षात्मक संकलन, जिसे सभी की
उपस्थिति में प्रतिदिन पढ़ा जाता था।

४. आहार

५. प्रतिष्ठा

६. अनुरक्ति

७. आलोचनात्मक

- ४९ सासण भार अछै थारे भुज, तू सासण सिणगारी।
तिण कारण तुज ने चाहिजै, ए ओळखणा सारी॥
- ५० सनमुख परमुख गण दीपावै, धर उछरंग अपारी।
प्रत्यनीक सूं प्रीत न राखै, विनयवंत ते भारी॥
- ५१ गणपति नां अति गुण दीपावै, परम प्रीत अति भारी।
प्रत्यनीक नै तुरत निखेधै, ते सासण सिणगारी॥
- ५२ गणपति नां गुण करतौ संके, वदै वयण दुखकारी।
अवनीतां सूं हेतज राखै, ते अवनीत विडारी॥
- ५३ स्वाम-लिखत मरजादा सुण-सुण, हरखै हिया मझारी।
गण दीपावै अति हुलसावै, ते सासण सिणगारी॥
- ५४ स्वाम लिखत मरजादा सुण नै, न गमै चित्त मझारी।
मन मुरझावै बलि कुमलावै, ते अवनीत विडारी॥
- ५५ गणपति नै सासण रा गुण सुण, हरखै हिया मझारी।
परम प्रीति तिण रै गणपति सूं, तूं ओळखजै सारी॥
- ५६ गणपति, सासण ना गुणसुण नै, देवै मुंह बिगारी।
ते प्रतिकूल गणपति सूं पूरो, ओळख करै विचारी॥
- ५७ सासण वीर तणों भिक्षु गण, करै उतरती ज्यांरी।
तास निखेधी नै दण्ड दीजै, काण^२ म राख लिगारी॥
- ५८ कन्है रहै जे मुनिवर अज्जा, राखै निजर मझारी।
सदा हाजरी^३ तास सुणावै, आलस अंग निवारी॥
- ५९ उगणीसै पनरै मर्यादा, बांधी ए हितकारी।
नित्यप्रति लिखनै मुनि सुणावै, ए दृढ़ राखै भारी॥
- ६० कन्है रहै जे मुनिवर अज्जा, तास हाजरी सारी।
नित्य प्रति लीजै पूछा कीजै, विविध प्रकार विचारी॥
- ६१ सेखै काळ चउमास सिंघाड़ै, संत सती सुखकारी।
नित्य हाजरी अक्षर^४ लिखणा, पूछ करै निरधारी॥

१. बिकारी।

२. लिहाज।

३. मर्यादाएं प्रारंभ में प्रतिदिन सुनाई जाती थी। सं० २००५ तक समाह में दो बार, अब नियमित रूप से पक्ष में एक बार चतुर्दशी के दिन सुनाई जाती है।

४. सं० २०१६ तक लेखपत्र में प्रतिदिन हस्ताक्षर करने की विधि थी। आचार्य श्री तुलसी ने तेरापंथ द्वि शताब्दी के अवसर पर इस व्यवस्था में परिवर्तन किया।

- ६२ एक पक्ष में सरस हाजरी, वखाण में इकवारी।
सिंघाड़ा बंध बांचै त्यांरी, पूछा करै उदारी॥
- ६३ आपस में परचो नहि बांधे, तास उपाय विचारी।
कलह मिटावै गण सोभावै, तूं गण तिलक उदारी॥
- ६४ संग मिटावण ग्राम-ग्राम में, अवसर देख उदारी।
बोलण चालण नै वेसण री, कर मरजादा भारी॥
- ६५ भाव सल्य राखै तेहना फळ, वखाण में विस्तारी।
सल्य मिटै तेहना फल सुर सिव, कहिजै बारंबारी॥
- ६६ सुद्ध असुद्ध अन्नादिक लेवे, देवै बलि दातारी।
तेहना फल पिण वखाण में, तूं वार-वार विस्तारी॥
- ६७ मुनि अज्जा नीं प्रकृति ओळखी, मेलै क्षेत्र मझारी।
परिचय आदि पुकार न आवै, दीजै सीख उदारी॥
- ६८ कदाचित जो पुकार^१ आयां, बलि तिण स्थानक भारी।
बलि तिण खेत्र विषे मेलै तो, करै विचारण भारी॥
- ६९ सूकी दोव^२ दीसै पिण धन^३ सुं, हरित हुवै तिणवारी।
तिम बलि तिण खेत्र तसु मेल्यां, हुवै हरित मोह क्यारी॥
- ७० भिक्षु स्वाम थया ओजागर^४, लीधो मारग भारी।
ते सुध राखै सिव अभिलाखै, लही संपदा सारी॥
- ७१ ए श्रद्धा आचार अनोपम, सिव हेतु सुखकारी।
ते सुद्ध पाळै, सुद्ध पळावै, तूं सासण नेतारी॥
- ७२ भिक्षु स्वाम तणें परसादै, तैं मग पायो भारी।
दुर्गति खंडन सिव सुख मंडन, राखै अधिक सुधारी॥
- ७३ त्रिभुवन नाथ वीर प्रभु मोटा, तास पाट तूं भारी।
च्यार तीर्थ ना थाट सम्पदा, ते गहघाट^५ उदारी॥
- ७४ नीत हुवै चारित पाळण री, दीजै स्हाज^६ अपारी।
ए सगळा तुज सरणै आया, तूं सहु नों नेतारी॥
- ७५ कोइक तो है तन नों रोगी, कोइ मन रोगी धारी।
नीत हुवै चारित्र पाळण री, स्हाज दियै हितकारी॥

१. वृत्ति की सूचना।

५. उत्साह वर्धक भीड़

२. दूब।

६. सहायता।

३. जल

४. उद्योग करने वाले।

- ७६ चरण पाळण नीं नीत हुवै नहीं, तसु काढै गण बारी^१।
तिण री काण मूळ मत राखै, डर भय दूर निवारी॥
- ७७ सासण वीर तणीं इण भरते, छै थारे भुज भारी।
तिण कारण ए सीख दई तुज, स्यूं कहूं बारंबारी॥
- ७८ भिक्षु स्वाम तणीं मरजादा, अखंड पळावै सारी।
बलि ए सीख देइ मैं तुज ने, गण बच्छल हितकारी॥
- ७९ भिक्षु स्वाम थया ओजागर, भारीमाल शिष्य भारी।
जंबू स्वाम जिंसा पट तीजै, रिखिराय बड़ा ब्रह्मचारी॥
- ८० तास पसाये लही संपदा, जय जस गणपति सारी।
ते थिर राखण सिवसुख चाखण, दीधी सीख उदारी॥
- ८१ पद युवराज समापे गणपति, ते रहै त्यां लग सारी।
तूं सेवा कीजै साचै मन, रहिजै आज्ञाकारी॥
- ८२ चरण बड़ा संता ने वनणां^२, आछी रीत उदारी।
तूं सुध कीजै जग जस लीजै, मूल रीत ए भारी॥
- ८३ विहार करी नै बड़ा मुनिसर, आयां नगर मझारी।
आसण छोड़ी, ऊभो थइ नै, कर वंदण हितकारी॥
- ८४ 'चरण बड़ा'^३ नै लघु संतां जिम, आण अखंडित थारी।
आराधणी छै तन मन सेती, चारित जेम उदारी॥
- ८५ पद युवराज शिष्य मघराज-भणीं ए शिक्षा सारी।
बले अनागत गणपति है तसु, एहिज सीख उदारी॥
- ८६ शिक्षा ए गणपति नै दीधी, म्हे निज बुध अनुसारी।
बलि तुझनै सुख है जिम कीजै, सासण गण वृद्धिकारी॥
- ८७ उगणीसै बीसै चउमासे, चूरु शहर मझारी।
जयजस गणपति शिक्षा आपी, आणी हरष अपारी॥

१. बाहर।

२. वन्दना।

३. संयम-पर्याय में बड़ा

शिक्षा री चोपी

ढाळ १

दूहा

- १ दसवैकालिक पंचमें, द्वितीय उद्देशक मांय।
दाख्यौ दीन दयाल जी, सुगुरु आण सुखदाय॥
- २ आराधै आचार्य नै, श्रमण भणी पिण तेम।
गृहस्थ पिण पूजै तसु, जाणै सुविनय^१ एम॥
- ३ नाराधै आचार्य नै, श्रमण भणीं पिण तेम।
गृहस्थ पिण नीदैं तसु, जाणै अविनय^२ एम॥
- ४ इण विध श्रीजिन आखियौ, सुगुरु आण अगवाण।
जिण सतगुरु आराधिया, (तसु)जीतब जन्म प्रमाण॥
- ५ जय जश करण सुआण इम, श्रमणी संत अनूप।
जो सुख चावौ जीव नै, (तो)आराधौ धर चूप॥

हो^३ गुणवता महागुणी, सुगुणां संत सती सुखदाया हो लाल।

जे बुद्धिवंता महामुनि, सासण में रंगरत्ता सवाया हो लाल॥धूपदं॥

- ६ आण सुगुरु नीं आराधियै, सुविनीत सुगुण सुखदाया हो लाल।
सेषै काळ चउमासै विचरणौ, अगवांण आण हुलसाया हो लाल।
- ७ छांदै^४ सुगुरु नै चालणौ, चउमासौ उतरयां चित चाह्या।
(गुरु नै) पहिलां पूछ्यां विण अन्य दिशा, विण भरजी न विचरै मुनिराया।
- ८ चउमासा पछै गुरु रा दर्शन कीयां, संपौ पोथ्यां पडगै^५ सुखदाया।
संप्यां विण च्यारुं आहार म भोगवौ, मेटो मान मछर दंभ माया॥
- ९ कनली आर्या गुरु पै मोकळ्यां, समाचार त्यां साथे सवाया।
आर्या पोथ्यां हाजर आपरै, मन मानै ते दिवस मंगाया।
- १० पाडियारी^६ संपी मो भणीं, सहू आप तणीं नेश्राया।
ममत धणियाप न मांहरै, सुविनीत ए शब्द सुणाया॥

१. सुविनीत

४. विचारों के अनुकूल

२. अविनीत

५. उपकरण।

३. लय-धूम धूमालो घाघरो....।

६. प्रतिहारिक—जो वापिस दी जा सके।

६६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ११ ममत धणियाप करवा तणां, किया त्याग नै अक्षर लिखाया।
गुरु मांग्यां सूं मुंह न बिगाड़णौ, सूप्यां बिन च्यारुं आहार पचखाया॥
- १२ कनै रहै ते संत सती कदा, प्रवर पंडित मरण हृद पाया।
तिण रा पाना लिख्या नै दिख्या तणां, तथा अवर तास नेश्राया॥
- १३ सर्व सुगुरु नै सूपणा, धणियाप करै किण न्याया।
राख्यां चौरी देव गुर तणीं, एहवो पाप तजै मुनिराया॥
- १४ निज लिख्या दिख्या रा अवर पिण, गुरु नै पूछ्यां बिना मन चाह्या।
आपस में देवा लेवा रा त्याग छै, जीवै ज्यां लग सूंस^१ सुहाया॥
- १५ काळ किया तस लोट पातरा, नवो वस्त्र मूकै गुरु पाया।
तिण रौ राख अवर नहीं सूपणो, परठवा योग्य वोसराया॥
- १६ भगवती सूत्रे^२ भाखियौ, काळ कियां स्थविर चल आया।
उपधि आप्या भगवंत नै, ज्ञानी देव सिद्धंत में गाया॥
- १७ संत सती सिंघाडाबंध ते, कदा पंडित मरण सुपाया।
सर्व पोथ्यां सुगुरु नै सूपणी, मन सूं धणियाप मिटाया॥
- १८ गुरु राखै जठे रहिणो निज भणीं, सिंघाड़ो करवो नियम नाह्या।
मन हवै तो कीज्यो चाकरी, गुरु आंगूच^३ शब्द सुणाया॥
- १९ विध इमहिज सिंघाडाबंध नी, म्हैं कारण में करी सेव सवाया।
इम कही तसु पाना न राखणां, एहवी रीत परंपरा मांह्या॥
- २० खामी^४ पड्यां बहु जन मझै, गुरु चौड़े निषेधे सुन्याया।
अवनीत मुंह बिगाड़ दै, सुविनीत रै हरष अथाया॥
- २१ इमहिज सिंघाडाबंध तणीं, खामी पड्यां निषेधे अथाया।
मन हवै तो आगे विचरज्यो, गुरु आंगूच शब्द सुणाया॥
- २२ चौड़ै मोनै निषेधौ मती, कदा गुरु नहीं मानै वाया।
तिण सूं चोट खमणी पहिलां धार नै, अगवाण विचरै मुनिराया॥
- २३ बारुंबार जतावूं था भणी, पछै कहोला पहिलां न फुरमाया।
सुगुरु काण^५ राखै नही, करलो^६ ओषध देत सवाया॥
- २४ हूंस^७ राखै सिंघाड़ा तणीं, चौड़ै निषेध्यां मुख कुमलाया।
तास कुरब^८ न बधावणौ, खमियां तौल बधै अधिकाया॥

१. प्रत्याख्यान

२. भगवई शतक २ उद्देशक-१ सूत्र ७०।

३. प्रारम्भ में।

४. गलती।

५. लिहाज।

६. कडुवा

७. उम्मीद

८. प्रतिष्ठा।

- २५ रीत ए सहू श्रमण-श्रमणी तर्णी, अगवाण नै तौ अधिकाया।
सूत्र वखाण सीखै सही, तिम खमवौ सीख्या सुख पाया॥
- २६ भारीमाल ईडवा मझै, परषदा में निषेधा सवाया।
ते मुनिवर कहै स्वाम नै, मोनै छानै कहो ऋषिराया॥
- २७ ताम स्वाम भारीमालजी, सतयुगी मुनि नै बोलाया।
सुणो खेतसीजी ए इम कहै, मानै छानै कहो ऋषिराया॥
- २८ छानै कहां म्हा किण विधै, हिवै तो चौड़े कहिवौ सवाया।
इम सुण नै ऋषिरायजी, हद सीख धार पद पाया॥
- २९ भिक्षू स्वाम पीपाड़ में, वैणीरामजी नै बोलाया।
दोय तीन बार हेलौ पाड़ियौ, पिण बोल्या नही ऋषिराया॥
- ३० लूणावत गुमानजी तेहनै, इम स्वाम भिक्षू बोल्या वाया।
'बैणों छूटतो दीसै' अछै, जब गुमानजी त्यां पासै आया॥
- ३१ कही स्वाम भिक्षु नहीं बारता^१ सुण त्रास अधिक दिल पाया।
आय पगां पड़्या स्वाम नै, जै तौ सुवनीत महामुनिराया॥
- ३२ स्वाम कहै हेलो पाड़ियो, तूं बोल्यो नहीं किण न्याया।
वैणीरामजी कहै सुणियौ नहीं, घणों विनय करी नै रीझाया॥
- ३३ इसड़ा सुवनीत गुरां तणां, ज्यांरो काण-कुरब^२ बधाया।
चोड़ै निषेध्यां बेदल^३ हुदै, त्यांरो कुरब बधै किण न्याया॥
- ३४ वर्ष बावनां रा लिखत में, इम स्वाम भिक्षु फुरमाया।
अजोगाइ^४ कीधी किण आय्या, तिण नै प्राच्छित देणौ सवाया॥
- ३५ बलै च्यार तीर्थ में तेहनै, हेलणीं निंदणी निंदणी पड़सी ताह्या।
पछै कहोला मानै भांडे अछै, बले करै फितूरो^५ अथाया॥
- ३६ (तिणसू)पहिलां सावधान रहिज्यौ सहु, सावधान रह्या जो नाह्या।
तो भूंडा दिसोला लोकां मझै, पछै कहोला मानै न जताया॥
- ३७ लिखत पचासो साधां तणों, तिण में पिण ए गाया।
आज्ञा लोप्यां मरजादा उलंघिया, अथवा अथिर परिणामी नै ताह्या॥
- ३८ तो गृही^६ नै जतावां रा भाव छै, बले श्रमण सती नै सुखदाया।
त्यां नै पिण जतावारा भाव छै, पछै कहोला मोनै न जताया॥

१. वार्ता

२. विशेष प्रतिष्ठा

३. अनमना

४. अनुचित व्यवहार

५. उपद्रव

६. गृहस्थ

- ३९ सतजुगी नै वैणीरामजी, बलै हैम अनै ऋषराया।
गण स्तंभ ज्यूं च्यारुं महागुणी, समभाव सद्धा तज माया॥
- ४० गण भार-धुरा ज्यांरी-भुजा, ते पिण मान अहंकार मिटाया।
तो औरां री कुणसी चली, गुरु सर्व ऊपर कहिवाया॥
- ४१ अधिक तोल त्यांरौ बध्यौ, तीरथ च्यार सराया।
भारिमाल परसंसिया चोडै, खमियां रा ए फळ पाया॥
- ४२ जिणनै सुगुरु वचन खमवा दोहिला^१, तो अवर नां कठण अथाया।
मान राखै सतगुरु थकी, ते तौ महामूरख कहिवाया॥
- ४३ कठिन वचन गुरु सीख दै, ते तौ अमरित सूं अधिकाया।
भाग्य दिसा भारी हुवै, जब सतगुरु सीख सवाया॥
- ४४ तीन ठाणै मोजीरामजी, विण मुरजी लावा में रहिवाया।
राजनगर आया पूज आगलै, सुण स्वाम संतां नैं बोलाया॥
- ४५ कोई वनणा कीज्यो मती, हिवै मोजीरामजी आया।
देखै सहु साध-साधवी, पिण किण नवि सीस नमाया॥
- ४६ पछै आय पूज पगां लागिया, भारीमाल हुकम फुरमाया।
जद वनणा कीधी साध-साधव्यां, निषेदी तसु दंड दिराया॥
- ४७ बहुबार सतजुगी हैम नैं, इमहिज स्वाम ऋषराया।
त्यानै चोडै परषद में निषेधियां, समभाव रह्या मुनिराया॥
- ४८ मोद पिंडतपणां नों आण नैं, अभिमानी कहै इम वाया।
परिषद माहै मोनैं मत कहौ, छानै सीख देवौ मुनिराया॥
- ४९ इम अभिमानी नै चोडै कह्यां, दुर्लभ रहिवौ सम अध्यवसाया।
कुरब^२ बधै त्यांरो किण विधे, मान मेदयां सूं कुरब बधाया॥
- ५० उत्तराध्ययन^३ पहिलां में कह्यो, गुरु कठण सीख कहिवाया।
सुवनीत हित मानै सही, अवनीत ने द्वेष भराया॥
- ५१ मित्र भाई न्याती नै कहै, तिम जाणे वनीत सुहाया।
अवनीत सीख कठण सुणी, लेखवै दास जेम रुलाया॥
- ५२ गुरु कठण वचन निषेधियां, सुवनीत चिंते मन माया।
आज अनुग्रह गुरु तणों, मुज ऊपर छै अधिकाया॥
- ५३ शीतल कठण वचने करी, गुरु सीख देवै सुखदाया।
परम लाभ अति लेखवै, सुवनीत तिको मुनिराया॥

१. मुश्किल

३. उत्तरज्ज्ञयणाणि अ. १ गा ३८

२. सम्मान

- ५४ आचारज नै कोप्या जाण नै, सुवनीत संत सुखदाया।
प्रसन्न करै मधुर वचन सुं, बलै करै घणी नरमाया॥
- ५५ बुझावै क्रोध अग्नि सुगुर तणीं, कर जोड़ बदै इम वाया।
आज पछै इसो काम हूं बले, कदे ही न करूं गुरुराया॥
- ५६ आज कृतार्थ हूं थयो, मोनै, निषेध्यो परिषद मांझ्या।
आज भलो भाण ऊगीयो, मोनै अमरित प्याला पाया॥
- ५७ आज म्हारी जागी दिसा, रत्न चिंतामणी पाया।
वृष्टि अमोलक रत्न री, वारू परिषद में वरसाया॥
- ५८ संवत उगणीसै बारे समें, मृगसर विद दसम सुखदाया।
सतगुरु सीख सहामणी, दीधी जयजस हर्ष सवाया॥

ढाळ २

दूहा

- १ सुखदाई सुविनीत नों, बाधै सुजस विसेष।
सुध प्रकृति मंद चोकडी, वारू विमल विवेक॥
- २ दुःखदाई अविनीत नों, अपजश अधिको होय।
क्रोधी मानी लोळपी, विवेक रहित अवलोय॥
- ३ स्वार्थ तसु पूगै नहीं, अवगुण सूझै अनेक।
बोलै विगर विमासियो, अविनय कर्म कुरेख।
- ४ प्रकृति खोडिली^१ तास अति, काढै खूंचणो कोय।
समभावै सहिवौ कठण, अति क्रोधातुर होय॥
- ५ अक-बक बोलै अति घणों, अवगुण ढांकण काज।
ओलखावूं तस प्रकृति नैं, सुणज्यो सुरत^२ समाज॥

खोडीली प्रकृति तो धणी ॥ध्रुपदं॥

- ६ करे चालंतां बात, कहै कोई ते भणी।
ठीक न कहै बोलै ओर, खोडीली प्रकृति नों धणी॥
- ७ पक्की जयणां रो कहै, करतां आहार, इण में चूकां अणी।
ठीक न कहै रहै मौन, खोडीली प्रकृति नों धणी॥
- ८ आहार करतां पूरी जयणा नांहि, करै को जतावणी।
तो पाछौ ओड़ो^४ दै जाण, खोडीली प्रकृति नों घणी॥
- ९ चूकै पडिलेहण करंत, दीयै सीख ते भणी।
फेरै मुंह नो नूर, खोडीली प्रकृति प्रकृति नों धणी॥
- १० जोड़ी^५ करतां चूकां कहै तास, तो रीस करै घणी॥
वदै क्रोध तणें वश वाण, खोडीली प्रकृति नों धणी॥
- ११ चालंतां तंतू^६ घीसंत, कड्यां वच अवगणी।
बड़ो कहण वालो मोय, खोडीली प्रकृति नों धणी॥

१. दुष्ट

२. सावधान।

३. लय—नदी जमुना के तीर

४. शिक्षा देने वालों को बीच-बीच में टोकना।

५. चिकने पात्रों की अन्तिम रूप से सफाई।

६. वस्त्र

- १२ सीवंत बोलै सोय, कछां रीस अति घणी।
कहै थेइज रहिज्यो सचेत, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- १३ इक दिन में चूकां बहुबार, करै को जतावणी।
कहै लागो म्हारी लार, खोड़ीली प्रकृति नों धणी
- १४ पड़िकमणौ पड़िलेहण करंत, चूकां कहै ते भणी।
तो बिगाड़ै मुख नों नूर, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- १५ पाणी नां तडका^१ पड़ता देख कछां लाली^२ घणी।
कहै-पोता रा क्यों न पेखंत, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- १६ बोले वस्त्र पहिरत, काढै खोड़ ते भणी।
कहै हूंतो रह्यो छूं जाण, खोड़ीली प्रकृति री धणी॥
- १७ ऊंची साड़ी रौ कहै कोय, तो मुंह बिगाड़णी।
कहै बडां रो खूंचणों^३ काढंत, खोड़ीली प्रकृति री धणी॥
- १८ चोलपटो न पहिर्यो सुध रीत, कछां रीस करै धणीं।
निर्लज नाणै लाज, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- १९ पूछै खुद्र परिणाम, पांती अवरं तणीं।
थारै विगय कितीक आइ जाण, खोड़ीली प्रकृति नों धणीं॥
- २० आहार पाणी रे निमित्त, करै राइ^४ अति घणीं।
निर्लज नाणै लाज, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २१ थारी पांती में आहार अधिक, करै बाता घणी।
कलहगारो कहिवाय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २२ आपस में करै बात, कै मन भांगण तणीं।
कहै भूख तृषा में दिन जाय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २३ किण ही सिंघाडा मांय, आतम वश आपणी।
करणी नावै कोय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २४ निज आतमवश नांय, तो स्यूं अवरं तणीं।
ते अगवाण अजोग, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २५ पायो रुपइयो एक, पंडित थयो भणी।
पिण प्रकृति निनाणू रद्धा शेष, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २६ हूंस 'टोळा री'^५ अधिकाय, पूगै किम ते तणीं।
प्रकृति अधिक अजोग, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥

१. बिन्दु

३. अवगुण।

४. कलह।

२. आंखों में उत्तेजना। ५.

अग्रगण्य बनने की इच्छा।

- २७ निज पेट री खबर न काय, तो स्यूं हजारों तणीं।
ए दृष्टंत लीज्यो जोड़, खोड़ीली प्रकृति नों धणीं॥
- २८ तिणनैं मैलै सिंघाड़ै अन्य, कहै नां ततखणी।
इसड़ी प्रकृत दुःखदाय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- २९ साज^१ मांहि पिण कोय, राखै नही ते भणीं।
फिट-फिट अधिको होय, खोड़ीली प्रकृति नों धणीं॥
- ३० ओ पिण सुख न वेदंत, किण ही सिंघाड़ा भणीं।
बले मन राखे अभिमान, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३१ करै अवरों री होड (निज), आतमवश ना बणी।
ते किम पांमै सुख, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३२ आहार पाणी वस्त्रादिक ताम, दियै गुरु अन्य भणीं।
तो गुरु सूं पिण राखै द्वेष, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३३ जो तिण ने न दीये अन्नपान, तो खंच मन तणी।
आपो न खोजै मूढ, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
३४. स्वारथ न पूगै सोय, गुरु सूं पिण अवगुणी^२।
अवगुण सूझै अनेक, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३५ आप जिसो अवनीत, तिण सूं प्रीत अति घणी।
बात करै दिल खोल, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३६ करै उतरती बात, ओघड़-घाट^३ अति घणी।
मन रा मेला परिणाम, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
३७. मत कहै अवरों पास, बात आपां तणी।
इम बरजी राखै तास, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३८ तिण कहि ते कहै सर्व, बात गुरु आदिक भणी।
(तो) तिण सूं राखै द्वेष, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ३९ जिल्लो बांधे मांहोंमांहि, अपकीर्त बहु ते तणी।
ते हुवै जगत में भंड^४, खोड़ीली प्रकृति नों धणी॥
- ४० छेड़वियां फुंकार, करै रीस अति घणी।
खिण-खिण मांहे क्रोध, खोड़ीली प्रकृति नों घणी॥

१. एक व्यक्ति की प्रमुखता में स्थापित
मुनियों का मंडल।

२. अवगणना करने वाला।

३. संकल्प-विकल्प।

४. बदनाम।

- ४१ लोळपर्णी अधिकाय, साता नी बांछा घणी।
सुखसीलियो साख्यात, खोडीली प्रकृति नों धणी॥
- ४२ निशदिन वेदै दुःख, पुदगल प्यासा घणी।
आज्ञा ऊपर नहिं दिष्ट, खोडीली प्रकृति नों धणी॥
- ४३ आचार्य नी मर्याद, लोपण बांछा घणी
नहीं साहूकारा नी नीत, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ४४ चिहुंतीर्थ में पेख, पाड़े ईज्जत घणी।
तो पिण नहीं सचेत, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ४५ स्त्रियादिक नहीं ताम, विषय प्यासा घणी।
पछै हुवै जगत में भंड, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
४६. बोलै ऊंधी बाण, बंक वच में घणी।
विवेक विकळ कहिवाय, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ४७ म्हारा सिंघाड़ा नी बात, कहणी नहीं गुरु भणी।
ते भेष ले हुवो खराब, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
४८. खामी कहै गुरु ने कोय, तास सिंघाड़ा तणी।
तो तिण ने निषेधे मूढ, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ४९ क्रोध मान माया लोभ, वशै बाणी घणी।
बोलै बंक सहित, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५० साताकारिया खैत्रां नी हूस, राखै मन में घणी।
लूखो^१ खैत्र भळायां देवै टाळ, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५१ चउमासो सेखै काळ, रहै इच्छा मन तणी।
गुरु राखै जठै रहै नांहि, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५२ करे पांती रो आहार, बांछां विगयादिक तणी।
नहीं पांती में संतोष, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५३ बांछा दूध दही घृत दाल, सरस आहारादिक तणी।
बोझ पांती नों दियां वेदै दुक्ख, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५४ निशिदिन बांछा तास, ताजा खैत्रां तणी।
नही आज्ञा उपर तीखी दिष्ट, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५५ सुगुरु पासे सुखदाय, श्रमण सतियां घणी।
तिण में काढै दोष, खोडीली प्रकृति नों धणी ॥

- ५६ सहै भूख तृषा पिण सेव- न छंडै गुरु तणी।
त्यांसू कलुस परिणाम, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५७ गुरुकुल वासै वनीत, पामें रति अति घणी।
पिण ओ तो पामें दुक्ख, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५८ श्रमण सती रहै गुरु पास, कीरत संपत घणी।
त्यां में बतावै दोष, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ५९ ऊंडी विचारणा नांय, बोली अलखामणी^१।
कहै-गवेषणा नहीं कोय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६० गुरु कनै रहै छांदो रूंध, लोळपणां नै हणी।
अधिक गुण नहीं जाणै गिंवार, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६१ पोता री सगत^२ न काय, रहै तसु अवगणी।
ओ दोय मुख^३ कहिवाय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६२ भेळा रहै बहू संत, सत्यां पिण रहै घणी।
ए काढ्यो भिक्षु में रूपचन्द^४ दोष, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६३ ते रूपचन्द टळ्यो गण बार^५, हुई खराबी अति घणी।
तिम ए पिण हुवै खुराज, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६४ कार्य भळावै कोय, आचारज ते भणी।
न करै विनय सहित अंगीकार, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६५ देवै आचारज सीख, कठिन मृदु वच भणी।
तो बोलै अलखामणो तास, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६६ प्रकृति खोड़ीली राख, पामें आपद घणी।
भव २ दुखियो थाय, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६७ इम सांभळ नर नार, संग तजो ते तणी।
जो तिण सूं राखै प्यार, खोड़ीली प्रकृति नों धणी ॥
- ६८ भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, प्रसाद संपति बणी।
जयजस करण गणेश, सरस शिक्षा भणी ॥

१. अनगमती

२. शक्ति

३. दोहरी मूर्खता करने वाला

४. देखे- पंरपरा री जोड़

५. स० १८५० में

ढाल ३

दूहा

- १ निज छांदो^१ रंधे निपुण, विनयवंत सुविचार।
गुण शाही सुवनीत नो, सुजस बधै संसार॥
- २ छांदो रंध्या शिव मिलै, चउथे उत्राध्यैन^२।
रमै सुगुरु अभिप्राय रिख, ते पामै सुख चैन॥
- ३ विनयवंत निर्मळ मुनि, पतळी च्यार कषाय।
ठाम-ठाम गुण मुनि तणां, दाख्या श्री जिनराय॥
- ४ तिण सूं प्रकृति सुधार नैं, पंडित हुवै प्रवीण।
सफल सुभव तेहनो सही, सुगुणों संत सुचीन॥
- ५ खोडीली प्रकृती तज्यां, चोखी प्रकृती होय।
ओळखावूं तस वानगी^३, सुणज्यो भविषण लोय॥

चोखी^४ प्रकृति नों धणी ॥धूपदं॥

- ६ करे चालंता बात, कहै कोई ते भणीं।
कर जोड़ तथा कहै-ठीक, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ७ पक्की जयणां रो कहै करतां आहार, इण में चूकां अणी।
ठीक कहै तत्काळ, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ८ आहार करतां अजयणां देख, करै को जतावणी।
ओड़ो न दै कहै ठीक, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ९ जोड़ी करतां चूकां कहै तास, तो ठीक कहै गुणी।
बलि माने तसु उपगार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १० चूकै पडिलेहण करंत, दीयै सीख ते भणीं।
हरष सहित करै अंगीकार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ११ चालंता अजयणां देख, कह्यां तसु वच सुणी।
कहै-भलो जतायो मोय, चोखी प्रकृति नों धणीं॥

१. इच्छा

३. नमूना

२. उत्तरजङ्गयणाणि अ० ४ गा० ८

४. लय : नदी जमुना के तीर उड़ै

- १२ सीवंत, रंगत, वाटंत, बोल्या कहै ते भणी।
कहै-ठीक तू परम मंत्रीश, चोखी प्रकृति नो धणी॥
- १३ एक दिन में चूकां बहुबार, करै को जतावणी।
कहै-तो सम कुण मुज सैण, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १४ पड़िकमणो पड़िलेहण करंत, चूका कहै ते भणी।
करै हरष सहित अंगीकार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १५ बोले वस्त्र पहिरंत, काढे खोड़ ते तणी।
कहै-भूला ने आण्यों माग, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १६ पाणी रा तड़का^१ पड़ता देख, कह्या रीस नैं हणी।
ठीक कहै तसु अभिप्राय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १७ ऊंची साड़ी कहै कोय, तो प्रकृति सुधारिणी।
कहै-राखी म्हारी लाज, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १८ चोलपटो न पहर्यो सुध रीत, कह्या ते सुधा सम गिणी।
अधिक मानें उपगार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- १९ आहार पाणी रे निमत्त, बोलत लज्या घणी।
गम खावै रहै मौन, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २० पूछै खुद्र परिणाम, पांती अवरां तणी।
तसु पासै वेसंतां आवै लाज, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २१ न करै झौड़-झखाल^२, बात आहारादिक तणी।
न बोले पेला^३ रे बीच, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २२ अवनीत करै को बात, मन भांगण तणी।
(तसु) पासै वेसंता लाज अत्यंत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २३ बोलै गिणवा बोल, लज्या मन में घणी।
सर्व भणी सुखदाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २४ रखै बैरी हुवै कोय, विचारणा दिल घणी।
बोलै गिणवा बोल, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २५ सर्व सिंघाडा मांय, आतम वश आपणी।
लिए बधाई तास, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २६ निज आतमवश कीध, तारै अवरां भणी।
ते अगवाण सुजोग, चोखी प्रकृति नों धणी॥

१. बूँदें

३. अन्य।

२. टंटा-फिसाद।

- २७ पाया रुपइया निनाणूं, प्रकृति सुध जेह तणी।
रह्यो भणवा रो रुपियो एक, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २८ हूंस टोळा नीं तास, पूगै अति ही घणी।
गुरु आपे संत अमोल, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- २९ निज आतम सुख करण, शक्ति तेहनीं घणी।
जहां रहै तिहां सुख वेदंत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३० अन्य सिंघाडा मांय, मेल्या सुबधामणी।
इसड़ी प्रकृति सुखदाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३१ साज मांहि सहु कोय, हूंस राखण तणी।
लैवे तास उधेड़, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३२ ओ पिण सुख वेदंत, सर्व सिंघाड़ै गुणी।
मैटे मान गुमान, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३३ न करै औरां री होड, आतम वश अति घणी।
सदा काळ सुखदाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३४ आहार पाणि वस्त्रादिक, ताम दियै गुरु अन्य भणी।
तो पामें हरष विसेस, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३५ जो तिण ने न दियै वस्त्रादिक, तो खंच न मन तणी।
दियां न दियां समभाव, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३६ स्वार्थ पूगां न पूगां तास, सुगुरु सिरोमणी।
राखै तुल परिणाम, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३७ आप जिस्यो सुवनीत, तिण सूं प्रीत अति घणी।
मित्रपणों अति प्यार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३८ अविनीतां नें कान, लगावै नहीं गुणी।
न करै तिण सूं गुष्ट^१, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ३९ न करै उतरती बात, ओघटघाट ने हणी।
सुध घणां परिणाम, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४० देसना^२ तिणकी सार, सासण दीपावण तणी।
बात करंता सुरंग, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४१ जिल्लो न बांधै जाण, समझ दिल में घणी।
सासण ऊपर दृष्टि, चोखी प्रकृति नों धणी॥

१. हेलमेल।

२. उपदेश।

- ४२ कठण वचन कहै कोय, तो दिल समता घणी।
पाछो न बोले विरुद्ध, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४३ सुख-सीलियो नहीं कोय, लोलपणा नें हणी।
कर्म काटण नी नीत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४४ सगुरु तणी वर आण, ऊपर दृष्टि अति घणी।
छांडे पुद्गल प्यास, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४५ आचार्य नी मर्याद के, सरस सुहामणी।
न गिणें सहल^१ मन माय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४६ प्रवर हाजरी पेख, वाचण मानसा घणी।
सुणे, सुणावा मन हूंस, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४७ स्वाम भिक्षु ना लिखत, उमंग पावै सुणी।
इक चित्त हरख विसेस, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४८ लिखत सुणतां मुख नूर, करत सरावणी।
तिणरा पालण परिणाम, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ४९ जो माथे आवै दंड, याद राखै गुणी।
साहूकारा नी नीत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५० सर्व साधां में पेख, इज्जत तेहमीं घणी।
दिन-दिन अधिक सचेत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५१ स्त्रियादिक नी तास, बंछा नहीं विषय तणी।
छांडै कुसंग कुमाग, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५२ बोलै सूधी^२ बाण^३, बांक नहीं वच तणी।
सरल घणों सुवनीत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५३ म राखो छानी बात, म्हारा सिंघाडा तणी।
इसडो अदल^४ साहूकार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५४ जो कहै गुरां ने जाय, खामी सिंघाडा तणी।
तिण नें सरावै सुजाण, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५५ क्रोध मान माया लोभ, वशे बाणी धणी।
न बौळे बंक सहीत, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५६ प्रकृति खोडीली मेट, पामें संपति घणी।
भव-भव सुखियो थाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥

१. सामान्य।

३. वचन।

२. सरल।

४. अटल—नहीं मुकरने वाला।

- ५७ खोड़ीली प्रकृति नीं ढाल, बांचण हूंस अति धणी।
 सुण-सुण मैटे खोड, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५८ चोखी प्रकृति नीं ढाळ, तिणरी चूप^१ अति धणी।
 सुण-सुण गुण नें बधाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ५९ इम सांभळ नर नार, खोड मेढो निज तणी।
 राखो गणपति सूं इकतार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ६० कार्य भळावै कोय, आचारज ते भणी।
 हरस सहित करै अंगीकार, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ६१ देवे आचारज सीख, कठिण मृदु वच घणी।
 तो वदै सुधा सम बाण, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ६२ उगणीसै द्वादस बास, माघ सुध पख तणी।
 पंचम तिथ ओलखाय, चोखी प्रकृति नों धणी॥
- ६३ भिक्षु भारीमाल ऋषराय, प्रसाद संपति बणी।
 जयजश हरस कल्याण, एह शिक्षा भणी॥

१. लगन।

ढाळ ४

दूहा

- १ पाटे वीर तणै प्रगट, सुधर्म जंबू आद।
दुप्पसह^१ लग दीपावसी, जिन गाधी अह्लाद॥

गणपति^२ गहरारे,
सुध श्रमण संपदा संत सत्यां सिर सेहरा रे॥गण०॥
सुध सीख समापी, शिष्य सुविनीत सुमेरा रे ॥गण०॥
पद प्रगट वीर नै जयजस हरस घणेरा रे॥गण० ध्रुपदं॥,

- २ चरण बड़ा अथवा छोटा नै, वय लघु वृद्ध वखाणी रे।
गणपति थापै तास मानणौ, (ए) रीत पंरपर जाणी रे ॥गण०॥
३ आचारज नी इच्छा हवै तसु, वर पट-पदवी वरणी।
संत अवर अथवा श्रावक नै, किंचित तांण न करणी॥
४ किंचित मन मेलौ नवि करणो, आडडोड मत आणो।
बांक सहित वच मूल न वदणो, तरक जिलो मत ताणो॥
५ अग्निहोत्रि जिम अग्नि आराधै, तिम सिष सुगुरु आराधै।
रुड़ौ विनय करी रीझायां, शिष्य ज्ञान पट साधै॥
६ नहीं छै चरण वृद्ध लघु लेखो, इमहिज बुध नों लेखो।
सुगुरु रिझायां गणपति आपै, दसवैकालिक^३ देखो॥
७ विनय धर्म नों मूळ कद्दौ वर, निपुण प्रथम गुण निरखी।
अवर सुगुण पाछे अवलोके, पद दीयै गुण परखी।
८ पद लायक दो च्यार आदि मुनि, सहुनीं बुध नहीं सरखी।
अधिक विनय सूं सुगुरु रिझायां, हद गणि पद दै हरखी॥
९ गणपति उचित जाण पद दैवे, तास बड़ा सदहीजै।
पट थाप्यो तसु लघु मुनि, तीजै-पद में आदि आणीजै॥
१० आचारज, अरु बड़ा संत तिम, तीजै पद रे मांही।
समचे आचारज नै बंदै, नाम लियां विन ताही॥

१. पंचम आरे के अंत में होने वाले अंतिम मुनि।

३ अ० ९, ३० ३ गा० ३।

२. लय-हींडे हालो रे।

- ११ पद युवराज समाप्या, पाछै मन हुवै तो पट बैइसे।
मन होवै तौ पट नवि बैसे, गणपति इच्छा रहिस्सै॥
- १२ भारीमाल तो पट नही बैठा^१, बैठा ऋषि, जय ज्यांही।
तिण सेती पट बेसण केरौ, कारण न दीसै कांइ॥
- १३ मन इच्छा सूं गणि पट वैसे, संत सत्यां ने सोयो।
अंस मात्र पिण ताण न करणी, अजर मिसै अवलोयो॥
- १४ काम, बोझ छोड़ो मुज केरो, दीक्षा आणा दीजै।
इत्यादिक बहु विविध पणै वच, किंचित तांण न कीजै॥
- १५ बिहार करी ने बड़ा संत पिण, आयां, गणपति आपो।
सनमुख-गमन तणों नही कारण, स्थिर वंदन नी थापो॥
- १६ बिहार करी नैं बड़ा आवियां, गणपति ऊभा थाई।
आसण छोडी, वंदणा करणी, अधिक किया अधिकाई॥
- १७ बड़ा संत पिण आचारज सूं, पडिकमणा में पेखो।
आलोवण ले आण आराधै, बीजो न करै लेखो।
- १८ बिहार करी नै श्रमण आवियां, प्रथम गणी नैं वंदै।
गणपति बड़ा मुनि ने पाछै, बादै अति आनंदै॥
- १९ ऊंचे आसण गणपति बैठा, बड़ा संत तसु आगै।
महितळ बैठा तो पिण गणि नैं, असातना नही छागै॥
- २० सैखे काळ चउमासे रहिवै, आचारज नी आणा।
चउमासो उत्तरियां गुरु दिसि, विहार करै मुनि स्याणा॥
- २१ एकण री आज्ञा में रहिणो, संत सती सुविनीतो।
साध-साधवियां रो मारग चाळै, जठा तांइ ए रीतो॥
- २२ शिष्य-शिष्यणी सुगुणां ते पिण, गणपति नामें करणा।
अवर तणैं नामें नहीं करणा, गुणसठा लिखत में निरणा॥
- २३ आचारज नै जो आराधे, श्रमण आराधक सारो।
गृहस्थ पिण तसु वंदै पूजै, दसवैकालिक^२ मझारो॥
- २४ आचारज ने जो न अराधे, श्रमण भणीं पिण नांहि।
गृहस्थ पिण हेले निंदै तसु, दसवैकालिक^३ मांहि॥
- २५ संवत उगणीसै ने तेरे, पोह सुदी सातम पेखो।
प्रवर जय गणी सीख समापी, सुविनीतां रो छेखो॥

१. अपने पदारोहण दिवस को उत्सव के रूप में नहीं मनाया

२. अ० ५ उ० २ गा० ४५।

३. अ० ५ उ० ५ गा. ४०।

ढाळ ५

'गणी गुण गावै रे

गणी गुण गावै रे, तसु विविध प्रकारै वारू तोळ बघावै रे
 तसु श्रमण समापी वर क्षेत्रे विचरावै रे ।गणी०।
 तसु उचरंग आणी झीणी रहिस धरावै रे ॥धूपदं॥

- १ प्रथम विनय गुण विमल मूळगो, परम सुगुरु सुं पेमो रे।
 असातना टाळे चित ऊजळ, निमळ निभावे नेमोरे।
- २ कटुक वचन गुरु सीख दिये पिण, कलुष भव नहि ल्यावै
 उळट धरी कर जौड आदरै, विमन चित नवि थावै॥
- ३ परिषद मांहि निषेधै तो पिण, क्रोधे ना कंपावै।
 समचित चिते मुझ ने सद्गुरु, अमरित प्याला पावै॥
- ४ स्वारथ विण पूगां पिण सुगुणो, लै'र वैर नहि ल्यावै।
 अरज न मान्यां अंस मात्र पिण, अथिरपणै नहि आवै॥
- ५ अपर मुनी नैं अति आदर दै, सतगुरु घणों सरावै।
 असणादिक वस्त्रादिक आपै, तो पिण अरति न ल्यावै॥
- ६ सासण-भार-धुरा तिणरे भुज, दिन-दिन अधिक दीपावै।
 परिषद में गणपति नैं गण नां, हरस धरी गुण गावै॥
- ७ अविनीतां री संगत टाळे, तसु मुंह नाहि लगावै।
 सुविनीतां सू अति हित^१ राखै, गणपति चित अनुभावै॥
- ८ अंस मात्र पिण बात उतरती, न सुणै नाहि सुणावै।
 कदाच को प्रतनीक^३ कढ्यां, गणपति नैं तुरत जणावै॥
- ९ जिलो भुजंग सरीखो जाणी, ए महा रोग मिटावै।
 आप तणों रागी पिण न करै, प्रभुता ते मुनि पावै॥
- १० वारू विनय करी सद्गुरु नैं, रूडी रीत रिझावै।
 इकचित आण अखंड आराधै, ते गण में सोभावै॥

१. लय-हींडे हालो रे। ३. प्रतिकूलता वर्तन करने वाला।

२. प्रेम।

- ११ चित्त अनुचाळे आणां पाळे, वर उपयोग बधावै।
 अहनिसि में आलोचन एहिज, ते गण तिलक कहावै।
- १२ गण रहितो अति आदर लहितो, हिये सदा हुलसावै।
 शासण नंदन-वन ओ मानें, पुद्गळ प्यास मिटावै॥
- १३ उगणीसै तेरे सुदि एकम, चैत मास चित चावै।
 लीन पर्णे सुविनीत लडायो, जयजस आनंद पावै॥

ढाल ६

दूहा

- १ गणि मर्यादा लोपियां, इह भव फिट-फिट थाय।
परभव में दुःख उपजै, वरणविये ते वाय॥
कांइ^१ धिग् २ जीवित धिग् २ जीवित, ते शिव सुख किम चाखैजी
॥घृपदं॥
- २ आचारज नी आण लियां विन, रेशम आदिक राखै जी।
ऊनूं सूतु और उपधि पिण, कपट करी नहीं दाखै जी॥
- ३ बलि मर्यादा कल्प लोप नैं, अधिक उपधि अभिलाखै।
तीर्थकर नों चोर कहीजे, सुगुरु-अदत जिन दाखै॥
- ४ खंड-वस्त्र नां वटका^२ ते पिण, कल्प मांहि गिण लेणा।
मापै नाही, मपावै नाही, (त्यानै) किणविध कहियै सैणा॥
- ५ कपट करी नैं वस्त्र पात्र ला, गुरु नैं नहीं दिखावै।
अंसमात्र पिण अधिको राख्यां, परभव में पिछतावै॥
- ६ लांबपणां नैं चोड़पणां में, वसतर अधिक रखावै।
इह भव परभव फिट २ होवै, चिहुं गति गोता खावै।
- ७ इमज पात्र बलि राखै अधिका, गुरु नैं नाही जणावै।
सत्य सहित मर हुवै विराधक, आभियौगिक^३ सुर थावै।
- ८ दूध दही घृत आदि विगय, पिण मर्याद उपरंत खावै।
सहल गिणी ने मापो न करै, लोळपणो चित ल्यावै॥
- ९ मर्यादा लोपै तसु अवगुण, गुरु नैं नाही जणावै।
फिट-फिट होवै जनम विगोवै, ते परतीत गमावै॥
- १० दूजै दिन ने अर्थे औषधि, आणी आप रखावै।
बलि दूजा दिन अर्थे अधिकी, बहिरी अन्य गृह ठावै॥
- ११ अंजन-पूडी अर्क नीं शीशी, प्रमुख धणी गृह दूरो।
धणी आज्ञा सूं अन्य गृह मेलें, तजी कपट नै कूड़ो॥

१. लय-इण स्वार्थ सिद्ध रे।

२. टुकड़ो।

३. छोटी जाति के देव।

- १२ ते पिण अंजन पूडी आदि दे, दूजे दिन अवधारो।
मूळ धणी री आण लियां विण, बहिरे नहिं लिगारो॥
- १३ मूळ धणी कहै सदा आण मुज, तो पिण ते नहिं गिणणी।
मूळ धणी री नित-नित आज्ञा, लेइ वस्तु वावरणी॥
- १४ आचारज नी आण लियां विण, विचरै नै विचरावै।
सैखे काळ चउमासे वसतां, ते पिण झींका^१ खावै॥
- १५ ए मर्यादा लोपै तेहथी, चारित्र रत्न रूळावै।
अल्पकाळ नां सुख ने अर्थे, अनंत सुखां ने गमावै॥
- १६ सल्य सहित उत्कृष्टे भांगे, नरक तिर्यच में जावै।
काळ अनंतो भ्रमण करै ते, बोधि दुर्लभ अति थावै॥
- १७ संवत उगणीसै तेरे रवि दसमी, सुदी बैसाख वसावै।
आणंदपुर में सीख समापी, जयजस गण सुख चावै॥
सुध मर्यादा पाळो संतां, गुरु बार-बार समझावै॥

१. दुःखी होकर पश्चात्ताप करना।

२. जैतारण (राज०) के पास 'कालू' नामक गांव जिसे
आनंदपुर भी कहा जाता है।

‘सतियां ! सुगुरु सीख दिल धारिये रे ॥ध्रुपदं॥

- १ सतियां ! स्वाम मर्यादा आराधियैरे, थेतो मेटो मान मरोड़ रे।
सतियां ! वैसत बोलत गमन में रे, राखो जुगत विनय विध जोड़ रे॥
- २ सतियां ! चउमासौ उतरियां छतां, राखे गुरु दरसन रो कोड़।
सतियां ! शीघ्र आय सुगुरु पद प्रणमिये, जाणों सुविनीतां री जोड़॥
- ३ सतियां ! स्वाम मर्यादा सिर धरो, थे तो छळ परंपच निवार।
सतियां ! इण भव कुरब बधै घणों, थारे परभव जय जयकार॥
- ४ सतियां ! वारु वखाण सुवांचता, तिण में सासण अधिक दीपाय।
सतियां ! वर मर्याद दिढावियै, थारी जग मांहि कीरत थाय॥
- ५ सतियां ! हेतु दृष्टांत वखाण में, थे तो दाखो मलाय-मलाय^१।
सतियां ! इम हिज सासण दिढावता, इण में लाज सरम मत ल्याय॥
- ६ सतियां ! गुरु भाई टोळा तणां, थे तो गुण गावो रुडी रीत।
सतियां ! गुण हरस हिवडै धरो, आतो सुविनीतां री नीत॥
- ७ सतियां ! दंभ कदाग्रह मत करो, वले मत करो वाद विवाद।
सतियां ! क्षमा धर्म दिल में धरो, थारे भव-भव हुवै समाध॥
- ८ सतियां ! सुगुरु रिझावो विनय सूं, थे तो बोलो विनय सूं बोल।
सतियां ! चित अनुकेडै चालता, थारो बाधै तोल अमोल॥
- ९ सतियां ! सुगुरु रिझायां संपदा, थारी रहिस्ये थिर पद थाप।
सतियां ! वार-वार कहूं थां भणीं, पछै पामो नही पिछाताप^२॥
- १० सतियां ! मुख आगै थारे आरज्यां, त्यांरो बंछो सुख हरवार।
सतियां ! बंछो टोळो^३ नै सुख तुम तणो, तो थे चालो चित अनुसार॥
- ११ सुविनीतां सूं पीतडी, पाळो सतगुर आण अखंड।
सतियां ! अंग चेष्टा ने ओळखो, थारो सुजस बधे महिमंड॥
- १२ सतियां ! उगणीसै चवदै समै, फागुण सुदि नवमी सोमवार।
सतियां ! वारु सीख दीधी सतियां भणीं, जोडी जयजश गणपति सार॥
- १३ सतियां ! संत चोमाळी सोभता, ए तो समणी एक सौ साठ।
सतियां ! सहर बीदासर रंगरळी, गणि संपति नित प्रति थाट॥

१. लय-हंसा नदीय किनारे रूखड़ो रे।

२. सझा-सझा कर।

३. पश्चात्ताप।

४. अग्रगण्यत्व।

‘संता ! सुगुरु आण सिर धारिये रे ॥ध्रुपदं॥

- १ संतां ! सुगुरु आण सिर धारियै रै, आतो आण अखंड उदार रे।
संतां ! आण आराध्यां सुख ळहै रे, आतो आण उतारे पार रे॥
- २ संतां ! आण निदेशकरे तसु रे, वीर प्रभु कह्यो सुविनीत।
संतां ! आण निदेशकरे नहीं रे, (तिण नै) वीर कह्यो अवनीत॥
- ३ इंगित आण आराधै अह्लाद थी, सुविनीत नां ए अह्लाण^२।
उत्तराध्यैन^३ जिन आखियो, तिण सूं पांमै परम कल्याण॥
- ४ संतां ! गणपति वृष्टे वरतवो, बळै सर्व कार्य में सुजाण।
संतां ! गुरु वचन आगे करी विचरवो, आचारांग पंचमे^४ पिछाण॥
- ५ संतां आचार्य नी आज्ञा विना, च्यारूं आहार घालै मुख मांय।
संतां ! चउमासी दंड नसीत में, (तो) आज्ञा बारे संयम किम थाय॥
- ६ संतां ! मृदु कठिन वयण गुरु सीख थी, हित लाभ माने सुविनीत।
लहै द्वेष अविनीत अजोगड़ो, ते पिण उत्तराध्यैन^५ संगीत॥
- ७ संतां ! ठाम-ठाम कह्यो गुरु वयण नै, धारे विनयवंत सुविसेस।
तरक काढै तिको अविनीतड़ो, तिण रे अविनय कर्म कुरेख॥
- ८ संतां ! सुगुरु आण चौमासो करो, चौमासो उतरियां शीघ्र आय।
संतां ! आज्ञा लेइ बलि विचरवो, छती शक्ति गोपवणी नांय॥
- ९ परम वनीत सूं प्रीतडी, अवनीतां रो संग निवार।
मांहोंमांहि जिल्लो बांधो मती, राखो सतगुरु सूं इकतार॥
- १० संतां ! पेज्जबंधण^६ नै परहरो, बले मत करो विकथावाद।
संतां ! निंदा उतरती मत करो, थारे भव-भव होसी समाध॥
- ११ संतां ! स्वारथ पूगै आपरो, स्वारथ पूगै नहीं किण बार।
संतां ! कलुष भाव मत आदरो, थारे होसी लाभ अपार॥
- १२ संतां ! कठिन वचन गुरु सीख थी, मत फेरो मुंहढा नौ नूर।
संतां ! सुगुरु रिझावो विनय सूं, तिण सूं पामस्यो सुख पंडूर॥

१. लय : हंसा नदीय किनारे।

२. चिन्ह।

३. अध्ययन १, गा० २, ३

४. आयारो अ० ५ उ० ६ सूत्र ११०।

५. अध्ययन १ गाथा २७, २८।

६. प्रेम बन्धन

- १३ संतां ! पंडित मरण आरे^१ करो, पिण गण मति छोडो कोय।
संतां ! मूळ पूंजी दृढ राखज्यो, रत्न हाथ आयो मत खोय॥
- १४ संतां ! उगणीसै चवदै समै, फागुण सुदि तेरस गुरुवार।
संतां ! सहर बीदासर रंगरळी, जय गणपति संपति सार॥

‘चरण रयण सुध राखौ ॥ध्रुपद॥

- अविचल सुख ने अभिलाखौ जी, वर सुमति सुधारस चाखौजी॥
- १ चारित्र निर्मळ पाळीजै, चारित्र रा जतन करीजै जी।
चरण रयण सुध राखौ थे तो, आदरियो सिद्ध साखौजी॥
- २ त्रिविधे हिंस्या टाळीजै, पद-पद पर जयणां कीजै।
सावज दानादि विरोधो, मन कर पिण मति अनुमोदो॥
- ३ छळ कपट झूठ नै टाळौ, दत्त गणपति आणा पाळौ।
तजियै त्रिय विषय भुयंगा, सजियै वर सील सुरंगा॥
- ४ परिग्रह नीं मूर्छा टाळौ, मूर्छा थी महा दुःख न्हाळौ।
ए पांच रत्न महा भारी, ए तो चारित्र मुक्ति नेतारी२॥
- ५ चारित्र थी सहु दुख टळियै, बलि विविध विघ्न परजळियै।
टळियै नरकादि निगोदं, एहवो चरण परम सुप्रमोदं॥
- ६ सुर वैमानिक सुख भारी, चारित्र सूं लहै उदारी।
इन्द्रादिक पदवी पावै, अहमिंद चरण थी यावै॥
- ७ तिहां असंख्यकाळ सुखरासो, ओ तो मुक्तिपुरी वट^३ वासो।
पछै सिवपुर वेग सिधावै, सुख आतमीक विलसावै॥
- ८ पुळ-पुळ पर चरण सुअंक, सुर वर सुख वर्ष असंख।
सुर-सुख त्रिहुंकाळ संगहियै, इक पुळ सिव तुल्य न लहियै।
- ९ पुद्गळ सुख प्यासा टाळो, चारित्र फळ नयण निहाळौ।
अल्प परिषह थी मत त्रासौ, चारित्र फळ नयण निहाळौ॥
- १० चरण फळ देखी दुःख भूळै, जब जीवन कमल दल फूलै।
काणी इक कवडी छोड़ावै, तसु जग नों राज पमावै॥
- ११ कवडी सुख विषय विराणी, जग राज स्वर्ग शिव जाणी।
एहवा चारित्र थी मत चूको, थे तो गणपति शरण म मूको॥
- १२ एहवा चरित्र में मन मंडो, गणि आणा नै मत छंडो।
(एहवो) चारित्र रतन गमावै, दुःख नकर निगोद नां पावै॥

१. लय : हरी बुरज पर बंगलो।

२. ले जाने वाला।

३. मार्गवर्ती विश्राम स्थल।

१०. तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १३ एतो चारित्र नैं ओळखायौ, उगणीसै सतरे मांढ्यो।
महा सुदि छट्ठ वखाणी, आतो जयजश संपति जाणी॥
- १४ इकवीस नव्यासी रंगरेला, एतो संत सत्यां रा मेळा।
भिक्षु भारीमाल ऋषिरायो, जयजश सुख संपति पायो॥

ढाळ १०

- १ १चारित्र में चित चंग, रहै रंगरत्ता हो, गण मांहे गुणी।
अधिको मन उचरंग सासण दीपावा हो करै कीरत घणी॥
- २ विनयवंत विख्यात, गणपति सेती हो, इकतारी घणी।
तजै अवर पखपात, चित्त हुलसावै हो, गणि कीरत सुणी॥

सोरठा

- ३ अपछंदा अविनीत, (त्यारे) इकतारी नहिं गणि थकी।
ज्यारे अविनीतां सूं प्रीत, ते मूआं पछैइ पख करै॥
- ४ एहवा दुष्ट अजोग, संगत तेहनी हो, कोई करज्यो मती।
ज्यारे मोटो अविनय रोग, इह भव परभव हो मांहे हुवै दुखी॥

सोरठा

- ५ श्रमण संत मिलाप, शिष्य शिष्यणी गणपति तणां।
करै तास धणियाप, ते अविनीत अजोगड़ा॥
- ६ १कोई रहै किणही पास, ते परलोके हो पहुच्यां सूं हिवै।
श्रमणी संत सुवास, उचरंग आणी हो, गणि चरणां निवै॥

सोरठा

- ७ पुस्तक पानां तास, वस्त्र अनै लोट पातरा।
ते पिण आण हुळास, सर्व गणी नै सोंपणां॥
- ८ १शिष्य-शिष्यणी करणा एक नाम, कइयो लिखत गुणसठै ताम।
दीक्षा देई सोंपणों आण, तिणरी मूळ न करणी तांण॥

१.२.३. लय : पांडव बोले बोल.....

४. लय : डाभ मूंजादिक नी डोरी।

९२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ९ एहवी भिक्खू नी मर्याद भारी, सुविनीत हिया में धारी।
दीक्षा लैवे ते पिण गुणवान, लिखत प्रमाणै राखै ध्यान॥
- १० दीक्षा देण वालो लेण वालो, सुविनीतां रो लेखो ऐ न्हालौ।
मांहोमांहि न राखै ललपल्लो^१, इम होसी दोनां रो भल्लो॥
- ११ इम रहै दोनां री छाज, तिणरा सीझे बंछित काज।
एहवी मन मांहि पहिली विचारै, दीक्षा लेवै दैवै सुखकारै॥
- १२ एहवी शक्ति पोता री जाणै, तो और करणी सेती चित ठाणे।
दीक्षा देवा रो तो मोटो काम, देणी पोता रा देख परिणाम॥
- १३ शक्ति देखी करै संचारो, कीधां पाछै पोंहचावणों पारो।
इम दीक्षा दैवे मुनिराज, जद रहै पोता री छाज॥
- १४ संवत्त उगणीसैं वर्ष अठारै, फागुण सुदि एकम् शनिवारै।
शिक्षा जयजश गणपति आपी, सुविनीतां हियै थिर थापी॥

१. अंतरंग संबंध।

‘स्वाम के वच प्यारे॥

म्हे तो दीठो न गणपति एह्वो, स्वामी जिन जेह्वो ॥ धूपदं ॥

- १ शिष्य शिष्यणी आचार्य नाम, दीक्षा देइ नैं संपणा ताम॥
- २ कन्है राखण नीं अभिलाखे, गुरु आज्ञा बिना किम राखे॥
- ३ राखै कन्है राखण नीं हामो^१, त्यांरा किण विध सीझै कामो॥
- ४ दीक्षा लेण वाळो सुविनीत, राखै गुरु सेवा सूं प्रीत॥
- ५ बिहूं वरतै गणि अभिप्रायो, तिणरे दिन-दिन हरष सवायो॥
- ६ परिणाम भांगें मति हीणो, तिणरा उभय भवे पुन क्षीणो॥
- ७ सैखे काळ चौमासे मैले, सुविनीत तुरत वच झैले॥
- ८ प्रवरतै मन वच कायो, ओ तो जिम गणपति अभिप्रायो॥
- ९ चौमासो उतरियां दरसन चावै, आय गणि रै चरणां लगावै॥
- १० अंस उतरती नहीं करणी, ए भिक्षु मर्यादा आदरणी॥
- ११ ए मर्यादा भांग्यां महापापो, सहै परभव दुख संतापो॥
- १२ भाग्य जोगे भिक्षु गण पायो, ओ तो चिंतामणी कर आयो॥
- १३ एहथी टळियै नरक निगोदा, पामै शिव सुख परम प्रमोदा॥
- १४ उगणीसै वर्ष उगणीसं, -वारू जयजश हरष जगीशं ॥

१. लय— ज्यारि शोभे केसरिया।

२. तमन्ना।

१४ तैरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

ढाळ १२

- १ 'थे तो चतुर सीखो सुध चरचा रे, थे तो परहर देवो परचा^१।
ए तो परचा आछा नांही रे, राखो समझ हिया रे मांही॥
- २ परचो राखै ते नर भोळा, त्यांरो जीव करै डाळाडोळा।
परचा सूं ओळभो पावै, त्यांरी क्यां हीं शोभा नहि थावे॥
- ३ परचा वाळो जो क्षेत्र भळावै, तो उ मन रळियायत^२ थावै।
परचा वाळे क्षेत्र नहीं मेले, तो उ दाव कपट बहु खेले॥
- ४ पछै आमण-दुमण^३ थको जावै, पिण मन में बहू दुःख पावै।
रात दिवस जाए हींजरतां^४, परचा वाला रो ध्यानज धरतां॥
- ५ एहवा परचा रा फळ जाणी, तिण नै परहरै उत्तम प्राणी।
जिण रै परचा रो पड़ियो स्वभावो, छूटण रो कठिन उपावो॥
- ६ जबर समझ हुवै हिया मांहि, तो उ तुरत देवै छिटकाइ।
तिण रे पीत औरां सूं पूरी, गणपति सूं पीत अधूरी॥
- ७ परचा वाळा री भावना भावै, जाणै दरसण करवा कद आवै।
आयां देख हियो अति हरखै, जाणै जौहरी नग नै परखै॥
- ८ परचा वाळा स्हामो नहीं जोवै, वळे नयण वयण नही मोवै।
परचो छूटण रो एह उपायो, जय गणपति एम जणायो॥
- ९ उगणीसै वर्ष उगणीसै, मृगसर विद सातम दिवसे।
प्रथम-मर्यादा दिन सुखदायो, परचा में जयजश ओळखायो॥

१. लय—रस गिरधी हिलिया गटकै रे.....।

२. स्नेहात्मक परिचय।

३. प्रसन्न।

४. अनमना।

५. याद में झूरते हुए।

- १ क्यूं रे तोय लज्जा न आवै, भटकत गण थकी बार।
ओरन कूं उपदेस देत है, आप चरण कियो छार^२॥
- २ स्वाम भिक्षु नी भांगी मर्यादा, फिट-फिट हुआ जगत मझार॥
- ३ अनंत सिद्धांरी आण भागी ने, अवगुण बोलै मूढ गिंवार॥
- ४ कुक्कडधम^३ सरीखो टाळोकर, दीधो जीतब जनम बिगाड़॥
- ५ नंदण वन भिक्षु गण थकी नीकळी, गयो जमारो हार॥
- ६ टाळोकर भव-भव दुख पावै, कहितां नावै पार॥
- ७ निज आत्म नैं निंद परिषद में, तजी मान अहंकार॥
- ८ अजेस^४ पगे तूं लाग सतगुरु रे, जो चाहै सुख सार॥
- ९ उगणीसै गुणबीसै चेत विद में, बीज तिथ रविवार॥

१. लय क्यूं रे तोय लज्जा न आवै नाम फकीर धरावै।

२. भस्म।

३. एक घने बालों वाला कुत्ता भोजन का तलाश में नीलगर की कुण्ड में गिर गया बाहर निकलने पर उसकी रंग-विरंगी सूरत से डरते हुए अन्य जानवरों ने कौतुक से पूछा—तुम कौन हो ? तब ऊंचे टीले पर बैठे हुए उसने रौब जमाते हुए कहा—“मेरा नाम है कुक्कडधम” मुझे जानवरों का राजा बनाकर भेजा गया है। भोले जानवर इस बात को सच मानकर उसकी सेवा करने लगे। पर सायंकाल के समय जब गांव के कुत्ते भौंकने लगे तो इससे भी नहीं रहा गया और भौंकते ही इसकी सारी पोल खुल गई। तब कुछ हिंसक जानवरों ने इसका काम तमाम कर दिया।

४. अब भी।

९६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

शिष्य उवाच—

- १ 'होजी स्वामी ! सरणे आयो गण नाथ, सीखडली आछी आपौ
म्हारा स्वाम ! ।
होजी स्वामी ! परम उपगारी मुज आप, अविचळ थिर पद थापो
म्हारा स्वाम ! ॥

गुरु उवाच—

- २ हां रे चेला ! सुवनीतां रो कीजै संग, वारु जस कीरति बाधे ।
म्हारा शिष्य ! ।
हां रे चेला ! चरण समकित दिढ होय, जानादिक वर गुण लाधे
म्हारा शिष्य ! ॥

शिष्य उवाच—

- ३ हो जी स्वामी ! कोई अविनीत हित^१ करै- आय, ललचावे मीठो बोली ।
म्हारा स्वाम ! ।
हो जी स्वामी ! स्यूं करिवो गणनाथ !, आखीजे सीख अमोली
म्हारा स्वाम ! ॥

गुरु उवाच—

- ४ हां रे चेला ! मन में विचारणो एम, दुखदाई खुद्र घणो है
म्हारा शिष्य ! ।
हां रे चेला ! इण सूं पीत कियां पत^२ जाय, गणि स्यूं प्रतनीकपणो है
म्हारा शिष्य ! ॥
५ हां रे चेला ! हित करणो नर देख, गणपति नों कुरब निहाली ।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! परम विनीत संपेख, तसु संगति सिव ! पटसाली^३
म्हारा शिष्य ॥

१. लय : हां जी बना ! गोरी में मोत्यां जितरो भार

२. प्रेम ।

४. पृष्ठशाला

३. प्रतिष्ठा

शिष्यउवाच—

- ६ हो जी स्वामी ! गणपति सुगुरु सुजाण, सीखड़ली दै किण बारे ।
महारा स्वाम
हो जी स्वामी ! कोमल कठिन विचार, चिंतावणौ स्यूं तिण वारे,
महारा स्वाम ! ॥

गुरु उवाच—

- ७ हां रे चेला ! मुज हित काज महाराज, सीखड़ली मुज ने देवै,
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! साधण सिवपुर राज, सुविनीत इसी मन देवै !
महारा शिष्य ! ॥

शिष्य उवाच—

- ८ हो जी स्वामी ! क्रोध आवै किण वार, किण विध ते निर्फल कीजे ।
महारा स्वा० ! ॥

गुरु उवाच—

- हां रे चेला ! क्रोध कटुक फल न्हाळ, समता रस मन में पीजै ।
महारा शिष्य ! ॥
९ हां रे चेला ! संत सती गण मांय, सुख माने अधिक सवायो ।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! सासण सोभ बढ़ाय, दीपावै ते अधिकायो
महारा शिष्य !
१० हां रे चेला ! गणपति ना गुणग्राम, करतो सुणतो हुलसावै ।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! गुरु भक्तां सूं हेत, तसु गुण पिण मुख सूं गावै ।
महारा शिष्य !
११ हां रे चेला ! बाल वृद्ध बहु संत, रंगरत्ता सासण मांझो ।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! फल्या-फूल्या रहै जेह, तसु दिन सुख मांहे जायो ।
महारा शिष्य !
१२ हां रे चेला ! कोई अविनीत दुःख वेदंत, ते पिण पांती रो जाणी ।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! विगय भोगवै तेह, पांती रो बलि अनपाणी ।
महारा शिष्य !

- १३ हां रे चेला ! ते पिण रहै गणमांय, दुख वेदै अधिक अथायो।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! जो करै सासण री बात, तो उतरती बोलै वायो।
म्हारा शिष्य !
- १४ हां रे चेला ! गणपति रा गुणग्राम, सुणियां पिण ते दुख पावै।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! गुरु भक्तां सूं द्वेष, तसु गुण सुण बेदल^१ थावै।
म्हारा शिष्य !
- १५ हां रे चेला ! गणपति वारू सीख, दे श्रमण सत्यां ने भारी।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! कानां में नहीं सुहाय, अन्य स्थानक जाय तिवारी।
म्हारा शिष्य !
- १६ हां रे चेला ! संयम नों दै साज, गणि वारू विविध प्रकारे।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! एहवा गणि नां जाण, गुण सुण नें मुंह बिगाडे।
म्हारा शिष्य !
- १७ हां चेला ! सासण सिव पद पंथ, रहितो ते गण मांयो।
म्हारा शिष्य !
हां रे चेला ! बेदळ विलखै नूर, दुख मांहि दिन तसु जायो।
म्हारा शिष्य !

शिष्य उवाच—

- १८ हो जी स्वामी ! सर्व पांती रो आहार, विगयादिक पांती रो खायो।
म्हारा स्वाम !
हो जो स्वामी ! सुविनीत सुख वेदंत, तो ओ दुख वैदै किण न्यायो।
म्हारा स्वाम !
- १९ होजी स्वामी ! स्वाम भिक्षु गणसार, नरकादिक नां दुख छेदै।
म्हारा स्वाम !
हो जी स्वामी ! भाग्य जोग आयो हाथ, किण कारण ओ दुख बैदै।
म्हारा स्वाम !
- २० हो जी स्वामी ! चरण-रयण चितचंग, चिंतामणि चिंता चूरै।
म्हारा स्वाम !
हो जी स्वामी ! ते पिण आयो हाथ, किण कारण ओ हिवै झूरै ॥
म्हारा स्वाम !

[illegible]

गुरु उवाच—

२२ हां रे चेला ! इण रे शब्दादिक री चाय, मन मांहि अधिक उमेदै।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! जोग मिलै नहीं ताय, तिण कारण ओ दुख वेदै।
महारा शिष्य !

२३ हां रे चेला ! क्रोधादि च्यार कषाय, ज्ञानादिक गुण नें भेदै।
 म्हारा शिष्य !

हां रे चेला (तिणरै) जबर कषाय नों जोर, तिण कारण ओ दुख वेदै।
 म्हारा शिष्य !

२४ हां रे चेला ! जस हेतु विनय विचार, ते (पिण) इणं सू करणी नावै।
महारा शिष्य !
हां रे चेला ! अविनीतां रो जस नहिं होय, तिण कारण ओ सीदावै।
महारा शिष्य !

२५ हां रे चेला ! इणरी प्रकृति अधिक अजोग, गुरु स्यूं पिण नाहि मिलावै ।
 म्हारा शिष्य !

हां रे चेला ! मन मान्या काज न होय, तिण कारण ओ दुख पावै ।
 म्हारा शिष्य !

२६ हां रे चेला ! आहारादिक नी एह, ळोळपणां नी मन ल्यावै।
म्हारा शिष्य !

हां रे चेला ! पाति में नही संतोष, तिण कारण ओ दुख पावै।
म्हारा शिष्य !

२७ हां रे चेला ! स्त्रीयादिक ना संग, परचा थी ओ अति रीझै ।
महारा शिष्य !
हां चेला ! ते पिण न मिलै जोग, तिण कारण मन में खीजै ।
महारा शिष्य !

२८ हां रे चेला ! गुरु सूं प्रकृति मिलै नांय, गणपति रा गुण जन गावै।
 म्हांरा शिष्य !
 हां रे चेला ! इण नें नहीं रे सुहाय, तिण कारण ओ दुख पावै।
 म्हांरा शिष्य !

१. परिश्रम ।

- २९ हां रे चेला ! गुरु भक्ता सुविनीत, तिण रा पिण गुण जन गावै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! ते पिण नहीं रे सुहाय, तिण कारण ओ कुमलावै !
म्हारा शिष्य !
- ३० हां रे चेला ! गण में रंगरत्तो नांय, गण रा पिण गुण जन गावै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! ते पिण नहीं रे सुहाय, तिण कारण ओ सीदावै !
म्हारा शिष्य !
- ३१ हां रे चेला ! अवनीत दुष्ट अजोग, तिण ने पिण जो विसरावै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! खांच लेवे आप मांय, तिण कारण ओ दुख पावे !
म्हारा शिष्य !
- ३२ हां रे चेला ! दीक्षा दे सूपणो आण, सुवनीत मर्यादा सैवै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! इण रे पोते राखण री हाम, तिण कारण ओ दुख देवै !
म्हारा शिष्य !
- ३३ हां रे चेला ! ए अवगुण तज दूर, सुवनीतां रो संग कीजै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! बलि कहू शिक्षा सार, तन मन सूं ते धारीजै ॥
म्हारा शिष्य !
- ३४ हां रे चेला ! सम्यक्त्व चरण अमोल, जतने करनै राखीजै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! च्यार तीर्थ में तोळ, सुर शिव पद सुख चाखीजै !
म्हारा शिष्य !
- ३५ हां रे चेला ! करलो ही आय पड़ै काम, अनसन कर तन खंडीजै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेला ! स्वाम भिक्षु गणसार, सिवदाता नवि छंडीजै !
म्हारा शिष्य !
- ३६ हां रे चेला ! नरक निगोद नां दुख, फारकती^१ इण सूं होवै !
म्हारा शिष्य !
- हां रे चेळा ! एहवो ! भिक्षु गण जाण, गुणवंता तू मत खोवै !
म्हारा शिष्य !

१. छुटकारा ।

- ३७ हां रे चेला ! नीठ-नीठ आयो हाथ, अति ही दुर्लभ छै भाइ ।
 म्हांरा शिष्य !
 हां रे चेला ! बार बार कहूं तोय, गण में राखै सेंठाइ ।
 म्हांरा शिष्य !
- ३८ हां रे चेला ! गण ए किळ्याण नों स्थान, इण में गाढा पग रोपीजै ।
 म्हांरा शिष्य !
 हां रे चेला ! आय पडै कोई काम, गण सूं तो नवि कोपीजै ।
 म्हांरा शिष्य !
- ३९ हां रे चेला ! उगणीसै उगणीस, जय गणपति नी ए शिक्षा ।
 म्हांरा शिष्य !
 हां रे चेला ! तज अवनीतां रो संग, निर्मळ थे पाळो दीक्षा ।
 म्हांरा शिष्य !

रूडी भिक्षु आण में वहिये,
आण अखंडित वर गुण मंडित पंडित तेह प्रवीण।
रूडी गणपति आण में वहिये ॥धूपदं॥

- १ दीक्षा देइ नैं आण संपणो, लिखत गुणसठे लेख।
लालपाल तिण सूं मूळ न राखै, बलि लल^२ नवि देणी रेख॥
- २ नेठाउ^३ पंच अज्जा उपरंतज, जो गणि नापै ताम।
आडदोड मन मूळ न आणे, अधिक तणीं तज हाम^४॥
- ३ चउमासो उतरियां पाछै, कर दर्शण धर चूप।
आहार चिहूं विण भोगवियां, मुनि अज्जा पुस्तक सूप।
- ४ परचो राख्यां पामें ओळंभो, तेहथी रहिवो दूर।
अधिक सचेत रद्धां थी थारो, दिन-दिन चढतो नूर॥
- ५ उष्ण आहार प्रमुख मर्यादा, पाछै रूडी रीत।
पत्र लिखी गणपति नैं आपै, निर्मळ राखै नीत ॥
- ६ परम प्रीत गणपति सूं पूरण, रीझावै दिल खोल।
सासन अधिक दिढायां बाधै, च्यार तीर्थ में तोल॥
- ७ टालोकर नैं अधिक निखेधे, तज अवनीतां रो संग।
आप तणीं रागी पिण न करे, जिल्ला नैं जाण भुयंग ॥
- ८ तन मन वयण कळा चतुराइ सूं, प्रसन्न करै गणनाथ।
प्रसन्न थयां सुख इहभव परभव, बलि-बलि स्यों कहूं बात ॥
- ९ श्रद्धा आचार नैं सूत्र कल्प रा, बोल री मत कर तांण।
गुरु तथा बुद्धिवंत कहै ते मानणो, लिखत पेतालीसै आण^५॥
- १० उगणीसै इकवीसै महासुदि, ग्यारस नैं चंद्रवार।
गुरु अभिप्राय रद्धां सुख निश्चय, जयजश हरष अपार ॥

१.लय : सुगुणा पाप पंक।

२. झूठा आश्वासन।

३. साधारणतया।

४. ममत्व, अभिलाषा।

५. आज्ञा।

- १ 'सुख तो हौवे छै प्रकृति सुधारिया रे, आसा तृष्णा नें दूर निवार रे।
सुवनीत चित कैड़े वरते सदा रे, सासण ऊपर दृष्टि सुधार रे॥
सुख तो हौवे छै प्रकृति सुधारियां रे ॥ध्रुपदं॥
- २ निज करनां दीक्षित जे मुनि महासती, कन्है राखण री न करै हाम।
आज्ञा दियां विण कलुषपणों नहीं, प्रीति गणपति सूं अति अभिराम॥
- ३ कुरब बधावै मुनि अज्जा तणों, तो पिण विमन न हुवै मन मांहि।
न करै जेहनो खेधो^१ ईसको, राखै तिण सूं पिण हेत सवाय॥
- ४ दीक्षा में दीर्घ तथा लघु मुनि अज्जा, बद्धि करी अल्प तथा अधिकाय।
कुरब बधावै गणपति तेहनो, तिण सूं पिण अनुकूल वरते ताय॥
- ५ गुरु आपै असणादिक उपधि अन्य भणीं, खेत्र भळावे चोखो जाण।
तो पिण न करै तिणरो ईसको, सुविनीत नां लक्षण एह पिछाण॥
- ६ बांको नहीं वरते तिण सूं सर्वथा, छळ बळ माया न करै रंच।
अखंड आराधै मर्यादा गुणी, अधिकी गणपति सूं प्रीत सुसंच॥
- ७ कठण वचन में गणपति सीख दै, च्यार तीरथ में दीये निषेध।
तो पिण कलुष भाव आपै नहीं, सुवनीत सासण तिलक संवेद॥
- ८ न करै उत्तरती गण नी बारता, न सुणै उत्तरती किण ही बार।
सासण दीपावै नित्य परिसद मझै, ते सुवनीत सासण रा सिणगार॥
- ९ संवत उगणीसे वर्ष चौबीस में, वैसाख सुकल बीज भृगुवार।
सासण थंभ भणीं ओळखावियो, जयजश आनन्द हरष अपार॥

१.लय — जिनवर गणधर मुनिवर ने।

२. मानसिक जलन।

ढाळ १७

‘जिल्लो बांधण री नहीं जिन आगन्या रे ॥ध्रुपदं॥

- १ निज स्वार्थ अर्थे गुरु आज्ञा बिना रे, आप रो रागी करै अयाण रे।
अथवा गुरु भाई सुवनीत सूं रे, प्रतिकूल अर्थे जिल्लो पिछाण रे॥
- २ असणादिक रागी करवा आपणौ, विगय पय दही घृत नैं मिष्ठान।
सूखडी सरस आहार देइ करी, व्यंजण विविध प्रकारे जाण॥
- ३ सुंदर वस्त्र पात्र देई करी, लिखी कोरा पाना फुन देह।
लेखण रंग रोगानादिक दियै, आप रो रागी करवा तेह ॥
- ४ असणादिक थोड़ो मंगावी करी, निज निरस समचै मेले ए रीत।
बलै और नैं सरस दे निरस लेइ करी, समचै मेलै इम करै अनीत॥
- ५ उणरो बोझ उपाडी नैं रागी करै, बले कार्य विविध करै धर प्रेम।
गुरु काम भळावै ते टाळो करे, तिण नैं निर्जरा रो अर्थी कहिये केम॥
- ६ बले कार्य करावै ते पिण तेहनों, पक्षी तसु काम पड्यां दै साज।
उणरे बदळे बीजां साधां भणीं, बिरओ^५ बोलंतो नाणै लाज॥
- ७ इमहिज विगयादिक लेवै तिको, तेहनें बदळे पख खांचे जांण।
‘कवा रो घाल्यो’^६ नीचो जोवतो, टुकड़ो न्हाख्यो जिम श्वान पिछाण॥
- ८ उपराठो^७ वरतै आचारज थकी, दोनूई मोह मतवाळा^८ धींग।
खामी पडियां निषेधै जो एकनें, तो दोनूई स्हांमा मांडै सींग॥
- ९ प्रतिकूल वरते मुनि सुवनीत सूं, अवनीत सूं हेत गुष्ट अवलोय।
अवनीत नैं या लखण कर ओळखौ, च्यार तीरथ में फिट- फिट होय॥
- १० ‘तुकम तासीर असर सौबत’^९ तणों, एह ओखाणो^{१०} छै जग मांय।
अविनीत सूं हेत गुष्ट राखै घणों, गुणां री बधोतर किणविध थाय॥
- ११ टाळोकर निंदक ते सासण तणों, प्रत्यनीक गणपति नो गणमांय।
कोइ प्रत्यनीक गुष्ट हेत राखै घणों, यां तीनां रो अपजस अधिको थाय॥
- १२ काम करै करावै और साध पै, निर्जरा रो अर्थ थको उमेद।
ते पिण सतगुरु नी आज्ञा थकी रे, तेहनों नहीं छै इहां निषेध॥

१. लय — जिनवर गणधर मुनिवर ने।

२. अपशब्द।

३. कवल-ग्रास के लालच में।

४. विपरीत।

५. हड्डा कड्डा।

६. बीज जैसा फल, संगत जैसी रंगत

७. कहावत।

- १३ सिंघाडे विचरे जे त्रिण चउ मुनि, बांधै बे जणां जिल्लो तिण मांय।
टोळो भळायो तसु मुरजी बिना, ए पिण मोटो रोग कहाय॥
- १४ दिसां^१ जावै त्यां पिण एकठ^२ करै, आगे-पाछै जइ भेळा होय।
मांहों मां गुह्य करै अळखामणा, त्यांरो च्यार तीरथ में अपजस होय॥
- १५ पेलां रा लाभ तणीं बंछा करे, पांती में पांमै नहीं संतोष।
चोथे ठाणे^३ दुख सेज्जा कही, ए पिण अवगुण छोड्यां मोख॥
- १६ बात उतरती सासण री करै, अविनीत साध श्रावक सूं प्रीत।
आज्ञा मर्यादा सुध पाळै नहीं, इण लखणां जाण लीज्यो अवनीत॥
- १७ सासण दीपावै सोभावै घणों, गणपति सुविनीतां सूं प्रीत।
आराधै आज्ञा मर्यादा गुणी, इण लखणां जाण लीज्यो सुवनीत॥
- १८ संवत उगणीसै पच्चीस में, माघ वदि तेरस नें रविवार।
जोड कीधी जिल्लो ओळखायवा, जयजश आणी हरष अपार॥

१. जंगल ।

३. ठाणं ४।४५०।

२. एकत्व।

'धर्म ना धोरी जी, सुगुरु सिष जोडी जी ।
होजी एतो भिक्षु ने भारीमाल, जिसा जसघारी जी ।
सासण सिणगारी जी ॥ध्रुपद॥

- १ आण आराधै सुगुरु नी कांइ, कार्य बिलंब रहीत ।
अंग चेष्टा प्रति ओळखै कांइ, ते सुगुणां सुविनीत ॥
- २ बलि न हुवै 'मुख नो अरी' कांइ, भ्यंतर^३ बाह्य प्रशांत ।
आचारज नै आगलै कांइ, सीखै अर्थ सुदांत ॥
- ३ तन मन सू सेवा करै कांइ, सासण रो सिणगार ।
च्यार तीरथ जाणै तसु, इण रे सुगुरु थकी अति प्यार ॥
- ४ परम प्रीत सतगुरु थकी कांइ, त्रिहुं योगे करी तेम ।
साताकारी ए सही कांइ, गणपति जाणै एम ॥
- ५ गणपति नैं आराधियां कांइ, विनय करी विधविध ।
विनय करी नैं सेवियां कांइ, विनय तणी समरिध ।
- ६ एहवा शिष्य सुविनीत ने कांइ, गणपति गण सिणगार ।
चरण पळावै निर्मळो कांइ, थेट उतारे पार ॥
- ७ आराधन विध-विध करी कांइ, संतोषै सुखकार ।
पभणै परिषद नै विषे कांइ, ए गण नों आधार ॥
- ८ आचारज मोटा हुवै कांइ, वारु गुण ना जाण ।
मरण पंडित हुवै ज्यां लगै कांइ, तोड़ै नहीं कर ताण ॥
- ९ नवमें दसवैकालिके^४ कांइ, कन्या नो दृष्टांत ।
जनक कन्या नैं पाळ नैं कांइ, प्रवर मिळावै कंत ॥
- १० तिम गुरु सिष सुवनीत नो कांइ, प्रवर बधावै तोल ।
पदवी जोग करी तसु कांइ, गणपति तिलक अमोल ॥
- ११ विनयवंत मुनिवर भणी, गुरु जाणै अति हितकार ।
झीणी रहस्य सिद्धांत नीं कांइ, तास धरावै सार ॥
- १२ अधिक प्रीत वाळा तणों कांइ, सतगुरु गण रे मांय ।
कुरब बधावै अति घणों कांइ, विविध प्रकारे तांय ॥

१. लय-पायल वाली पदमनी ।

२. बाचाल ।

३. अंतरंग ।

४. दसवेआलियं ९।३।१३।

- १३ अंतसीम आराधना कांइ, हुवै जिहां लग ताम।
छैह^१ न देवै तेहनै कांइ, गणपति जी गुणधाम
- १४ छैह न देवै तेहनै कांइ, हरख बंधावै हीर।
सदा प्रसन्न राखै तसु कांइ, पिण न करै दिलगीर॥
- १५ विनय करी रीझावियां कांइ, तसु फळ इहभव एह।
आराधक पद पामनै कांइ, वेगी मुगत वरेह॥
- १६ विनयवंत सिष एहवा फुन, गणपति इसा गंभीर।
सासण तिलक सुहामणां कांइ, निमळ पयोधी क्षीर॥
- १७ विनय करी नै सेवियां कांइ, वारू विध-विध रीत।
एहवा सिष सुविनीत सूं गुरु, पाळै पूरण प्रीत॥
- १८ त्रिहुं योगे रीझाविया, कांइ सतगुरु नै सुखदाय।
एहवा सिष सुवनीत नै कांइ, पंडित मरण सहाय॥
- १९ कार्य मनगमता करी कांइ, गणपति नै संतोष।
एहवा सिष सुविनीत नै कांइ, पद दिये आराधक पोष॥
- २० विनयवंत सिष नै बली कांइ, गणपति नी वर जोड़।
अविचल तीरथ च्यार में कांइ, सासण सिरमणि मोड़॥
- २१ एहवा आचारज थकी, सिष राखै हरष विशेष।
उचरंग दिन-दिन अति घणो कांइ, परम विनय नी रेख॥
- २२ समकित जेहनी निरमळी कांइ, प्रवर महाव्रत पंच।
एहवा सिष गणपति तणै कांइ, दिन-दिन संपति संच॥
- २३ आज्ञा अमल आराधनै कांइ, तीरथ च्यार सुतंत।
एहवा सिष गणपति तणीं कांइ, जोड़ी जग दीपंत॥
- २४ अन्यमति स्वमती पेख नै कांइ, ते पिण इचरज थाय।
एहवा सिष गणपति तणीं कांइ, दिन-दिन सोभ सवाय॥
- २५ दिन-दिन सोभा अति घणीं कांइ, हियै हरष अति हेव।
एहवा सिष गणपति तणीं कांइ, सारे सुर नर सेव॥
- २६ सेवा सारे सुर घणां कांइ, च्यार जाति ना चाय।
एहवा सिष गणपति तणां कांइ, प्रणमें अपछर^२ पाय॥
- २७ प्रणमें पाय अपछर घणां कांइ, फुन अन्य रो सोहंत।
एहवा सिष गणपति भणी कांइ, देख-देख हरषंत॥

१. किनारा।

२. अप्सरा।

- २८ देख-देख ने हरखती कांइ, परम प्रीत अधिकाय।
 एहवा सिष गणपति तणी, करै विविध प्रकारे सहाय॥
- २९ विविध सहाय करै घणां कांइ, सुरवर सुरी सुजाण।
 एहवा सिष गणपति तणी कांइ, वारू सुणै वखाण॥
- ३० वारू वखाणज सांभलै कांइ, अन्य समय पिण आय।
 एहवा सिष गणपति तणी कांइ, सेव करै चित ल्याय॥
- ३१ उत्तराध्ययन विषै कह्यो कांइ, प्रथम अध्ययनज अंत।
 विनयवंत ने पूजतां कांइ, चिहुंविध देव सुतंत॥
- ३२ च्यार जाति ना देवता, फुन मनुष्य तणां बहु वृंद।
 ते पिण सिष सुवनीत ने, पूजै अति आनंद
- ३३ औदारिक तनु छोड नै कांइ, पावै सिव पद तंत।
 देव हुवै तो दीपतो कांइ, अल्प-रज^१ महर्द्धिवंत ॥
- ३४ प्रवर चारित्र पाळण तणी, निर्मळ जेहनीं नीत।
 आचारज गुण आगला कांइ, शिष्य सुगुणो सुवनीत ॥
- ३५ उगणीसै पणबीस में कांइ, बिद वैसाख सुबीज।
 सिष सुगुरु सेव्यां लहै कांइ, विविध प्रकारे रीक्ष ॥

१. हळुकर्मी।

‘सुमति सदा दिल में धरो ॥धुपदं॥

- १ आचारज ने आगले, शिष्य शिष्यणी सुखदाय सलूणा!
विनयवंत गण बालहा, सासण तिळक सोभाय सलूणा !
- २ आण अराधै सुगुरु नीं, कार्य करै धर प्यार।
निपुण अनै स्थूल बुद्धि करी जाणै, इंगित आकार॥
- ३ कठण वचन गुरु सीखवै, समभावै रहे सूर।
लाभ कारण ए मुझ भणीं, न फेरै मुख नों नूर ॥
- ४ गे'रा सायर सारिखा, सुरगिरि जेम अडोल ।,
सासण स्तंभ सुहामणां, त्यांरा च्यार तीरथ में तोल ॥
- ५ परिषद मांहि निषेधियां, तो पिण पूरण प्रीत।
कलुष भाव आणै नहीं, संत सती सुवनीत॥
- ६ एहवा शिष्य सुवनीत रो, सर्वकार्य में सार ।
गणपति नैं आधार दै, धरा सहे जिम भार ॥
- ७ काच भाजन अवनीतड़ो, कहो चोटां खमै केम।
सहै चोटां तो वनीत ही, कै हीरा कै हेम ॥
- ८ अवनीत गोळौ मैण नों, तस गळै तत्काळ।
सुवनीत गोळो गार नों, ज्यूं धमै ज्यूं लाल॥
- ९ अवनीत वृक्ष एरंडियो, अस्थिर ते करै कोप।
सुवनीत कल्पतरु समौ, विनय नो वगतर टोप ॥
- १० ऊंडी तास आलोचना, गुण कर गहर गंभीर।
निर्मळ भावै बरततो, जिम गंगा नों नीर ॥
- ११ उगणीसै पणबीस में, तेरस धुर वैसाख ।
सुकल^१, सुवनीत लडावियो, जयजश शिव अभिलाख॥

१.लय-तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी।

२. शुक्ल पक्ष।

संविभाग करी लीजै ॥धुपदं॥

- १ निज पांती में जे रंजै, ते मुनिवर ने कुण गंजै जी सं०।
ज्यांरी भद्र प्रकृति गुण रासं, सहुनै सुखदाइ जासं जी।सं०।
- २ जिभ्या-इंद्रिय वस कीजै, तिण सू बांछित कारज सीझै जी।
मुज सीख सुगुण धारीजे, लज्या यत्ने राखीजै जी।
- ३ निज पांती में नही रंजै, तेहनों दुख कहो कुण भंजै।
अति खावण पीवण री पिपासा, किम पूरीजे तसु आशा॥
- ४ निज पांती में रंगराता, त्यांरे मानसीक सुखसाता।
जेहवो मिल्यो करै संतोष, समभावपणै सुख तोष॥
- ५ पांती में रति नहीं पावै, ते पग-पग में सीदावै।
गमती (वस्तू) देखी मान जावै, मांगंतां लाज न आवै॥
- ६ मांगै दूध दही घृत दाळं, नवा मोदक खंड विसालं।
बलि विविध तरकारी ताजी, सरसव प्रमुख नी भाजी॥
- ७ मांगै फलका चावळ दालं, मांहि सुगंध घृत सुविसालं।
मांगै घृत तलिया गुलगुलिया, तुरतुरिया^१ ने मुरमुरिया^२॥
- ८ मांगै घेवर नै खाजा, इण नै भोजन भावे ताजा।
मांगै लापसी नै सीरो, सुख पावै जीव शरीरं॥
- ९ मांगै माळपूआ नै खीरं, सुख पावै जीव शरीरं।
मांगै बूरो नै पतासा, दीधां हुवै हरष हुलासा॥
- १० मांगै पापड़ अति चंगो, इम सुख नावै मुज अंगो।
बाजरी री रोटी नहीं भावे, गहुं री देखी मन जावै॥
- ११ बाजरी री मांगै तो ताजी, आतो उष्ण चौपड़ी जाझी।
लूखी जो तिण नै वेवै, तो मुंह बिगाड़ दुख वेवै॥
- १२ बाजरी रो खीच नहीं भावै, कहै मुज तनू गरम लखावै।
उष्ण दूध बड़ादिक आपै, तो खातां मन नहीं धापै॥
- १३ खीच बाजरी रौ चित्त नावै, फलका री भावना भावै।
फलका जो आवै थोड़ा, विण पांती इम तसु फोड़ा॥

१. लय-हरी बुरज पर बंगलो।

३. बेसन के भुजिये।

२. दाळ के बड़े।

- १४ जो कदाचित खीच उवेखै, तो सीज्यो अणसीज्यो देखै।
ते पिण मन बांछित नावै, विन पांती इम सीदावै॥
- १५ बीस तीस चाळीस करवाळी^१, ज्यां मांसू मांगै टाळी।
रस इंद्रिय मोकळी मेली, लज्जा पिण दूरी ठेली॥
- १६ समभाव अज्जा मुनिरायो, करवाळी देवै तायो।
तो कहै न दीधी आछी, रोस करिनै न्हांखै पाछी॥
- १७ पांती खावण ने पाछो^२, दीधां कहै न दीयो आछो।
मानै उत्तरतो^३ दियो आहारं, तिण सूं अवगुण हुवो अपारं॥
- १८ समचा^४ रो दे कोइ आहारं, उतरतो आवै किवारं।
(तो उणरौ) बैरी होय जावै पुरो, बिगाडै मुख नों नूरो॥
- १९ विन पांती ना फळ एहं, संतोस विना तसु देहं।
निज पांती में रति पावै, तो ए अवगुण कि थावै॥
- २० पर लाभ तणीं नहीं चायो, सुखसेज्जा^५ कही जिन रायो।
पर लाभ बांछे मांगंतो, दुखसेज्जा कही भगवंतो॥
- २१ जे असंविभागी^६ संतो, अवनीत कह्यो भगवंतो।
वर उत्तराध्ययन^७ मझारो, ग्यारम अध्ययन उदारो॥
- २२ ले असंविभागी लाधू^८, तिण ने कह्यो पापी साधू।
सतरम उत्तराज्झयणो^९, ए वीर तणां वर वयणो॥
- २३ असंविभागी नैं नहिं मोखो, दसवै^{१०} नवमें अवलोको।
वर संविभाग जे साधै, जे तीजो^{११} व्रत आराधै॥
- २४ कह्यो दसमें^{१२} अंग दयालो, वच बहु सूने इम न्हाळो।
इम जाणी ने जे सारो, संविभाग करी ले आहारो॥

१. रोटी।

२. पीछे रहने वाला।

३. नीरस।

४. समुच्चय—सबके लिए लाया हुआ।

५. ठाणं ४।४५१।

६. भक्त पान आदि का संविभाग न करने वाला।

७. उत्तरज्झयणाणि ११।९

८. प्राप्त।

९. उत्तरज्झयणाणि : १७।११

१०. दसवेआलियं ९।२।२२।

११. अचौर्यव्रत।

१२. पण्हावागरणाइं ८।१२।

आचार्य श्री भिक्षु कृत ढाळ-

- २५ ^१आहारपाणी साधु बहिरी ने ल्याया, संभोगी साधु ने बांट देवा री रीत।
आप आप्यो जाणी अधिक लेवै, तो अदत्त लागै जाये परतीत॥
आ श्रद्धा श्री जिनवर भाखी ॥धूपदं॥
- २६ ^२गणपति अतिसय ठाणायंगो^३, पत्थ^४ वत्थ^५ आहार अति चंगो।
विण पांति लेवै आहारं, तिण में श्री जिन आज्ञा सारं॥
- २७ त्यांरी आज्ञा सूं अणगारं, विण पांती लै कोई आहारं।
तिण में दोष नही छै कोई, सुख तो समभाव थी होई॥
- २८ कारण सूं दे विण पंती, समचित दै ते लहै खंती^६।
लज्जा तज मांग नें लेवै, तेहनों कुण अपजस केवै॥
- २९ अन्य नें कहै ल्यो मुज भारो, इम संके नहीं लिगारो।
करे अन्य बरोबर आहारो, किम उदेड^७ नें दै भारो॥
- ३० वृद्ध तो छै बहु मुनि अज्जा, निज भार उपाडै लज्जा।
पण उदेड नै नही देवै, 'अल्प गाउ' विहार' करेवै॥
- ३१ जे अधिक गुणी मुनि अज्जा, सुवनीत भद्र वर लज्जा।
धोरी जिम भार-धुरा लै, पिण उदीर ने नही आलै^८॥
- ३२ तसु उदीर लै कोई भारो, तो पिण ते करै नाकारो।
जबरी सूं जो कोई लेवे, तेहनी तो कीरत केहवै॥
- ३३ अथवा तेहनों जे भारो, गुरु उपडावै तिणवारो।
जे कुरबवंत मुनि कहिये, जग में तेहनो जस लहियै॥
- ३४ उगणीसै वर्ष छावीसं, मृग० विद चउदस सुर ईसं।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराया, जोड़ी जयजश सुख पाया॥

१. लय-मेघ कुमर हाथी रा भव में।

२. लय-हरी बुरज पर बंगलो।

३. ठाण ८।१५।

४. पत्थ।

५. वस्त्र।

६. क्षमाशील।

७. चला कर।

८. थोड़े कोशों का छोटा विहार।

९. देवे।

‘नंदन वन भिक्षु गण में वसोरी, हे जी प्राण जाय तो पग म खिसोरी।

नंदन वन० ॥ध्रुपद॥

- १ गण मांहि ज्ञान-ध्यान सोभेरी, हे जी दीपक मंदिर मांहि जिसोरी
- २ टाळोकर नो भणवौ न सोभै, नाक विना ओ तो मुखडुं जिसो ॥
- ३ अवनीत री देसना न दीपै, गणिका तणों सिणगार जिसो ॥
- ४ दुखदाई क्षुद्र जवा सरीखो, निंदक टाळोकर वमन जिसो ॥
- ५ सासण में रंगरत्ता रहो, सुर शिव पद मांहि वास बसो ॥
- ६ भाग्य वाले भिक्षु गण पायो, रत्न चिंतामणि पिण न ईसो ॥
- ७ गणपति कोप्यां ही गाढा रहो, समचित सासण मांहि लसो ॥
- ८ आड-डोड चित में म आणो, मोह कर्म नों थे तज दो नसो ॥
- ९ बार-बार स्यों कहियै तुम्है, अचल रहो पिण मति रे सुसो ॥
- १० खेल खिलाड्यां रो याद करो, अडिगपणैं थे तो गण में बसो ॥
- ११ उगणीसै गुणतीस फागुण री, जयजश आणा में सुख विलसो ॥

१. लय : मन वृंदावन जाय वस्यो री।

११४ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

ढाळ २३

- 'दुर्गति केरी साई हो टाळोकर पक्की ले लीधी,
आल पंपालज^१ बोलै हो, टाळोकर लज्जा तज दीधी॥धूपदं॥
- १ चंडाली चोकड़िया हो टाळोकर चाळा^२ चाळव्या,
दुर्मति कुमती कीयोरे प्रवेश।
क्रोध भुजंगी^३ पेठो हो टाळोकर रा घट मझै,
समकित चारित्र खोवै करी कलेश।
- २ अतीत काळे हुवा हो, टाळोकड़ निंदक नागड़ा,
निरथक दीयो जनम बिगाड।
हिवड़ांहिज^४ पिण दीसै हो, टाळोकड़ बेमुख^५ गण थकी,
फिट-फिट हुवा जगत मझार ॥
- ३ मोह वसै मतवाळो हो, असराळो^६ बालो^७ होय रह्यो,
काळो लगायो करम कठोर।
गेहरियो^८ होळी नों हो, ज्यूं बोलै निरलज बोलतो,
टाळोकड़ ए जिनमत केरो चोर॥
- ४ परभव री नहीं चिंता हो, मदमस्त अछत्ता आळदै,
जिण - तिण आगै बोलै विरवी बाण।
आतम काळी करतो हो, अति धेखज^९ धरतो गण थकी,
कृतघ्न, हरामखोर पिछाण ॥
- ५ वंदणा पंच पदारी, तिणमांहि नामज घालतो,
आचारज नों अधिक उदार।
देव तीर्थकर सरिखा हो, इम कहितो गणपति नै सदा,
हिवै अवरण^{१०} बोलै मूढ गिंवार ॥

१. लय : महलां रो मेवासी हो।

२. उल्टा सीधा/ काम

३. धोखा बाजी

४. सायं

५. वर्तमान में

६. विपरीत

७. धर्यकर

८. बावला

९. फाल्गुण मास में 'गेर' में नाचने वाला व्यक्ति

१०. द्वेष

११. अवशुण-निन्दा

- ६ नित्य प्रति नित्य प्रति करतो हो, टाळोकर ऊभो होय नें,
गण रा अवगुण बोलण रा पचखाण।
पंच पदा री साखै हो, जे सूंस लिया ते भांगिया,
बलि भांगी अनंत सिद्धां री आण॥
- ७ वीर थकां जे हूँता वर चवदै सहंस मुनीसरू,
अज्जिया हूँती बलि छत्तीस हजार।
त्यारै सरिखा श्रद्धू हो, इम कहितो गण मांही सदा,
हिवै अवगुण बोलण हुवो हुंसियार॥
- ८ अढी द्वीप^१ रा तस्कर हो, त्यां थी पिण टाळोकड बुरो,
इम नित्य कहतो हाजरी में कर जोड।
तिणरी बतका^२ माने हो, तिण नें पिण जाणूं चोरटो,
हिवै काढण लागो गण मांहि खोड॥
- ९ सूंस अनेकज भांग्या हो, टाळोकड गण थी नीकळी,
ते उदय हुवै जब इण भव मांहे पाप।
विविध प्रकारे पामै हो रोगादिक आपद आकरी,
व्यापै घणों सोग संताप॥
- १० परभव मांहे पामै हो, टाळोकड पीडा अति घणी,
बहु विध देवै परमाधामी मार।
लाल गोळा कर घाले हो, टाळोकड रा मुख मझै,
कीया कर्म संभार - संभार
- ११ उगणीसै सैंतीसै हो टाळोकड ओळखावियो,
फागुण सुदि चौथे नै भृगुवार।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराया हो, गण नायक तास प्रसाद थी,
जय गणि जोड़ी जयपुर शहर मझार॥
सासण वीर जिणंद नों हो ए गण समुदाय भिक्षु तणों,
तसु गण में रंग रत्ता, ते मुनि नें सुख आनंद घणो ॥आकडी॥

१. जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड, पुष्कर (अर्द्ध)

२. बात

सयाणा ! स्वाम गण सुख कारियो जी ॥धूपदं॥

- १ शासण वीर तणों सुविसालं, होजी ओ तो धारचो भिक्षु भारीमालं॥
- २ तास प्रसाद लह्यो सुख चारू, ओ तो नृपशशि जयजश वारू॥
- ३ भरत में भाण भिक्षु भळकंत, ओ तो धारियो प्रभुजी रो पन्थ॥
- ४ गर्भ जन्म जरा मरण नां दुख भारी, स्वाम गण थी हुवै निस्तारी॥
- ५ मनुष्य लोक थी अनंत गुणों नरक मांयो, स्वाम गण थी ते दुख मुकायो॥
- ६ खेव-वेदन सुर कृत अनंत, स्वाम गण थी ते दुख नों है अन्त॥
- ७ निगोद नां दुख नरक थी अधिकायो, स्वाम गण थी ते पिण मिट जायो॥
- ८ दुख समुद्र संसार है भारी, स्वाम गण थी ते पिण लहै पारी॥
- ९ काळ अनंत भ्रमण कियो आगै, पायो तीर्थ स्वाम गण सागै॥
- १० सम्यक्त्व देस विरत ने चरित्तं, स्वाम गण वर सरण पवित्तं॥
- ११ स्वाम प्रवर गण सरणे आयो, ए तो सर्व दुख क्षय पायो॥
- १२ पद अहमिन्द्र सव्वट्ठ-सिद्ध^२ भारी, स्वाम गण थी लहै सुख सारी॥
- १३ चक्री बलदेवादिक नों पद भारी, स्वाम गण थी होवै अधिकारी॥
- १४ पद तीर्थङ्कर गोत बन्धावै, स्वाम गण थी प्रवर सुख पावै॥
- १५ आत्मिक-सुख पामै भारी, स्वाम गण सरण थी उदारी॥
- १६ सासण नाथ तणों तीर्थ तीखो, म्है तो पायो स्वाम गण नीको॥
- १७ पारस परम स्वाम गण साचो, पायो जबर भाग्य थी जाचो॥
- १८ रत्न चिन्तामणि गण कर आयो, आतो चिन्ता सर्व मिट जायो॥
- १९ सरण स्वाम गण रै कोइ आवै, त्यांरा विघन सर्व मिट जावै॥

१. लय : आज अम्बाजी के नोपत ।

२. सर्वार्थ सिद्ध ।

- १ 'चरण रयण चिन्तामणि,
भाग्य प्रमाणे पायो, कांई भिक्षु स्वाम प्रसादे हो लाल।
करडो ही काम वणै कदा,
तो गण में थिर पग रोपै, पिण चारित्र नहीं विराधै हो लाल॥
- २ सासण रंग रता सदा,
परम प्रीत गणपति स्युं, अनुकल्पणे प्रवर्त्ती।
सुवनीता सिर सेहरा,
तसु च्यार तीर्थ गुण गावै, छै जसु चिहुं दिश कीर्ति॥
- ३ निन्दक टाळोकर भणी,
मन कर नैं नहीं बंछै, कांई जाणे 'भूर भुयंगा'^२।
जबर आसता गणी तणी,
शंक कंख नहीं ल्यावै, रहै सदा इकरंगा॥
- ४ मत करो गणी असातना,
मति खीजावो कोइ, ए जिनवर नीं वाणी।
काष्ठ वहै ज्युं प्रवाह में,
पापी नै दुरगति में, पाप ले जावै ताणी।
- ५ पातक छानो नवि रहै,
आपण चोड़े आवैं, ढाळे ढळतो पाणी।
संत असातना एहवी,
निश्चय सही कर जाणो, दुरगति नीं नीसाणी॥
- ६ भगवती^३ अंगे भाखियो,
श्रीमुख अंतरजामी, कुशिष्यक शतक निहाळी।
असातना दुखदायनी,
सीख सुवनीत सुभागी, असातना दै टाळी॥

१. लय—पातक छाने नवि रहै आपण मैं ।

३. भगवई संत १५।

२. भयंकर सर्प।

- ‘स्वाम भीखणजी सुखकारी रे, (त्यांरो) गण समुदाय उदारी।
शासन वीर तणों ए भारी रे, गण समुदाय उदारी ॥ध्रुपदं॥
- १ महावीर स्वामी रो सासण, भिक्षु-गण समुदायो।
भाग्य प्रमाणे तुज कर आयो, सिव दायक सुखदायो।
 - २ दधि^१ में जिहाज पाय नवि छंडै, वणै करडो कामो।
विविध प्रकारे वचन सहै पिण, न तजै प्रवहण-ठामो^२।
 - ३ भव सायर में जिहाज सरीखो, भिक्षू गण ए जाणी।
नरक निगोद दुखां सूं डरतो, न तजै उत्तम प्राणी।
 - ४ विविध प्रकार ना कष्ट ऊपजै, कटुक वचन मुनि तंडै।
च्यार तीर्थ रै मांहि निषेधै, तो पिण गण न वि छंडै॥
 - ५ आहार पांणी रो कष्ट ऊपनो, अधिक काम अरु भारो।
कदा आबरू^३ प्रकट उतारे, तो पिण नहि हुवै न्यारो॥
 - ६ ओसवाळादिक न्यात भर्णी, न तजै जग प्रगट दीसंता।
तिम ए वीर तणां सासण नै, न तजै मुनि मतिवंता॥
 - ७ किण ही पुरुष नै अकारज, (करतो) देखी न्यात मझारो।
तो पंचां ने आण सुणावै, पिण आप हुवै नहिं न्यारो॥
 - ८ तिम किण ही ने दोष सेवंतो, देख्यो तीर्थ मझारो।
तो गणपति ने आय सुणावै, पिण आप हवै नहिं न्यारो॥
 - ९ राजा, ठाकुर ने अंगरेज, तणै आगै न पुकारै॥
न्यात बाहिर काढण रो कारज, ते नहीं त्यारे सारे॥
 - १० न्यात बाहिर काढण रो कारज, है पंचां रे हाथो॥
अथवा त्यारे तोल^४ आवै जिम, तेहिज करै विख्यातो॥
 - ११ पंचां भर्णी सुणाय आप, निर्दोष हुवै निकळंको।
पिण आप न्यात बारे क्यूं निकळै, निकळ्यां अपजस डंको॥

१. लय—सासू सुसर चन्द नृपति नै।

५. तुल्य।

२. उदधि-समुद्र।

३. जहाज का आश्रय

४. इज्जत।

- १२ तिम किण ही में दोष देख, गणपति ने तुरत सुणावै।
आप आसता^१ त्यागरी राखी, अधिक विमल चित्त भावे॥
- १३ प्रतिसेवणा^२ बकुस^३ भेळा, रहै केवळी आपो।
सूत्र^४ वयण बहुविध अवलोकी, टाळै निज संतापो॥
- १४ छमासी प्रायश्चित्त बहिता, बेमास रो दोष लगायो।
तो दोय मास ने बीस दिवस दंड, देणौ जिन वच न्यायो॥

सोरठो

- १५ दोय मास दंड सेव, कपट करी आलोवियां।
तो वीस दिवस अधिकेव, असी दिवस इम संभवे॥
- १६ 'असी दिवस नो दंड बहितां, बेमास रो दोष लगायो।
बीस दिवस आरोपण देणी, इम ए सौ दिन थायो॥
- १७ सौ दिन नों प्रायश्चित्त बहितां, बेमास नों दोष लगायो।
तो बीस दिवस आरोपण देणी, मास च्यार इम थायो॥
- १८ च्यार मास प्रायश्चित्त बहितां, ते मास नों सेव्यो न्हाळी।
तो बीस दिवस आरोपण देणी, ए दिवस एक सौ चाळी॥
- १९ इकसय चाळी दिन तप बहितां, बे मास नों दोस प्रपन्नो।
तो बीस दिवस आरोपण देणी, ए पंच मास दश दिन्नो ॥
- २० पंचम मास दस दिन तप ब बहिता, बे मास नों दोष लगायो।
तो बीस दिवस आरोपण देणी, इम षटमासी थायो॥
- २१ ए विस्तार नसीत सूत्र रे, कह्यो बीशमुद्देशो।
सुण जिन वचन आसता राखी, मैटे भर्म कलेशो॥
- २२ दोष सेवनै पूछ्यां नटियो, ते अपराधी मोटो ॥
ए दोनूँइ दोष आलोयां, मिटै चारित्र नों तोटो॥
- २३ दोष सेवनै नटियो ते पिण आलोयां सुध थावै।
विनां आलोयां कह्यो विराधक, अभियोगपणूँ^५ पावै॥
- २४ सभा मझै बोलै तिण ऊपर, च्यार पांच सुर ऊठै।
हे देवा! मा बोल, वचन तुज, गमै नही इम रूठै॥

१. विश्वास।

२. दोषाचरण से मलिन।

३. चारित्र में अतिचार के धब्बे लगाने वाला।

४. आगम।

५. लय-सासू सुसरा चंद नृपति ने।

६. निम्न जाति का देवत्व।

- २५ दोष सेवियो तिको दोष पिण, नटियो ते पिण दोषो।
ए दोनूँइ दोष आलोइ, गया अनंता मोखो॥
- २६ एक मास रो दोष लगावी, कपट रहित आलोवै।
एक मास नो प्राछित देणो, इम आराधक होवै॥
- २७ एक मास नों दोष लगावी, कपट सहित आलोयो।
तो दोय मास नों प्राछित देणो, ए कपट झूठ सम होयो॥
- २८ दोय मास नो दोष सेवनै, कपट रहित आलोयो।
तो दोय मास नों प्राछित देणो, ए जिन वच अवलोयो॥
- २९ दोय मास नों दोष सेवने, कपट सहित आलोयो।
तो तीन मास नों प्राछित देणो, इम आराधक होयो॥
- ३० तीन मास नों दोष सेवनै, कपट रहित आलोयो।
तो तीन मास नों प्राछित देणो, ए वीर वचन अवलोयो॥
- ३१ तीन मास नों दोष सेवनै, कपट सहित अवलोयो।
तो च्यार मास नो प्राछित देणो, आलोयां सुध होयो॥
- ३२ च्यार मास नों दोष सेवनै, कपट रहित आलोयो।
तो च्यार मास नों प्राछित देणो, संक म राखो कोयो॥
- ३३ च्यार मास नों दोष सेवने, कपट सहित आलोयो।
तो पांच मास नों प्रायश्चित्त देणो, कहुँ पाठ में सोयो॥
- ३४ पांच मास नों दोष सेवनै, कपट सहित आलोयो।
तो पंच मास तणो दंड देणो, श्री जिन वच ए होयो॥
- ३५ पंचमास नो दोष सेव नै, कपट सहित आलोयो।
तो छमास तणो दंड देणो, व्यवहार सूत्र रे मायो॥
- ३६ तिण उपरंत दोष जे सेवी, कपट रहित आलोयो।
अथवा कपट सहित आलोयां, छमासी दंड होयो॥
- ३७ बहु बार इक मास तणों, दोषण सेवी नै तायो।
कपट रहित आलोयां तिण नै, एक मास दंड आयो॥
- ३८ बहु बार इक मास तणों, दोषण सेवी नै तायो।
कपट सहित आलोयां तिण नै, दोय मास दंड थायो॥
- ३९ बहु बार दोय मास तणों, दोषण सेवी नै तायो।
कपट रहित आलोयां तिण नै, दोय मास दंड थायो॥
- ४० बहु बार दोय मास तणो, दोषण सेवी नै तायो।
कपट सहित आलोयां तिण नै, तीन मास दंड आयो॥

- ४१ बहु बार त्रिण मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट रहित आलोयां तिण नें तीन मास दंड थायो॥
- ४२ बहु बार त्रिण मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट सहित आलोयां तिण नें, च्यार मास दंड आयो॥
- ४३ • बहु बार चिहुं मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट रहित आलोयां तिण नें, च्यार मास दंड पायो॥
- ४४ बहु बार चिहुं मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट सहित आलोयां तिण नें, पंच मास दंड आयो॥
- ४५ बहु बार पंच मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट रहित आलोयां तिण नें, पंच मास दंड पायो॥
- ४६ बहु बार पंच मास तणों, दोषण सेवी नें तायो।
कपट सहित आलोयां तिण नें, छ मासी दंड आयो॥
- ४७ तिण उपरंत दोष जे सेवी, कपट सहित आलोयो।
अथवा कपट रहित आलोयां, छ मासी दंड होयो रे ॥
- ४८ प्रथम उदैशै सूत्र व्यवहारे, आख्यो ए अविरुद्धो।
समचित सेती जिन वच सरध्यां, समकित हुवै सुद्धो॥
- ४९ दोष सेव मन मांहि विचारे, आलोविस अंतकाळो।
अंतकाळ आलोयां आराधक, सूत्र भगवती^१ न्हाळो ॥
- ५० तिमज झूठ जे अंतकाळ पिण, आलोयां सुद्ध थावै।
नहीं आलोयां उण नें मुसकल, बीजां रो स्यूं जावै ॥
- ५१ मास छमास दोष बहुबारे, सेव्या प्राछित भाख्या।
मासिक चउमासिक ना कारज, सूत्र नसीते दाख्या॥
- ५२ इत्यादिक जिन वच अवलोकी, मैटै भर्म सुजाणो।
गणपति तणीं आसता राखी, तजै ज मन री ताणो ॥
- ५३ समकित चारित्र बिहुं विराध्यां, इहभव अपजस होवे।
परभव नरक निगोदे वासो, दोनूं जनम बिगौवे॥
- ५४ शासण री उतरती न करे, ए भिक्षु मर्यादो।
ते सुध पाळ सुजस उजवाळे, उभय भवे अहलादो॥
- ५५ सासण में रही लहर रूप जे, वदै उतरतो बोलो।
ते तो विवेक तणों विकळ छै, कहिये फूटो ढोलो॥

१. भगवई २०।८३, ८७

- ५६ सासण में रही सासण री, करै उतरती बातो ।
अबोध रो कारण जिन भाख्यो, जासी जम रै हाथो ॥
- ५७ सासण में रहि सासण री, करै उतरती मोदं ॥
समकित चारित्र बिहुं विराध्यां, जावै नरक निगोदं ॥
- ५८ सासण री उतरती कीधां, परमाधामी झालै ।
गोळो रातो लाल करी नैं, मुंहढा मांहि घालै ॥
- ५९ सासण री उतरती कीधां, इणभव उदेज होवै ।
तो विविध प्रकारे रोग उपजै, वेदन सूं बहू रोवै ॥
- ६० सासण री उतरती कीधां, बधै रोग नैं सोगो ।
बले अचित्या धसका तिण रै, वाल्हा तणों विजोगो ॥
- ६१ इम जाणी सुवनीत मुनीश्वर, श्रावक जे सुखदाई ।
सासण री उतरती न करै, दिन-दिन सोभ सवाई ॥
- ६२ करै उतरती सासण री, तसु संग कदे नहीं करणो ।
काल-भुजंग सरीखो लेखव, अहो निश तिण सूं डरणो ॥
- ६३ उतरती जे करे सासण री, मोटो एह अकज्जा ।
भव-भव मांहि फिट-फिट होवै, प्रत्यक्ष निपट निलज्जा ॥
- ६४ स्वारथ अण पूगां गणपति सूं, कलुष भाव जे राखै ।
बलि कुण-कुण सूं कळुष भाव, तसु सांभळज्यो निजशाखै ॥
- ६५ परम प्रीत गणपति सूं पूरण, सासण मांहि सनूरो ।
तिण सूं कळुष भाव तेहनों तसु, गुण सुण बिगडै नूरो ॥
- ६६ भिक्षु सूं पिण कळुष भाव तसु, वर तेहनीं मर्यादो ।
ते पिण सरावणीं नहीं आवै, सुणियां नहीं अह्लादो ॥
- ६७ तीर्थकर सूं कळुष भाव तसु, वीर सासण ए नीको ।
सासण दिढावतो मन शंकै, गुण सुण नैं हुवै फीको ॥
- ६८ पद युवराज समापै गणपति, तिण सूं पिण नहीं राजी ।
तसु गुण पिण मन में न सुहावै, पुन्यहीण महा पाजी ॥
- ६९ परम प्रीत गणपति सूं पूरण, प्रीत वाळा री सोबत^१ ।
शासन अधिक दृढावै चित सूं, ते सुविनीत विनयवत ॥
- ७० अप्रीत भाव गणपति सूं राखै, तिण री ही सोबतो ।
सासण रा गुण मन न सुहावै, ते अवनीत कुपतो ॥

- ७१ सासण वीर तणों भिक्षु गण, भाग्य प्रमाणे मिलियो।
विनयवंत सुख माने अधिको, रहेज फूल्यो फळियो॥
- ७२ सासण वीर तणों तिण में, अविनीत हरष नहीं पावै।
रंग रत्ता नहीं छै तिण कारण, हींजरता दिन जावै॥
- ७३ अल्पकाळ बहुकाळ तणीं, गणपति मर्यादा बांधै।
विनयवंत मन मांही हरखै, समभावै चित साधै॥
- ७४ तेहिज मर्यादा सुण-सुण, अविनीत घणों सीदावै।
जाणै मुज ऊपर ए बांधी, कळुष भाव मन ल्यावै॥
- ७५ विनयवंत अविनीत तणां, लक्षण गणपति ओळखावै।
विनयवंत सुण-सुण ने हरखै, भली भावना भावै॥
- ७६ विनयवंत अवनीत तणां, लक्षण सुण नैं अविनीतो।
अति दुख पावै मन सीदावै, खोटी तिण री रीतो॥
- ७७ वंदणां करतां पिण सुवनीत तणें, मन हरष सवायो।
ओच्छाह रहित अविनीत करै, अति कलुषभाव मन ल्यायो।
- ७८ उगणीसै बीसै चउमासै, चूरू वर उपगारो।
जयजश गणपति जोड़ करी ए, समझावण नर नारो॥

ढाळ २७

१ ऊंच (सुगुण) नरां रो उत्तम मारग॥ धूपदं॥

- १ उपगारी नो उपगार न भूलै, ते गिरवा गुणवंतो रे।
अपराधकरि नैं 'नमणखाधां'^१ पछै, मन में न राखै संतो रे॥
- २ नमण करी निज अवगुण जाण्यां, 'खून गुनो'^२ बकस देवै।
रोष लहर मन में नहिं राखै, अपूठो तसु गुण लेवै॥
- ३ सापुरुष^३ धीर सुजाण नै गिरवा, तन मन बहु सुखदाई।
आगलो अवगुण मूळ न पेखै, पोखै पीत सवाई॥
- ४ आगमियां काळ माहैं नवि चूकै, छांड दियै वृष्टि खोटी।
तठा पछै त्यां सूं खटक न राखै, मोटां री मति मोटी॥
- ५ बले कोई चूक देखै ते तिण नैं, निशंकपणै सुध कहीजै।
पिण रुड़ी रीत राखै मुख प्रीते, त्यां सूं लहर मूळ न राखीजै॥
- ६ अनेक वार कोइ दोष लगावै, डंड लेवै रुड़ी रीतो।
तिण सूं पिण लहर मूळ न राखै, जोयलो सूत्र नशीतो॥
- ७ संवत् उगणीसै आसोजी सातम, सापुरुष विरद बताया।
नमण खाधां पछै लेहर न राखै, संत सती सुखदाया॥

१. लय-स्थिर स्थिर चेतन।

२. त्रुटि स्वीकृत करने पर।

३. खून करने का अपराध।

४. सज्जन।

१ प्रभु के वच प्यारे ॥ध्रुपदं॥

- १ ओ तो श्रेणिक नाम राजा, तिण रा जग मांहै सुयश दिवाजा॥
- २ तिको पहिली नरक मांहै पड़ियो, ओ तो दुख जंजीरे जड़ियो॥
- ३ गोशालो इक-इक नरक मझारो, ओ तो जासी दोय-दोय बारो॥
- ४ कुंडरीक चारित्र भांगो, नरक सातमी में तसु सांगो॥
- ५ जिहां उष्ण योनि पहिछाणी, तिहां शीत वेदन अति जाणी॥
- ६ जिहां शीत योनि में जासं, तिहां उष्ण वेदन छै तासं॥
- ७ जिम निंब में ऊपनो कीड़ो, सुख माने तिहां सागीड़ो॥
- ८ तिण नै भेलै मधुर रस मांयो, तो ओ दुःख लहै अधिकायो॥
- ९ तिम जेह नारकी नै जोई, अति उष्ण वेदन छै सोई॥
- १० तिण रे उत्पत्ति स्थान छै शीतं, तिण सूं उष्ण वेदन महाभीतं॥
- ११ जेह नारकी नै जाणी, शीत वेदन छै दुःख खाणी॥
- १२ ते तो ऊपनों, उष्ण स्थानक में, दुःख शीत तणो रकझक में॥
- १३ ऊंदर ऊपना जे अग्नि मांयो, ते रति लहै अग्नि में तायो॥
- १४ तिके शीत स्थानक जो आवै, तो वेदन दुःख अति पावै॥
- १५ इण दृष्टान्ते जोई, नारकी शीत उष्ण योनि सोई॥
- १६ उष्ण योनि रे वेदन शीतं, शीत योनि रे उष्ण कहीतं॥
- १७ एहवी वेदन नरक मझारो, जीव सही अनंती बारो॥
- १८ हिंवै भिक्षु स्वाम पसायो, ओ तो चरण रत्न कर आयो॥
- १९ तिण नै यत्न करी राखीजै, गण शरणो नहीं छांडीजै॥
- २० मरणांत कष्ट जो आवै, तो पिण गण में आराधक थावै॥
- २१ गण शरणो नही छोड़ै, तिके प्रीत मुनि सूं जोड़ै॥
- २२ दुःख नरक निगोद ना न्हाळी, मत कीजो आतम काळी॥
- २३ गणपति री आज्ञा बारो, उत्कृष्टो रुळै अनंत संसारो॥
- २४ तिको इक-इक नरक मझारो, जाये अनंत-अनंती बारो॥
- २५ दुःख नरक थकी अधिकायो, अनंत गुणो निगोद रे मांयो॥

१. लय— ज्यारै सोहै केसरिया साड़ी।

१२६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- २६ उत्कृष्टपणै ए आख्या, दुःख निदंक टाळोकर ना दाख्या॥
२७ बले इहभव फिट-फिट होवै, ते तो मानव नो भव खोवै॥
२८ इम जाणी उत्तम नर नारो, राखो गणपति स्यू अति प्यारो॥
२९ त्यांरी आज्ञा मांहि शुद्ध चालै, तिके स्वर्ग मांहि सुख म्हाळै॥
३० पछै शिवपुर वेग सिध्दावै, अनंत आत्मीक सुख पावै॥
३१ त्यां सुखां रो नावै कदा पारो, एहवा शाश्वत सुख श्रीकारो॥
३२ उगणीशै तीसै वासो, विद चेत नवमी सुखरासो॥
३३ भिक्षु भारीमाल ऋषिरायो, सुख जयजश तास पसायो॥

‘सुणज्यो शीख सतगुरु तणी रे॥धूपदं॥

- १ मोटा कुळ रा मानवी रे, ऊंडो करै विचार।
सुरगिरि धर्म हिये धरी रे, नाणै आर्त्त लिगार॥
- २ अदेखाई न करै और नी, ते पिण निज थी बहू हीन।
सूर खद्योत नो अरि किम हुवै, वो बेचारो दीन॥
- ३ किहां सर्सप किहां सुरगिरी, किहां हीरो पुखराज।
किहां चंदन एरंडियो, रोष करै किण काज॥
- ४ किहां आम किहां आंबली^१, अंतर अधिक अपार।
आम अदेखाई किम करै, आंबली सूं अवधार॥
- ५ इन्द्र-वाहन^२ न करै इसको, देखी मनुष्य लोक ना गजराज।
ऊंच करै ए आलोचना, रोष करताइ आवै लाज॥
- ६ धीरपणों चित्त में धरै, सुखदाई सुवनीत।
हितबंछक सतगुरु तणो, पूरण पाळै प्रीत॥
- ७ तन मन सुख हुवै गुरु भणी, तेहिज करै उपाय।
लहर वैर सर्व परहरै, साताकारी सवाय॥
- ८ आपन तपै न तपावै औरनै, आछा माणस ताम।
गुणवंत गहर समुद्र सा, एहवो न करै काम॥
- ९ वारू विनय विवेक में, भीज रह्या निश दिन।
त्यारे दिन-दिन तीखी आशता, ते सदा रहै सुप्रसन्न॥

१. लय-कामणगारो छै रे।

३. ऐरावत हाथी

२. इमली

'धन धन धन धन गुणवंता भणी रे॥धूपदं॥

- १ बालपणां में केइ संजम लिये रे, केयक जोवन वय रे मांय रे।
परभव नीं खरची करता महामुनि रे, सम परिणाम में रहै सवाय रे॥
- २ बालक वय में केइ घर में छतां, धारे छै सील वरत सिरदार।
केयक जोवन वय में व्रत आदरै, त्यां साहमी राखै दिष्ट उदार॥
- ३ आरत ध्यान थकी दुरगति मिलै, नरक निगोदे दुख भरपूर।
काम भोग पिण दुख दाता कह्या, इम जाणी नै आर्त्त कर दै दूर॥
- ४ मेघ मुनि आठ रमण तज व्रत धर्यो, छांडी बलै सालभद्र बत्तीस।
कृष्णादिक नीं राण्यां व्रत धर शिव गई, त्यां साहमी राखै दृष्ट जगीस॥
- ५ पुत्रादिक पुन बांधी आया इहां, भोगवसी ते पोता रा पुन।
त्यां री पण चिंता मूळ करै नहीं, कर्म काटण री राखै धुन॥
- ६ लाभ-अलाभ सुख-दुःख में सम रहै, त्यां नै बखाण्या जिनेन्द्र देव।
सामायक पोसादिक सुभ ध्यान में, सफल दिन रात्र करै नित्यमेव॥
- ७ अल्प दिवस मांहै करणी थकी, वैमानिक देव हुवै श्रीकार।
पछै अल्प भव कर शिवपद संचरै, करणी रा ए फल लहै उदार॥
- ८ काम नै भोग थकी इण जीवडै, बले पुत्रादिक धन री ममत करेह॥
नरक निगोद तणां दुःख भोगव्या, इम जाणी न करै किणसूं नेह॥
- ९ समत् उगणीसै अष्टादस समै, जेठ विद अष्टम मिति उदार।
ए दीधी शिख्या हळुकर्मी भणी, जयजश गणपति महा सुखकार॥
- १० प्रतीत पक्की सतगुरु तणी, जो करडोइ आय पडै काम।
तो पिण आसता नवि उतरै, ते सुवनीत अमाम॥
- ११ इसा विरला पुरुष संसार में, पुरण सतगुरु सूं पीत।
ज्यां रे आसता मूळ न उत्तरै, ते गया जमारो जीत॥
- १२ सतगुरु तो पारस सारिखा, कर दीयै आप सरीख।
आसता पूरण शिष तणी, तो शिष ने धारणीया हिज शीख॥
- १३ जो भाग्य प्रबल हुवै गुरु तणो, तो शिष्य रे ह्वै गुरु नी प्रतीत।
पूर्ण वरतै अंग चेष्टा सर्व कार्य में सुरीत॥

१. लय—पाखंड वधसी आरे पांचमे रे।

- १४ सुवनीतां सूं प्रीतडी, ते पण मुरजी प्रमाण।
रखिया रोहिणी सारखा, सुगुर रीझावै जाण॥
- १५ तन मन सूं कार्य मांहिला, करै थिर परिणांम॥
कंपै नहीं मेरु परै, ले सुवनीत सुजाण॥
- १६ परिषद समिया सारखा, सर्व कार्य अगवांण।
मेघकुंवार तणी परै, सब तन सूपै आंण॥
- १७ सर्व कार्य में गुरु तणै, हुवै वनीत नो आधार।
भितर मिलणै मिल रझा, जिम जळ पय मझार॥
- १८ ए शिख्या सतगुरु तणी, धारे चित सूं सार।
नित प्रति सेवा नव नवी, राखै सतगुरु सूं इकतार॥
- १९ ए शिख्या सुगणां भणी, म्है दीधी हितकार।
गुण वर्धन के कारणै, चौराणुअै समत अठार॥

‘जिनेश्वर धन्य धारो अवतार ॥धूपदं॥

- १ देव मनुष्य तिर्यच नां रे, भीम भयंकर भीर।
सद्भा परीसह आकरा रे, भगवंत श्री महावीर॥
- २ तीव्र रोग वेदन सही, घणे काल इकधार।
कर्म काट मुक्ते गया, चक्री सनतकुमार॥
- ३ अग्नि वेदन अति आकरी, महा पडिमा महाकाल।
विमल ध्यान शिवगति वरी, मुनिवर गजसुकमाल॥
- ४ छठ-छठ तप नै पारणै, आंबिल उज्झत^४ आर^५।
सव्वट्ठसिद्ध^४ नव मास में, धन्य धनो अणगार॥
- ५ खंधक मेघ मुनीश्वरू, तीसक कुरुदत्त सार।
विकट तपे सुर सुख लब्धा, चव लेसी भव पार॥
- ६ वासी^६ चंदण सम गिणै, समचित सुख दुख मांय।
मास संधारे शिव लही, मृगापुत्र मुनिराय॥
- ७ गणपति नै चित चालतां, तज परिचय त्रिय-प्रीत।
सुखे चरण तसु निरवहै, तिण री घणी प्रतीत॥
- ८ पंचम आरे परगट्या, भिक्षू गुण-भंडार।
सावद निरवद सौधि नै, मार्ग लियो तंतसार॥
- ९ भ्रमीचंद ऋषि ओपतो, पंचम आर मझार।
धर्म उद्योत कियो मुनि, जयजश हर्ष अपार॥

१. लय-खिम्यावंत जोय भगवंत रो ज्ञान।

२. नीरस।

३. आहार।

४. सर्वार्थ सिद्ध

५. वसूला

‘पावत सुख चरण करण गुणधारी॥धूपदं॥

- १ धीरजवान पुरुष गुणधारक, आरत नाणै लिगारी।
परम प्रमोद संवेग हर्ष धर, वयण अडोल विचारी॥
पावत संत सती गुणधारी, एतो सर्व जीवां सुखकारी।
पावत सुख चरण करण गुणधारी॥
- २ सरस हर्ष साम राम तणीं पर, जीव सुगुण सिरे भारी।
परम वनीत प्रीत हृद प्रत्यक्ष, सूरत महा सुखकारी॥
- ३ सम रम साम राम जीव सुवनीत, शासण ना श्रृंगारी।
याद आयां तन मन हुलसावै, गुरु दिल हर्ष अपारी॥
- ४ सुर नर सेव करै वृद्धि संपति, शरणागत सुखकारी।
निश दिन हर्ष हिया मै वधावै, शंक न राखै लिगारी॥
- ५ मंगल आदि थाप्यो चित स्थिर, मन मांहै गाढी धारी।
कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी, सुवनीत गण-श्रृंगारी॥
- ६ शिष्य सुवनीत रा विविध मनोरथ, पूरवै गुरु हितकारी।
किंचित् कसर पड्यां शिष्य सुवनीत, मन में न आणै लिगारी॥
- ७ हर्ष हार सर्वदा हिये राखणो, ए सुगुरु शीख सुखकारी।
उगणीसै नव आसू बीज दिद जयजश, आनंद पाया अपारी॥

‘सुमत सदा हिरदै धरो रे लाल॥ध्रुपदं॥

- १ कुमति दिशा अति छोड़ मै रे, सुमति दिशा दिल धार रे सोभागी।
आचार्य उवज्झाय पे रे लाल, घर छोड़ थयो अणगार रे सोभागी॥
- २ वमन पित्त रुधिरे भरयो, तन उदारीक असार।
सड़ण पड़ण विधंसण सभाव छै, वर्ण हेते करै आहार॥
- ३ रूप रस गन्ध फर्श कारणे, करै असणादिक नों भोग।
एह भव तीर्थ च्यार में, हेलवा निंदवा जोग॥
- ४ सरस आहार स्वाद कारणे, खाए सराय-सराय।
चारित्र नां ह्वै कोयला, बले और अनर्थ ह्वै आय॥
- ५ तन फुटराइ^१ कारणे गौरादिक वर्ण काज।
मूच्छा थको आहार भोगवै, त्यांरी परभव किम रहसी लाज॥
- ६ ह्वै जीभ्या रा लोळपी, ए भव फिट-फिट होय।
परभव दुख पामे घणां, विविध प्रकार नां जोय॥
- ७ इम जाणी लोळपणों तजै, टाळे आतम दोष।
राग द्वेष तजतां थंका, पामै चारित्र पोष॥

१. लय-सीता अगन में पेसतां रे।

२. सुन्दरता

उपदेश री चौपी

ढाळ १

‘खिम्यावंत जोय भगवंत रो जी ज्ञान॥धूपदं॥

- १ देवै सतगुरु देशना रे, ए संसार असार।
रोग सोग दुःख अति घणो रे, देखो आंख उघाड़।
खिम्यावंत जोय भगवंत रो जी ज्ञान॥
- २ आज काळ धर्म आदरूं, पक्ष मास चउमास।
इम आशा बांधै आगली, फस्यो विषय मोह पास ॥
- ३ अञ्जलि ना जळ नीं परे, आउ घटंतो जाय।
विघ्न घणा मोहरत मझै, तूं सोच देख मन मांय॥
- ४ सज्जन त्रिय सुत कामणी, खिण विरहो न खमाय।
इक दिन पाप उदय हुवा, सो काळ गयो गटकाय॥
- ५ तीन अरि लारे लग्या, रोग जरा मरण जाण।
इण न्हासण रे अवसरे, क्यूं सूतो मूढ़ अयाण॥
- ६ बळद जेम चंद सूर छै, दिवस रात्रि घड़माळ।
जळ आयु ओछो करै, ए काळ रेंट विकराळ॥
- ७ काळ सर्प खाधां थका, नहिं चतुराई जाण।
नहीं कळा नहिं औषधी, तिण सूं धर राखै प्राण॥
- ८ पृथ्वी रूपी कमल छै, मेरु केशर दिशि पान।
रस आउखा रूपियो, काळ भ्रमर ले ताण॥
- ९ छाया मिष छळ ताकतो, काळ महा विकराळ।
पास न मूकै सर्वथा, पहिलां आपो संभाळ॥
- १० जीव रुळ्यो संसार में, विविधपणै गति स्थान।
आदि अंत दीसै नहीं, नरक निगोद पिछान॥
- ११ बंधव सुत जन मित्रवी, मरण न राखै कोय।
दाग देई पाछा बलै, निज स्वार्थ रह्या रोय॥
- १२ सुत बंधव विचरे सहू, पलटै संच्यो धन।
इक धर्म कदे नहीं पलटै रे, निश्चय राख तूं मन॥

१. लय—खिम्यावंत जोय भगवंत रो जी ज्ञान।

१३६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १३ कर्म पास बंध्यो पड़ै, संसार बंधीखाना मांय।
आठ कर्म मूक्यां थकां, १शिव-मंदिर सुखपाय॥
- १४ कमल अग्र जळ बिंदुओ, चंचळ अथिर पिछाण।
(तिम) तन धन सज्जन अथिर छै, काम भोग विष जाण॥
- १५ यौवन में बल रूप थो, वृद्धपणा में नांय।
थोड़ा दिन रे आंतरै, ते पिण गयो विलळाय॥

ढाळ २

जेठाणीजी सूं न्यारा रहिस्यां राज ॥

म्हानै म्हारा संत सत्यां री छै सीख,
जेठाणी स्यूं न्यारा होस्यां राज ।ध्रुपदं॥

- १ असुध निज गुण बड़ बंधव घर, त्रिया कुमति अनाद जेठाणी।
सुध निज गुण लघु बंधव घर, सुमति त्रिया देराणी॥
- २ चरखो ध्यान शुक्ल वर ध्यास्यां, कातां सूत हजारी।
चेतन पिउ रे पाग चरण तप, शील सुरंगी मुझ साड़ी॥
- ३ तन नै अल्प आधार देई नै, भारी माल कमास्यां।
आयां गयां नै सीख समापी, सीतळ वाणी सुणास्यां॥
- ४ कुगुरु कुदेव पूजै जेठाणी, म्हारै सुगुरु सुदेवा।
म्हानै अविचळ शिवपुर मिलसी, जेठाणी नै नरक मिलेवा॥,
- ५ जुदा हुवां रो नांगळ^१ करस्यां, संत सती गुणखांणी।
फासुक सुध आहार वहिराई, इम घर मांड्यो देराणी॥
- ६ उगणीसै पनरै महाविद तिथ, चोथ सुमति देराणी।
जय जश गणपति कहै सुणो संतां, अविचळ घर चित ठाणी॥

१. लय—जेठानी न्यारा होस्यां नांगळ.....

२. गृह प्रवेश पर किया जाने वाला अनुष्ठान

ढाळ ३

- १ केइक गावै केइक रोवै, केइक ख्याल करिंदा।
केइक नाचै केइक राचै, केइक रति विलसंदा।
केइक शब्दादिक में खूता पुद्गळ सुख नीं प्यासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म नां जग में जबर तमासा॥
- २ केइक हिंसक जीव हणै बहु दया नहीं दिल मांही।
केइक कूड़ केलवै केइक पर धन हरै सदाई।
केइक मिथुन काळ में कळिया केइक परिग्रह पासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग में जबर तमासा॥
- ३ केइक क्रोध वसै अति ज्वळता, केइक मान मच्छरिंदा।
केइक माया कपट केलवै, केइक जन लोभिंदा।
केइक राग स्नेह परवस करि, केइक द्वेष धमासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग में जबर तमासा॥
- ४ केइक कळह करै फुन, केइक पर शिर आळज देवै।
केइक चुगलीखोर केइक बलि पर परिवादज सैवे।
केइक रति अरति में मुरझ्या, हरख सोग में वासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग में जबर तमासा॥
- ५ माया सहित मृषा कै बोलै केइक जन मिथ्याती।
दस बोल ऊंधा कर श्रद्धै, कुगरां ना पखपाती।
आज्ञा बारैं धर्म पसूपै, बलि राखैं सुख आशा॥
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग में जबर तमासा॥
- ६ केइक षट्खंड त्रिण खंडाधिप, केइक राजा राणा।
केइक सेठ सेन्यापति मानव जग में बाजै स्याणा।
काम भोग किंपाक तणां फळ, सहै नरक दुःख त्रासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग में जबर तमासा॥

छंद कुंडलिया

- ७ सेवो थानक सुध^१ कथा म करो रस कामण^२।
त्रिय संग आसण तजो^३ भरी दृग् निरख म भामण^४।
वस मति अन्तरवास जिहां त्रिय शब्द सुणीजै^५।
कृत क्रीड़ा म संभार^६ सरस रस चित्त न दीजै^७।
प्रमाण लोप अधिको अदन^८, उद्भट वेष म आदरो^९।
तज शब्द रूप रस गंध फ र्श, धीरज स्यूं ए व्रत धरो॥

ढाल ४

‘चेतानंद धर्म धरो सुखदाई, धर्म धर्यां शिव साईं॥धूपदं॥

- १ संसार रूपी भव नगर विषै, च्यारूं गति रूपी बाजार।
तिण में विविधपणै दुःख भोगविया, जीव एकलडो निराधार॥
- २ गर्भ तणा दुःख सद्धा घणा, मळ मूत्र तणो भंडार।
राध लोही कईम अशुच रह्यो, तिण ठाम मझार॥
- ३ चौरासी लाख योनि में भटक्यो, पूर्यो ओ संसार।
एकीकी योनि माहे, जीव रुळियो अनंती बार॥
- ४ माता पिता सुत सगपण किया, एकाकी सूं ए वार अनंत।
ने स्वजन मित्र दुःख मेटण नाहिं, ए काम पड़्यां विरचंत॥
- ५ श्वास खास जरा दाह हरस कुक्षि शूळ भगंदर व्याध।
पोता रा कीया सर्व पोतै सहै, कोई टाळे नहीं असमाध॥
- ६ तूं जाणें छै माता पिता सुत कामण, मित्र म्हारै सुखदाय।
पिण अंतर ज्ञान माहे सहु बंधण, दुर्गति ना छै सखाय॥
- ७ जे जीव माता हूंती तेहिज, भवंतर मर नै थई नार।
जे स्त्री मरी नै माता हुई, पामी अंवस्था गिंवार ॥
- ८ कर्म वशे सर्व योन राच्यो, नट जिम नाच्यो संसार।
जन्म मरण ओ फिर-फिर करतो, रुळियो गति च्यार मझार॥

ढाळ ५

- १ १पुन्यवान पुरुष नै, घर हुवै बहुळो धन्न।
तो पात्रे वावरे, कुपात्र न जाणे पुत्र॥
- २ जो तेल घणो तो, बेळू मांहि न ढोळै।
बहु बीज हुवै तो, उषर में न झकोळै ॥
- ३ घणो स्वर्ण हुवै तो, सांकळ केम करावै।
बहु दूध हुवै तो, सर्प भणीं किम पावै॥
- ४ घणा गजेन्द्र हुवै तो, भार अर्थ स्यूं वावै।
तिम धन बहु है तो, किम कुपात्र पोखावै॥
- ५ मृगालोढा ने देखी, गोयम पूछ्यो ज्ञान।
इण पूर्व भव में, स्यूं दीयो कुपात्र दान ॥
- ६ बलि कुमार सुबाहु, देखी पूछ्यो ताम।
कुण दान सुपात्र, दीधो तसुं फळ पाम॥
- ७ ए प्रश्न दोई, सूत्र विपाक मझार।
समदृष्टि जाणै, उत्तम न्याय उदार॥
- ८ दान असंजति ने, सचित्त अचित्त दियां पाप।
पंचम अंग पेखो, अष्टम शतक आलाप॥
- ९ उगणीशै तेरे, फाल्गुन सुदि ग्यारस भृगुवार।
फळ दान दिखाया, जयजश गणपति सार ॥

१. लय—नमूं अनंत चौबीसी.....

१४२ तेरापंथ : मयादा और व्यवस्था

ढाळ ६

‘सेवा जिन मुनि नी कीजै, सेवा थी बंछित सीजै जी।
सेवा जिन मुनि जी कीजै, लाहो नरभव नो लीजै जी॥धूपदं॥

- १ कह्यो सूत्र उवाई मांढ्यो, जिन सेवा महा सुखदायो॥
- २ इहभव परभव में जाणो, अति सुख ने खेम कल्याणो॥
- ३ दूजै शतक भगवती मांढ्यो, वर पंचमुद्देशे वायो॥
- ४ इहभव परभव में जाणी, मुनि सेवा महासुखदाणी॥
- ५ मुनि सेव कियां थी पावै, दश बोलां नीं प्राप्ति थावै॥
- ६ मुनि सेव्यां सुणवो पावै, पछै ज्ञान विज्ञानज थावै॥
- ७ पचखांण संयम सुखदायो, फळ तास अनाश्रव थायो॥
- ८ तप ने बलि कर्म बोदाणो, अक्रिया सिद्धि निर्वाणो॥
- ९ तिहां आत्मिक सुख विलसावै, तिहां सदा काळ सुख पावै॥
- १० सेवा थी मिटै कुलच्छन, जड़ नर पिण होय विचक्षण॥
- ११ शुभ लच्छन सेवा थी पावै, इहभव पिण आनंद थावै॥
- १२ परभव सुर शिव सुख जाचै, सेवा थी गहघट माचै॥
- १३ गोतम जिन संगत कीधी, गणधर थया परम प्रसिद्धि॥
- १४ उववाई दशमें अंगे, आख्या वर पाठ उमंगे॥
- १५ मन सराप-अनुग्रह-समर्थ, इम वचन काय पिण अर्थ॥
- १६ मुनि सेव्यां सुप्रसन्नज थायो, तसु जय-जयकार जणायो॥
- १७ अशातना अबोधन पावै, इहभव पिण भूडो थावै॥
- १८ महामुनि जे अतिशय धारी, तेहना ए गुण भारी॥
- १९ इम जाण मुनि पद सेवो, वर शीख हिया में बेवो॥
- २० उगणीसै सतरै उदारू, बिद फाल्गुन अष्टम वारू॥
- २१ जय-नगरी जोड़ जणाणी, जयजश सुख संपति जाणी॥

१. लय-नई बुरज पर बंगलो.....

२. श्राप।

रमनीये । काहि कूं गुमान भरी हे, रमनीये । काहि कूं गुमान भरी हे ।

कमनीये । काहि कूं गुमान भरी हे ॥ध्रुपदं॥

- १ रंग रंगीली देही छेल छबीली, मळ मूव अशुचि भरी हे ॥
- २ रुद्र शुक्र सूं तेरी काया ऊपनी, नव मास गर्भ धरी ॥
- ३ चित का चटका मन का मटका, करती पिण इक दिन काळ हरी ॥
- ४ जोवन मद मतवाळी चिरताळी, थाये वृद्ध थया जोजरी ॥
- ५ तरुणपणै रोगादिक ऊपना, आ प्रत्यक्ष क्षीण पड़ी ॥
- ६ रंग रंगीली तूं तो काया राखै, पिण परभव सूं न डरी ॥
- ७ संध्या भान तेरी तनु शोभा, क्षिण माहै जाय सरी ॥
- ८ तन बहु वेदन हुवां थी, थारे दुरगंधता पुंज जरी ॥
- ९ श्रीदेवी सुंदर रमणी चक्री नीं, उत्कृष्ट छठी में पड़ी ॥
- १० तूं तो जाणै मो सम कुण सुंदर, हूं पुन्यवान सुरी ॥
- ११ पिण इक दिन पाप उदै हुवां परभव, परवश जमां पाने पड़ी ॥
- १२ वेतरणी प्रमुख बहु वेदन, तूं सहसी आक्रंद करी ॥
- १३ इम सुण तूं धर सतगुर सेवा, भावन भाव खरी ॥
- १४ सम्यक्त नै देशव्रत चारित्र, धार्यां तूं पामसै अमरपुरी ॥
- १५ निंदक टाळोकर तूं मत बांछे, ए शीख हिया में धरी ॥
- १६ ए धाड़वी समकित ना लूंढारा, ज्यांरी संगति दूर करी ॥
- १७ बार-बार स्यूं कहिये तुझ ने, तूं तो स्थिर पद गण में धरी ॥
- १८ गणपति नी पक्की आस्था राख्यां, थारा बांछितं कार्य सरी ॥
- १९ उगणीशै गुणतीसै चैत्र सुदि, जयजश शिक्षा उच्चरी ॥

१. लय—काहि कूं गुमान कर

१४४ तैरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

ढाल ८

जिन^१ वचने प्रतिबुझो रे प्राणी ॥धूपदं॥

- १ काल अनंतै प्राणी नर भव लाधो, आर्य कुल अवतारो रे लाय।
दीर्घ-आयु-बळ पूरण इंद्रिय, रोग रहित तन सारो रे लोय॥
- २ संत समागम आगम वाणी, श्रवण दुलभ सरधानो।
पा सामग्री परम सयाणी, धर्मोद्धम चित ठाणो॥
- ३ लख चौरासी में रुळियो रे प्राणी, लही जन्म मरण दुख खानी।
अनुभ्या^२ दीन अनाथ ज्यूं परवस, भूल्यो सुख में अयाणी॥
- ४ काम भोग किंपाक समाना, तज पुद्गळ सुख प्यारो।
तन धन जोवन मान इथर^३, बीजळ चिमत्कारो॥
- ५ अगजा अंगज प्राण पियारा, राज ऋद्धि ठकुराई।
संसार में जे जे पुद्गळ लीला, ते वार अनंती पाई॥
- ६ रजनी^४-सुवणां ज्यूं सर्व विलावै, धर मुख समता आणी।
सतगुरु वचन समाधि लह्यां थी, तृष्णा तृपत बुझाणी॥
- ७ नौका समानो सिवपुर मारग, जानादिक चित्त धारो।
भीम भयंकर भवदधि तारक, सतगुरु पंथ नेतारो॥
- ८ चितामणी तज काच म राचो, कल्प तजी मत आको।
जिन धर्म छोड़ विषै मत ध्यावो, परभव कटुक किंपाको॥
- ९ गीत विलाप नाटक बिटंबना, भूषण भार समानो।
नरक निगोद ना पंथ देखाला, भोग मनोहर जानो॥
- १० मत गाफळ हुंसीयार थई नै, संजम तप धन सारो।
जतन करो विषय इंद्री चोर थी, ज्यूं परभव होय आधारे॥

१. लय-देखो रे भोळा चेतै नांही.....

२. अनुभव किये।

३. अस्थिर।

४. रात्रिकालीन स्वप्न।

ढाळ ९

‘जीवा सुगरु आण सिर धारियै रे ॥घुपदं॥

- १ जीवा ! काळ अनंते दोहिलो रे, जीवा ! लाधो नर भवसार रे।
जीवा ! धर्म सामग्री पाय नै रे, हिवै एहल जन्म मत हार रे॥
- २ जीव ! सुर सुरपति ऋद्धि लही, भोगव्या सुख विलास।
जीवा ! तृप्त कदे हुवो नहीं, चाल्यो परभव होय निरास॥
- ३ जीवा ! तन धन जोवन कारमो, जीवा ! जातां न लागै वार।
जीवा ! काम भोग विष सारखा, यांरी अंतरंग चाहि निवार॥
- ४ जीवा ! जन्म मरण जरा पूरियो, दुःख भोगव्या विविध प्रकार।
ए डाव अग्रयो तिरवा तणो, तूं वहिलो होय हुसीयार॥
- ५ जीवा ! संजम तप दोय मंत्रवी, जीवा ! ले तूबो लावो लार।
प्रेम प्रतीत आराधियां, ए तो मुक्त पोहचावणहार॥

ढाळ १०

सुगण जन सांभळो रे ॥ध्रुपदं॥

- १ आचारज गुण आगला रे, धर्मघोष अणगार।
वाण अपूरव वागरे रे, सांभळतां सुखकार॥
- २ पृथी अप तेउ वाय में, रुळियो असंख्यातो काळ।
असंख्याता काळचक्र लगै, पायो दुःख असराळ॥
- ३ प्रदेश अंगुल खेत्र में, कढ्या असंख्यात जगनाथ।
समै समै एकीको काढतां, थायै काळचक्र असंख्यात॥
- ४ असंख्याता लोकाकाश नां, प्रदेश जेता होय।
एता काळचक्र दुःख सह्या, च्यार थावर में जोय॥
- ५ वनस्पति में जीवडो, रह्यो अनंतो काळ।
काळचक्र अनंता लगै, जनम मरण दुःख झाळ॥
- ६ अनंता लोक आकास ना, प्रदेश जेता होय।
एता काळचक्र दुःख सह्या, वनस्पती में जोय॥
- ७ पैसठ हजार नैं पांचसौ, छत्तीस ऊपर न्हाळ।
एक मुहूर्त में भव कियां, निगोद दुःख विकराळ॥
- ८ काळ अनंत निगोद में, जनम मरण महाभींच।
नरक थी दुःख अनंत गुणो, निगोद केरो नीच॥
- ९ नरक सातमी रो आउखो, तेतीस सागर प्रमाण।
मार अनंती भोगवै, सुख रो संचार म जाण॥
- १० तेतीस सागर ना समा हुवै, सातमी में गयो इती वार।
तिण सूं अनंतगुणो दुःखनिगोद में, काळ अनंत मझार॥
- ११ तसकाय में जीवडो, रह्यो उत्कृष्ट पिछाण।
दोय हजार सागर लगै, कांयक जाझो जाण॥
- १२ बेंद्री तेइद्री चौरिंद्री, रह्यो वरस संख्याता हजार।
विविधपणै दुःख भोगव्यां, अब तो आंख उधाड़॥
- १३ सातूं नरक में ऊपनो, इक इक नरकावासा मांय।
अनंत-अनंत वार दुःख सह्या, सुणियांइ थड़हड़ थाय।

१. लय-सीता कुंवरी बाघती रे.....

- १४ जन्म मरण री वेदना, बलि शस्त्रां नीं मार।
इम बहु दुःख सहतो थको, तिण रो कहता नावै पार॥
- १५ इम सांभळ उत्तम नरां, सम्यक्त धार सधीर।
संजम तप करणी धस्त्रां, मिटै जन्म मरण री पीर॥
- १६ मुक्ति मारग च्यार छै, दान सीयल तप भाव।
संत सेवा मेवा ज्ञान नां, निश्चै तरण नो डाव॥

ढाळ ११

धर्म करो सदा धर्म आपद नायो रे, सुख लहै तदा ॥धुपदं॥

- १ अनंतकाळ भमता थकां, रे, पायो नर अवतार।
गर्भ तणां दुःख भोगवी रे, पाई सखर सामग्री सार रे॥
- २ उत्तम कुळ दीर्घ आउखो, बलि तन लह्यो निरोग।
धर्म सामग्री पाय नै, मूर्ख मुरझै काम भोग॥
- ३ शब्द रूप रस गंध में, फर्श मनोहर पेख।
राग भाव रातो रहै, अणगमता पर धेख॥
- ४ राखसणी रमणी कही, वैतरणी विष बेल।
नरक नीसरणी जिन कही, मत कर रामत खेल॥
- ५ ऊपर दीसै ओपती, अंतर अधिक असार।
खेळ खंखार रुधिरे भरी, मूर्ख मत कर प्यार॥
- ६ आउ सागर इकतीस नो, सुख विलस्या ग्रीवेग।
तो पिण तृपत हुओ नहीं, अब तो आंण संवेग॥
- ७ काय फर्श रूप शब्द ना, मन परियार विचार।
अपछर सुख बहु विलसिया, पिण तृप्त न हुओ ळिगार॥
- ८ काम किंपाक समा गिणो, समगति सूधी धार।
धर्म श्रीजिन आज्ञा मझै, अधर्म आज्ञा वार॥
- ९ भव तरु मूल सींची रह्या, क्रोधादिक चिहुं जाण।
भेद सोळ जिन भाखिया, अनर्थ करण पिछाण ॥
- १० अनंतानुबंधी जावजीव रहै, वर्स इक अप्रत्याख्यान।
प्रत्याख्यांनी च्यार मास रहै, पख संजळन पिछान॥
- ११ समगत नै देश-विरत नै, सर्व-विरत अहकखाय।
च्यारुंइ आवा दै नहीं, अनुक्रम च्यार कषाय॥
- १२ क्रोध विणासै पीत नै, मान विनय नो पास।
माया खोवै मित्रता, लोभै सकल विणास॥
- १३ ए च्यारुं चंडाळ चोकड़ी, टालै ते मतिवंत।
आतम वस करै आपणी, ते गिरवो गुणवंत॥
- १४ कर सेवा सतगुरु तणी, देइ सुपात्र दान।
कर्म कटक दल पेलवा, रहै उपसम रस गलतान॥

१. लय-कुमर तदा अनुमत थयो रे-----

ढाल १२

- १ अम्र^१ पडल पंचरंग, अधिक आडंबर हो अंबर सोभै रह्यौ।
बले इन्द्र धनुष गाज बीज, तन धन जोवन हो एम अथिर कह्यौ॥
- २ जिम रमणी रंग पतंग, मात पितादिक हो लिछमी अथिर छै।
विष फळ विषय विपाक, मधुर भोगवतां हो पिछताओ पछै॥
- ३ जे दीसै परभात, मध्याह्ने न दीसै हो सुख संपत रता।
मध्याह्ने ते नहीं रात, रजनी-सुवणा हो ज्युं सर्व असासता॥
- ४ आम कुंभ फळ जेम, क्षिण भंग काया हो मुग्ध जाणै नहीं।
दिन-दिन मरण नजीक, मात-पितादिक हो स्वार्थिया सही॥
- ५ जरा न घेर्यो आय, व्याध न व्यापी हो इंद्री हीणी नां पड़ी।
त्यां लग धर्म संभाळ, तारो हो आत्म आपरी॥
- ६ रित अरित दुख पात, जन्म जरा नो हो बलि मरवा तणो।
घोर रुद्र संसार, नरक निगोदे हो दुख सङ्घो घणो॥
- ७ काम क्रोध मद लोभ, तन मांहे तिष्टे हो किंकर चोरटा।
ज्ञान दर्शन चारित्र, रत्न अमोळक हो लूटण परगटा॥
- ८ मात पिता सुत नार, क्षिण मांहे विहडै हो स्वार्थिया सहु।
इंद्र नरेंद्र सुरेन्द्र, काळ आयां थी हो सरणागत नहीं॥
- ९ दुःख दावानळ मांहे, जीव प्रजळता हो दीसै बहु परै।
आत्म तारण ताहि, संजम लीधां रो सिव पद संचरै॥

१. लय-पांडव बोलै बोल.....

ढाळ १३

दोहा

- १ देवै श्रीजिन देशना, भाखै भिन-भिन भेद।
चित्त लगाई सांभळो, आणी, अधिक उमेद ॥
- २ 'सांभळ श्रीजिन सीखडी, वारू बाण विसाल। सयाणा।
अस्ति भाव सूं आविया, नव तत्व आदि निहाल। सयाणा॥
सांभळ श्री ॥ धूपदं ॥
- ३ पाप अठारै परहरो, धर चित्त संवर धीर।
तप करि कर्मज तोड़िया, सिवपुर में हुवै सीर॥
- ४ संजम तप सुध साचव्यां, सुभ फळ सुरपद सार।
दुर्गति हिंसादिक कियां, दुर्गति दुःख वातार॥
- ५ पुन्य पाप करि प्राणियो, संचरियै संसार।
संवर निर्जरा सोभता, मेलै मुक्ति मझार॥
- ६ जिन-मार्ग जयकारियो, निर्मळ नै निर्दोख।
धीरपणै जन धार नै, महिमागर वर मोख॥
- ७ सुध जिन मार्ग सेव नै, सुर केइ होय दीपंत।
ऋद्धि मोटी रळियामणा, महासुख महाजोत क्रांत॥
- ८ चारु थित चिहूकाळ नी, विहडै सोभै हार।
मुकट कुंडळ मुख ऊजळो, पेखत पामै प्यार॥
- ९ बाजुबंध नै बेरखा, कड़ि कणदोरो कंत।
छव गहिणा हियै छाविया, रतन तिलक भळकंत॥
- १० महामागर वर मुद्रिका, निर्मळ गात्र निहाल।
गल्लस्यळ नै रेखा पडै, वरै वस्त्र सुविसाल॥
- ११ सुख एहवा पामै सही, एक लहै अवतार।
शिवपुर वेग सिधावसी, संजम तप फळ सार॥
- १२ महाआरंभी महापरिग्रही, पंचैद्री वध प्रताप।
मांस भखै मदिरा पीयै, सहे नरक में संताप॥

- १३ माया वचने मानवी, कपट बढ़ावै माया गूढ़।
अलीक वचन मुख आखियै, महा मिथ्याती मूढ़॥
- १४ कपट करी मूर्ख ठगै, पिंडित ठगवा पास।
सरलपणै मृदु भाखवै, तिर्यच हेतु तास।
सरलपणै मृदु भाखवै, तिर्यच हेतु तास॥
- १५ पंडित ठगवा पारखै, मोन करै खिण मात।
वारू वचन विप्रतारियै, घोर तिर्यच में घात॥
- १६ प्रकृति भद्रीक विनीत छै, सानुकोस दयावन्त।
मच्छर भाव निहालवै, मनुष्य हुवै मतिमंत॥
- १७ राग सहित संजम रुचै, देश व्रत तप बाल।
भाव बिना निर्जरा थकी, सुर गति पाय सुमाल॥
- १८ पाप कूर नरक पांमियै, नरकावास निहाल।
सीत उष्णादिक नीं सहै, वेदन महा विकराल॥
- १९ भूख त्रिखा बहु भोगवै, तप्त अनंती त्रास।
वैतरणी ना दुख बड़ा, परमाधामी पास॥
- २० सागर पल दुख त्यां सहै, कंदर्प रक्त करूर।
हास कतूहळ हाम थी, पांमै दुख भरपूर॥
- २१ आंख मींच खोलै इतै, सुख नवि पाय सुहाल।
दुख सुणतां तन धूजणी, दाखी दीनदयाल॥
- २२ महा सरीरी मानसी, पाप प्रसंग पामंत।
तिर्यच दुख तिम वरणवै, तस थावर त्रासंत॥
- २३ मनुष्य भवे पिण मानवी, गर्भावास दुर्गंध।
मळ मूत्र में मुरछियो, वीर्य रुद्र विलसंद॥
- २४ मास सवा नव मानवी, दुख भुगत्या देखाय।
भूल गयो जनम्यां पछै, विषय वल्लि लिपटाय॥
- २५ जिण थानक दुख में जुड़्यो, तिण थानक मन जाय।
निर्लज्ज धेठो निसरड़ो, अजुही लाज न आय॥
- २६ रमणी तन रळियामणो, देखी राचै दीन।
मळ मूत्र रो कोथळो, रुद्र असुचि मलीन॥
- २७ वमन पित्त वमती थकी, रुद्र वहै निस दीस।
खेळ खंखार खरडीजतो, दुर्गंध विसवावीस॥

- २८ असुच तणो घर आखियो, ऊपर रूप अनूप।
अंतर दुख घर आखियो, कामणी सुख भवकूप॥
- २९ इम जाणी उत्तम नरां, राखसणी मति राच।
सील सुधारस में रमो, प्रवर गुणागर पांच॥
- ३० व्याधि जरा वृद्ध वेदना, अनित्य अत्यंत असार।
इम जाणी धर्म आदरै, सुर शिव पांमै सार॥
- ३१ दुर्गधिया सुख छोड़ि नै, देव हुवै दहदीप।
अल्पकाळे आराधियै, मन इंद्री नै जीप॥
- ३२ ऋद्धि करी रल्लियामणा, वारू विविध विमाण।
चारू चंचळ चाल नां, भळकै सुर तन भाण॥
- ३३ अपछर रूपे ओपती, विविध वणावत वेस।
पंचइंद्री सुख परवरा, सुख विलसै सुविसेस॥
- ३४ चिहु गति नै विषै संचरै, दाखै तेह दयाल।
छः काया ना जीव छांट नै, खट काया प्रतिपाल॥
- ३५ जिम बंधन लहै जीवडो, अळुझै इण संसार।
राग द्वेष मोह रति करि, परखो विविध प्रकार॥
- ३६ मूकै माया मोह थी, राग स्नेह मद मार।
पांमै शिवगति पंचमी, ध्यान सुधारस धार॥
- ३७ राग द्वेष कर्म काम थी, कायर पांमै कलेस।
समभावै चित्त स्थापियां, वारू सुख विशेष॥
- ३८ काम भोग किंपाक सा, जाणी नै मोह पार।
केइक समण सूरा कह्या, अप्रतिबंध विहार॥
- ३९ कंदर्प शोक चित्त करी, दुख सागर भय दीठ।
थिर चित्त संयम थापवो, नर भव पायो नीठ॥
- ४० जिण विध पांमै जीवडो, वैराग्य रो प्रतिबोध।
एहवी वांणी आखियै, सकळ कर्म तो सोध॥
- ४१ राग स्नेह रति में रमै, उळझ्या जीव अजाण।
पाप रूप फळ भोगवै, वीर तणी ए वांण॥
- ४२ वचन समिति बगतर बण, धर खिम्ब्या वर टोप।
सील दया सझ सूरमा, अखिल गुणागर ओप॥
- ४३ राग द्वेष मोह जाळ नै, ध्यान एकंत आराध।
आत्म निज गुण ओळखो, परहर पांच प्रमाद॥

- ४४ समभावै चित्त स्थाप नै, ध्यान सुधारस ध्याय।
मान हमारी सीखड़ी, सिव पदना सुख पाय॥
- ४५ स्तुति निंदा नै सम धरो, मानापमान समान।
अवर मित्र सर्व परिहरो, आत्म निज मित्त जान॥
- ४६ वल्लभ जन नै वेरी जिसो, देखो जग दिल खोल।
समचित्त वल्लभ आत्मा, ए सम नांहि अमोल॥
- ४७ इहभव परभव आकरा, कुण-कुण कष्ट हवाल।
सरणो श्री वीतराग नो, देख लियो जगख्याल॥
- ४८ निश्चल मंदर जळनिधि, भू-सम 'जय' गंभीर।
समतामृत जळ झूलियै, हेरो निज गुण हीर॥
- ४९ ए अवसर अति दोहिलो, निज आत्म उपदेस।
अल्प दिवस में देखज्यो, सुर शिव सुख लहेस॥
- ५० कुण-कुण कष्टज भोगव्या, नरक गर्भादिक बीच।
कर्म हेतु अळगा करो, कामभोग महाकीच॥
- ५१ साध श्रावक ना सोभता, द्विविध धर्म सुधार।
करणी करि कर्म खय करो, पाळो निरतिचार॥
- ५२ जिन वाणी सुण जांणीयै, जग झूठो जंजीर।
समभावे चित्त स्थापियां, सिवपुर घाळै सीर॥
- ५३ धर्म कथा पर चित्त धरी, जोड़ी युक्ति जणाय।
धर्म कथा इम आखियै, निरमळ बुद्ध नै न्याय॥
- ५४ समत् अठार सत्यासीयै, माह सुद मंगलवार॥
धर्म कथा कहिवा भणी, जोड़ी सवाई भझार॥

ढाल १४

‘बाजे बाई समझणी ॥ धुपदं ॥

- १ असणादिक असुध, दीये साधां भणी, आप डूबै ओरां न डूबोय के।
- २ उद्देसीक नितपिंड आहार, देवण हुलसी घणी, डरै नहीं मन मांय॥
- ३ कजिया झगड़ा राड, करवा तीखी घणी, मुंहडे मुहपति बांध॥
- ४ हिस्सा झूठ अदत्त, लेवै न चूकै अणी, करत कतोहळ खयाल॥
- ५ गाळ्यां-गीत सराप, निंदा करे पर तणी, पर ना मर्म प्रकास॥
- ६ बाह्य क्रिया देखाय, फिरे श्रावका बणी, अन्तर कपट विशेष॥
- ७ करलो वचन कहै कोय, जाणै आई भूतणी, धुकती रहै क्रोध मांय॥
- ८ मो सम कुण छै ओर, हूं छूं सभा मंडणी, मगरूरी बहुमान॥
- ९ कपट झपट नै झोड़, झखाळ करै घणी, ठगारी श्रावका जाण॥
- १० कुगुरु कुदेव कुधर्म नी, महिमा करै घणी, सुगुरु सुदेव सूं द्वेष॥
- ११ संत मुनि नै देख, मुंह मचकोड़णी, अनाचार्यां स्यूं पीत॥
- १२ धर्म द्वेषी स्यूं हेत, नाम श्रावका बणी, जोड़ी जुगती मिली आण॥
- १३ नवतत्त्व री नहीं ठीक, बणी बडधर्मणी, अहोनिश आरत ध्यान॥
- १४ नवकरवाळी हाथ, कै ली निन्द्या तणी, अहोनिश पर नीं बात॥
- १५ सामायिक पोसा मांहि, करै विकथा घणी, न मांनै किण री सीख॥
- १६ करै समाई मांहि, बात पेलां तणी, आपो बखाणे आप॥
- १७ मत करो बायां बात, समाई में घणी, रीस करै मन मांहि॥
- १८ आधाकर्मी आहार, देवा हरखी घणी बलै तिण में जाणै धर्म॥
- १९ घालै थानक में गार, छ काया नै मरदणी, दडै लीपै साधु रै काज॥
- २० पड़दा परेच कनात, बांधण आघी घणी, मूळ न जाणै दोष॥
- २१ इसड़ी सुणियां बात, दोरी लागै घणी, पिण जोर लागै नहीं कांय॥
- २२ पाप पोट बहु बांध, बणी नरक बींदणी, न जाणै धर्म नै कर्म॥
- २३ मुंहडे मुहपती बांध, हाथै लीधी पूंजणी, बाणी बोलै सखर सवाद॥
- २४ निरलज लज्जा रहीत, धूतारी कांमणी, राखै मन ना दुष्ट व्यापार॥
- २५ साध साधवियां रे मांहि, भांत घलावणी, उभां ही देवै लड़ाय॥
- २६ मोसा मर्म प्रकास, पर घर भांजणी, देवै अछता आळ॥
- २७ इसका खेदा करै ताहि, कर्म बहु बांधणी, मर नै दुरगति जाय॥

१. लय-मत करज्यो अहंकार।

उपदेश री चौपी : ढाल १४ : १५५

ढाळ १५

- १ घर छोड थया ऋखपाल, महामुनि गणमाळ आछे लाल।
रति अरति नै परहरै ए॥
- २ शब्द मनोहर जोय, न राचै रूप सुभ जोय।
न रीझै सुगंध मांहे सही॥
- ३ मन गमता रस मांय, फर्श मनोहर ताय।
ग्रधपणो मुनि परहरै॥
- ४ स्त्रीय तणां काम भोग, दुरगति दाता रोग।
संग परचो त्यांरो नहीं करै॥
- ५ पुद्गळ ना सुख पेख, नंदीफळ सम देख।
मुनिवर मूळ राचै नहीं॥
- ६ रमणी राखसणी जाण, चारित्र नीं करै हांण।
संग टाळै मुनिवर सही॥
- ७ महिला मोटो फंद, राच रद्धा नर इंद।
छांड मुनि न्यारा थया॥
- ८ पुद्गळ पंच प्रकार, मूर्छा न करै लिगार।
समता रस में गह गह्या॥
- ९ वंदै पूजै तसु नर-नार, मानै दै सतकार।
ए भव सेण हुवै सहू॥
- १० परभव सुख श्रीकार, पोंहचै मोख मझार।
आत्मिक सुख पाविचै॥
- ११ नंदी फळ ज्युं काम भोग, टाळ्यां हुवै आरोग।
जामण भरण मिटाविचै॥
- १२ नंदी फळ ज्युं काम भोग, टाळ्यां हुवै आरोग।
उत्तम नर राचै नहीं॥
- १३ विषफळ महाविकराळ, करै अकाळे काळ।
खाए ते सगळा मरे॥
- १४ पहिला सुख अल्पकाळ, पछै पांमै दुःख असराळ।
अनंतकाळ परलोक में॥

१. लय—ज्ञाता री जोड आछै लाल.....

१५६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १५ गृध्रपणो गात मांय, रक्त रूप में थाय।
सुगंध थकी मन मोह में॥
- १६ गमता फर्श रस मांय, मूर्ख नर मूर्छाय।
दुख सहै नरक निगोद में॥
- १७ रमणी रूप सुरंग, निरखै अंग उपंग।
खिण सुख दुख आगे घणां॥
- १८ ताकळा लाल तपाय, घालै आंख्या मांय।
दुख भारी नरकां तणा॥
- १९ कामण सेती केल, मूढ़ करै मन मेळ।
हास कतोहल थकी रमै॥
- २० अगन थंभ कर जेह, आलंगन दै देह।
ए परमाधामी नरक में॥
- २१ उदक आरंभ दुख न्हाळ वेतरणी विकराळ।
कळकळतो जळ पावही॥
- २२ हांसी माल्यां हाम, जीभ्या काढै ताम।
परतख पाप दिखावही॥
- २३ पांचू आसव सेव्यां पाप, सहै नरक संताप।
असंख काळ आपही॥
- २४ मनुष्य लोक थी ताम, अनंत गुणो दुःख पांम।
वेदन तो अति पांमियै॥
- २५ क्षिण सुख सेवै खंत, दुख निगोद अनंत।
दुख नंदीफळ सारखा॥
- २६ उत्तम जे नर-नार, रहै काम भोग थी न्यार।
मुगत सुखां री ज्यांरै पारखा॥

भक्त के लक्षण

- १ ज्ञान श्रेय अभ्यास थी, ध्यान ज्ञान थी शिष्ट।
ध्यान थी तज कर्म फळ, तेहथी शांति विशिष्ट॥
- २ सर्व भूत परद्वेष तजी, सर्व मित्र सम जान।
ममत भाव अहंकार तज, सुख दुख भाव समान॥
- ३ पर नै दुखदाई नहीं, पर थी आप न दुक्ख।
तजै हर्ष उद्वेग भय, ते मुझ भक्त प्रत्यक्ख॥
- ४ निर्वाछा शुचि दक्ष मन, उदासीन नहीं धंध॥
आरम्भ त्यागी सर्वथा, ते मुझ भक्त सुनंद॥
- ५ सुख दुख हरख न सोग ए, चिंता कांक्षा नाहि।
पुन्य पाप बेहुं तजै, ते मुझ भक्त ओछाहि॥
- ६ शत्रू मित्री सम गिणै, तिमज मान अपमान।
शीत-उष्ण सम दुक्ख-सुख, वर्जत संग सुजान॥
- ७ निन्दा-स्तुति में तुल्य मन, मौन धार सन्तुष्ट।
घर त्यांगी अरु स्थिरमती, सोभै भक्त पियष्ट॥

(गीता अध्याय १२ गा. १२, १३, १५ से १९)

टहुका

टहुका

- १ सहाय^१ में रहणौ। सहाय बिना रहै तो एक एक दिन रा १३ मंडल्या^२।
- २ आचार्य सूं विनय सहित कर जोड़ी मधुर वचन नजीक आवी नैं अरज करणी। स्थानक बैठा अरज न करणी।
- ३ जिता दिन जुदै सिंघाड़ै विचरै त्यां सर्व पाछला साधू नैं कारणीक साधु कनै राख्यां तिण रा चित नैं समाधि रहै तिम, तेतला दिन रहणौ।
- ४ करड़ा वचन रौ तथा खूंचणौ^३ कतोहल ऊतरती बात रौ तथा अजयणादिक और ही बात रौ च्यार पांच साधु तथा सिरपंच^४ मंडल्या विचारी देवै ते लैणा, मन बिगाड़णौ नहीं।
- ५ पांती रौ काम, पांती रौ बोझ आदि रसता बंध्या तिण में माथाधूण^५ न करणी। इण में मन बिगाड़ै तिण नैं अपछंदो अविनीत कैहणो, मर्यादा रो लोपणहार, कषाई, दुष्ट-आत्मा रो धणी, 'शेख अबदुल मुफत'^६ रौ साथी कहणौ।

(हिन्दी अनुवाद)

- १ साझा^१ में रहना चाहिए। अगर साझ के बिना रहे तो एक-एक दिन का प्रायश्चित्त १३ मंडलिया^२।
- २ आचार्य से निवेदन करे तो निकट आकर विनय पूर्वक कर-बद्ध होकर मधुर वचनों से करे। अपने स्थान पर बैठा-बैठा नहीं।
- ३ जितने दिन बहिर्विहार में अग्रगण्य या अनुगामी रूप में रहे, उतने दिन उनको रुग्ण साधु के पास रखा जाए तो उसके चित्त में समाधि रहे, वैसे रहा जाए।
- ४ कटु वाक्य, हास्यमजाक, अवर्णवाद या अयतना आदि किसी प्रसंग का प्रायश्चित्त चार^३ पांच साधु (पंच) तथा सरपंच^४ चिन्तन पूर्वक दे, उसे सहर्ष स्वीकार करें।
- ५ विभाग कार्य, विभाग का वजन लेने आदि के लिए जो धाराएं बनी हुई हैं, उनके पालन में आनाकानी न करें! इसमें अनमना बनने वाले को स्वच्छन्द, अविनीत, मर्यादा भंजक, कषायी, दुरात्मा तथा शेख-अब्दुल का साथी कहा जाए।

१. एक व्यक्ति की प्रमुखता में स्थापित मुनियों का मंडल।

२. भोजन के समय बिछाया जाने वाला वस्त्र, उसे धोना।

३. बार-बार गलती बतलाना।

४. जयाचार्य द्वारा नियुक्त युवाचार्य श्री मघराज जी।

५. मस्तक हिलाना, आनाकानी करना।

६. देखें-परिशिष्ट।

- ६ एकलौ साधु, एकली बाई तथा आर्या सून बात न करणी। कनै ऊभो पिण न रहणौ, इण मर्यादा में चूकां मंडल्या ५१। इम साध्वी एकली, एकला भाई तथा साधू कनै ऊभी न रहणौ, बात न करणी, इण मर्यादा में चूकां मंडल्या ५१
- ७ और साधु री पात्री रोके बिनां कह्या, तौ मंडल्या च्यार पांच साधु देवै तै लेणा।
- ८ इमज चिलमलि^१ उडै तौ मंडल्यां री रीत छै।
- ९ कारण में बोझ न उपाडै, तेतौ बोझ कारण मिटियां पछै उपाड़णौ।
- १० पांती रौ काम साहज्य वाळां नै करणौ।
- ११ कारण में गौचरी न उडै तौ तथा रात्रि दिशां जाय, कारण में पडिकमणौ बेठौ करै, हाजरी न सुणै, दिने तथा पौहर रात्रि पहलां नौद लेवै तथा आथण रा ऊन्हो आहार मंगावै, तौ च्यार पांच साधु तथा सिरपंच साधु ने भ्यासै पको कारण तौ मंडलीया न देवै, अनै थोड़ौ कारण भ्यासै तो ते मंडलीया दीयां मन बिगाड़ै तो शेख अबदुल मुफ्त रौ साथी अविनीत अजोग्य कहणौ। संवत् १९११ वैशाख सुदि १० गुरुवार।

(हिन्दी अनुवाद)

- ६ अकेला साधु, अकेली बहन तथा साध्वी से और अकेली साध्वी, अकेले साधु तथा अकेले भाई से बात न करें व पास में भी खड़ी न रहे। इस मर्यादा का भंग होने पर प्रायश्चित्त ५१ मंडलिया।
- ७ दूसरे साधु की पात्री उसकी आज्ञा बिना काम में ले तो पंच-रूप में अधिकृत साधु जितना प्रायश्चित्त दे उसे स्वीकृत करे।
- ८ इसी प्रकार चिलमलि उड़े तो प्रायश्चित्त की व्यवस्था है।
- ९ रुग्णावस्था में समुच्चय का वजन न ले तो स्वस्थ होने पर उतना बोझ उठाये।
- १० रुग्णावस्था में उसके विभाग का काम साझा वाले करें।
- ११ कारण में गोचरी न जाए, रात्रि में पंचमी समिति का कार्य करे, प्रतिक्रमण बैठकर करे, हाजरी की शिक्षा न सुने, दिन में या प्रहर रात बीतने से पहले सोए तथा सांय काल के समय गर्म आहार मंगाए—आदि के लिए अधिकृत साधु या सरपंच को रोग का पक्का भरोसा हो जाए तब प्रायश्चित्त न दे और थोड़ा रोग लगे तब प्रायश्चित्त दे, ऐसे प्रसंग पर अनमना बने उसे 'शेख अब्दुल मुफ्त का साथी, अविनीत, अयोग्य समझा जाए। (संवत् १९११ वैशाख शुक्ला १० गुरुवार)

१. पर्दा। (पारसी भाषा का शब्द)

- १२ कारणीक साधु नै आहार दैणौ पड़ै तो पइसा भर तौ सप्पी^१, करवाली^२ उतकष्टी सरस नही, अनै अत्यंत निरस पिण नही, इसौ देणौ। व्यंजन ६ पइसा भर रै आसरै मझम बंजण। अनै पांच बिगै समचा मांहि थी नही दैणी। परभाते विनां पांती रौ लेणौ ए कारणीक नी रीत छै, वैद औषध बतावै तौ बात न्यारी तथा आचार्य आज्ञा देवै तौ बात न्यारी।
- १३ द्रव्य खेत्र काल भाव देखी साधु आहार जव, गवूं, मकी, बाजरी नीं रोटी बहुल पणै जे आहार आवै ते मांहिलो दीधां कारणीक नै मूढो बिगाड़णो नही, 'कुलक भाव'^३ आणै तिण कारणीक रा लखण खोटा। पैताळीसा रा लिखत में रोगिया विचै सभाव रा अजोग्य नै खोटो कह्यौ" ते भणी कारणीक नै समभाव राखणा। ए सर्व साधां भेळा होय नै रीत बांधी छै।
- १४ कारणीक नै रीत उपरंत आहार व्यंजन विगै तौ देवण वाळा रै अनै लैण वाळा रै मंडल्या७।

(हिन्दी अनुवाद)

- १२ रोगी साधु को समुच्चय का आहार देना पड़े तो पैसा भर घृत, रोटी (न अधिक सरस और न अधिक नीरस) मध्यम व्यंजन छः पैसा भर लगभग दें, पर पांच विगय समुच्चय से न दें। यह प्रातःकाल बिना विभाग की वस्तु लेने की रोगी के लिए व्यवस्था है। इसमें भी वैद्य औषध बताए या आचार्य आज्ञा दें तो अलग बात है ?
- १३ साधु द्रव्य, क्षेत्र काल भाव देखकर आहार में से जव, गेहूं, मक्की या बाजरी आदि की रोटी जो अधिकांश रूप से मिले उसमें से दे तो रोगी मुंह न बिगाड़े। कालुष्य भाव लाने वाले रोगी की आदत बिगड़ी हुई होती है। संवत् १८४५ के लिखित में "रुग्ण की अपेक्षा स्वभाव के अयोग्य को बुरा कहा है" इसलिए रुग्ण व्यक्ति को समभाव रखना चाहिए। यह व्यवस्था सभी साधुओं ने सम्मिलित होकर की है !
- १४ रुग्ण व्यक्ति को इस व्यवस्था के उपरान्त भोजन, व्यंजन, विगय वगैरह दे तो देने वाले तथा लेने वाले को प्रायश्चित्त मंडल्या ७।

१. घृत ।

३. कलुषभाव।

२. रोटी।

- १५ दूसरी साधु कहै—इण रीत उपरंत दीयौ, तो डंड मण्डल्या ७ दैणा। अनै जौ कारणीक नै समचा रौ आहार देवण वालौ और साहज्य वाला साधां नै पूछ नै देवै तो देण वाला रे मंडल्या नहीं, भीखनजी स्वामी पैतालीसा रा लिखत में कह्यौ। ते भणी बीजा साहज्य वालां नै पूछ नै रीत प्रमाणै देवै तो मंडल्या नहीं संवत् १९११ चैत सुदि ५।

(हिन्दी अनुवाद)

- १५ दूसरा साधु कहै—इसने व्यवस्था उपरान्त दिया है तो भी देने वाले प्रायश्चित्त मंडलिया ७ अगर रुग्ण को समुच्चय का आहार देने वाला अन्य साधु वाले साधुओं को पूछ कर दे तो उसे प्रायश्चित्त नहीं ! “आचार्य भिक्षु ने १८४५ के लिखित में रोगी के आहार की व्यवस्था के संबंध में कहा है—सब साधु सम्मिलित होकर दे तो लेना” इसलिए दूसरे साधु वालों को पूछकर विधिपूर्वक दे तो प्रायश्चित्त नहीं !

(संवत् १९११ चैत्र शुक्ला ४)

मर्यादा मोच्छब री ढाळां

ढाळ १

‘वारी रे जावूं म्हारा गणपति नी॥

फूल क्यारी शासण गणि संपति नी,

स्वामी शासण कलश चढायो, वारी० ॥धूपदं॥

- १ भरत क्षेत्रे भिक्षु परगटिया, भारीमाल शिष्य भारी।
पट तीजे ऋषिराय जंबू सा, सुयश दिशा जयकारी॥
- २ विविध मर्यादा बांधी भिक्षु, वारू लिखत मझारो।
गणपति नामे दीक्षा देणी, वर्ष बत्तीशे सारो॥
- ३ दोष देखै तो तुरत दाखणों, लिखत पच्चासे एही।
धणां दिवस पाछै दोष कहै तो, धणी दोष रो तेही॥
- ४ इमहिज लिखत बावनां मांहि, इमहिज रास मझारो।
‘साध-सिखामण-ढाळ’ दुहा में, इमहिज बहु अधिकारो॥
- ५ लिखत बावनें दाख्यौ अज्जा, जाणी दोष लगावै।
तो पानां में लिखी राखणौ, इम भिक्षु फरमावै॥
- ६ विण लिखै विगै तरकारी न खाणी, कदा कारण में न लिखायो।
तो और अज्जा ने सायदार करणा, वेगो लिखणो तायो॥
- ७ साधु ने आर्या केरी, न सुणे अवर्णवादो।
‘स्वामभणी कहिजो’-इम कहिणो, लिखत बावने लाधो॥
- ८ दोष धणी ने तथा गुरां ने, कहिणो इण विध आख्यो।
अवर किणहि ने कहिणो नाही, पच्चासे बावनें आख्यो॥
- ९ गण बाहिर नीकळ नै पोथी, पाना ले जावणां नहीं साथो।
अंश अवगुण बोलण रा त्याग छै, गुणसठै पच्चासे ख्यातो॥
- १० गण में वा बाहिर निकळ नैं, अवगुण बोलण रा त्यागो।
लिखत पैताळीसा में भाख्यो, बलि जिलो न बांधणौ धर रागो॥
- ११ उगणीसै पनरे सुदि एकम, माघ मास रे मांझो।
जयजश गणपति जोड़ करी ए, स्वाम वचन सुखदायो॥

ढाळ २

‘भिक्षु भज ले रे घर भाव ॥धुपदं॥

- १ अष्टादश सोळे वर्षति^१, ते भाव चरण मुनि लीध।
धुर^२ मर्यादा बत्तीसे बांधी, चरम^३ गुणसठै सिद्ध।
- २ भारीमाल प्रमुख गणपति ने, नामे देणी दीख।
सेखे काळ चौमासो आज्ञा थी, ए भिक्षु नी सीख॥
- ३ गणि इच्छा सूं पद युवराज आपे, तसु आंण प्रमाण।
एक तर्णी आज्ञा में रहिणो, ए रीत पंरपर जाण॥
- ४ कर्म योगे एक दोय प्रमुख, टळियां तीर्थ में नाहि।
तेहनें वांदे पूजे ते पिण, नही जिन आज्ञा मांहि॥
- ५ कर्म योग गण सूं निसरिया, अवगुण बोलण रा पचखांण।
पांच पदां री आण तास है, बलि अनंत सिद्धां री आण॥
- ६ कदा विटळ थई सूंस भांगे, ओ हळुकर्मी माने नाय।
कोई विटळ उण सरीखो माने, तो लेखां में न गिणाय॥
- ७ गण में लिखिया जाच्या उपधि, लेई जाणा नहीं जाण।
क्षेत्रां मांहि इक निशि उपरंते, रहिवा रा पचखांण॥
- ८ गुणसठे महा सुदि सातम दिन, बांधी ए मरयाद।
अष्टादश साठे भाद्रवे अणसण, करी लही समाध॥
- ९ भारीमाल पट अधिक ओजागर, भद्र प्रकृति गुण खान।
अठंतरे अणसण कर महा विद, अष्टम कियो प्रयाण॥
- १० पट तीजे ऋषिराय जंबू जिम, प्रबल दशा पुन्यवान।
उगणीशै आठे महाविद चवदश, तिथी कियो कल्याण॥
- ११ चोथा आरा जिसा आचार्य, ए प्रगट थया इण आर।
अतिशयधारी अधिक ओजागर, शासण नां सिणगार॥
- १२ तास प्रसादे लही संपदा, च्यार तीर्थ सुखकार।
गण वृद्धि समृद्ध सुख संपति वर, जयजश हर्ष अपार॥
- १३ स्वाम चरम मर्यादा गणि पट, महोत्सव मंगळमाळ।
उगणीसै इकवीसै जोड़ी, जयजश हर्ष विशाल॥

१. लय—सीता आवै रे घर राग।

३. प्रथम।

२. आषाढ पूर्णिमा।

४. अंतिम

ढाळ ३

- अहो मुज गुणवंत पूज्यजी, मुनिंद मोरा।
 धन्य-धन्य भिक्षु स्वाम हो ॥धूपदं॥
- १ संवत् अठारे बत्तीस में, मुनिंद मोरा, बांधी मर्यादा ताम हो।
 शिष्य शिष्यणी करणा सही, मु० भारीमाल ने नाम हो॥
 - २ गुणसठे दृढ़ बांधी बलि, भारीमाल ने नाम।
 शिष्य शिष्यणी करणा सही, दीक्षा दे संपण ताम॥
 - ३ भारीमाल री आण थी, बलि करणो चउमास।
 शेषकाळ पिण विचरणो, आज्ञा ले गुण रास॥
 - ४ इण वचने करी जाण जो, उतरियां चउमास।
 आज्ञा लेइ ने विचरणो, शेषकाळ विमास॥
 - ५ अथवा चउमासो धारे तरे, चउमासा पहिला शेषकाळ।
 वा चउमासा पछै शेषकाळ नीं, गणि आज्ञा ले विचरे विशाल॥
 - ६ भारीमाल इच्छा थकी, पद युवराज पिछाण।
 गुरु भाई शिष्य ने दियां, रहिवो तेहनी आण॥
 - ७ सर्व साधु ने साधवी, इक गणि आणा मांहि।
 रहिवो रूडी रीत सूं, ए रीत परंपर ताहि॥
 - ८ संत अने सतियां तणो, चाले मार्ग जाण।
 त्यां लग ए मर्यादा है, इक गणी आण प्रमाण॥
 - ९ कोइक कर्म योग गण थी टळे, एक दोय तीन आदि।
 करे धुरताई बुगल ध्यानी हुवे, श्रद्धणो नहीं तसु साध॥
 - १० च्यार तीर्थ में गिणवो नहीं, निंदक तीर्थ नो धार।
 एहवा ने बांदे तिके, छै जिन आज्ञा बार॥
 - ११ और मुनि ने असाधु श्रद्धायवा, कदा फेर दीक्षा लेवे कोय।
 तो पिण उण ने साधु न श्रद्धणो, ए भिक्षु वच जोय॥
 - १२ उण ने छेड़वियां ओ आळ दे, तिणरी बात न मानणी एक।
 उण तो अनंत संसार आरे कीयो, दीसे छे सुविशेष॥

१. लय—सिंहल नृप कहै चंद ने।

- १३ कदा कर्म योग गण सूं टळे, गण रा संत सत्यां रा जाण।
अवर्णवाद बोलण तणा, अंश हुंता अणहुंता पिछाण॥
- १४ अनंत सिद्धां री आण छै, बलि पांचूं पदां री आण।
पंच पदां री साख सूं, अवगुण बोलण रा पचखांण॥
- १५ किण ही साधु साधवियां तणे, शंका पड़े ज्यूं जाण।
बोलण रा पचखांण छै, कांई ए भिक्षु नी बाण॥
- १६ कदाचित विटळ थई सूंस भांगै, हळुकर्मी न माने सोय।
कदा उण सरीखो विटळ हुवै, तो लेखा में नही कोय॥
- १७ शेष काळ चउमासो उतरया, वस्त्र जाच्यो ते गुरु पे आण।
काम जरूर रो ऊपना, जाडो-जाडो बाट लेणो जाण॥
- १८ कर्म धके गण सूं टळे, बाई भाई श्रद्धा रो होय।
इक पिण बाई भाई हुवे, तिहां रहिणो नही छे कोय॥
- १९ बाटे बहितो इक निशा, कारण पड़्या रहे सोय।
पांच विगय सुंखडी रा त्याग छै, अनंत सिद्धां री साख सूं जोय॥
- २० टोळा मांहि उपगरण करे, गण में पड़त पाना लिखे जाण।
जाचे पत्र पानादिक वस्तु ते, साथ ले जावण रा पचखांण॥
- २१ बोदो^१ चोळपटो नें मुंहपति, बोदो ओधो पछेवडी जाण।
खंडियादिक उपरंत ते, साथ ले जावण रा पचखांण॥
- २२ कोई पूछे क्षेत्रां में रहिण रा, किम त्याग कराया तास।
उत्तर तेहने एह विधे, दीधो भिक्षु विमास॥
- २३ रागाधेखो क्लेश वधतो जाण ने, उपगार घटतो जाण।
इत्यादिक बहुकारण जाणी करी, कराया छै पचखांण॥
- २४ जिण रा परिणाम चोखा हुवे तो, सूंस मर्यादा ताम।
आरे हुजो आछीतरे, नही सरमासरमी रो काम॥
- २५ मूढे और मन में और है, इम तो साधु नें करिवो न सोय।
बलि इण लिखत में खूंचणो, काढ़णो नहीं छै कोय॥
- २६ पछे ओर रो ओर न बोलणो, अनंत सिद्धां री साख सुजाण।
सगळा रे पचखांण छै, ए स्वामी नी बाण।
- २७ अन्य टोळा में जावा तणां, ए पिण छै पचखांण।
मर खपणो पिण सूंस ए, भांगणो नहीं छै जाण॥

- २८ लिखत ए ऋषि भिक्खुण तणो, काई संवत अठारे सोय।
गुणसठे महा सुदि सप्तमी, वार शनेश्चर जोय।
- २९ इम गुणसठैमहा सुदी सप्तमी, बांधी ए मर्याद।
अष्टादश साठ भाद्रवे, अनशन भाव समाध॥
- ३० संवत अठारे अठंतरे, महा बदि आठम ताय।
भारीमाल अनशन भलो, ए द्वितीय पाट सुखदाय॥
- ३१ उगणीशै आठे समें, महा बदि चवदश सार।
ऋषिराय परलोक पधारिया, ए तृतीय पाट गुणधार॥
- ३२ तास पसाये संपदा, जयजश करण सुपसाय।
ते सगळा गणपति तणा, पट महोत्सव सुखदाय॥
- ३३ पाटानुपाट परबरा, रहिवो एक गणी आण।
गुणसठे महासुदि सप्तमी, बले विविध मर्याद पिछाण॥
- ३४ तिण कारण मंगळीक ए, उत्तम दिवस उदार।
मर्यादा ने गणि पट तणो, महात्सव मंगळाचार॥
- ३५ संवत उगणीशे बाबीस में, महा सुदि छठ चंद्रवार।
जयजश गणपति युक्त सूं, जोड़ी हर्ष अपार॥

ढाळ ४

स्वाम सुखकारी जी, तीर्थ सिणगारी जी।
हो जी म्हारा भिक्षु ने भारीमाल तणी वर जोडी जी,
धर्म ना धोरी जी ॥धूपदं॥

- १ भिक्षू भाणज भरत में, कांई अवतरिया इण आर।
मर्यादा बांधी भली, कांई लिखत विषे सुविचार॥
- २ वर मर्यादा चरम, गुणसठे गुणरास।
चारू मर्यादा चरम, गुणसठे गुणरास॥
- ३ भारीमाल आज्ञा थकी, शेषकाळ चउमास।
आज्ञा विन रहिणो नही, किण ही स्थानक तास॥
- ४ शिष्य शिष्यणी करणा सही, भारीमाल रे नाम।
चरण देइ ने संपणा, गुणी संत गुण धाम॥
- ५ भारीमाल इच्छा थकी, थापे पद युवराज।
रहिणो तसु आज्ञा मझे, ए रीत पंरपर साज॥
- ६ कर्म योग गण सूं टळे, एक दोय ने तीन।
तसु साधु नही श्रद्धणो, निंदक तेह मळीन॥
- ७ हुंता अणहुंता बलि, अवर्ण वाद पिछाण।
अनंत सिद्धा साखे करी, बोलण रा पचखांण॥
- ८ गण मांहि जाचे लिखे, वस्त्र पानादिक जाण।
साथे लेजावण तणां, जावजीव पचखांण॥
- ९ श्रद्धा रा क्षेत्रां मझे, एक रात्रि उपरंत।
रहिवा रा पचखांण छै, ए भिक्षु वच तंत॥
- १० संवत अठारे गुणसठे, महा सुदि सातम सार।
ए मर्यादा स्वामीजी, बांधी अधिक उदार॥
- ११ तेह लिखत नी जोड़ ए, उगणीसै तेबीस।
माघ शुक्ल छठ तिथि करी, जयजश हर्ष जगीस॥

१. लय-पायल वाली पदमणी

१७२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

ढाळ ५

'चरम मर्याद भिक्षु नी भारी,
बांधी महासुदी सातम सारी।च०।तो गुणसठे लिखत उदारी॥च०
॥ध्रुपदं॥

- १ संवत अठारे बत्तीसे लिखत में, शिष्य गणि नाम सुजाण।
इम गुणसठे शिष्य गणि नामे, दीक्षा दे संपणा आण॥
- २ गणि आणा सूं चउमास करणो, फुन शेष काळ विचरणो।
आज्ञा विना न रहणो किंहाइ, गणपति छंदे तिरणो॥
- ३ गणपति आप तणी इच्छा सूं, शिष्य अथवा गुरु भाई।
पद युवराज समापे तिण ने, तास आण शिर ठाई॥
- ४ सहु संत सती रहिणो इकगुरु आणा, एह परंपर रीत।
साध साधव्या रो मार्ग चाले, तठां ताई सुवदीत॥
- ५ कर्म योगे गण बाहिर निकळे, एक दोय तीन आद।
च्यार तीर्थ में तिण ने न गिणवो, तसु वांटे तिण रे असमाध॥
- ६ और साधा ने असाध श्रद्धावा, फेर दीक्षा लेवे कोई।
तो पिण एहवा टाळोकर ने, साधु न श्रद्धणो सोई॥
- ७ छेडवियां तो आळ देवे ओ, तिणरी न मानणी बात।
उणतो संसार अनंतो आरे, कियो दीसे साक्षात॥
- ८ कर्म योगे गण सूं टळियां, टोळा रा हूता अणहूता जाण।
अवगुण अंश बोलण त्याग छै, पांचू पदां री आण॥
- ९ कदा विटळ होय सूस भांगे, तो न्यायवादी तो माने नाय।
उण सरीखो कोइ विटळ माने, तो लेखा में न गिणाय॥
- १० शेष काळ चउमासो उतरयां, तंतू जाच्यो ताहि।
आचारज ने आण संपणो, आज्ञा विन वर्तवो नांहि॥
- ११ कदा जरूर रो काम पडे तो, जाडो-जाडो बांट लेणो।
महीं तो आज्ञा विना बांटणो नाहि, गणपति ने सूप देणो॥
- १२ इण श्रद्धा रा क्षेत्रां में नहि रहिणो, टाळोकर ने ताहि।
बाटे वहतो इक निशि उपरांत, रहिणो नही क्षेत्रां मांहि॥

१. लय—आवत मेरी गलियन में गिरधारी।

- १३ कारण पड़िया क्षेत्रां मांहि रहे तो, पांच विगय पचखांण।
 सूखडी रा पिण त्याग छै तिण रे, अनंत सिद्धां री आण॥
- १४ गण में थकां पाना लिखे जाचे, ते ले जावणा नहीं बार।
 पात्रा जाचे ते ले जावणा नहीं, नवो तंतु इम धार॥
- १५ इत्यादिक मर्याद लोप्यां, फिट-फिट जग में होवे।
 निंदक टाळोकर दुख पावे, जीतब जन्म बिगोवे॥
- १६ उगणीशे पणबीशे वर्षे, महासुदि छठ सोमवारं।
 जयजश गणपति जोड़ करी ए, सातम महोत्सव सारं॥

ढाल ६

- 'आतो भिक्षु बांधी भारी रे, मर्यादा सुखकारी।
वर्ष गुणसठै संवत अठारी रे, महा सुदी सातम सारी ॥धुपदं॥
- १ आचारज रे नामे दीक्षा, देणी मुनि श्रमणी ने।
दीक्षा दे ने आण संपणा, गणपति परम गणी ने॥
 - २ शेषकाल चउमासे रहिणो, गणपति आण प्रमाणे।
आज्ञा बिना न रहिणो क्यांही, और कार्य इम जाणे॥
 - ३ आचारज अपणी इच्छा सुं, पट आपे धर पेमो।
गुरु भाइ अथवा चेला नें, तसु आज्ञा पिण एमो॥
 - ४ एकण री आज्ञा में रहिणो, सर्व भणी धर प्रीतं।
संत सत्यां रो शुध मग चाले, त्यां लग एहिज रीतं॥
 - ५ कर्म योग गण सुं निकळे, तसु साथ श्रद्धणो नाही।
तिण ने वांदे पूजे ते पिण, नही जिन आज्ञा मांही॥
 - ६ कर्मयोग गण सुं टळिया, हुंता अणहुंता जाण।
गण रा अवर्ण बोलण रा, जावजीव पचखांण॥
 - ७ गण में लिखे तथा जाचे, ते वस्त्र पात्रादि पिछाणो।
ते पिण साथे ले जावण रा, छै तेहने पचखांणो॥
 - ८ इण श्रद्धा रा क्षेत्रां विषे, पिण रहिवा रा पचखांणो।
इक बाई भाई हुवै त्यां पिण, रहिणो नहीं छै जाणो॥
 - ९ शेषकाल चउमास उतरियां, तंतू जाचे ज्यांही।
आचारज ने आण संपणो, बांट वावरणो नाही॥
 - १० काम जरूर पड़्यां थी, जोडो-जाडो बांटी लेणो।
महीं आचार्य दै ते लेणो, बुरो दियो नहीं कहिणो॥
 - ११ इत्यादिक मर्यादावां, बांधी भारी गुणकारी।
साठे भाद्रव परभव पहुंता, सात पोहर संथारी॥
 - १२ चरम मर्यादा स्वाम ए बांधी, तेह तणो सुविचारो।
नाम चरम मर्याद महोत्सव, च्यार तीर्थ हितकारो॥
 - १३ उगणीशौ षट् बीस बीदासर, महा सुद छठ निशि तायो।
चालीश त्राणू वर मुनि अज्जा, जयजश हर्ष सवायो॥

१. लय-ए तो जिन मारग रा नायक रे।

भिक्षु स्वाम भला

भिक्षु स्वाम भला अति ही उजला।

मर्यादा पाळ्या थी जीव निर्मळा ॥धूपदं॥

- १ सर्व संत सतियां ने जोय, भारीमाल आज्ञा में सोय ॥भिक्षु०॥
चउमासो ने शेषे काळ विहार, भारीमाल आज्ञा थी सार, भिक्षु०॥
- २ विण आज्ञा रहिणो न किण ही ठाम, दीक्षा देणी भारीमाल रे नाम।
दीक्षा देइ ने संपनो आण, आज्ञा बिना नहीं राखणो जाण॥
- ३ आचार्य विण और रे जाण, चेला करण तणा पचखांण।
और साधा ने आवे प्रतीत, तेहवो भारमाल ने शिष्य करणो वदीत॥
- ४ भारमलजी री इच्छा होय, जद गुरु भाइ अथवा चेला ने सोय।
भार टोळा रो सूपे जश जाण, सर्व संत सतियां ने चालवो तसु आण॥
- ५ बांधी ए परंपर रीत, सर्व संत सतियां सुवदीत।
एकण री आज्ञा रे मांय, चालणो एहवी रीत शोभाय॥
- ६ साधु-साधवियां रो चाले मग्ग, जठा तांड ए रीत उदग्ग।
अशुभ कर्म रे योगे कोय, टोळा मां सूं फाड़ातोड़ो करि सोय॥
- ७ एक दोय त्रिण आदि निकळेह, हुवै बुगल ध्यानी बहू धुताइ करेह।
तिण ने साधु श्रद्धणो नाहि, गिणवो नही चिउं तीर्थ मांहि॥
- ८ ते चिहुं तीर्थ ना निदंक सोय, तेहने बांदे पूजे कोय।
ते पिण छै जिन आज्ञा बार, ए भिक्षु रा वयण उदार॥
- ९ कदा कोई दीक्षा ले फेर, अवर साधां ने असाधु श्रद्धायवा हेर।
तो पिण उण ने साधु न सरधणो न्हाळ, उण ने छेड़विया तो ओ देवे आळ॥
- १० तिण री पिण बात न मानणी जेह, उण तो अनंत संसार आरे कियो दीसेह।
कदा कर्म धक्को दीधा कोय, टोळा थकी जो टळे तो सोय॥
- ११ उण रे टोळा रा संत सत्यां रा जाण, हूँता अणहूँता अंश मात्र पिछाण।
अवगुण बोळण रा पांचूं पद री आण, अनंत सिद्धां री साख करी पचखांण॥
- १२ किण ही साधू साधवी रा जाण, शंका पड़े ज्यूं बोलण रा पचखांण।
जो कदाचित ओ विटळ होय, सूंस प्रते भांगे ते जोय॥

- १३ तो हळुकर्मी न्यायवादी हुवे जेह, तेह तणों वच नही मानेह।
तिण रे सरीखो विटळ माने कोइ बाय, ते तो लेखा में न गिणाय॥
- १४ किण चरचा बोल रो पड़े कोइ काम, तो बुद्धिवंत संत विचारी करणो ताम।
बले श्रद्धा रो बोल पिण कोय, बुद्धिवंत विचारी संचै बेसाणणो सोय॥
- १५ कोइ बोल बेसै जो नांही, तो पिण ताण न करणी ताहि।
केवळियां ने देणो भोळाय, पिण अंश खंच नही करणी काय॥
- १६ चउमासो उतरीयां तथा शेषे काळ, तंतु जाच्यो तेह निहाल।
आपरे मते बांट बंटाय, फाड़तोड़ ने पहिरणो नांही॥
- १७ कदा पड़े जरूर रो काम, तो जाडो-जाडो बांट लेणो ताम।
महीं तो आचार्य नी आज्ञा बिन सोय, वावरणो नहीं छै अवलोय॥
- १८ महीं तो आचार्य आगे मेलणो आण, आचार्य देवे तो लेणो जाण।
तिण री पाछी बात न चलावणी काय, मंही इण ने मोटो दियो कहिणो नाय॥
- १९ कर्म धको दीयां टळे गणबार, श्रद्धा रा क्षेत्रां में न, रहिणो लिंगार।
एक बाई भाई श्रद्धा रो होय, तिहां पिण नही रहिणो छै कोय॥
- २० वाटे वहितां इक निशि उपरंत त्याग, कारण पड़ियां रहे तो तसु माग।
पांचू विगय ने सूखड़ी रा पचखांण, अनंत सिद्धां री साख करी जाण॥
- २१ गण में जाचे लिखे वस्त्रादि, साथे ले जावण रा त्याग समाधि।
जूनो चोळपट्टो ओघो पछेवड़ी ताहि, मुंहपती खंडिया उपरंत ले जावणा नाहि।
- २२ कोइ पूछे यां क्षेत्रां में देख, त्याग कराया छै किण लेख।
तिण ने कहिणो रागा धेखो वधतो जाण, उपगार घटतो जाण कराया पिछाण॥
- २३ चोखा परिणाम है तो आरे होयजो ताम, सरमासरमी रो नहीं छै काम।
इण लिखत में खूंचणो काढणो नाहि, सारां रे पचखांण छै ताहि॥
- २४ ए मर्यादा बांधी भिक्षु स्वाम, संवत अठारे गुणसठै ताम।
महा सुदि सातम ने शनिवार, ए मर्यादा पाळ्यां जय-जय कार॥
- २५ संवत उगणीशे गुणतीशे वास, महासुदि सातम जोड़ी हुल्लास।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय, जयजश संपति हर्ष सवाय॥

- 'भिक्षु ए मर्यादा बांधी, अष्टादश गुणसठे जी ॥ध्रुपद॥
- १ सहू संत सत्यां नें भारीमाल री, आज्ञा मांहि रैणो जी।
तसु आज्ञा थी विहार चउमासो, ए भिक्षु ना वेणो जी कांई॥
- २ आज्ञा विना कठे नहिं रहिणो, बलि भारीमाल रे नामो।
शिष्य शिष्यणी करणा चरण देइ ने, आण सूपणा तामो॥
- ३ भारीमाल री इच्छा हुवै जद, गुरु भाई ने तामो।
वा चेला ने भार टोळा नो, आपे अति अभिरामो॥
- ४ जद सगळा संत सत्यां ने उण री, आज्ञा मांहे रहिणो।
एहवी रीत पंरपर बांधी, ए भिक्षु ना वेणो॥
- ५ सगळा संत सत्यां नें रहिणो—एकण री आज्ञा मांयो।
साधु साधव्यां रो मारग चाले, जठे तांइ सुखदायो॥
- ६ अशुभ उदय गण थी कोइ, निकले एक दोय त्रिण आदो।
बहु धुताई करे बुगल-ध्यानी हुवै, तसु गिणवा नहीं साधो॥
- ७ तसु चिहुं तीर्थ में नही गिणवा, ते निंदक चिहुं तीर्थ नां।
तेह ने वंदे ते पिण श्री जिन—आज्ञा बार प्रपन्ना॥
- ८ साधां भणी असाधु श्रद्धायवा, फेर दीक्षा ले कोइ।
तो पिण तेह ने मुनि न श्रद्धवू, ए भिक्षु वच जोइ॥
- ९ उण ने छेड़विया ओ देवे, और साधां शिर आळो।
उण तो अनंत संसार ने आरे, कीधो दीसै बालो॥
- १० कदा कर्म धको दीधां टोळा सूं, निकले जेह अयाणो।
तो उण रे गण रा संत सत्यां रा, अवगुण बोलण रा पचखांणो॥
- ११ अंश मात्र हुंता अणहुंता, अवगुण बोलण रा जाणो।
अनंत सिद्धां री आण छै तिण ने, बलि पांच पदां री आणो॥
- १२ पांचू पद नी साख थकी, पचखांण तास पहिछाणो।
किण ही संत सत्यां री शंक पड़े ज्यूं, बोलण रा पचखांणो॥
- १३ कदा ओ विटळ होय सूस भांगे तो, हळुकर्मी न माने तायो।
उण सरीखो कोई विटळ मानें तो, लेखां में न गिणायो॥

१. लय—इण स्वार्थ सिद्ध रे चंद्रवे।

१७८. तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ तंतू जाच्यो महीं हुवै ते, गुरु पे मूकणो सारो।
जरूर काम थी जाडो-जाडो, बांट लेणो सुविचारो॥
- १५ गण में लिखे वस्तु जाचे ते, गण बारे निकळ्या जाणो।
साथ लेजावण तणां त्याग छै, अनंत सिद्धां री आणो॥
- १६ टाळोकर ने इक निशि उपरांत, क्षेत्र श्रद्धा रा जाणो।
अनंत सिद्धां री साख करि ने, रहिवा रा पचखांणो॥
- १७ इत्यादिक मर्यादा बहु विध, बांधी भिक्षु स्वामो
संवत अठारे वर्ष साठे, महा सुदि सातम तामो॥
- १८ तेह गुणसठा लिखत तर्णी ए, जोड़ करी सुखकारो।
उगणीशे तीशे महासुदि सातम, जयजश संपति सारो॥

गण विशुद्धिकरण हाजरी

पहली बड़ी हाजरी

संवत् १९१० पोस बदि ९ वार शनेश्चर बड़ी रावळिया में ऋषि जीतमल गण विशुद्धिकरण हाजरी नी स्थापना कीधी। तेहनी विध-सर्व साधु 'बडा लहुडाइ' सूं मुख आगलि पंक्तिबंध उभा राखी नै आचार्य एतला वचन त्यां साधु हाथ जोड उभा त्यानै सुणावै ते लिखीयइं छइं।

“नमिरुण असुर-सुर-गरुल-भुयंग-परिवंदिए गए किलेसे।

अरिहे सिद्धायरिया, उवज्झाया सव्वसाह्य।”

श्री वीर वर्द्धमान शासण में संवत् १८१७ भीखणजी स्वामी सिद्धान्त देखी सूत्र प्रमाणै श्रद्धा आचार प्रगट कीयो। नवी दीक्षा लीधी। परंपरा रीत मर्यादा अनेक प्रकारे बांधी। बत्तीसा रै वरस आप-आप रै चेलो न करणो ए मर्यादा बांधी। गण बारै नीकळै, अपछंदो^१ ह्वै, तिण री बात-अवगुण बोलै तिका मानणी नहीं। तिण नै साधु सरधणो नहीं, इम कह्यो। तथा बलि ओर लिखत में पिण टोळा में रही तथा बारै नीकळी उतरती बात करणी वरजी छै। ते भणी शासण री बात गुणोत्कीर्तन रूप करणी। अने गुणोत्कीर्तन रूप वार्ता सांभळणी। उतरती बात न करणी। अनै उतरती बात मन सहित न सांभळणी। कोई शब्द कान में पडै ते गुरां नै कही देणो। उतरती बात कहैं तथा सुणै तथा सुणी नै न कहै ते इण भव में च्यार तीर्थ^२ में हेलवा जोग निंदवा जोग 'कष्ट^३ करवा जोग' परभव में उतकृष्ट अनंत संसार रुळै एहनी रहस्य ज्ञाता सूत्र में कही-सेलक^४ सरीखा अपछंद नै तथा उज्झिया^५ भोगवती-रा साथी नै तथा सूत्र में, छकाय में, पंच महाव्रत धारी साधु में संका राखै-तिण नै हेलवा निंदवा जोग कह्यो जाव उत्कृष्ट अनंत संसारी कह्यो। तथा ठाणांग ठा० ५ उ०२ अरिहंतादिक नी आशातना कियां दुर्लभबोधिपणों लहै, एहवो कह्यो। तथा दशवैकालिक अ०९ “अबोहि आसायण नत्थि मोखो” गुरुवादिक नी आशातना ते मिथ्यात अबोधि नों कारण कह्यो, तेहथी मोक्ष न मिलै एकेन्द्रियादिक में जाय, एहवो कह्यो। ते माटे आचार्यादिक नां अवर्णवाद नो बोलणहार शासण री उतरती बात ना करणहार नै तीर्थकर नो चोर कहिणो।

तथा संवत् १८५० वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी तिण में कह्यो-“एक दोष सूं बीजो दोष भेलो करै ते अन्याइ छै। जिण रा परिणाम मेला होसी ते साध

१. दीक्षा-क्रम से।

२. स्वच्छन्द।

३. साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका।

४. अनादृत करने योग्य।

५. नायाधम्मकहाओ-६।७।२८, ३०।

६. नायाधम्मकहाओ-१।५।१२५।

साधवियां रा छिद्र जोय-जोय नै भेळा करसी। ते तो भारीकर्मा जीवां रा काम छै। डाहो सरल आत्मा नो धणी होसी ते तो इम कहसी—कोइ गृहस्थ साध-साधवियां रो स्वभाव प्रकृति अथवा दोष कहि बतावै, तिण नै यूँ कहिणो—“मोनै क्यानै कहो, कहो तो धणी नै कहो, कै स्वामीजी ने कहो, ज्युं यानै प्रायश्चित देइ नै सुद्ध करै, नहि कहिसो तो थे पिण दोषीला गुरु ना सेवणहार छो। स्वामीजी नै न कहिसो तो थामें पिण बांक छै। थे म्हानै कद्दां कांड हुवै।” यूँ कहि नै न्यारो हुवै पिण आप बैहिदा^१ मांहि क्यानै पड़ै। पेलै रा दोष धार नै भेळा करै ते तो एकंत मृषावादी अन्याइ छै। किण ही नै खेत्र काचो^२ बताया, किण ही नै कपड़ादिक मोटो दीधां, इत्याधिक कारणै कषाय उटै, जद गुरुवादिक री निंघा करण रा, अवर्णवाद बोलण रा, एक-एक आगै बोलण रा, मांहा-मांही मिलनै जिलो बांधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री आण छै। गुरुवादिक आगै भेलो आप रै मुतळब रहे। पछै आहारादिक थोड़ा घणा रो कपड़ादिक रो नाम लेइ नै अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै।” ए सर्व मर्यादा पचासा रा लिखत में भीखणजी स्वामी बांधी ते सर्व शुद्ध पाळणी। तथा तिणहिज लिखत में एहवो कद्दो—“किण ही साधु साधवियां में दोष देखै तो तत्काल धणी ने कहिणो अथवा गुरां कहिणो पिण ओरां नै न कहिणो । घणा दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्रायश्चित रो धणी ऊहिज छै। प्रायश्चित रा धणी नै याद आवै तो प्रायश्चित उण नै पिण लेणो, नहि लेवै तो उण नै मुसकिळ छै।” ए पिण पचासा रा लिखत में और नै आगै उतरती दोष री बात करणी तथा घणा दिना पछै कहिणी बरजी छै। उतरती बात पर पूटै कहै तिण नै निषध्यो छै।

तथा पैतालीसा रा लिखत में एहवो कद्दो—“जे कोइ आचार रो सरधा रो सूत्र रो अथवा कल्प रा बोल री समझ न पड़ै तो गुरु तथा भणणहार साधु कहै ते मानणो। नहि तो केवळी नै भोळावणो पिण और साधां रै संका घाल नै मन भांगणो नहीं”

तथा पचासा रा लिखत में पिण एहवो कद्दो छै—“कोइ सरधा रो आचार रो नवो बोल नीकळै, तो बड़ा सूं चरचणो, पिण औरां सूं चरचणो नहीं, औरां सूं चरच नै औरां रै संका घालणी नहीं। बड़ा जाब देवै आप रै हियै बैसै तो मान लेणो। नहीं बैसै तो केवळ्यां नै भोळावणो, पिण टोळा मांही भेद पाड़णो नहीं”। तथा गुणसठा रा बरस रा लिखत में पिण एहवो कद्दो छै—“किण ही नै दोष भ्यास जावै तो बुधवंत साधु री प्रतीत कर लेणी पिण खांच करणी नहीं” इम अनेक ठामें सरधा आचार रो बोल औरां सूं चरचणो वरज्यो, गुरु तथा बुधिवंत साधु कहै ते मानणो कद्दो, गुरां री प्रतीत राखणी कही। तथा मांहो मांही जिलो बांधणो पिण अनेक लिखत जोड़ में बरज्यो छै।

सैंतीसा रा वर्ष रास जोड़्यो। तिण में जिलो बांधणो घणो निषेध्यो छै। तथा 'गुरु सूकावै तो उभो सूकू' इण में पिण जिलो बांधणो बरज्यो छै। किण ही नै गुरां री आज्ञा विना आपरो रागी करणो बरज्यो छै। तथा पैतालीसा रा लिखत में पिण एहवो कह्यो—“साधां रा मन भांग नै आप-आप रै जिलै करे ते तो महा भारीकर्मो जाणवो, विसवासघाती जाणवो, इसडी 'घात-पावडी' करै ते तो अनंत संसार री साइ छै। इण मरजादा प्रमाणै चालणी आवै नाहि तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै। धनै अणगार तो नव मास माहै आत्मा रो कल्याण कीधो ज्यू इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो, पिण अप्रतीकारियो काम करणो न छै। ए पैतालीसा रा लिखत में जिला नै निषेध्यो। तथा पचासा रा लिखत में पिण एहवो कह्यो छै—“टोळा में भेद पाइणो नहीं, मांहोमां जिलो बांधणो नहीं। तथा चंद्रभाण तिलोकचंद जी नो जिलो जाण नै टोळा बारै किया। एहवो सैंतालीसा रा लिखत में कह्यो—“तिलोकचंद नै चंद्रभाण नै विसवासघाती जाण्या। सुखांजी आश्री दगाबाजी करता जाण्यां, गुरुद्रोही जाण्या, टोळा मांही भेद रा पाइणहार जाण्यां, धर्माचार्य अनै साध-साधवियां रा अवगुण रा बोलणहार जाण्यां। धर्माचार्य री खिष्टी^१ रा करणहार जाण्यां। धर्माचार्य आदि देइ नै साध-साधवियां ऊपर मिथ्यात पडिवज्यो जाण्यां। धर्माचार्य आदि देइ साध-साधवियां रा छिद्रपेही छिद्र ना गवेषणहार जाण्या। उपसम्या कळह ना उदीरणहार जाण्यां, साधु-साधवियां आलोइ पड़िकमी नै सुद्ध हुआ त्यां बातां रा उदीरणहार जाण्या। साधु-साधवियां नै मांहोमां कळह रा लगावणहार जाण्या। गुरु सूं सनमुख नै विमुख करतां जाण्यां। टोळा माहैं छानै-छानै साध-साधवियां नै फार-फार नै आपणा करणा मांड्या जाण्या। गुरु सूं फटाय-फटाय नै आपणा करणा मांड्या जाण्या। धर्माचार्य आदि देइ नै साध-साधवियां रै माथै अनेक विध आळ रा देणहार जाण्यां। टोळा मांही रही नै दगाबाजी करता जाण्यां। मांहोमां मिलनै एको कीधो नै एको करता जाण्यां। आप सूं मिलियो चालै तिण री पखपात करता जाण्यां। औरां नै निखेदणा मांड्या जाण्या। आमी सामी सापादुती^२ कर-कर मांहोमां मन भांगणा मांड्यां जाण्या। बले अहंकारी नै अवनीत घणा जाण्या। अपछंदा पिण घणा जाण्यां। यांरा अनेक छळ छिद्र रो लखावै पड़्यो जाण्यो। जद टोळा बारै काढ़्या। ए सर्व सैंतालीसा रा लिखत में कह्यो। इम जिलो जाण नै अवनीत जाण नै बारै किया इम जिला नै घणो निषेध्यो गुरु री आज्ञा विना जिलो बांधै आपणो रागी करै ते मोटो अवनीत अपछंदो च्यार तीर्थ में हेलवा निंदवा जोग छै। आज्ञा विना प्रवरते तिण नै भीखणजी स्वामी पचासा रा वरस रा लिखत में कह्यो—“साधा रै मरजादा बांधी छै तिण परमाणै सगळां रै त्याग छै। उवा मरजादा पिण उलंघण रा त्याग छै। जो

१. धोखाबाजी।

३. उल्टी-सीधी।

२. अवगणना।

किण ही साध मरजादा उलंघवो कीधो अथवा आगन्या मांही नहीं चालिया। अथवा किण ही नै अथिर परिणामी देख्यो। अथवा टोळा मांही टिकतो न देख्यो तो गृहस्थ नै जणावण रा भाव छै। साध साधवियां नै जणावण रा भाव छै। पछै कोइ कहोळा म्हारी लोकां मांही टोळा मांही आसता उतारी। तिण सूं घणा सावधानपणै सुद्धपणै चालज्यो। एक-एक नै चूक पड्यां तुरत कहिज्यो। म्हां तांइ कजीयो आणज्यो मती उठै रो उठै निवेरज्यो।” तथा संवत् १८५२ रै वरस मर्यादा आर्या रै बांधी, तिण में पिण एहवो कह्यो “किण ही आर्या आज पछै अजोगाइ कीधी तो प्रायश्चित तो देणो, पिण उणनै च्यार तीर्थ में हेलणी निंदणी पडसी, पछै कहोला म्हानै भांडै छै म्हारो फितूरो^१ करै छै, तिण सूं पहिलां ही सावधान रहिज्यो। सावधान नहीं रही तो लोकां में भूंडी दीसोला, पछै कहोला म्हानै कह्यो नहीं” बावना रा लिखत में पिण भीखणजी स्वामी इण रीत आज्ञा विना प्रवरते तथा मरजादा लोपै तिण नै निषेध्यो छै। तथा बलि ‘हिवै सांभळज्यो नर नार’ या साध सिखावण री ढाळ में भीखणजी स्वामी मरजादा बांधी दोष देखै तो ततकाळ कहिणो पिण घणा दिन पछै न कहिणो तिण ढाळ रा दोहा में एहवो कह्यो—

दोहा

- १ अरिहंत सिद्ध नै आयरिया, उवझाय सगळा साध।
मुक्ति नगर ना दायका, ए पांचू पद आराध॥
- २ वांदिजै नित एहनै, नीचो सीस नमाय।
यारां गुण ओळख वंदणा किया, भव-भव ना दुख जाय॥
- ३ साध-साधवी श्रावक श्राविका, जिन भाख्या तीर्थ च्यार।
मोटी छोटी माळा गुणरतन री, त्यानै सीख कहूं हितकार॥
- ४ साध-साधवी सगळां भणी, चालणो इण मरजाद।
दोष देखै तो तुरत बतावणो, ज्यूं वधै नहीं विषवाद॥
- ५ कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, और साधां सिर दै आज।
त्यां में घणा दिनां पछै दोष कहै घणा, तिणरो किणविध काढै निकाल॥
- ६ औरां में दोष बतावै, घणा दिनां पछै, तिण री मूळ न मानणी बात।
आ बांधी मर्यादा सर्व साध नीं, ते लोपणी नहीं तिल मात॥

१. उड्डाह।

- ७ तो हि दोष काढै तिण में घणा, बलि झूठा करै विषवाद।
ते अपछंदा निरळज नागडा, तिण लोप दीधी मरजाद॥
- ८ इसडा अजोग नै अळगो किया, जब ओ काढै दोष अनेक।
बले ओगुण बोलै अति घणां, तिण री बात न मानणी एक॥
- ९ इण रीतै साधु नै चालिया, किण रै संका पडै नहीं काय।
बले विसेसै परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥

अथ अठै साध सिखावण री ढाळ भीखणजी स्वामी

कीधी तिण में कढ्यो—दोष देखै तो ततकाळ तिण नै कहिणो।

पिण घणा दिना पछै कहिणो नहीं। च्यारूं तीर्थ नै या सीख तीजा दूहा में इज दीधी।
चोथा दूहा में कढ्यो—दोष देख्यां ततकाळ कहिणो सो विषवाद बधै नहीं। तथा पाचवा दूहा में
कढ्यो—घणा दिना पछै दोष कहै तिण नै कषाई, दुष्ट आत्मा रो धणी, आळ नो देणहार कढ्यो।
तथा छठा दूहा में कढ्यो—घणा दिनां पछै दोष कहै तिण री बात मानणी नहीं। तथा सातमा दूहा
में कढ्यो—घणा दिनां पछै दोष कहै, तिण नै अपछंदो कढ्यो, निरळज कढ्यो, नागडो कढ्यो,
मरजादां नो लोपणहार कढ्यो। इत्यादिक अनेक प्रकारै घणा दिनां पछै दोष कहै तिण नै निषेध्यो
छै। तथा भीखणजी स्वामी रास जोड़्यो तिण में पिण घणा दिनां पछै दोष कहै तिण नै निषेध्यो
छै—

- १ अवगुण सुण-सुण नै समदृष्टि, यांने जाणै धर्म सूं भृष्टि।
यांरा बोल्यां री प्रतीत नाणै, झूठ में झूठ बोलता जाणै॥
- २ सगळा श्रावक सरीखा नाही, अकल जुदी-जुदी घट मांही।
समदृष्टि री साची हुवै दिष्ट, ते यांनै करै थोड़ा में खिष्ट^१॥
- ३ ते यांनै न्याय सूं देवै जाब, पाडै घणा लोकां मांही आब।
यांरी मूल न आणै संक, यांनै देखाळ दै यांरो बंक॥
- ४ थे घणा दोष कहो गुरु मांही, घणा वरसां रा जाणो छो ताही।
तो थे पिण साधु किम थाय, जाण-जाण रह्या भेळा माय॥
- ५ जो यामें दोष घणा छै अनेक, कदा दोष नहीं छै एक।
ते तो केवळ ज्ञानी रह्या देख, पिण थे तो बूडा ले भेख॥

१. लय-म्हारी सासू री नाम छै फूळी

२. निरुत्तर।

- ६ जो यामें दोष कह्या ते साचा, तो ही थे तो निश्चै नहीं आछा।
जो झूठ कह्या तो विशेषै भूंडा, थे तो दोनूं प्रकारै बूडा॥
- ७ थे दोषीलां नै वांछां कहो पाप, भेळा पिण रह्या कहो संताप।
दोषीला नै देवै आहार पाणी, बले उपधादि देवै आणी॥
- ८ हर कोइ वस्तु देवै आण, करै विनय व्यावच जाण।
दोषीलां सूं करै संभोग, तिण रा पिण जाणज्यो माठा जोग॥
- ९ इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिण पाप कह्यो छै एकंत।
ए थे जाण किया सारा काम, ते पिण घणा वरसां लग ताम॥
- १० घणा वरस किया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो धर्म।
निरंतर दोष सेवण लागा, हुवा व्रत विहुणा नागा॥
- ११ थे कीधो अकारज मोटो, छानै-छानै चलायो खोटो।
थे तो बांध्यो कर्मां रो जाळो, आत्मा नै लगायो काळो॥
- १२ थे गुरु नै निश्चै जाण्या असाध, त्यांनै वांछां जाणी असमाध।
त्यांराहिज वांछा नित पाय, मस्तक दोनूं पग रै लगाय॥
- १३ यां सूं कीधा थे बारै संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग।
सावद्य सेव्यो निरंतर जाण, थे पूरा मूढ अयाण॥
- १४ थे भण-भण नै पाना पोथा, चारित्र विण रह गया थोथा।
थे कहो अर्थ करां म्है कूड़ा, तो थे भण-भण नै कांय बूडा॥
- १५ थे विहार करता गाम-गाम, शिष्य शिष्यणी वधारण काम।
किण नै देता बंधो कराय, किण नै देता घर छोडाय॥
- १६ बले कर-कर गुरु रा गुणग्राम, चढावतां लोकां रा परिणाम।
बले थे गुरु नै खोटा जाण ताही, औरां नै क्यूं न्हाखता यां माही॥
- १७ पोतै पड़िया जाणै खाड मांय, तो औरा नै न्हाखता किण न्याय।
ओरां रो डबोवण रो उपाय, जाण-जाण करता था ताय॥
- १८ पांच पद बंदणा सिखावता तायो, तिण में गुरु रो नाम धरायो।
तिण गुरु नै वांछां जाणता पाप, तो औरां नै कांय डबोया आप॥

- १९ ज्यूं नकटो नकटा हुवा चावै, असुभ उदै माठी मति आवै।
ज्यूं थे डूबता दोसीला मांही, ज्यूं औरां नै डबोवता ताही॥
- २० औरां सूं करता एहवो उपगार, थारा भणिया रो ओहिज सार।
इसडो कूड़ कपट थे चलायो, थारो छूटको किण विध थायो॥
- २१ थे तो जिन मारग में हुवा ठगो, थे दियो घणा नै दगो।
ठग-ठग खाधा लोकां रा माल, थारो होसी कवण हवाल॥
- २२ आछी वस्तु हुंती घर मांही, आहार पाणी कपड़ादिक ताहि।
थानै गुरु जाण हरष सूं देता, सो थारा रो निकळ गया पैता॥
- २३ महे थाने वांदता वारुंवार, जद म्हानै हुंतो हरष अपार।
थानै जाणता सुद्ध आचारी, थे छानै रह्या अनाचारी॥
- २४ महे थानै जाणता था पुरुष मोटा, पिण थे तो निकळ गया खोटा।
महे थानै जाणता उत्तम साधू, थे तो होय नवरिया असाधू॥
- २५ थे जाण रह्या दोषीला मांयो, ठागा सूं थे काम चलायो।
थे जीतब जन्म बिगाड्यो, नर नो भव निरथक हास्यो॥
- २६ थे घणा दिना रा कहो छो दोष, थारी बात दीसै छै फोक^१।
साच झूठ तो केवळी जाणै, छद्मस्थ तो प्रतीत नाणै॥
- २७ थे हेत मांहीं तो दोष ढंक्यां, हेत तूटै कहिता नहिं संक्या।
थारी किम आवै परतीत, थानै जाण लिया विपरीत॥
- २८ थे दोषिला सूं कियो आहार, जद पिण नहीं डरिया लिगार।
तो हिवै आळ देता किम डरसी, थारी परतीत मूरख करसी॥
- २९ ए थे दोष क्यानै किया भेळा, ए थे क्यूं न कह्या तिण वेळा।
थामै साध तणी रीत है तो, जिण दिनरो जिण दिन कहितो॥
- ३० थे दोषिला सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग।
थारी परतीत न आवै म्हानै, यांरा दोष राख्या थे छानै॥
- ३१ थे तो कीधो अकारज मोटो, जिन मारग में चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुई मति बुद्ध, हिवे प्रायछित ले होय सुद्ध॥

१. तथ्यहीन।

३२ उण री तो थांरा कह्वा संक, पिण थे तो दोषीला निसंक।

इम कही उण नै घालणो कूड़ो, घणां बैठा देणी मुख धूडो॥

अथ इहां पिण भीखणजी स्वामी रास में घणा दिन आडा घालनै दोष कहै तिणनै इण रीत घणो निषेध्यो छै। ते भणी तत्काळ कहिणो पिण घणा दिन आडा घालनै दोष कहिणो नहीं। तथा सं० १८५२ रै लिखत में आर्या रै मर्यादा बांधी। तिण में एहवो कह्वा— “किण ही साध आर्या में दोष देखै तो तत्काळ धणी नै कहिणो कै गुरां नै कहिणो पिण ओरा नै कहिणो नहीं। किण ही रा टोळा सूं न्यारो होवण रा परिणाम हुवै जब पिण और री उतरती कहिण रा त्याग छै। आपमै टोळा रा साध साधविया में साधपणो सरधो तिका टोळा मै रहिज्यो ठागा सूं मांहि रहण रा अनंत सिद्धां री साख करनै पचखाण छै।”

अथ इहां पिण दोष देखै तो तत्काळ धणी नै कहिणो, के गुरु नै कहिणो, पिण और नै कहिणो नहीं एहवो कह्यो। तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—“टोळा मांहै कदा च कर्म जोगे टोळा बारै पडै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंश मात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। यांरी अंशमात्र संका पडै ज्यूं, आसता ऊतरै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळां मां सू फाड़ नै साथै ले जावण रा त्याग छै। ओ आवे तो ही साथे ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहै तथा टोळा बारै निकळ्या पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फाटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै।”

अथ इहां पिण दोष देख्यां धणी नै तथा गुरु नै तत्काळ कहिणो कह्यो। और नै न कहिणो। तथा टोळा मांही तथा बारै निकळ्यां पछै पिण अवगुण बोलण। तथा टोळा मांही तथा बारै निकळ्यां पछै पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। एहवो कह्यो, ते मर्यादा लोपण रा सर्व रै त्याग छै, इमहिज पचासा रा लिखत में दोष देख्यां तत्काळ धणी नै तथा गुरां नै कहिणो कह्यो पिण औरां नै न कहिणो। तथा विनीत अविनीत री चोपी में पिण अविनीत श्रावक ऊपर जोड़ कीधी तिहां पिण एहवो कह्यो।

१ केइ^१ अवनीत हुवै साध साधवी, कदा गुरु दै लोकां नै जतायो रे।

ते जनम कदाग्री^२ सांभलै, तो तुरत कहै तिण नै जायो रे॥

२ अवनीत नै तीखो करै घणो, बिगड़्या नै विसेस बिगाड़ै।

तिण रो मन भागै कूड़ कपट करी, टोळा मांहै भेद पाड़ै॥

३ अवनीत नै पोगां^३ चढाय नै, अवगुण बोलै तिण पास।

ते सुण-सुण नै हरषित हुवै, तेतो बांधै कर्मा री रास॥

१. लय—चंद्रगुप्त राजा सुणो।

३. ऊंचा चढ़ाकर।

२. कदाग्री।

- ४ ओ छानो बिगड़चो थो घणा दिनो, पिण लोकां में न पड़चो उघाड़ ।
अवनीत सूं एकट कियां पछै, परगट हुवो लोक मझार ॥
- ५ दोष देखै किण ही साध में, तो कहि दै तिण नै एकंत ।
जो उ मानै नहीं तो कहिणो गुरु कनै, ते श्रावक छै बुद्धिवंत ॥

सुविनीत श्रावक एहवा ॥ धूपदं ॥

- ६ प्रायश्चित दराय नै सुद्ध करै, पिण न कहै औरां रे पास ।
ते तो श्रावक गिरवा गम्भीर छै, वीर वखाण्या तास ॥
- ७ उण रै मूहडै तो दोस कहै नहीं, उणरा गुरु नै पिण न कहै जाय ।
और लोकां आगै कहतो फिरै, तिणरी परतीत किण विध आय ॥
- ८ बले साधां नै आय बंदणा करै, साधवियां नै न वादै रुड़ी रीत ।
त्यानै श्रावक-श्राविका म जाणज्यो, ते तो मूढमती अवनीत ॥
- ९ तिण श्री जिन धर्म न ओळख्यो, बले भण-भण करै अभिमान ।
आपछंदै माठी मति ऊपजै, तिण नै लागो नहीं गुरु कान ॥

अथ इहां पिण भीखणजी स्वामी कह्यो—कोइ अवनीत साधु हवै तेहनें गुरु लोकां नै जतायो जन्म कदाशी सुणै तो तिण नै जाय कहै । तथा बलि कह्यो—दोष देख्या धणी नै तथा गुरु नै तुरत कहिणो, पिण अनेरा नै न कहणो । इम अनेक ठामे और नै कहणो वरज्यो छै, ते भणी तुरत दोष रा घणी नै तथा गुरुनै कहिणो, पिण और नै न कहिणो तथा घणा दिन आडा घालनै पिण न कहिणो ए मर्यादा सुध पाळणी । किंचित मात्र लोपणी नहीं । तथा बलि पचासा रा लिखत में एहवी मर्यादा बांधी—“सर्व साधां नै सुद्ध आचार पाळणों ने मांहोमां गाढो हेत राखणो । तिण ऊपर मरजादा बांधी । कोइ टोळा रा साध-साधवियां से साधपणो सरधो आप मांहि साधपणो सरधो तिको टोळा मांहि रहिज्यो । कोई कपट दगा सूं साधां भेलो मांहि रहै तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै । पांचू पदां री आण छै । साध नाम धराय नै असाधां भेलो रह्या अनंत संसार बधै छै, जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो । किण ही साध-साधवी रा ओगुण बोळनै किण ही नै फाड़नै मन भांगनै खोटा सरधावण रा त्याग छै । किण सूं इ साधपणो पळतो दीसै नहीं । अथवा स्वभाव किण सूं ही मिलतो दीसै नही । अथवा कषाय धेठो जाणनै कोइ कनै न राखै । अथवा खेतर आछो न बताया अथवा कपड़ादिक नै कारण । अथवा अजोग जाणनै और साधु गण सूं दूरो करै । अथवा आपनै गण सूं दूरो करतो जाणनै इत्यादिक अनेक कारण ऊपनै टोळा सूं न्यारो पडै तो किण ही साध-साधवियां रा ओगुण बोळण रा, हुंतो अणहुंतो खूचणो काढण रा त्याग छै । रहिसै-रहिसै लोकां रै संका घाळनै आसता उतारण रा त्याग छै । कदा कर्म जोगे अथवा क्रोध वस साधा नै साधवियां नै सर्व टोळा नै असाध । तरधै आप में पिण असाधपणो

सरध नै फेर साधपणो लेवै तो ही पिण अठी रा साध-साधवियां री संका घालण रा त्याग छै। खोटा कहिण रा त्याग ज्यूं रा ज्यूं पाळणा छै। पछै यूं कहिण रा पिण त्याग छै 'म्है तो फेर साधपणो लीधो अबै म्हारै आगला सूंस रो अटकाव कोइ नहीं' यूं कहिण रा पिण त्याग छै। किण ही साध आर्या नै पिण साध आर्या री आसता उतरै साध आर्या री संका पड़ै ज्यूं असाधपणो सरधै ज्यूं बोलण रा त्याग छै।

अथ इहां पिण अवगुण बोलण रा त्याग कराया ते पिण उत्तम जीव सुद्ध पाळै, किंचित मात्र लोपवा रा पचखांण छै। तथा बावना रा लिखत में आर्या रै मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो — 'किण ही आर्या जाणनै दोष सेव्यो हुवै ते पाना में लिख्या बिना विगै तरकारी खाणी नहै कदा कारण पड़िया न लिखै तो और आर्या ने कहणो सायद' करनै पछै पिण वेगो लिखणो, पिण लिख्या बिना रहिणो नही, आयनै गुरां नै मूढे सूं कहिणो नही, मांहोमां अजोग भाषा बोलणी नही, एहवो बावना रा लिखत में कह्यो, ते मर्यादा पिण। सुद्ध पाळणी। तथा सं० १८३४ रे वर्ष आर्या रो लिखत कीयो तिण में पिण एहवो कह्यो—मांहो मांही आर्या आर्या नै तूंकारा दै, तिण नै पांच दिन पांचू विगै रा त्याग। जितरा तूंकारा काढै जितरा पांच- पांच दिन रा विगै रा त्याग। तूं झूठा बोली छै, एहवा वचन काढै जितरा पांच-पांच दिन विगै रा त्याग। प्रायछित आयो तिण रो मोसो बोलै जितरा पांच-पांच दिन विगै रा त्याग। गृहस्थ आगै टोळां रा साध-साधविया री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग, जितरी बार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग, आर्या री मांहोमांही री बाता करायनै उण रो परतो वचन उण कनै कहै उण रो मन भांगै जिसो कहीनै मन भांगै तो १५ दिन पांचू विगै रा त्याग, मांहो मांही कहै तूं सूंसां री भागळ छै, एहवो कहै तिण रै १५ दिन रा त्याग छै। जितरी बार कहै जितरा १५ दिन रा त्याग छै। आंसू काढै जितरी बार १० दिन विगै रा त्याग छै, कै पनरै दिन माहै बेलो करणो। इत्यादिक करडो काठो वचन कहै तिण नै यथा योग प्रायछित छै। ए विगै रा त्याग छै ते उण री इच्छा आवै जद साधां सूं भेळा हुवा पहिली टाळणा, जो नहीं टाळै तो बीजी आर्या यूं कहण पावै नहीं तूं टाळहीज, साधा नै कहि देणो साधां री इच्छा आवै तो द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, जाणनै और दंड देसी अनै साधां री इच्छा आवसी तो विगै रा त्याग घणां करावसी बळे आर्या रे मांहोमांही साध-साधवियां ने न कल्पै न शोभै लोकां नै अणगमता लागै। उण री जातादिक रो खूंचणो काढणो। जिण भाषा रो पिण साधां री इच्छा आवै जितरा दिन विगै रो त्याग देवै ते कबूल करणो छै।

अथ हां क्रोध रै वस 'तूंकारादि' करडाकाठा वचन रो आंसू काढै जिण रो गृहस्थ आगै निंदा करै त्यांरो अथवा तूं झूठा बोली तूं सूंसां री भागल, इत्यादिक सर्व रो प्रायछित साधु देवै ते लेणो कह्यो ते मर्याद लोपण रा सर्व आर्या रे त्याग छै। अनेक लिखत में भीखणजी स्वामी साध आर्या रे मर्यादा बांधी ते पिण लोपणी नहीं। आचार्य री आज्ञा सूं चोमासो करणो शेषे काळ विच-रणो। आहार पाणी वस्त्र पात्र आदि सर्व आचार्य री आज्ञा सूं करणा। दिख्या देणी ते पिण आज्ञा सूं देणी आज्ञा बिना किंचितमात्र न करणो, एहवो कह्यो। तथा आज्ञा बिना प्रवृत्ति अथवा दिख्या देवै तिण नै अवनीत कह्यो, तथा वनीत अवनीत री चोपी में अवनीत रा लखण ओळखाया—

‘विनो कीजै एहवा सतगुरु तणो रे ॥ ध्रुपदं ॥

- १ जे चालै निरंतर गुरु री आज्ञा मझै रै, समीप रहै तो रुड़ी रीत।
ते जाणवतै गुरु री अंग चेष्टा रे, तिण नै श्रीवीर कह्यो सुवनीत ॥
- २ विनय तो जिन शासण रो मूळ छै, विनय निरवाण साधन रो काज।
जे विनय करण सूं उपराठा पढ़्या, ते गया संजम तप सूं भाज ॥

ते अवनीत भारीकर्मा एहवा ॥ ध्रुपदं ॥

- ३ ते प्रत्यनीक अंतर में गुरु नो पापियो, उण तत्त्व न जाण्यो रुड़ी रीत।
उण रै कूड-कपट नै धेठापणो घणो, तिणनै श्रीवीर कह्यो अवनीत ॥
- ४ जो तप कर काया कष्टै आपणी, तै जश कीरत कै खावा ध्यान।
के पूजा श्लाघा रो भूखो थको, पिण विनय करणो नहीं आसान ॥
- ५ अवनीत नै आपो दमवो दोहिलो, तिणरा अथिर परिणाम रहे सदीव।
ओ किणविध पाळै गुरु री आगन्या, जे क्रोधी अहंकारी दुष्टी जीव ॥
- ६ कोइ गुरु री आज्ञा लोपी चेलो करै, तिण छोडी छै जिण शासण री रीत।
ते फिट-फिट होसी समझूं लोक में, परभव में पिण होसी घणो फजीत ॥
- ७ वैराग्य घटचो नै आपो वस नही, तिण रै रहे चेला करण रो ध्यान।
उण नै शिष्य मिल्यां तो शिथिल पड़ै, बले वधै लोळपणो नै अभिमान ॥
- ८ विनीत शिष्य रे शिष्य री मन ऊपनी, पिण गुरु री आज्ञा विन न करै चाव।
तिण आत्मा दमनै इन्द्रयां वस करी, शिष्य मिल्यां न मिल्यां सरल स्वभाव ॥
- ९ जो अवनीत आगे घर छोड़ै तेहनै रे, तो वनीत बोलै सुत्तर रै न्याय।
हुं गुरु री आज्ञा विन चेलो किम करूं, हूं दिख्या दे संपूं गुरु नै जाय ॥
- १० केइ उपगारी कंठकळाधर साध री, प्रशंसा जश कीरत बोलै लोग।
अविनीत अभिमानी सुण-सुण परजलै, उण रै हरष घटै नै बधै सोग ॥
- ११ जो कंठकळा न हुवै अवनीत रै, तो लोकां आगे बोलै विपरीत।
यां गाय-गाय रिझाया लोकां भणी, कहै हूं तत्त्व ओळखाउं रुड़ी रीत ॥

१. लय : आउखो दूदयां नै सांधो को नहीं।

- १२ एहवा अभिमानी अविनीत लोकां कनै, एहवी जणावै ऊंधी रेस।
उतारे उत्तम साधां री आसता, तिण छोड्यो छै सतगुरु नो आदेस॥
- १३ गुरु रा पिण गुण सुण नै विलखो हुवै, ओगुण सुणै तो हरषित थाय।
एहवा अभिमानी अविनीत तेहनै, ओळखाउं भवजीवां नै इण न्याय॥
- १४ कोइ प्रत्यनीक अवगुण बोलै गुरु ताणां, अविनीत गुरुद्रोही पासे आय।
तो उत्तर पडउत्तर न दै तेहनै, अभ्यंतर में मन रळियायत थाय॥
- १५ प्रत्यनीक ओगुण बोलै तेहनी, जो आवै उण री पूरी परतीत।
तो अविनीत एकट करै उणसूं घणी, ओ गुरु रा अवगुण बोलै विपरीत॥
- १६ बले करै अभिमानी गुरु सूं बरोबरी, तिणरे प्रबल अविनय नै अभिमान।
ओ जद तद टोळा में आछो नहीं, ज्यूं बिगड़्यो बिगाड़ै सड़ियो पान।
- १७ ओ खिण मांहै रंग विरंग करतो थको, बले गुरु सूं पिण जाये खिण में रूस।
जब गूंयै अज्ञानी कूड़ा गूंयणा, और अविनीत सूं मिलवा री मन हूस॥
- १८ जो अवनीत नै अवनीत भेळा हुवै, तो मिल-मिल करै अज्ञानी गूझ।
क्रोध रे वस करै गुरु री आसातना, पिण आपो नहीं खोजै मूढ अबूझ॥
- १९ जो अवनीत अवनीत सूं एकट करै, ते पिण थोड़ा में बिखर जाय।
त्यारे क्रोध अहंकार नै लोळपणो घणो, ते टोळा में केम खटाय॥
- २० उणनै छोटै नै छांदै चलावण तणी, ते पिण अकल नहीं घट माय।
बडां रै पिण छांदै चाल सकै नहीं, तिण अवनीत रा दुख माहे दिन जाय॥
- २१ पुस्तक पाना नै वस्त्र पातरा, इत्यादिक साधु रा उपधि अनेक।
गुरु और साधां नै देता देख नै, तो गुरु सूं पिण राखै मूरख धेष॥
- २२ जब करे मांहोमां खेदो ईसको, बले बांछै उत्तम साधां री घात।
तिण जन्म बिगाड़्यो करे कदागरो, करे मांहोमां मन भांगण री बात॥
- २३ एहवा अभिमानी अवनीत री, करे भोळा भारीकर्मा परतीत।
उणरा लखण परिणाम कह्या छै पाड़वा, कोइ चतुर अटकळसी तिण री रीत॥

अथ इहां पिण अवनीत नै ओळखायो—गुरु रा गुण सुणी विलखो हुवै, अवगुण सुण राजी हुवै, तिण नै अवनीत कह्यो। प्रत्यनीक अवगुण बोलै तिण नै उत्तर पडुत्तर न देवै मन में रळियायत हुवै तिण नै अवनीत कह्यो। आज्ञा विना दीक्षा देवै खिण में रंग विरंग हुवै। विनीतां सूं इ ईसको

खेधो करै इत्यादिक अवनीत रा लक्षण कह्यो। ए प्रथम ढाळ री गाथा कही तथा वनीतअवनीत री चोपी री तीजी ढाळ में एहवो कह्यो—

२४ 'कोई भगता छै सुवनीत आत्मा, गुरु छाँदै रो चालणहार हो।

जो हेत देखै तिण ऊपर गुरु तणों, तो अवनीत मुख दे बिगाड हो॥

श्री वीर कह्यो अविनीत नै अति बुरो ॥धुंपदं॥

२५ वनीत ऊपर घणो हेत हुवै गुरु तणो, तो अवनीत नै दुख हुवै साख्यात।

जब ओगुण सूझै अणहुंता गुरु तणा, बले बाँछै वनीत री घात॥

२६ बलि अविनीत जाणै वनीत मूआ थकां, पछै म्हारो इज होसी आघ।

एहवा परिणामां घात बाँछै सुवनीतरी, तिण लीधो कुगति नो माग॥

२७ बलि ओषध भेषद आहार पाणी तणी, उ जाणी नै पाडै अंतराय।

दुख असाता बाँछै सुवनीत री, अवनीत नै ओळखो इण न्याय॥

२८ गुरु बारा सूं आयां उठ ऊभो हुवै, पग पूंज नमें सुवनीत।

अवनीत नै इतरोइ करणो दोहिलो, कदा करै तोइ भूंडी रीत॥

२९ पग पूंज व्यावच करणी अवनीत नै, ते तो कठिन घणो छै काम।

ते काम पड़्यां अवनीत टाळो दियै, तिण रे प्रबळ अविनय नै अभिमान॥

३० गुरु भगतां ऊपर द्वेष अवनीत रे, बलै ईसको नै धैष अत्यन्त।

उणरा छिद्र जोवै छै उतारण आसता, तिण रा चरित्र जाणे मतिवन्त॥

३१ बले करै वनीत सूं मूढ बरोबरी, पिण विनय कियो मूळ न जाय।

बले अवगुण न सूझै अवनीत नै आपरा, तिण सूं दिन-दिन दुखियो थाय॥

अथ इहां गुरु भक्तां गुरु छाँदै रो चालणहार तिण ऊपर गुरां रो हेत देखी दुख वैदे तिण नैं अवनीत कह्यो। बलि एहवो कह्यो—आहार पाणी ओषधादिक नी अंतराय पाडै, दुख असाता बाँछै तिण नैं अवनीत कह्यो। बलि गुरु वारैं सूं आया सुवनीत उठ ऊभो हुवैं पग पूंज नमें। अनै अवनीत नैं इतरो करणो दोहिलो कदा करै तो भूंडी रीत करै एहवो कह्यो। गुरु भक्ता ऊपर धेष राखै बले खेधो ईसको करै। छळ छिद्र जोवै वनीत सूं बराबरी करै। पोता सूं विनय कियो जाय नहीं, पोता रा अव-गुण सूझै नही, तिण रा दुख माहै दिन जाय एहवो कह्यो। तथा विनीत अवनीत री चोपी री चोयी ढाळ में एहवो कह्यो—

१. लय : पूज्यजी पधारो नगरी सेविया।

१९४ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

१ 'उज्झिया भोगवती नै घर सूपिया रे, तो करै खजानो खराब रे ।सु०।

ज्यू अवनीत नै गण सूपिया रे, तो जावै टोळा री आब रे॥

सुगुण जन भाव सुणो अविनीत नो रे लाल॥

२ जिण टोळा में अवनीत छै, तिण सूं आछो कदेय म जाण।

तिण री खप करनै ठाय आणज्यो, नहीं तो परहरो चतुर सुजाण॥

३ ज्यारै शिषां रो लोभ लालच नहीं, ते तो दूर तजै अवनीत।

गर्ग आचार्य सारीसा रे, ते गया जभारो जीत।

४ ज्यू अवनीत नै छोड्यां थंका रे, ज्ञानादिक गुण बधता जाण।

मिट जाय कलेस कदागरो, त्यानै नेड़ी होसी निरवाण॥

५ अवनीत रा भाव सांभली, घणो हर्ष पामै नर-नार।

केइ भारीकर्मा उलटा पडै, त्यारै घट में घोर अंधार॥

अथ इहां उज्झिया भोगवती आदि नो दृष्टांत देइ अवनीत नै गण सूपणो नहीं। अवनीत नै गण सूपवा थकी टोला री आब जावै इम कह्यो। तथा जे गुरु नै शिष्यां रो लोभ न हुवै तेहने गर्गाचारज नीं उपमा दीनी तथा अवनीत छोड्यां थकी टोळा में गुण बधै इम कह्यो। तथा वनीत अवनीत री चोपी री आठमी ढाळ में पिण एहवा भाव कह्या—

१ 'पाळै गुरु री निरन्तर आगन्या, कनै राख्या हुवै हरष अपारजी।

बले वरतै गुरु री अंग चेष्टा, तिण सफल कियो अवतारजी॥

श्रीवीर बखाण्यो वनीत नै ॥ध्रुपदं॥

२ तिणनै करडै काठै वचने करी, गुरु सीख देवै किण वार।

तो उ खिम्या करै धर्म जाण नै, पिण नाणै क्रोध लिगार॥

३ सुकुमाल कठोर वचने करी, गुरु दीधी सीखावण मोय।

सुवनीत हुवै ते इम चिंतवै, मानै हित रो कारण होय॥

४ आहार पाणी कपड़ादिक भोगवै, ते पिण गुरु री आज्ञा सहीत।

शिष्य पिण न करै आगन्या विना, पाळै जिन शासन री रीत॥

१. लय : पूज्यजी पधारो नगरी सेविया।

२. लय : जीवा मोह अनुकंपा नै आणिय।

- ५ बले उपधादिक नो जाचवो, इत्यादिक काम अनेक।
बलि देवो लेवो और साधनै, गुरु आगन्या विन न करै एक॥
- ६ उपवास बेलादिक तपस्या करै, करै रसादिक परिवार।
ते पिण न करै आगन्या विना, बले संलेखणा संधार॥
- ७ करै व्यावच और साधां तणी, और पासै करावै आप।
ते पिण गुरु आगन्या हुवा, एहवी जिन शासन री थाप॥
- ८ अंशमात्र करणो करावणो, ते पिण आगन्या लै सुवनीत।
सर्व कार्य में लेणी आगन्या, एहवी बांधी छै अरिहंत रीत॥
- ९ सुवनीत टोळा मांहे रह्या, ते तो सगळा नै गमतो होय।
और साधु साथै मेल्यां थकां, तिण नै पाछो न ठेलै कोय॥
- १० गुरु गुरुभाइ नै टोळा तणां, गुण बोलै रूडी रीत।
लोक पिण गुण ग्राम करतां थकां, सुण-सुण हरषै सुवनीत॥
- ११ शिष्य शिष्यणी मिलै और साधां नै, मिलै उपधादिक अनेक।
बले कंठ कळा देखी और नी, वनीत तो हरषै विशेष॥
- १२ किण ही साधां रो न करै ईसको, सर्व साधां रै हुवै हितकार।
एहवा सुवनीत री वंशावळी, फेलै तीनू लोक मझार॥
- १३ गमतो लागै तीर्थ च्यार नै, जिन सासन रो सिणगार।
एहवा सुवनीत रै पासै रह्या, सिखावै विनय आचार॥
- १४ केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, भेष पहरी करै कपटाय।
इहलोक तणां अर्थी घणां, त्यां सू विनय कियो किम जाय॥
- १५ अवनीत में अवगुण घणां, ते तो जाबक छोडै वनीत।
विनय रा गुण सगळा आवरै, ते तो गया जमारो जीत॥

अथ इहां सुवनीत रा लक्षण कह्या, तिण में कह्यो—आज्ञा विना अंशमात्र करे नहीं। बली कह्यो—गुरु आदि सर्व शासन रा गुण गावै। लोक गुण ग्राम करता देखी सुवनीत सुण-सुण नै हरषै साधुपणो पाळवा री आज्ञा आराधवा री नीत राखै। बलि कह्यो—क्रोधी अहंकारी नेरलजा भेष पहरी कपटाइ करै। इहलोक रा अर्थी, आछो खाणो पीणो वस्त्र पात्र खेन आप रै वस रहणो, इत्यादिक पोता रा स्वार्थ पूंगा राजी, गुरु ना गुण गावै। अने गुरु आछो खेन न भोळावै तथा आहार पाणी वस्त्रादिक मन गमता न देवै तथा जुदो न विचरावै बीजा छोटा बड़ां रै लारे मेलै

जद मूढो बिगाडै, अवगुण बोलै, तिण पोता नो स्वार्थ ओळख्यो, पिण साधुपणो आज्ञा न ओळखी, इसा इहलोक रा अर्थी त्यां सूं विनय करणी आवणो अति कठिन छै। ए अवनीत रा लक्षण सर्व छोडै वनीत रा गुण सर्व आदरै पैताळीसा रा वरस रा लिखत में अंशमात्र अवगुण बोलण रा त्याग कह्या छै। ते माटे उतरती बात करै ते भाग्यहीण, मन सहित सुणै ते पिण भाग्यहीण, तथा सुणी आचार्य ने न कहै ते पिण भाग्यहीण, यां तीनां नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति दशवैकालिक^१ में कह्यो। ते आज्ञा अखंड आराध्या,

इहलोक परलोक में सुख कल्याण हुवै।

इति जयाचार्य कृत बड़ी हाजरी।

१. दसवैकआळियं, ५।२।४५, ४०

दूजी हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत सुध पाळणा। ईया भाषा एषणा में सावचेत रैहणो। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी लेणो। निर्दोष पिण घणी हठ मनुहार सूं लेणो। देवाळ^१ नो मन घणो तीखो रहै ज्यूं लेवै ते चतुर, दातार नो अभिप्राय देखै नहीं ते मूरख, वस्त्रादिक लेतां मेलतां पूजतां परठतां उपयोग तीखो राखणो। इमहिज गुप्ति महाव्रत में सावचेत रैहणो। गुरांरी आज्ञा ऊपर दृष्टि तीखी राखणी। आज्ञा अखंड अराधै ते विनीत। तथा भीखणजी स्वांमी री मर्यादा शुद्ध पाळणी। पंताळीसा रै वर्ष मर्यादा बांधी “आचार रो साधा रो सूतर रो अथवा कल्प रो बोळ री समझ न पड़े तो गुरु तथा भणणहार साधु कहै ते मान लेणो कह्यो, न वेसै तो केवळी नै भळावणो कह्यो।

इमहिज सम्बत् १८५० तथा ५९ रा लिखत में कह्यो—“सरधा आचार रो बोल बड़ा सूं चरचणो, बड़ा कहै ते मान लेणो, पिण ओरां सूं चरच नै शंका घाळणी नहीं”

तथा पेंताळीसा रा लिखत में कह्यो—“साधां रा मन भांगनै आपरै जिलै करै ते तो महाभारीकर्मो, विश्वासघाती जाणवो। इसड़ी घातपावड़ी करै ते तो अनन्त संसार नी साई छै। इण मर्यादा प्रमाणे नहीं चालणी आवै तिण नै संलेखणा करणी सिरै छै एहवो कह्यो।” तथा और लिखत में रास में पिण जिलो बांधणो निखेध्यो छै। ते मिल-२ नै जिलो बांधण रा त्याग छै। तथा बावना रा लिखत में कह्यो—“किण ही साधु आर्या माहै दोष देखै तो तत्काळ धणी नै केहणो, कै गुरानै केहणो, पिण और ने न कहिणो। तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—“किण ही साधु आर्या में दोष देखै तो तत्काळ धणी नै केहणो, अथवा गुरु नै केहणो, पिण और नै न केहणो। घणा दिन आडा घालनै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी ओहिज छै। प्राछित रा धणी नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणो, नहीं लेवै तो उण नै मुसकल छै,” एहवो पचासा रा लिखत में कह्यो। तथा वनीत अवनीत री चोपी में पिण एहवी गाथा कही छै।

१ दोष^२ देखै किण ही साध में, तो कह देणो तिण नै एकंतो रे।

जो उ मानै नहीं तो कहिणो गुरु कनै, ते श्रावक छै बुधिवंतो रे॥

सुवनीत श्रावक एहवा॥

२ प्राछित दिराय नै सुध करै, पिण न कहै अवरां पास।

ते श्रावक गिरवा गंभीर छै, वीर बखाण्यां तास॥

३ दोष रा धणीने तो कहै नहीं, उणरा गुरु नै पिण न कहै जाय।

और लोकां आगे बकतो फिरै, तिणरी परतीत किस विध आय॥

१. दाता।

२. लय—चन्द्रगुप्त राजा सुणो।

४ साधां ने आय वन्दना करे, साधवियां नै न वांदे रुड़ी रीत।

त्यांने श्रावक श्रावका म जाण जो, ते ऊंघमती अवनीत॥

इत्यादिक अनेक ठामै दोष रा धणी ने तथा गुरां ने कहणो कह्यो, पिण औरां ने न कहिणो, एहवो कह्यो। तथा घणा दिन पछै कहणो रास में तथा साध सीखावणी दाळ में तथा दुहा में घणा दिनां पछे दोष कहै तिण नै अपछंदो कह्यो, निर्लज कह्यो, नागड़ो कह्यो, मर्यादा नो लोपणहार कह्यो, कषाय दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो, तथा अनेक लिखत में बरज्यो। तथा पेंताळीसा रा लिखत में इम कह्यो—“टोळा मांहि छतां कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़ै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंसमात्र अवगुण बोलण रां त्याग छै। यांरी अंसमात्र शंका पड़े ज्यू ने आसता ऊतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोळां मां सूं फाड़ने साथ लेजावण रा त्याग छै। ओ आवै तो ही छे जावण रा त्याग छै। टोळा मांहि नै बारै नीकळ्यां पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहो मां मन फाटै ज्यू बोलण रा त्याग छै। ए सर्व पेंताळीसा रा लिखत में कह्यो। टोळा मांहि छतां तथा टोळा बारै पड़ै तो पिण साधु-साधवियां रा अंसमात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। एहवो भीखणजी स्वामी कह्यो ते मर्यादा सुध पाळणी। तथा सम्बत् १८५० रा वर्ष भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—एक दोष सूं बीजो दोष भेळो करै ते अन्याई छै, जिण रा परिणाम मेला होसी ते साध-साधवियां रा छिद्र जोय-जोय नै भेळा करसी, ते तो भारीकर्मा जीवां रा काम छै। डाहो सरल आत्मा रो धणी होसी ते तो इम केहसी—कोई ग्रहस्थ साध-साधवियां रो स्वभाव प्रकृति अथवा दोष कोई कहि बतावे तिण नै यूं कहिणो—“मौने क्यांनै कहो कै तो धणी नै कहो, कै स्वामीजी नै कहो ज्यू यांने प्राछित देई नै शुद्ध करै, नहीं कैहसो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छो। स्वामीजी नै न कहिसो तो थांमै पिण बांक छै। ये म्हांनै कह्यां कांई होवै इम कहीनै न्यारो हुवै पिण आप बैदां में क्यांनै पड़ै। पेला रा दोष धारने भेळा करै ते तो मृषावादी अन्याई छै। किण ही नै खेत्र काचो बतायां, किण नै कपड़ादिक मोटों दीधां इत्यादिक कारणे कषाय उठै जद गुरुवादिक री निंदा करण रा नै अवरणवाद बोलण रा नै एक-एक आगे बोलण रा मांहोमां मिलने जिलों बांधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री आण छै। गुरुवादिक आगे भेळो आपरै मुतळब रहे पछै आहारादिक थोड़ा घणा रो, कपड़ादिक रो नाम लेइने अवरणवाद बोलण रा त्याग छै। ए सर्व पचासा रा लिखतमें भीखणजी स्वामी कह्यो—ते मर्यादा सर्व सुध पाळणी एहवो कह्यो।

तथा बावना रा लिखत में भीखणजी स्वामी आर्यां रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—किणही नै खेत्र आछो बतायां रागद्वेष करनै बात चलावण रा त्याग छै। खेत्र आश्री बात चलावण रा त्याग छै। चोमासो कहै तिहां चोमासो करणो। शेषे काळ बड़ा कहै तिहां विचरणो। किण ही साध आर्यां दोष जाणनै सेव्यो हुवै ते पाना में लिख्यां बिना विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्यां न लिखै तो और आर्यां नै

केहणो, सायद करने पछै पिण बेगो लिखणो, पिण लिख्यां विना रेहणों नहीं। किण ही आर्या आज पछै अजोगाई कीधी तो प्राछित तो देणो, पिण उणने च्यार तीर्थ में हेलणी निंदणी पड़सी। पछै कहोला म्हांने भांडे छै, म्हारो फितूरो करै छै, तिणसूं पेहलाइज सावचेत रहीजो, सावधान न रह्यो तो लोकां में भूंडा दीसोला। पछै कहोला म्हांने कह्यो नहीं। ए बावना रा लिखत में भीखणजी स्वामी आर्या रै मर्यादा बांधी तिण में कह्यो तिण प्रमाणै प्रवर्त्तणो। ए मर्यादा लोपणी नहीं। तथा चोतीसा रा लिखत कह्यो छै—“गृहस्थ आगे टोळा रा साधु-साधवियां री निंदा करै तिण ने तो घणी अजोग जाणणी। तिण ने एक मास पांचू विगै रा त्याग एहवो कह्यो। मर्यादा लोपणी नहीं आज्ञा बिना प्रवर्त्तै तिणनै भीखणजी स्वामी पचासा रा लिखत में एहवो कह्यो— “साधां रै मर्यादा बांधी छै तिण प्रमाणै सगळां रै त्याग छै। उवा मर्यादा पिण उलंघवा रा त्याग छै। जो किण ही साधु मर्यादा उल्लंघवो कीधौ अथवा आगन्या मांहें नहीं चलिया, अथवा किण नै अधिर परणामी देख्यो, अथवा टोळा मांही टिकतो न देख्यो तो गृहस्थ नै जणावण रा भाव छै। साधु-साधव्या ने जणावण रा भाव छै। पछै कहोला म्हारी लोकां मांहें आसता उतारी तिण सूं घणा सावधान पणै चालजो। एक-एक ने चूक पड़्यां तुरत कहीजो। म्हांं ताईं कजीयो आणजो मती। उठे रो उठे निवेड़जो ए मर्यादा पचासा रा लिखत में आज्ञा उपरंत तथा मर्यादा उपरंत प्रवर्त्तै तिणनै इण रीते निखेध्यो छै, ते भणी आज्ञा मर्यादा में तीखो प्रवर्त्तणो। सर्व साधु-साधव्यां री नै शासन री वारता तीखी करणी, ऊतरती न करणी। पैतालीसा रा लिखत में अंसमात्र अवगुण बोलण रा त्याग चाल्या छै ते भणी ऊतरती बात करै तथा मन सहित सुणै तथा सुणी आचार्य नै न कहै तिणनै तीर्थकर नो चौर कहिणो, हरामखोर कहणो।

“आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंती, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणेयावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

दशवैकालिक^१ में कह्यो। ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां इहभव परभव सुख कल्याण होवै।

ए छोटी हाजरी नी स्थापना लिखी संवत् १९१० वस्त पंचमी बृहस्पतिवार उदैपुर मध्यै।

१. दसवेआलियं ५।२।४५,४०

तीजी हाजरी

सर्व साधु साधवी पंच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखण्ड अराधवा। आहार पाणी लेणो ते पकी पूरी ताय तपाय नै लेणो। पकी चोकस निगे करनै देवाळ नै देणो, लेवाळ नै लेणो। तथा आहार करतां पकी जेणा करी बोलणो। उंधो हाथ न देणो, तिरछो हाथ न देणो, पुणचो न देणो, अलंगो हाथ न राखणो। पडिलेहण करतां, मारग चालतां न बोळणो। आहार करतां, अजेणां सूं बोलतां, पडिलेहण करतां बोलतां, मारग चालतां बोलतां यां तीनां रो साचो तथा झूठो खूचणो काढे तो समभाव सूं अंगीकार करणो पिण बीजो शब्द न बोलणो।

तथा भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धांत देख विविध मर्यादा बांधी, ते पचासा रा लिखत में कह्यो—“किण ही साध आर्या में दोष देखै तो ततकाळ धणी नै कहिणो, अथवा गुरां ने कहिणो, पिण औरां नै न कहिणो।”

इमहिज बावनां रा लिखत में कह्यो—तथा इमहिज वनीत अवनीत री चोपी में कह्यो। तथा बले साध सिखावणी ढाळ में तथा रास में तथा पचासा रा लिखत में घणा दिन आडा घालने दोष बतावै तिण नै निषेध्यो छै।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—टोळां मांहे कदाच कर्म जोगै टोळां बरै परै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंस मात्र ओगुण बोलण रा त्याग छै। तथा पचासा रा लिखत में साधां रै मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही ने खेत्र काचो बतायां, किण ही ने कपड़ादिक मोटो दीधां इत्यादिक कारणे कषाय उठै जव गुरुवादिक री निंदा करण रा, अवरणवाद बोलण रा, एक-एक आगै बोलण रा, मांहोमां मिलनै जिलो बांधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री आण छै। गुरुवादिक आगै भेल्लो तो आपरै मुतळब रहै, पछै आहारादिक थोड़ा घणा रो, कपड़ादिक रो नाम लेई अवरणवाद बोलण रा त्याग छै, एहवो पचासा रा लिखत में कह्यो ते मर्यादा सुध पाळणी।

तथा बावना रा लिखत में आर्या रै मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो— किण ने खेत्र आछो बताया राग द्वेष करने बात चलावण रा त्याग छै। खेत्र आश्री, कपड़ा आश्री, आहार पाणी आश्री ओषधादिक आश्री बात चलावण रा त्याग छै। चौमासो कहै तिंहा चौमासो करणो। शेषकाळ बड़ा कहे तिंहा विचरणो।” तथा किण ही आर्या दोष जाणनै सेव्यो हुवै तो पानां में लिख्यां बिना तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्यां न लिखै तो और आर्या नै कहिणो। सायद करने पछै पिण बेगो लिखणो, पिण बिना लिख्या रहिणो नहीं। आय गुरां ने मुंडा सूं कहिणो नहीं। मांहो मां अजोग भाषा बोलणी नहीं— एहवो बावना रा लिखत में कह्यो ते मर्यादा सुद्ध पाळणी।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो उणनै साधु किम जाणिये जो एकलो ह्यैणरी सरधा हुवै, इसड़ी सरधा धारनै टोळा मांहे बैठो रहे, म्हारी इच्छा आवसी तो मांहे रहिसूं, म्हारी इच्छा आवसी जब एकलो हुसूं, इसड़ी सरधा सूं टोळा मांहे रहै ते तो निश्चै असाध छै। साधपणो सरधै तो पहिला गुणठाणा रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं मांहे रहै तिण नै मांहे राखे जाणने, त्यानै पिण महादोष छै। कदाच टोळा मांहे दोष जाणै तो टोळा मांहे रहिणो नहीं। एकलो होय नै संलेखणा करणी, बेगो आत्मा रो सुधारो करणो, आ सरधा हुवै टोळा मांहे राखणो, गाळागोळो करनै रहै तो राखणो नहीं, उत्तर देणो, बारे काढ़ देणो, पछै आळ दे नीकळै तो किसा काम रो।

तथा चोतीसा रा वर्ष आय्या रै मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—“ग्रहस्थ आगै टोळा रा साध आय्या री निंघा करे तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिणने एक मास पांचूं विगै रा त्याग, जित्ती बार करै जिता मास पांचूं विगै रा त्याग। तथा आंसू काढ़ै तथा तुंकारादिक करड़ा काठा वचन रो प्राछित कह्यो ते पिण सुद्ध पाळणो।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—“बले कोई आचार्य मर्यादा बान्धी ते याद आवै ते कबूल छै।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो बले कोई करली मर्यादा बांधे तिण में नां कहिणो नहीं। आचारनीं संका पड़्यां थी बले कोई याद आवै ते लिखां ते पिण सर्व कबूल छै। ए मर्यादा लोपण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखांण छै। जिणरा परिणाम चौखा हुवै, सूस पाळण रा परिणाम हुवै ते आरे होयज्यो। सरमासरमी रो काम छै नहीं।

तथा गुणसठा रा वर्ष रा लिखत में कह्यो—“टोळा सूं न्यारो हुवै तो इण सरधा रा भाई बाई हुवे तिहां रहिणों नहीं। एक बाई भाई हुवै तिहां रहिणो नहीं। वाटै बहितो एक रात कारण पड़ियां रहै तो पांचूं विगै नै सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनन्ता सिद्धां री साख करने छै।”

तथा पचासा रा वर्ष रा लिखत में कह्यो जिण रो मन रजामंद हुवै चोखी तरह साधपणो पलतो जाणों तो टोळा मांहे रहिणो। आप में अथवा पेलों में साधपणो जाणनै रहिणो। ठांगा सूं मांहे रहिवा रा अनंत सिद्धां री साख सूं पचखांण छै—एहवो पचासा रा लिखत में कह्यो। इत्यादिक अनेक भीखणजी स्वामी मर्यादा बान्धी, बले कोई आचार्य मर्यादा बान्धे ते सर्व साध-साधव्या रै लोपवा रा त्याग छै जावजीव लगै। तथा श्रावक कने कोई अवनीत साधु -श्रावक उतरती बात अवगुण रूप करै तो वनीत श्रावक तिण अवनीत साधु श्रावक ने निखेद देवे, अने तिण बात कही ते आचार्य नै सर्व सुणाय देवे ते सुवनीत रा लखण छै। पैताळीसा रा लिखत में अंस अवगुण बोलण रा त्याग चाल्या छै, ते भणी आचार्यादिक सर्व साध-साधवियां रा अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै।

तिण सू गुण रूप वार्ता करणी, पिण अवगुण रूप लेहर में बोलण रा अनंता सिद्धां री साख करनै सर्व साध -साधव्यां रै पचखांण छै। उतरती वार्ता कोई कहै तथा मन सहित सुणै ते पिण भाग-हीण, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भाग-हीण, या तीनां ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिरकार देणी। ए सर्व सुणाय ने आचार्य गत दिवस वार्ता सर्व साध साधवीयां नै पूछै—कोई कषाय रै वश शब्द बोल्यो तथा हास्य रै वश बोल्यो तथा उतरतो शब्द बोल्यो ए सर्व जाण अजाण शब्द बोल्यो तथा सुण्यो ते सर्व कहणो। तथा मार्ग चालतां, पड़िलेहण करतां और ही अनेक गणी पूछै तो जयतथ अरज करणी। आचार गोचर में सावचेत रहिणो। भीखणजी स्वामी रा लिखत ऊपर दृष्ट तीखी राखणी। पासत्था उसनां कुसीळिया अपछंदा टाळोकर नी संगति न करणी। कर्म जोगे टोळा थी टळे अथवा कठणार्ई में चालणी नहीं आवै, आहारादिक रो लोळपी घणो अथवा चोकड़ी रे वस थइ आग्या पालणी आपरो छांदो रुधंणो ए दोरो जद वक्र बुद्धि होय गण बारैं नीकळै, अवगुणवाद घणा बोलै, पेटभराई वास्ते अनेक ऊंधी-ऊंधी परुपणा करै, लोकां नै बहकावा नै अजोग-अजोग निंदा करै, केइ बेपत्ता अकल विनां एकला लाज छोड़ी फिरता फिरै तिणने श्री भीखणजी स्वामी एकल रा चोढ़ळ्या में निखेद्यो छै। ते गाथा—

दूहा

- १ आरम्भजीवी गृहस्थी, फिरे त्यांरी नेश्राय।
अन्य तीर्थी पासत्थादिक, ते पिण तेहवा थाय॥
- २ केइ वेरागै घर छोड़नै, राचै विषै रस रंग॥
राग द्वेष व्याकुल थका, करै व्रत नो भंग॥
- ३ रित पामै पाप कर्म मै, सावज सरणो मान।
गण छोड़ी हुवै एकला, कूड़ कपट री खान॥
- ४ न्यात लजावै पाछली, बले भेष लजावणहार।
एहवा मानव फिरै एकला, धिग त्यारों जमवार॥
- ५ घणां में रहै सकै नहीं, ते एकलड़ा थाय।
कुण कुण दोष तिण में कहा, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥
- १ 'आप छादै फिरै छै जे एकला, ते जिन मारग में नहीं रे भला।
साध श्रावक धर्म थकी टळिया, संसार समुद्र मांहै कळिया॥धुपदं॥

- २ एकलो देखनै लोग पूछा करै, घणो क्रोध करे त्यासूं रे लड़े।
केई वंदे नहीं जब मान वहै, करड़ा वचन तिण नै रे कहै॥
- ३ कपटाई घणी छै एकल तणी, सूत्र में भाखी त्रिभुवन धणी।
बले लोभ घणो छै बोहलपणै, श्री वीर कइयो छै एकल तणों॥
- ४ बहु आरंभ नै विषै रक्त घणो, संचो करे वज्र पाप तणो।
नट नीं परै अर्थी भोग तणों, बहु भेख धरै मांडै ग्रिधपणो॥
- ५ घणै प्रकारे धुरतपणो, संके नहीं करतो कर्म रिणो।
अध्यवसाय वर्त्ते मन रा अति ही घणा, सठ पणै छै एकल तणा॥
- ६ बहु कोहे माणे माया लोभ पणो, रडे नडे सढ़े संकल्प घणो।
ए आठ अवगुण घट में वर्त्ती, हिंसादिक आश्रव नो अर्थी॥
- ७ बले साधुनो लिंग लिया रहै, कर्म आछादयो एम कहै।
हूं सुध चारित्रियो आचारी, सतरे भेदै संजमधारी॥
- ८ रखै कोई देखै अकारज करतो, आजीवका अर्थी रहे डरतो।
अज्ञान प्रमाद सुं दोष भख्यो, निरंतर मूढ़ मोह्यो कुपंध पड़्यो॥
- ९ जिण धर्म न जाणै आप छोदे रह्या, त्याने कर्म बांधण नै पंडित कइया
पाप करण सूं अळगा रहै नहीं, तिणनै संसार में भ्रमण कही॥
- १० आचारंग पंचमै अधेने आख्यो, पहळै उदेसै जिण भाख्यो।
ए चरित कइया छै एकल तणां, इण अनुसारे तो अति ही घणां॥
- ११ एहवा अपछंदा अवनीत, त्यां छोड़ी धर्म तणी रीत।
निरलज भागळ विपरीत, किम आवै त्यांरी परतीत॥
- १२ उसन्नादिक पांचू तणी, संगति बरजी छै त्रिभुवन धणी।
ए मोख मार्ग ना छै फंदा, एहवा छै जैन तणां जिंदा॥
- १३ त्यां छोड़ी लोकिक तणी लजिया, संका नहीं आणै करता कजिया।
दोषण काढ्यां तो तपता रहै, ते आया परिसा केम सहै॥

इम इत्यादिक एकल नै घणो निषेध्यो, ते भणी तेहनी संगत न करणी। तथा पैताळीसा रा लिखत में कइयो—टोळा मांहे कदा कर्म जोग टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध साधविया रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यांरी अंसमात्र संका पड़ै आसता उतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सू फारने साथ ले जावण रा त्याग छै। मांहेमां मन फाटै ज्यू बोलण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे नै बारै नीकळ्या पिण अंसमात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै।

इम पैताळीसा रा लिखत में कइयो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, भागहीण सुणै, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण।

आयरिए आराहेइ, समणे या वि तारिसो।
गिहत्था णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिए नाराहेइ, समणे या वि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
इति^१ दसवैकालिक में कइयो ते भणी आज्ञा मर्यादा सुध आराध्यां इहभव परभव
सुख कित्थाण हुवै।

चोथी हाजरी

संमत १८३२ सा रै वर्ष स्वामी मरजादा बांधी, तिण में कह्यो—सर्व साध-साधवी एक री आज्ञा मांहे चालणों, एहवी रीत बांधी छै। कोइ टोळा मा सूं फाड़ा तोड़ो करनै एक दोय आदि नीकलै, घणी धुरताई करै, बगुळध्यानी हुवै, त्यानै साध सरधणा नहीं, च्यार तीर्थ मांहे गिणवा नहीं। यानै चतुरविध संघ ना निंदक जाणवा। एहवा नै वांदे पूजे तिके पिण आज्ञा बारै छै एहवो बतीसा रै वर्ष कह्यो।

इमहीज गुणसठा रै वर्ष मर्यादा बान्धी तिण में कह्यो—उसभ कर्म जोग सूं टोळा बारै नीसरै तिणनै साध सरधणो नहीं। कदा कोई फेर दिख्या ले आगला साधां नै असाध सरधायवा नै तो पिण उणने साध सरधणो नहीं। उणने छेरवियां तो उ आळ दे काढै तिणरी एक बात मानणी नहीं। उण तो अनन्त संसार आरै कीधो दीसै छै। कदाच कर्म धको दीधां टोळा सूं टलै तो उणरै टोळा रां साध साधव्यां रा अंसमात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा अनंत सिद्धां री नै पांचोई पदां री आण छै पांच पदां री साख सूं पचखांण छै। किण ही साध साधवियां री संका पड़ै ज्यूं बोलण रा पचखांण छै। कदा उ विटळ होय सूस भांगे तो हळुकीं न्यायवादी तो न माने उण सरीषो विटळ कोई माने तो लेखा में नहीं। किण नै कर्म धको देवै ते टोळा सूं न्यारो पड़ै तथा न्यारो करै अथवा आप ही टोळा सूं न्यारो हुवै तो इण सरधा रा भाई भाई हुवै तिहां रहिणो नहीं। एक भाई भाई हुवै तिहां पिण रहिणों नहीं। वाटे वहतां एक रात, कारण पड़िया रहै तो पांचूइ विगै सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनन्त सिद्धां री साख कर छै। बले टोळा मांहे उपगरण करै, पांना परत लिखे, टोळा मांहे थका परत पांना पात्रादिक सर्व वस्तु जाचै ते सर्व साथे ले जावा रा त्याग छै—एक बोदो चोलपटो, मुहपती एक बोदी पिछैवड़ी खंडिया उपरंत बोदा रजूहरणा उपरंत साथे ले जावणा नहीं। उपगरण सर्व टोळा री नेश्राय साधां रा छै। और अंसमात्र साथे ले जावण रा पचखांण छै। अनंता सिद्ध री साख करीनै छै, ए सर्व गुणसठा रा वर्ष रा लिखत में कह्यो छै।

तथा पचासा रा लिखत में पिण एहवो कह्यो—“टोळां सूं न्यारो पड़ै तो किण ही साध साधवियां रा हुंता अणहुंता अवगुण तथा खूंचणो काढ़ण रा त्याग छै। रहिसै-रहिसै लोकां रे संका घालीनै आसता उतारण रा त्याग छै। किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो अथवा गुरां ने कहिणो पिण औरां नै न कहिणो। पिण घणा दिन आडा घालनै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ ही छै।”

तथा बावनां रा लिखत में पिण इम कह्यो—किण ही साध आर्या मांहे दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहिणो के गुरां ने कहिणो पिण औरां ने कहिणो नहीं। तथा

पेंताळीसा रा लिखत में पिण कढ्यो-टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांगनै आप आप रै जिले करै, ते तो महाभारीकर्मो जाणवो, विसवासघाती जाणवो। इसडी घात पावडी करै ते तो अनन्त संसार नही साई छै। इण मर्याद प्रमाणै चालणी नावै तिणने संलेखणा मंडणो सिरै छै। तथा पचासा रा लिखत में पिण जिला ने निषेध्यो। तथा रास में पिण भी भीखणजी स्वामी जिला ने निषेध्यो छै। ते गाथा-

ढाल

- १ तिणनै गुर कहै सहज में सूधो, तो उ पड जाए मूर्ख ऊंधो।
तिण रा लखण घणा छै माठा, उळटा गुरनै कहै करला काठा॥
- २ गुरु ने करलो काठो कहणो पाछो, ओ तो किरतब जाणियो आछो।
तिणरी फिर गई सवळी दिष्ट, हुओ जिण मार्ग थी भिष्ट॥
- ३ तिणने गुर करळो कहै किण वारै, जब उ अवनीत पास पुकारै।
जब अवनीत कहै उण नै एम, थे पाछो कढ्यो नहीं केम॥
- ४ इसडी करै अविना री थाप मांहोमांहे कियो त्यांरै मिलाप।
बले जिलो बांधण रे काज, हिवै कुण-कुण करै अकाज॥
- ५ हिवै मिलर नै करै चोरी, गण में करै फारातोड़ी।
उणरी बात करै उण आगै, जिण विध मांहोमो कळह लागै॥
- ६ गुरु सूं पिण मेले मूरष डांडी, तिण भेष लेई आत्म भांडी।
गुरु सूं चेलो हुवै उदास, तेहवी बात कहै तिण पास॥
- ७ किणनै कहै थां उपर द्वेष, ते अरुबरु ल्यो देख।
किणनै कहै थांरी कीधी उतरती, मो आगै पिण कीधी परती॥
- ८ किणनै बले कहै छै आम, थानै लोळपी कहै छै ताम।
किणनै कहै थानै कहता वेणो, इण नै महीं कपड़ो नहीं देणो॥
- ९ किणनै कहै थे प्राछित लीधो, ते तो मो आगै कह दीधो।
त्यांरी आसता एम उतारे, बले निंघा करै पूठ लारे॥
- १० किणनै कहै थानै कहता चोरो, किणनै कहै थांसू हेत थोड़ो।
किणनै कहै थानै कहिता अवनीत, किणनै कहै थारी करे अप्रतीत॥
- ११ केणनै कहै थानै नहीं भणावै, किणनै कहै थानै नहीं बतळावै।
किणनै कहै थानै रोगी जाणै, पिण ओषद कदेय न आणै॥
- १२ किणनै कहै थानै चौमासे काळ, लांबो खेतर बतावै टाळ।
आछै खेतर थानै नहीं मेलै, शेघै काळ पिण इमहीज ठेलै॥

१. लय-विनैरा भाव सुण-सुण गूंजै।

- १३ किणनै कहै थारो न करै विश्वास, माहै रहवारी न धरै आस।
जिण विध गुरु सूं जागे द्वेष, तेहवी करै बात विशेष॥
- १४ जिण विध गुरु सूं मन भागै, तेहवी बात करै उण आगै।
जिण विध गुरु सूं हेत दूटै, तेहवी बात करै पर पूटै॥
- १५ इण विध साध-साधवी फारै, गण में भेद इण विध पाड़ै।
गुरु सूं परिणाम उतारै, सुध साधां ने मूढ़ बिगाड़ै॥
- १६ बले गुरु में अवगुण दरसावै, झूठा-झूठा दोष बतावै।
बले निंदा करै छानै-छानै, जिण रै उसभ उदै ते मानै॥
- १७ जिणनै गुरु सूं करै उपराठो, आपरो कर राखे काठो।
तिणनै निसंक आपरो जाणै, तिणनै घणो-घणो बखाणै॥
- १८ और साध मेळे उण साथ, जब पिण करै विस्वासघात।
उणनै फार करै आप कानी, पछै निंदा करै मनमानी॥
- १९ इण विध करै फारा तोड़ी, गुरु सूं छानै-छानै करै चोरी।
त्यां सूं छानै-छानै जिलो बांधे, जिण धर्म न ओळख्यो आंधे॥
- २० मांहोमां मिलनै जिलो बान्धे, गुरु आज्ञा विण आपरै छांदै।
इसड़ो करे अकार्य खोटो, तिणनै दोष लागे छै मोटो॥
- २१ एहवा दोष री कर राखै थाप, पछै सेवै निरंतर आप।
बले साधू नाम धरावै, तो उ पहिलै गुणठाणै आवै॥
- २२ जो उ दोष नै दोष न जाणै, तो पिण पहिले गुणठाणै।
ते तो मूढ़ मिथ्याती पूरो, पड़ियो च्यार तीर्थ थी दूरो॥
- २३ तिणरे सरधा जमाळी री आइ, मूळगी पूंजी सर्व गमाई।
सम्यक्त साधूपणो खोयो, जिलो बांध नै जन्म विगोयो॥
- २४ एहवा गैरी थका गण मांय, तिणरी गुरु ने खबर न काय।
मुख उपर करै गुणग्राम, छानै २ करै एहवा काम॥
- २५ गुरु रै मुख तो गुण गावै, छानै २ अवगुण दरसावै।
मुख उपर तो बोलै राजी, छानै करै दगाबाजी॥
- २६ बले वांटे गुरु नै जोड़ी हाथो, पगां में नितर देवै माथो।
वांढताई करै गुणग्राम, सारा पेहली लै गुरु रो नाम॥
- २७ बले लोकां नै बंदणा सिखावै, त्यांमै पिण गुरु नो नाम घलावै।
लोकां आगै करै गुणग्राम, पिण मना रा मैला परिणाम॥

इम अनेक प्रकारे जिला ने निखेध्यो छै। मुहदे तो मीठो बोलै गुरु रा गुण गावै अनै छानै-छानै दगाबाजी करै इसड़ा अवनीत दुष्ट अजोग प्रतनीक मुखअरी नै भगवान कुह्या कांनां री

कुतरी, भंडसूरी री ओपमां दीधी छै। तथा बले भीखणजी स्वामी पिण अवनीत रा लखण ओळषाया ते गाया—

- १ छिद्र^१ पेही छिद्र धारी राखै, कदे काम पड़े जब कहै दाखै।
तिणरै चरित्र पाळण री नहीं नीत, इसड़ा भारीकर्मा अवनीत॥
- २ और साधु ने दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहै तो निरापेसी।
आ सुध साधारी छोड़ी रीत। इसड़ा.....॥
- ३ गुर री निंदा करै छानै-छानै, तिण अवनीत री बात अवनीत मानै।
ते चिहु गति में होसी फजीत। इसड़ा.....॥
- ४ छानै-छानै टोळा में जिलो बांधै, गुरु आज्ञा विण आपरे छादै।
तिण संजम सहीत खोई प्रतीत। इसड़ा.....॥
- ५ गुरु सूं चेला रो मन फाड़ै, बले टोळा मांहे मूर्ख भेद पाड़ै।
कूड़ कपट कर २ बोले विपरीत। इसड़ा.....॥
- ६ सतगुर री बात देवे ठेली, अवनीत रो तुरत हुवै बेली।
तिण छोड़ी सतगुर सूं प्रीत। इसड़ा.....॥
- ७ गुर नै वांदे तिक्खूता रा पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओघटघाट घणी।
छळ खेळै कपट दगा सहीत। इसड़ा.....॥
- ८ जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष ढंके, तूटा हेत देतो आळ नहीं संके।
पछै मन मानै ज्यूं बोळै नसीत। इसड़ा.....॥
- ९ ते नागा निरलज होय बेठा, त्यानै बतलाया वचन बोलै धेठा।
त्यांरै संजम रूप खिस गई भीत। इसड़ा.....॥
- १० अवनीत भण-भण उलटो बूड़ै, कर-कर अभिमान वेसै तूड़ै।
तिणरै विनो नरमाई नहीं घट भीत। इसड़ा.....॥
- ११ इसड़ा अवनीत जाबक भूड़ा, त्यांरै केड़ै लागा ते पिण बूड़ा।
त्यांमें पिण होसी घणी कुपीत। इसड़ा.....॥

अथ इहा पिण अवनीत रा लखण ओळषाया ते लखणां नै छांडणा। तथा साध सीखावंणी ढाळ रा दूहा में पिण घणा दिन पछै दोष कहै तिणनै अपछंदो कह्यो, निर्लज कह्यो नागडो कह्यो, मरजादा रो लोपणहार कह्यो। तिणरी बात मूळ मानणी नहीं, एहवो कह्यो।

तथा बावना रा लिखत में आय्यांरै मर्यादा बांधी—किण ही आय्यां जाणनै दोष सेव्यो हुवै

ते पाना में लिख्या बिना विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्यां न लिखै तो और आर्या ने कहणो। सायद करने पछै पिण बेगो लिखणो। पिण बिना लिख्यो रहिणो नहीं। आयने गुरां ने मूंहढा थी कहणो नहीं। अजोग भाषा बोलणी नहीं। एहवो बावना रा लिखत में कह्यो ते मर्यादा सुद्ध पाळणी। तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—टोळा मांही कदाच कर्म जोग टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंसमात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। यांरी अंसमात्र शंका पड़ै आसता उतरै ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा मांहे सूं फाड़नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहे नै बारै निकल्या पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै, मांहोमांहे मन फटै ज्युं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में पिण अंसमात्र अवगुण बोलण रा त्याग कह्या छै ते भणी उतरती बात करै तथा मन सहित सुणै तथा सुणी आचार्य नै न कहै तिणनै तीर्थकर नो चोर कहिणो, हरामखोर कहिणो, तीन धिकार देणी।

१ आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

२ आयरिए नाराहेइ, समणेयावि तारिसो ।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं

इति 'दशवैकाळिक में कह्यो मर्यादा आर्या सुध आराध्यां इहभव

परभव में सुख किल्याण हुवै।

पांचवी हाजरी

सम्बत् १८५० वर्ष स्वामी भीखणजी सर्व साधां ने सुध आचार पाळणो नै मांहोमांहे गाढो हेत राखणो, तिण ऊपर मरजादा बांधी—“कोई टोळा रा साध-साधवियां में साधपणो सरधो, आप में साधपणो सरधो, तिको टोळा में रहिजो। कोई कपट दगा सूं साधां भेलो मांहि रहै, तिण नै अनन्ता सिद्धां री आंण छै। पांच पदां री आंण छै। साध नांव धरायनै असाधां भेलो रह्यां अनंत संसार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध-साधवियां रा अवगुण बोलनै किण ही नै फाड़नै, मन भांगनै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किणसूंई साधपणो पलतो दीसै नहीं, अथवा सभाव किणसूंई मिलतो दीसै नहीं, अथवा कषाई धेठो जाणनै कोई कनै न राखै, अथवा क्षेत्र आछो न बतायां अथवा कपड़ादिक रै कारणै अथवा अजोग जाणनै और साधु गण सूं दूरो करै, अथवा आपने गण सूं दूरो करतो जाणनै इत्यादिक कारण उपनै टोळा सूं न्यारो पड़ै तो किण ही साध-साधवियां रा अवगुण बोलण रा त्याग छै। हुंतो अणहुंतो खूंचणो काढ़ण रा त्याग छै। रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घालनै आसता उतारण रा त्याग छै। कदा कर्म जोगे कदा क्रोध रे वशै साध-साधवियां में असाधपणो सरधै आप में पिण असाधपणो सरधै फेर साधपणो छेवै तो ही पण अठीला साध-साधवियां री संका घालण रा त्याग छै। खोटी कहण रा त्याग छै ज्यूं रा ज्यूं पाळणा छै। पछै यूं कहिण रा पिण त्याग छै, म्हे तो फेर साधपणो लीधो अबे म्हारै आगला सूंसां रो अटकाव कोई नहीं। किण ही साध साधव्यां नै पिण साध साधवियां री आसता उतरै साध आर्या री संका पड़ै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। किण ही साध आर्या में दोष देखै तो ततकाळ धणी नै कहिणो, अथवा गुरां नै कहिणो, पिण ओरां नै न कहिणो। घणा दिन आड़ा घालनै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छै। प्राछित रा धणी नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणो, नहीं लेवै तो उणनै मुसकळ छै, ए पचासा रा लिखत में कह्यो।

तथा संवत् १८४५ रा लिखत में कह्यो—“टोळा मांहि पिण सांथां रा मन भांगनै आप २ नै जिले करै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो। इसड़ी घात पावड़ी करै ते तो अनंत संसार री साई छै। इण मरजादा प्रमाणै चालणी नावै तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै। धनै अणगार तो नव भास मांहि आत्मा नो किल्याण कीधो ज्यूं इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो। पिण अप्रतीत-कारियो काम न करणो। रोगिया बिचै तो सभाव रा अजोग नै मांहि राख्यो भूंडो छै। यां बोलां री मरजादा बांधी ते लिखी छै ते चोखी पाळणी। अनन्ता सिद्धां री साख करनै पचखांण छै। ए पचखांण पाळण रा परिणाम

हुवै ते आरै हुयज्यो। विनै मार्ग चालण रा परिणाम हुवै, गुरु नै रीझावणा हुवै, साधपणो पाळण रा परिणाम हुवै ते आरै हुयज्यो। आगे साधां रे समचे आचार री मरजाद बांधी ते कबूल छै। बले कोई आचार्य मरजादा बांधे ते याद आवै ते पिण कबूल छै” एहवो पैताळीसा रे वर्ष कह्यो छै।

तथा पचासा रा लिखत में जिला नै निषेध्यो छै। तथा रास में पिण जिला ने घणो निषेध्यो छै। तथा ‘गुरु सूकावे तो उभो सूकै’ इण ढाळ में पिण जिला नै निषेध्यो छै।

१ ‘गण में रहूं निरदावै एकलो, किण सूं मिलनै न बांधू जिलो।

किण नै रागी करै राषूं म्हारो, एहवो पिण नहीं करूं विगारो॥

इम गुरां री आज्ञा विना आपरो रागी करै तिण नै बिगाड़ा में घाल्यो छै। ते माटे जिलो बांधण रा सर्व साध साधव्यां रे अनन्ता सिद्धां री साख सूं त्याग छै। तथा घणा दिनां पछै दोष न कहिणो, ठाम २ कह्यो छै। साध सीखावणी ढाळ रा दूहा में पिण घणां दिना पछै दोष कहै, बले झूठो विषवाद करै, तिण नै अपछंदो कह्यो, निर्लज कह्यो, नागड़ो कह्यो, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो, कषाय दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो छै। तथा साध सीखावणी ढाळ में पिण एहवी गाथा कही—

२ ‘घणा दिनां रा दोष बतावै, ते तो मानवा में किम आवै।

साच झूठ तो केवली जाणै, छद्मस्थ प्रतीत नाणै॥

२ हेत मांहे तो दोषण ढाकै, हेत तूटां कहितो नहीं साकै।

तिण री किम आवै परतीत, तिण नै जाण छेणो विपरीत॥

३ इण दोषीला सूं कीयो आहार, जब पिण नहीं डरियो लिगार।

तो हिवै आळ देतो किम डरसी, इण री परतीत मूरख करसी॥

४ इण दोष क्यांने किया भेळा, इण क्यूं न कह्यो तिण वेळा।

इण में साध तणी रीत हुवै तो, जिण दिन रो जिण दिन कहेतो॥

५ जब उ कहै मैं न कह्यो डरतै, गुर सूं पिण लाजां मरतै।

तब उणनै बलै कहिणो पाछो, तोनै किण विध जाणां आछो॥

६ थे तो दोषीलां सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग।

थारी प्रतीत नावे म्हानै, इण रा दोष राख्या थे छानै॥

१.लय : विनै रा भाव सुण-सुण गूंजे।

२.लय : विनै रा भाव सुण-सुण गूंजे।

२१२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ७ थे तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग में चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुई मत बुध, हिवै प्राछित ठे होय सुध॥
- ८ उण नै पूछ्यां आरै होय, तो उण नै प्राछित देस्यां जोय।
जो उ पूछ्यां आरै न होय, तो उण सूं जोर न लागै कोय॥
- ९ उण री तो थारां कढ्या थी संक, पिण तू तो दोषीलो निसंक।
इम कही उण नै घालणो कूडो, प्राछित न ले तो करणो दूरो॥
- १० ज्यूं कोई बले न दूजी वार, किण रा दोषण ढाके ळिगार।
दोष ढाक्या हुवै घणी खुवारी, टांको झड़ै तो अनन्त संसारी॥
- ११ संका सहित नै राखैमांय, और साध दोषीळा न थाय।
दोषीला नै जांणी राखै मांय, तो सगळाई असाधु थाय॥
- १२ छिद्रपेही छिद्रधार राखै, कदे काम पड़्या कहि दाखै।
तिण में साध तर्णी नही रीत, तिण री कुण मानै परतीत॥
- १३ घणा दिनां काढ़ै दोष विख्यात, तिण री मूळ न मानणी बात।
सुध साधां री आ मरजाद, तिण सूं वधै नहीं विषवाद॥
- १४ और साधां में दोषण देखी, तुरत कहै ते निरापेखी॥
तिण रे मूळ नहीं पखपात, तिण री मानणी आवै बात॥

अथ इहा पिण घणा दिनां पछै दोष कहै तिण नै अन्याइ कढ्यो। तिण में साध नी रीत नहीं। तिण री मूळ बात मानणी नहीं, एहवो कढ्यो। तथा पचासा रा लिखत में एहवो कढ्यो— किणनेई खेत्र काचो बतायां, किणनेइ कपड़ादिक मोटो दीधां इत्या-दिक करणे कषाय उठे जद गुरुवादिक री निंदा करण रा, अवगुणवाद बोलण रा, एक २ आगै बोलण रा, मांहोमाहै मिलने जिलो बांधण रा त्याग छै। अनन्ता सिद्धां री आण छै। गुरुवादिक आगै भेळो तो आपरै मुतळब रहै, पछै आहारादिक थोड़ा घणा रो कपड़ादिक रो नाम लेई अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। इण सरधा रा भायां रै कपड़ा रा ठिकाणा छै विना आज्ञा याचण रा त्याग छै तथा विनीत अवनीत री चोपी री प्रथम ढाळ में एहवी गाथा कही—

- १ 'उ गुर रा पिण गुण सुणनै विलखो हुवै रे, अवगुण सुणनै हरषत थाय रे।
एहवा अभिमानी अविनीत तेहनै रे, ओळखाउं भवियण नै इण न्याय रे ॥
अवनीत भारी कर्मा एहवा रे ॥
- २ कोई प्रत्यनीक अवगुण बोलै गुर तणा, अवनीत गुरदोही पासै आय।
तो उत्तर पड़ उत्तर न दे तेहने, अभितर में मन रळियायत थाय॥
अथ इहां गुरु रा गुण सुण विंळखो हुवै तिण नै अवनीत कढ्यो कोई अविनीत अवगुण

बोले तेहनै पाछो जाब न दे मून राखै मन में रळियात हँ यां लखणां अवनीत नै ओळखणो तथा वनीत अवनीत री ढाळ नवमीं में एहवी गाथा कही—

- १ 'गुरु निषेध्यो सुणै अवनीत, ऊंधा अर्थ करे विपरीत।
नहीं विनौ करण री नीत, तिण सूं बोले कपट सहीत॥
- २ उण सूं विनो कियो नहीं जावै, तिण सूं गुर नै कुगर सरधावे।
आपणां दोष सगळा ढाकै, साधा सिर आळ देतो ना साकै॥
- ३ ते तो गुर सूं पिण नहीं गुदरै, तिण रा कारज किण विध सुधरै।
तिण नै करै टोळा सूं न्यांरो, तो उ चोर ज्यूं करे बिगाड़ो॥
- ४ सगळां साधां नै कहै असाध, बलै करै घणो विषवाद।
सर्व साधां रो होय जावै बैरी, के एहवा छै अवनीत गैरी॥
- ५ तिण नै लोक आरै करै नाहीं, तो उ प्राछित ले आवै मांही।
ज्यांनै असाध परूष्यां मुख सूं, त्यांरा वांदै पग मस्तक सूं॥
- ६ जो उ बलै न चाले सूधो, तो उण नै करदै गण सू जूदो।
जब अवनीत रे उवाहीज रीत, न्यांरो किया बोलै विपरीत॥
- ७ लोकां नै साधा सूं भिड़कावै, आप बुगलध्यानी होय ज्यावै।
बलै कूड कपट रो चाळो, आत्मा नै लगावै काळो॥
- ८ उ तो अवगुण काढ़े अनेक, बुधवंत न मानै एक।
एहवा अवनीत छै गुरद्रोही, तिण आत्म पूरी विगोई॥
- ९ जे मानै अवनीत री बात, ज्यां रा घट मांहै आवै मिथ्यात।
एहवा अविनीत अवगुणगारा, ज्यां सू बुधवंत रहसी न्यारा॥
- १० इम सुण २ नै नरनारी, छोड़ो कुगुरु हीण आचारी।
अवनीत सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा॥
- ११ वनीत सुण २ पांमै हरख, पड़ै अवनीत रे मन धड़क।
ते तो रहै चोर जिम राच, लेवै आपणै ऊपर खांच॥
- १२ वनीत अवनीत रा एहलाण, इम ओळख कीजो पिछाण।
रुड़ी रीत सूं काढै नीकाळो, अवनीत सूं दीजो टाळो॥

१. लय— विनै रा भाव सुण २ गूंजे।

१३ विना अविना रो ए विस्तार, कीधो खेरवा सैहर मझार।
बतीसै वरस संमत अठारो, भादवा सुदि छठ सुकरवारो॥

अथ इहां पिण अविनीत नै ओळखायो—टोळा बारे नीकळी, क्रोध रै वस साधां नै असाधु कहै अवगुण बोलै चोर ज्युं बिगाड़ो करै तिण री बात बुधवंत न मानै। तिण नै लोक आरै न करै जद पाछो मांहे आवै, जो उ बलै सुध न चालै जद गुरु दूर करै तथा आचार्य रै छांदे चालणी नावै संकड़ाइ मै चालणी नावै जद आपही टोळा वारै नीकळी फेर अवगुण बोलै, इसड़ा अवनीत विवेक विकळ री बात न मानणी, एहवो कह्यो। अवनीत रो ठागो प्रगट कियो।

तथा पैताळीसा रे वर्स मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यांरी अंसमात्र संका पड़ै आसता ऊतरै ज्युं बोलण रा त्याग छै टोळा मासूं फाड़नै साथै ले जावण रा त्याग छै। ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोभा मन, फाटै ज्युं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती करै तथा भागहीण सुणै तथा सुणी आचार्य नै कहे नही ते पिण भागहीण, तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो हरामखोर कहणो तीन धिकार देणी।

१ आयरिए आराहेइ, समणेयावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

२ आयरियं नाराहेई, समणेयावि तारिसो।

गिहत्थावि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध

आराध्यां इहभव में परभव में सुख कल्याण हुवै।

छठी हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्त पांच महाव्रत अखण्ड आराधना। ईर्या, भाषा, एषणा में सावचेत रहणो। आहार पाणी लेणो पड़े तो पक्की पूछा करी ने लेणो। सूझतो आहार पानी लेणो ते पक्की पूछा करी ने लेणो। आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजतां परठवता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्त में सावचेत रहणो, तीर्थकर नी आज्ञा अखण्ड आराधणी, श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधी। बिरत में धर्म, अविरत में अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म, असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देवनों मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी। संवत् १८५० रे वर्स भीखणजी स्वामी साधां रे मर्यादा बांधी, किण ही साधु आय्यां में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहिणो, अथवा गुरां ने कहिणो, पिण ओरां ने न कहिणो, घणा दिन आड़ा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उ हीज छै। प्राछित रा धणी ने याद आवे तो प्राछित उण ने पिण लेणो न लेवे तो उण ने मुसकळ छै। कोई सरधा आचार रो बोल नीकळे तो बड़ा सू चरचणो पिण औरां सू चरच औरां रे संका घालनी नहीं। बड़ा जाव देवे ते आपरे हिय वैसे तो मान लेणो, नहीं वैसे तो केवळिया ने भळावणो। पिण टोळा मांहे भेद पाड़णो। नहीं मांहेमांहि जिलो बांधणो नहीं। आपरो मन टोळा सू उचक्यो अथवा साधपणों पळे नहीं तो किण ही ने साथे ले जावण रा अनन्ता सिद्धां रो साध करने पचषांण छै। किण रा परिणाम न्यारा होण रा हुवे जब ग्रहस्थ आगे पेला री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजामंद हुवे। चोखी तरह साधपणो पळतो जाणो तो टोळा मांहे रहणो। आप में अथवा पेळा में साधपणो जाणने रहिणो, ठागा सू रहिवा रा अनन्ता सिद्धां री साध सू पचषांण छै। कोई टोळा मा सू टळने साध-साधवियां रा दोष बतावे अवरणवाद बोळे तिण री बात मानणी न ही, तिण ने व्यवहार में तो झूठो बोलो जाणणो, साचो हुवे तो ज्ञानी जाणे पिण छद्मस्थ रा व्यवहार में तो झूठे जाणणो। एक दोष सू बीजो दोष भेळो करे ते तो अन्याई छै, जिण रा परिणाम मेला होसी ते साध आय्यां रा छिद्र जोयने भेळा करसी, ते तो भारीकर्मा जीवां रा काम छै, अने डाहो सरळ आत्मा रो धणी होसी ते तो हम कहसी-कोइ ग्रहस्थ साध-साधवियां रो सभाव प्रकट अथवा दोष कहि बतावे जिण ने यूं कहणो-मोने क्यानें कहो, के तो धणी ने कहो, के स्वामीजी ने कहो, ज्यूं यांने प्राछित देने सुध करे, नहीं केसो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छो। जो स्वामीजी ने न कहिसो तो थामे पिण बांक छै। थे म्हांने कह्या कांइ हुवे, यूं कहिने न्यारो हुवे पिण आप बेदा मांहे क्यानें पड़े। पेला रा दोष धारने भेळा करे ते तो

२१६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

एकंत मिरषावादी अन्याई है। किण ने खेत्र काचो बताया किण ही ने कपड़ाविक मोटो दीधां इत्यादिक कारणे कषाय उठे जद गुरवादिक री निंघा करण रा अवगुणवाद बोलण रा मांहोमाहि मिलने जिलो बांधण रा त्याग है। अनन्ता सिद्धां री आण है। डाहा होवे ते विचार जोइ जो। लूषे षेतर तो उपगार होवे तो ही न रहे आछे षेतर उपगार न होवे तो ही पर रहे, यूं तो साध ने करणो नहीं चोमासा तो अवसर देखे तो रहणो पिण शेषे काळ तो रहिणो हीज। किण री खावा पीवादिक री संका पड़े तो उण ने साध कहे-बड़ा कहे ज्युं करणो। दोय जणां तो विचरे आछा-आछा मोटा-मोटा साताकारिया क्षेत्र लोळपी थका जोवता फिरे, गुरु राखे तठे न रहे, इम करणो नही है। घणां भेळां रहिता तो दुःखी, दोय जणां में सुखी, लोळपी थको यूं करणो नहीं है। ए सर्व पचासा रा लिखत में कह्यो है।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो-“मांहोमाहि जिलो बांधे तिण में महाभारी-कर्मो कह्यो, विस्वासघाती कह्यो, इसड़ी घात पावड़ी किया अनंत संसार नी साई कही।”

तथा बावनां रा वर्स लिखत में कह्यो-दोष देख्यां ततकाळ धणी ने केहणो के गुरां ने कहणो पिण ओरां ने न कहिणो ए मर्यादा लोपवा रा सर्व साध-साधव्यां रे अनन्ता सिद्धां री साख सूं पचखाण है। तथा वनीत अवनीत री चोपी ढाळ ७ मीं में एहवी गाथा कही-

- १ जो^१ दोष लागो देखे साधने, तो कह देणो तिण ने एकंतो रे।
जो उ माने नहीं तो कहणो गुरु कने, ते श्रावक है बुधवंतो रे॥

सुवनीत श्रावक एहवो॥

- २ प्राछित दिराय ने सुध करे, पिण न कहे ओरां पास।
ते तो श्रावक गिरवा गंभीर है, वीर वखाण्यां तास॥
३ उण रे मुंहडे तो दोष कहे नही, उण रा गुर कने पिण न कहे जाय।
और लोकां आगे कहितो फिरे, तिण री परतीत किण विध आय॥
अवनीत श्रावक एहवा॥

- ४ बले साधां ने आय वंदना करे, साधवियां नै न वांटे रुडी रीत।
त्याने श्रावक श्रावका म जाणजो, ते तो मूढमती अवनीत॥

- ५ तिण श्री जिन धर्म न ओळख्यो, बले भण २ ने करे अभिमान।
आप छांदे माठी मति उपजे, तिण ने लागा नहीं गुर कान॥

इहा गाथा में विनीत अवनीत श्रावक रा लिखण कह्या बले आगल तिणहीज ढाळ में सुगरा-नगुरा साप रो दिष्टत देइ कहे है-

१. लय-चंद्रगुप्त राजा सुणो।

- ६ कोइ^१ साप पड़्यो थो उजाड़ में चेत नहीं सुध काय।
तिण सर्प री अणुकंपा आणने, मिश्री घाली ने दूध पाय॥
भाव सुणो अवनीत रा॥
- ७ ते सर्प सचेत थया पछे, आड़ो फिरियो खावा ने आय।
जो उ लूँठो हुवे तो उण दे दाब दे, काचो हुवे तो डंक दे लगाय॥
- ८ सर्प सरीषा अवनीत मानवी, एकल फिरे ज्यूं ढोर रुळीयार।
त्यां ने समकित चारित्र पमाय न, कीधो मोटो अणगार॥
- ९ एहवो उपगार कियो तिको, ततकाळ भूले अवनीत।
बले उळटा अवगुण बोले गुर तणा, उण रे सर्प वाली छै रीत॥
- १० आहार पांणी कपड़ादिक कारणे, ते पिण झूठो झगड़ो मांडे।
इण ने उपरलो हुवे तो बाबै दंड दे, आघो काढ़े ते उळटो भांडे॥
- ११ सर्प ने दूध मिश्री पाया पछै, डंक देवे ते सर्प गेरी।
ज्यूं ओ समकत चारित लिया पछै, हुवो साधां रो वेरी॥
- १२ बले खाणां पीणां रो हुवो लोळपी, आप रा दोष मूल न सूजे।
उ छेड़विया सूं सांहमों, मंडे, बले क्रोध करे तन धूजे॥
- १३ तिण ने दूर करे तो दूसमण थको, बोले घणो विपरीत।
असाध परूपे सगळा साध ने, साच बोलण री नहीं रीत॥
- १४ बले प्राछित देने मांहे लिये, तो मांहे आवे ततकाळ।
इसड़ा अजोग अवनीत रो, साच माने अज्ञानी बाल॥
- १५ ज्याने भागल असाध परूपियां, त्यां में प्राछित ले मांहे आवे।
कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिण ने बुधवंत मुहढे ने लगावे॥
- १६ सुगुरा साप ने दूध पाया थकां, तो उ करे पाछो उपगार।
तिण ने धन देइने धनवंत करे, बले दीठा हुवे हरष अपार॥
- १७ ज्यूं केइ आपछावे था एकला, पिण सरल परणामी ने सुध रीत।
तिण ने समजाय ने संजम दियो, ते आज्ञा पाळे रूडी नीत॥
- १८ कीधो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काज सूपै।
त्यारो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व काम में धोरी ज्यूं जूपै॥
- १९ तिण ने समकत ने संजम बेहु, रुचिया अभिंतर पूरा।
ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रंधने, पाछो उपगार करण ने सूरा॥
- २० बले गांवा नगरां फिरतां थकां, सदा काळ करे गुण ग्राम।
ते सुवनीत गुणग्राही आतमा, त्यांने वीर बखाण्यां ताम॥

१. लय-चन्द्रगुप्त राजा सुणो।

२१८ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

२१ ए भाव कद्धा विनीत अविनीत रा, सांभळ ने नर नार।

सतगुर रो विनो करो, तों पामौ भव पार॥

अथ अठे विनीत अविनीत रा लक्षण ओळखाया। विनीत ने गुणग्राही रा गुण वर्णव्या। अविनीत कृतघ्न रा अवगुण बताया। ए भाव सुण ने उत्तम जीव गुण ग्रहे। बले श्री भीखणजी स्वामी रीः मर्यादा सुध पाळे।

तथा चोतीसा रा लिखत में आर्य्या रे मर्यादा बांधी ते कहै छै “टोळा रा साध आर्य्या री निंघा करे तिण ने घणी अजोग जाणणी। तिण रे एक मास पांचूं विगै रा त्याग। जित री वार करे जितरा मास पांचूं विगै रा त्याग छै।

तथा बावनां रा लिखत में आर्य्या रे मर्यादा बांधी—किण ही आर्य्या दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना में लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नहीं कदाच कारण पड़्या न लिखे तो ओर आर्य्या ने कहणो। सायद करने पछे पिण बेगो लिखणो। पिण बिनां लिख्यां रहिणो नहीं। ए आयने गुरां ने मूहड़ा सूं कहणो नहीं। मांहेमां अजोग भाषा बोलणी नहीं। एहवो बावना रा लिखत में कद्धो।

तथा संवत् १८४५ रे लिखत में कद्धो—टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साधु-साधवियां रा अंस मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़े आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मा सूं फाड़ने साथे छे जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे नै बारे नीकल्यां पिण आगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कद्धो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन बात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती बात करे, भाग हीण ते सुणे तथा सुणी आचार्य नै न कहे ते पिण भागहीण तिण ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

१ आयरिएं आराहेई, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूंयति, जेण जाणंति तारिसं॥

२ आयरिएं नाराहेई, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति ‘दशवैकालिक में ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां इहभव परभव में सुख कल्याण हुवे।

एह हाजरी रची। संवत् १९१० का जेठ विद बगतगढ़ मध्ये।

सातवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुमि पंच महाव्रत अखण्ड आराधणा। ईर्या, भाषा, एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी ने लेणो। सूजतो आहार पिण आगळा रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजतां परिठवतां सावधान पणे रहणो। मन वच काया गुमि में सावचेत रहिणो, पंच महाव्रत सुद्ध पाळणा। तीर्थंकर नी आज्ञा अखण्ड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धांत देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधा—विरत धर्म ने अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म आज्ञा बारे अधर्म, असंजती रो जीवणो बंधे ते राग, मरणो बंधे ते द्वेष, तिरणो बंधे ते वीतराग नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नीं मर्यादा बांधी।

संवत् १८४५ सा रे वर्ष भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी—“किण ही रो सभाव अजोग हुवे, तिण ने कोई टोळा मांहे बेठणवाळो नहीं, जद पेला ने घणी प्रतीत उपजावे घणी नरमाइ करने हाथ जोड़ने कहिणो—थे मोने निभावो, यूं कहिने साथ जाणो, आगलो चलावे ज्यूं चालणो, जको काम भळावे ते करणो, उण ने घणो रीझाय ने रहिणो, जो अतरी आसंग विनो नरमाई करण री न हुवे तो संलेषणां मंडणो, वेगो कारज सुधारणो। जो दोयां बोल मांहिलो एक बोल पिण आरे न हुवे तो उण सूं कळेश कर २ ने कुण जमारो काढ़सी।

उण ने साधु किम जाणीये जो एकलो वेण री सरधा हुवे इसडी सरधा धारने टोळा मांहे बेठो रहे माहरी इच्छा आवसी जद तो मांहे रहिसूं मारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसूं इसडी सरधा सूं टोळा मांहे रहे ते तो निश्चै असाध छै, साधपणो सरधे तो पहला गुणठाणां रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं मांहे रहे छै तिण ने मांहे राखे जाणने तिण में पिण महादोष छै। कदा टोळा मांहे दोष जाणे तो टोळा मांहे रहणों नहीं, एकलो होयने संलेषणा करणी, वेगो आत्मा रो सुधारो हुवे ज्यूं करणो। आ सरधा हुवे तो टोळा मांहे राखणो। गाळागोळो करने रहे तो राखणों नहीं, उत्तर देणो, बारे काढ़ देणो, पछेइ आल दे निकले ते किसा काम रो। टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांगने आपरे जिले करे ते तो महाभारीकमों जाणवो। विसवासधाती जाणवो। इसडी घात-पावड़ी करे ते तो अनन्त संसार नी साई छै, इण मर्यादा प्रमाणे चालणी ना वै तिण ने संलेखणां मंडणो सिरे छै, धने अणगार तो नव मास मांहे आतमा रो किळ्यांण कीधो ज्यूं इण ने पिण आत्मा रो सुधारो करणो, पिण अप्रतीत-कारियो कांम न करणो। रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग ने मांहे राख्यो भूंडो छै—“ए सर्व पैताळीसा रा लिखत में कह्यो।

तथा रास में पिण जिला ने घणो निषेध्यो छै तथा पचासा रा लिखत में पिण जिला ने निषेध्यो तथा 'गुरु सूकावे तो उभो सूके' इण ढाळ में जिला ने निषेध्यो तथा अविनीत री ढाळ में पिण जिला ने घणो निषेध्यो--

- १ छाने-छाने टोळा में जिलो बांधे, गुर आगन्या विण आपरे छादे।
तिण संजम सहित खोई परतीत, इसड़ा भारी कर्मा अवनीत॥
- २ गुरु सूं चेला रो मन फाड़े, बले टोळा में मूर्ख भेद पाड़े।
कूड़े कपट कर बोले विपरीत, इसड़ा भारीकर्मा अवनीत॥

तथा दशमा प्राछित री ढाळ में पिण जिला ने निषेध्यो ते गाथा--

- १ रहे एक आचार्य रा शिष भेळा, कुल माहे वसे सहु मन मेला।
त्यामें भेद पारण उदमी थावे, तिण ने दसमों प्राछित आवे॥
- २ और साधां रा छिद्र जोवे तांम, तिण ने हेलवा निदंवा रे काम।
दोष भेळा कर-कर पछे उड़ावे, तिण ने दसमों प्राछित आवे॥
- ३ कुल गण में भेद पाड़े केइ, हंस्यो ने छिद्र तणो पेही।
सावज प्रश्न बारुं वार बतावे, तिण ने दसमो प्राछित आवे॥
- ४ ठाणा अंग तीजे ने पांचमें ठाणे, त्यांरा भेद अनेक पंडित जाणे।
जघन मज्झम रा भेद न्यारा थावे, उत्कष्टो प्राछित दसमों आवे॥

इहां पिण जिला ने निषेध्यो। तथा पचासा रा लिखत में कह्यो किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहियो। अथवा गुरां ने कहणो। पिण ओरां ने न कहियो। घणा दिन आड़ा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा बावना र वरस आर्या रे मंरजादा बांधी तिण में कह्यो--“दोष देख्यां ततकाळ धणी ने केहणो, के गुरां ने कहणो, पिण ओरां ने न कहियो। किण ही आर्या ने दोष जाण ने सेव्यो हुवे ते पाना में लिखिया बिना विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड्यां न लिखे तो ओर आर्या ने कहियो। सायद करने पछै पिण बेगो लिखणो। पिण बिना लिख्यां रहियो नहीं। आय ने गुरां ने मूढ़ां सूं कहियो नहीं मांहोमां अजोग भाषा बोलणी नहीं। कोई साध-साधवियां रा अवगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो--स्वामी जी ने कहिय्यो” ए सर्व बावनां रे वर्स कह्यो।

तथा गुणसठा रे वर्स मर्याद बांधी--“कदा कर्म धको दीधां टोळा सूं टळे उण रे टोळा रा साध-साधव्यां रा अंस मात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा अनंत सिद्धां री ने पांच पदां री आण छै। पांचू इ पदां री साख सूं पचखाण छै। किण ही साध-साधव्यां री संका पड़े ज्युं बोलण रा पचखाण छै।” एहवो गुणसठा रे वर्स कह्यो छै। तथा संवत् अठारे बत्तीसा रे वर्स स्वामी भीखणजी विनीत अविनीत री चोपी जोड़ी, तिण में अवनीत रा लक्षण ओळखाया। ते

लक्षण मेट्या विनीत कहिये। ते विनीत रा गुण वर्णव्या ते चोपी मांहिली प्रथम ढाल नी केयक गाथा—

- १ जे पाले निरंतर गुर री आगन्या रे, समीपे रहे तो रूड़ी रीत रे।
ते जाण वरते गुर री अंग चेष्टा रे, तिण ने श्री वीर कह्यो सुवनीत रे॥
विनो कीजे एहवा सतगुर तणो॥
- २ विनो तो जिण सासण रो मूळ छै, विनो निरवाण साधन काज।
जे विनो ते करण सूं उपराठा पड़्या, रह्या संजम ने तप सूं भांज॥
ते अवनीत भारी कर्मा एहवा॥
- ३ केइ गुर री नहीं पाले मूर्ख आगन्या, समीपे रहता संके मन मांय।
रखे करावे कार्य मो कनै, एहवो बूढ़ण रो करे उपाय॥
- ४ ते प्रतनीक अंतर में गुर नो पापियो, उण तत्व न जाण्यो रूड़ी रीत।
उण रे कूड़ कपट ने धेठापणो घणो, तिण ने श्री वीर कह्यो अवनीत॥
- ५ जो कार्य करे अवनीत गुर तणो रे, ते जाणे अग्यानी बेट समान।
तिण धर्म जिणसर नो नहीं ओलख्यो, चिंहु गति में होसी घणो हेरान॥
- ६ जो तप कर काया कष्टे आपणी, ते जश कीरत के खावा ध्यान।
के पूजा श्लाघा रो भूखो थको, पिण विनो करणो नहीं आसान॥
- ७ जो धरावे ग्रहस्थ ने बोल थोकड़ा, ते पिण मान बढ़ाइ काज।
उ आपो परसंसे अवर ने निंदतो, ते अवनीत निरलज नाणें लाज॥
- ८ अवनीत ने आपो दमवो दोहिलो, तिण रा अथिर परिणाम रहे सदीव।
उ किणविध पाळे गुर री आगन्या, जे क्रोधी अहंकारी दुष्टी जीव॥
- ९ उण रे चेला करण री मन में अति घणी, गुर रा गुण मुख सूं कह्या न जाय।
रखे मोने छोड़े ले दिख्या गुरु कनै, एहवी ओघटघाट घणी घट मांहि॥
- १० केइ गुर री आज्ञा लोपी चेलो करे, तिण छोड़ी छै जिण सासण री रीत।
ते फिट-फिट होसी समझू लोक में, परभव में पिण होसी घणो फजीत॥
- ११ वैराग घट्यो ने आपो वस नहीं, तिण रे रहे चेला करण रो ध्यान।
उण ने सिख मिलायें सूं तो उ शिथल पड़े, बले बधे लोळपणो ने अभिमान॥
- १२ वनीत सिख रे सिख री मन ऊपनी, पिण गुर री आज्ञा विण न करे चाव।
तिण आत्म दमी ने इंद्रयां वस करी, सीख मिलियां सरल सभाव॥
- १३ जो वनीत आगे घर छोड़े तेहने रे, तो वनीत बोले सूतर रे न्याय।
हूं गुर री आज्ञा विण चेलो किम करूं रे, हूं दिख्या देसूं पूछी गुर ने जाय॥

१. लय—श्री जिनवर गणघर मुनिवर।

२२२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ उ गुर रा गुण सुणनै बिलखो हुवे, ओगुण सुणें तो हरष थाय।
एहवा अभिमानी अवनीत तेहने, ओलखाउं भवजीवां ने इणन्याय॥
- १५ कोई प्रतनीक अवगुण बोले गुर तणा, अवनीत गुरद्रोही पासे आय।
तो उत्तर पड़उत्तर न दे तेहने, अभितर में मन रलीयायत थाय॥
- १६ प्रतनीक अवगुण बोले तेहनीं, जो आवे उण रे पूरी परतीत।
तो अवनीत एकठ करे उण सूं घणी, उ गुर रा अवगुण बोले विपरीत॥
- १७ बले करे अभिमानी गुर सूं बरोबरी, तिणरे प्रबल अविनो नै अभिमान।
उ जद तद टोळा में आछो नहीं, ज्यूं बिगड़्यो बिगाड़े सड़ियो पान।
- १८ उ खिण मांहे रंग विरंग करतो थको, बले गुर सूं पिण जाए खिण में रूस।
जब गूंथे अज्ञानी कूड़ा गूंथणा, ओर अवनीत सूं मिलण री मन हूस॥
- १९ जो अवनीत ने अवनीत भेळा हुवे, तो मिल-मिल करे अज्ञानी गूझ।
क्रोध रे वस गुर री करे असातना, पिण आपो नहीं खोजे मूढ़ अबूझ॥
- २० जो अवनीत अवनीत सूं एकठ करे, ते पिण थोड़ा में बिखर जाय।
त्यारे क्रोध अहंकार ने लोळपणो घणो, ते तो साधां में केम खटाय॥
- २१ उण ने छोटां ने छांदे चलावण तणी, ते पिण अकल नहीं घट मांय।
बड़ा ने छांदे चाल सके नहीं, तिण रा दुःख मांहे दिन जाय॥
- २२ पुस्तक वस्त्र पाना ने पातरा, इत्यादिक साधू रा उपध अनेक।
गुर ओर साधां ने देता देखने, तो गुर सूं पिण राखे मूर्ख धेष
- २३ जब करै मांहोमां खेदो ईसको, बले बांछे उत्तम साधां री घात।
तिण जन्म बिगाड़्यो करे कदागरो रे, करै मांहोमा मन भांगण री बात॥
- २४ एहवा अभिमानी ने अवनीत ने अवनीत री, करे भोळा भारीकर्मा परतीत।
उण रा लखण परिणाम कह्य छै पाड़वा, कोइ चतुर अटकल सी तिणरी रीत॥

एहवा अवनीत रा लषण कह्य छै तथा पेंतालीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—“टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे बारे पड़े तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मात्र ओगुण बोलण रा त्याग छै। यांरी अंस मात्र शंका पड़े आसता उत्तरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै, टोळा मां सूं फार ने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे नै बारे निकळ्यां पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटे ज्यूं बोलण ना त्याग छै। इम पेंतालीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्त्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवे सो उत्तरती बात करे, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥

इति 'दशवैकालिक' में कब्बो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराध्या इहभव
में परभव में सुख कित्थाणं हुवे ।

ए हाजरी नीं स्थापना रची संवत् १९ से १० रा वर्शे जेठ विद १०
वार मंगल बषतगढ़ मध्ये ।

आठवीं हाजरी

संवत् १८४५ रे बरस भीखणजी स्वामी मरजादा बांधी—जे कोइ सरधा रो आचार रो सूतर रो अथवा कल्प रा बोल री समझ न पड़े तो गुर तथा भणणहार साधू कहे ते मान लेणो। नहीं तो केवळी न भळावणो पिण और साधु रे संका घालने मन भांगणो नहीं। एहवू कह्यो।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—“कोई सरधा आचार नो नवो बोल नीकळे तो बड़ा सूं चरचणो, पिण ओरां सूं न चरचणो। ओरां सूं चरच ने ओरां रे संका घालणी नहीं। बड़ा जाब देवे आपरे हिये बेसे तो मान लेणो, नहीं बेसे तो केवळी ने भळावणो पिण टोळा मांहे भेद पाड़णो नहीं, एहवो कह्यो।

तथा गुणसठा रा लिखत में पिण कह्यो—किण ही ने दोष भ्यास जाय तो बुधवन्त साधु री प्रतीत कर लेणी पिण खांच करणी नहीं, इम अनेक ठामें सरधा आचार रो बोल चरचणों बरज्यो। गुरु तथा बुधवंत साधु कहे ते मान लेणो कह्यो। गुरां री प्रतीत राखणी कही। तथा मांहोमांहि जिलो पिण अनेक लिखत जोड़ में बरज्यो छै। रास में पिण ‘गुरु सुकावे तो उभो सूके’ इहा पिण जिला ने निषेध्यो छै तथा पेंताळीसा रा लिखत में पिण एहवू कह्यो—साधां रा मन भांगने आपरे जिले करे ते तो महाभारीकर्मो जाणवो। विश्वासघाती जाणवो। एहवी घात पावड़ी करे ते तो अनंत संसार नी साइ छै, इण मरजादा प्रमाणे चालणी नावे तिण ने संलेखणा मंडणो सिरे छै।

तथा चंद्रभाणजी तिलोकचन्दजी नो जिलो जाणने टोला बारे किया, एहवो सेंतीसा रा लिखत में कह्यो—तिलोकचन्दजी चन्द्रभाण ने विस्वासघाती जाणया सुखांजी आश्री दगाबाजी करता जाणया। गुरदोही जाणया। टोळा मांहे भेद रा पाड़णहार जाणया, धर्म आचार्य ने साधु-साधवियां रा अवगुण रा बोलणहार जाणया। धर्म आचार्य री खिष्टी रा करणहार जाणया। धर्म आचार्य ने साधु-साधवियां ऊपर मिथ्यात पड़िवज्यो जाणया। धर्म आचार्य आदि देइ ने साधु-साधवियां रा छिद्रपेही छिद्रनां गवेषणहार जाणया। उपसम्या कळह रा उदीरणहार जाणया। आलोइ पडिकमी ने सुद्ध हुवा त्यां बातां रा उदीरणहार जाणया। साधु-साधवियां ने मांहोमां कळह रा लगावणहार जाणया। गुरु सूं सनसुख ने बेमुख करता जाणया। टोळा मांहे छाने २ साधु-साधवियां ने आपणा करणा मांड्या जाणया। गुरु सूं फटाय ने आपणा करणा मांड्या जाणया। धर्म आचार्य आदि देइ ने साधु साधवियां माथे अनेक विध आळ ना देणहार जाणया। टोळा मांहिने दगाबाजी करता जाणया। मांहोमां मिलने एको कीधो ने एको करता जाणया। आप सूं मिलियो चाले तिण री पषपात करता जाणया। ओरा ने निषेदता मांडता जाणया। आहमी साहमी सापांदूती कर २ मांहोमां मन भागणां मांड्या जाणया। बले अहंकारी अवनीत

घणा जाण्या! अपछंदा पिण घणा जाण्या। यां रा अनेक छळ छिद्र रो लखाव पड़्यो जाण्यो, जद टोळा बारे काढ्या।” ए सर्व सेंतीसा रा लिखत में कढ्यो।

इम जिलो जाणने अवनीत जाणने बारे किया। इम जिला ने घणो निषेध्यो छै। ते माटे जिलो बांधण रा सर्व सर्व साध-साधवियां रे त्याग छै।

तथा पचासा रा वर्ष साधा रे मरजादा बांधी—“किण ही साध-साधवियां में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहिणो अथवा गुरां ने कहिणो ओरां ने न कहिणो। घणा दिन आडा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै। प्राछित रा धणी ने याद आवे तो प्राछित उण ने पिण लेणो नहीं लेवे तो उण ने मुसकळ छै।” एहवो पचासा रा लिखत में कढ्यो।

तथा बावना रे वरस आर्या रे मर्यादा बांधी छै—किण ही साध आर्या मांहे दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहिणो तथा गुरां ने कहिणो पिण ओरां ने कहिणो नहीं तथा विनीत अवनीत री चोपी में पिण एहवी गाथा कही छै—

१ दोष^१ देखे किण ही साध में, तो कहि देणो तिण ने एकंतो रे।
जो उ माने नहीं तो कहिणो गुरु कने, ते श्रावक छै बुधिवंतो रे॥
सुवनीत श्रावक एहवा॥

२ प्राछित दिराय ने सुद्ध करे, पिण न कहै ओरां पास।
ते श्रावक गिरवा गंभीर छै, वीर बखाण्यां तास॥

३ दोष रा धणी ने तो कहै नहीं, उणरा गुर ने पिण न कहै जाय।
और लोकां आगे कहितो फिरे, तिण री परतीत किण विध आय॥

इत्यादिक अनेक ठामे दोष रा धणी ने तथा गुरां ने कहिणो कढ्यो। पिण ओरां ने न कहणो एहवो कढ्यो। तथा घणा दिनां पछे न कहणो रास में बरज्यो छै। तथा साध सीखावणी ढाळ रा दूहा में घणा दिनां पछे दोष कहै तिण ने अपछंदो कढ्यो, निरलज कढ्यो, नागडो कढ्यो, मर्यादा रो लोपणहार कढ्यो, कषाय दुष्ट आत्मा रो धणी कढ्यो छै।

तथा बावना रे वरस आर्या रे मरजादा बांधी, तिण में एहवो कह्यो—“किण ही आर्या दोष जाणने सेव्यो हुवे तो पाना में लिखियां विना विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्या न लिखे तो और आर्या ने कहिणो, सायद करने पछे पिण वेगो लिखणो। पिण विना लिख्यां रहणो नहीं। किण ही आर्या आज पछे अजोगाइ कीधी तो प्रायछित तो देणो पिण उण ने च्यार तीर्थ में हेलणी निंदणी पड़सी। पछे कहोला म्हाने भांडे छै, मांहेरो फितूरो करे छै। तिण सूं पहिलाइज सावधानरहिजो। अने सावधान न रही तो लोकां में भूडी दीसोला। पछे कहोला म्हाने कढ्यो नहीं, कोइ साध-साधव्यां रा अवगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहिणो—‘स्वामीजी ने कहिजो’ एहवो बावनां रा लिखत में कढ्यो।

१. लय—चन्द्रगुप्त राजा सुणो।

तथा संवत् १८५९ रे वरस साध-साधवियां रे घृत, दूध दही आदि खावा री मर्यादा बांधी, तिण लिखत में एहवो कब्बो—आगन्या विण सेषे काळ चोमासो रहे तिण रे जितरा दिन पांचोइ विगै ने सूखरी रा त्याग छै, ए सूंस जावजीव ताई छै।

तथा संवत् १८५९ रा लिखत में कब्बो—“कदा कर्म धकौ दीधां टोळा सूं टळे तो उण रे टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा अनंत सिद्धां री ने पांचोइ पदां री आण छै। पांचोइ पदां री साख सू पचखाण छै। किण ही साध-साधव्यां री संका परै ज्यूं बोलण रा पचखाण छै। कदा उ विटळ होय सूंस भांगे तो ही हलुकर्मी न्यायवादी तो न माने। उण सरीषो विटळ कोई माने तो लेखा में नहीं।

तथा इमहिज संवत् १८५० रा वर्स में कब्बो—टोळा सूं टळने किण ही साध-साधव्यां रा अवगुण बोलण रा, हुंतो अणहुंतो खूंचणो काढ़ण रा त्याग छै। रहिसेर लोकां रे संका धालने आसता उतारण रा त्याग छै”। एहवो पचासा रा लिखत में कब्बो।

तथा संवत् १८४५ रा लिखत में कब्बो—“उण ने साधु किम जाणिये जो एकलो वेण री सरधा हुवे, इसडी सरधा धारने टोळा माहिं बेठो रहे छै माहरी इच्छा आवसी तो माहिं रहिसूं, म्हारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसूं, इसडी सरधा सूं टोळा माहिं रहें ते तो निश्चें असाध छै। साधपणो सरधे तो पहला गुणठाणां रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं माहिं रहे तिण ने माहिं राखे जाणने त्याने पिण महादोष छै। कदाच टोळा माहिं दोष जाणे तो टोळा माहिं रहिणो नहीं। एकलो होय न सलैषणा करणी। वेगो आत्मा रो सुधारो हुवे ज्यूं करणो। आ सरधा हुवे तो टोळा माहिं राखणो। गाळागोळी करने रहे तो राखणो नहीं। उत्तर देणो, बारे काढ़ देणो, पछे इ आळ दे नीकळे तो किसा काम रो”—एहवो पेंताळीसा रा लिखत में कब्बो।

तथा संवत् १८५९ रा वरस लिखत में कब्बो—“टोळा माहिं सूं टळें तो टोळा माहिं उपगण करे ते, पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावा रा त्याग छै। अनन्ता सिद्धां री साख करने छै। टोळा सू न्यारो हुवे इण सरधा रा बाई भाई हुवे त्यां रहिणो नहीं। एक बाई भाई हुवे तिहां रहिणो नहीं। वाटें वहितो एक रात कारण पड़िया रहे तो पांचू विगै ने सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनन्ता सिद्धां री साख करने छै” ए गुणसठा रा लिखत में कब्बो। तथा अवनीत रा लषण वनीत अवनीत री ढाल में ओळषाया ते गाथा—

- १ उ गुर रा पिण गुण सुणने विलषो हुवे रे, अवगुण सुणे तो हरषत थाय रे।
एहवा अभिमानी अवनीत तेहने रे, ओळषावूं भव जीवा ने इण न्याय रे॥
अवनीत भारीकर्मा एहवा रे॥
- २ कोई प्रतनीक अवगुण बोले गुर तणा, अवनीत गुरद्रोही पासे आय।
तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने, अभितर में मन रलियायत थाय॥
- ३ उ खिण माहिं रंग विरंग करतो थको, बली गुर सूं पिण जाए खिण में रूस।
जब गूंथे अज्ञानी कूड़ा गूंथणां, ओर अवनीत सूं मिलवा री मन हूस॥

१. लय—श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे।

इत्यादिक अवनीत रा लखण ओळखाया तथा अवनीत ने वधारणो नहीं कृतघनी कीथा उपगार नो अजाण, तिण ने हरामखोर लूणहरामी सांमद्रोही री उपमा दीधी ते वनीत ने सामधर्मी नी उपमा दीधी छै, ढाळ में दृष्टांत सहीत कही ते गाथा—

- १ ऊंदर ऊपर मनकी त्रापी जाण, जब जोगी उंदर री अणकंपा आण।
तिण जोगी मंत्र पढ़ ततकाल, उंदरा ने कीयो गोधड़^२ विकराल॥
- २ जब मिनकी नाठी गोधड़ ने देख गोघड़ देखने त्राप्यो स्वान विशेष।
जोगी गोघड़ नी कुरणा^३ लीध, कुत्तो सिकारी ततक्षिण कीध॥
- ३ अहो कर्म गति इधकी देष, जोगी मोह्यो राग विशेष।
स्वान देखी चीतो त्राप्यो आय, जब स्वान ने जोगी सिंघ कीधो ताय॥
- ४ जब चीतो नाठो सिंघ री देख हाक, सीकंप हुवो पड़ी मन में धाक।
हिचे तिण सिंघ ने भूख लागी छै ताम, तिण जोगी ने खावा उठ्यो तिण ठाम॥
- ५ जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच उदर री जात।
इण री मिनकी^४ करती अकाले घात, ते महे बचाय लियो साख्यात॥
- ६ माहरो उपगार कियो न गिण्यो तिल मात, म्हारी उळ्ठी मांडी करवा घात॥
महे नीच उंदर ने उंचो लियो, सिंघ नी पदवी दे ने मोटो कियो॥
- ७ नीच ने वधारया आछो हुवे नांहि, ते भाख्यो छै नीत सास्त्र मांहि।
तो इण ने पाछो ऊंदर करूं मंत्र राल, सिंघ ने उंदर कियो ततकाळ॥
- ८ ते उंदर जाबक हुवो अनाथ, तिणरी मिनकी बले करवा मांडी घात।
जोगी देख अणकंपा कीधी नांहि, किरतघन मूवो ते बिल रे मांहि॥
- ९ ज्यू नीच ने ऊंच पदवी जीरवे नांहि, जोय देखो लोकिक लोकोत्तर मांहि।
किण ही राय वधारया अमराव^५ दोय, बले किया पदवी धर मोटा सोय॥
- १० यां में एक तो सामधर्मी सुवनीत, बले राजनीत जाणे सर्व रीत।
तिण सूं राय रूठो किणवार, पटो उतार काढ्यो देश बार॥
- ११ जब राय उपर इण न कर्यो रोस, जाण लियो निज कर्म रो दोष।
अळगो रहे तो ही माने कियो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार॥
- १२ कदा राजा ने भीड़ पड़ी सुण कान, भीड़ी आयो लेई साथ समान।
बले मुख सूं कहै माहरां सिरधणी^६ आप, सारो दीसे ते आप तणो परताप॥
- १३ इम सुण ने तिण सूं रीज्यो राय, आगे विचे इ घणो वधारयो ताय।
बले घणो वधारयो तिण रो मान, आगेवाण कियो सगली ठाण॥

१. लय—महे तो भार लियो ४. बिल्ली।

२. वन- विलाव।

५. जागीरदार विशेष।

३. दया, करुणा।

६. मालिक।

२२८ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ बीजो हरामखोर लूणहराम, सामद्रोही रा दुष्ट परिणाम।
तिण सूं पिण राय रूठो किणवार, तिण रो पटो उतार काद्यों देश बार॥
- १५ जब उ दोरा करे बले करे उजाड़, राय तणा देश में करे बिगाड़।
फिर २ मारे बले नगर ने गांम, बले राय सूं सनमुख करे संग्राम॥
- १६ राजा सूं जुझ करे तांण ताण, देखो नीच वधाख्या रा औ फळ जाण।
ज्यां वधाख्यो त्यांसू इ मांड्यो गर्व, उपगार कीधो ते भूळ गयो सर्व॥
- १७ जब राजा अनेक करने उपाय, हरामखोर न कपड़ लियो ताय।
इण रा हाथ पाव कांन नाक ने काट, गाम दोळो फेर्यो गधे चाढ़॥
- १८ बले विविध प्रकारे दीधी मार, फिट-फिट हुवो लोक मझार।
ए तो लोकिक कह्यो दिष्टंत, हिवे लोकोत्तर सुणो मन षंत॥
- १९ एक आचार्य मोटा अणगार, दोय जणा सूं कियो उपगार।
त्यां ने समकम पमाय ने किया साध, बले ज्ञान भणाय ने करी छै समाध॥
- २० यां मे एक तो गुर भगता सुवनीत, तिण में असल साधू री रीत।
घणो भणे तो ही न करे मान, अवनीत री बात सुणे नहीं कान॥
- २१ तिण ने गुर करड़े वचने देवे सीख, तो पिण अविना साहमी न भरे वीखे।
बले गुर निषेदे वारूंवार, तो पिण न करे क्रोध लिगार।
- २२ गुर ने देखी करड़ी निजर करुर, तो पिण न बिगाड़े मुख नो नूर।
गुर राखे तो रहे गुर नी हजूर, गुर न राषे तो सुषे रहे दूर॥
- २३ सदा गुर सूं राखे सुध परिणाम, रात दिवस करे गुर रा गुण ग्राम।
याद आवे गुर नो कियो उपगार, ते तो कदेय न घाले विसार॥
- २४ एहवा गुणां करे कर्मां नो सोष, अनुक्रमे पांमे अविचल मोष।
एहवा ऊंच जीव ऊंच पदवी लही, त्यां रा सुषां रो कोई पार नहीं॥
- २५ दूजा वनीत री ऊंधी रीत, जो घणो भणे तो घणो अवनीत।
गुर सूं पिण यो करे अभिमान, ओर अवनीत ने लगावे कांन॥
- २६ तिण नै गुरुं सीख देवे चूको देष, तो तुरत जागे अवनीत ने धेष।
घणो छेड़वे तो करे बिगाड़, क्रोध करे ने होय जाऔ न्यार॥
- २७ बले दूजो अविनीत हुवै टोळा मांय, तिण ने पिण देवे भरमाय।
गुर सूं मन भागे कूड़ी कर २ बात, तिण अवनीत ने ले जावे साथ॥
- २८ गुर ना अवगुण बोळै दिन रात, संका पिण नार्णे तिल मात॥
अवनीत वधाख्या अति ही मिथ्यात, झूठी कर २ मुख सूं बात॥

- २९ टोळा ने गुर सूं जागे वेर, अविनीत हुवै छै एहवा गेर।
 केयक एहवा हुवे अवनीत, त्यां ने छेड़वियां बोले विपरीत॥
- ३० ते फिट २ हुवे इहलोक मझार, आगे नरक निगोद में खाए मार॥
 घणो भ्रमण करे संसार मझार, तेह नो कहितां नावे पार॥
- ३१ नीच ने वधास्या आछो नांहि, ज्यूं अविनीत जाण लेजो मन मांहि।
 इम सांभळ ने उत्तम नरनार, अवनीत ने नीच नो संग निवार॥

इहा वनीत तथा अवनीत रा लखण ओळखाया ते उत्तम जीव सांभळी ने अवगुण छोड़े।
 गुण आदरे। नीच अवनीत ने वधारणो नहीं, तिण की संगत न करणी।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—“टोळा मांहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारे परे तो
 टोळा रा साधु-साधवियां रा अंसमात्र अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै, यां रा अंस मात्र संका पड़े
 आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सूं फार साथे ले जावा रा त्याग छै। ओगुण
 बोलण रा त्याग छै। मांहोमांहि मन फटे ज्यूं बोलण रा त्याग छै।” इम पैताळीसा रा लिखत में
 कह्यो। ते भणी सासण री गुणात्कीर्त्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती करे, तथा
 भागहीण सुणे तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण, तिणने तीर्थकर नो चोर कहणो,
 हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्थ वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

• इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां
 इहभव परभव में सुख कल्याण हुवे।

नवमी हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्त पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईय्या भाषा एषणा में सावचेत रहणों। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करीने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजतां परठतां सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रकट कीधी—विरत धर्म, अविरत ते अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

संवत् १८४५ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी—सरधा आचार रो तथा कल्प रा सुतर रो बोल री समझ न पड़े तो गुरु तथा भणणहार साधू कहे ते मानणों न वेसै तो केवळ्यां ने भळावणों कह्यो। इमहीज पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—सरधा आचार रो बोल बड़ा सूं चरचणों, बड़ा कहे ते मान लेणो पिण ओरां सूं चरच ने संका घालणी नहीं, एहवो कह्यो।

तथा पेंताळीसा रा लिखत में कह्यो—साधां रा मन भांग ने आप रे जिले करे ते तो महाभारीकर्मो कह्यो तथा ओर लिखत में रास में पिण जिलो बांधणो निषेध्यो छै तथा बावना रे वर्ष आय्यां ने मर्यादा बांधी तिण में पिण कह्यो—किण ही साध आय्यां मांहे दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो के गुरां ने कहणो, पिण ओर ने कहणो नहीं। किण ही आय्यां दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना में लिखिया विना विगै तरकारी खांणी नही, कदाच कारण पड़्या न लिखे तो ओर आय्यां ने कहणो, सायव करने पछे पिण वेगो लिखणो पिण विनां लिख्यां रहणो नहीं, आय ने गुरां ने मूहढा सूं कहणो नहीं, मांहेमां अजोग भाषा बोलणी नही, कोइ साध-साधवियां रा अवगुण काढ़े तो सांभळवा रा त्याग छै, इतरो कहिणो—स्वामी जी ने कहिजो तथा पचासा रा लिखत में एहवो कह्यो—किण ही साध आय्यां में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो अथवा गुरां ने कहणो पिण ओरां ने न कहिणो, घणा दिन आडा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहिज छै तथा विनीत अक्नीत री चोपी में पिण एहवी गांथा कही—

१ दोष देखे किण ही साध में, कहि देणो तिण नै एकंतो रे।

उ माने नहीं तो कहणो गुरु कर्ने, ते श्रावक छै बुधिवंतो रे॥

सुवनीत श्रावक एहवा।

- २ प्राछित दिराय ने सुध करे, पिण न कहे ओरां पास।
ते श्रावक गिरवा गंभीर छै, बीर वखाण्या तास॥
- ३ दोष रा धणी ने तो कहे नही, उण रा गुर ने पिण नहीं कहे जाय।
ओरा लोकां आगे कहितो फिरे, तिण री परतीत किण विध आय॥

इत्यादिक घणां दिनां पछे दोष न कहिणो रास में कह्यो छै। तथा 'साध सीखामण' ढाळ रा दूहा में घणा दिन हुवां पछे दोष कहे तिण ने अपछंदो कह्यो, निरलज कह्यो, नागडो कह्यो, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो, कषाड दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आर्य्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—गृहस्थ आगे टोळा रा साध आर्य्या री निंदा करे तिण ने घणी अजोग जाणणी। तिण ने एक मास पांचूं विगै रा त्याग छै। जितरी बार करे जितरा मास पांचूं विगै रा त्याग तथा तूंकारो काढ़े तूं सूसां री भागळ तूं झूठाबोली, इत्यादिक रो प्राछित कह्यो ते पाळणो तथा साधां ने आय ने कहणो। गुर देवे ते लेणो, एहवो चोतीसा रा लिखत में कह्यो। उसभ उदे टोळा बारे नीकळ्या तिण ने साध सरधणो नहीं, च्यार तीर्थ में गिणणो नहीं, एहवा ने वादे पूजे तिके पिण आज्ञा बारे छै।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—कर्म धको दीधां टोळा सूं टळे तो टोळा रा साध साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा ने असाध सरध ने नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में पिण इमहीज कह्यो—टोळा बारे नीकळी एक रात उपरंत सरधा रा क्षेत्रां में रहिवा रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करे ते परत पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—पेला रा दोष धारने भेळा करे ते तो एकंत मिरषावादी अन्याइ छै। किण ने ही क्षेत्र काचो बताया किण ही ने कपड़ादिक मोटो दीधो इत्यादिक कारणे कषाय उठे जद गुरवादिक री निंदा करण रा अवर्णवाद, बोलण रा एक आगे बोलण रा मांहोमां मिल-मिल जितो बांधण रा त्याग छै, अनंता सिद्धां री आण छै। गुरवादिक रे आगे भेळो तो आप रे मुतळब रहे पछै आहारादिक घणा थोड़ा रो कपड़ादिक रो नाम लेई ने अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। इम इत्यादिक घणे ठामें कह्यो छै, ते माटे अवनीतपणो छोड़े, अने मर्यादा सुध पाळे, आखी उमर ताई तन मन सूं सेवा भक्ति करे आछी तरे सूं पूर्व उपगार लेखवी ने संजम सम्यक्त रा दाता जाणी ने विनय में प्रवर्ते। तथा ठाणांअंग ठाणे तीजे तीनां सूं उरण हुवे तेहं समास नी ढाळ भीखणजी, स्वामी कीधी तेह मांहे सिष्य गुरां सूं उरण हुवे ते मांहिली केयक गाथा—

- १ 'जो गुर भगता सिख सुवनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत।
ए ठाणां अंग सूत्र रे मांय, तीजे ठाणे कह्यो जिनराय॥
- २ गुर कीधो भारी उपगार, उताख्यो संसार थी पार।
कियो मुगत तणो अधिकारी, त्यां ने किण विध घाळे विसारी॥

१. लय—विनै रा भाव सुण-सुण गूंजे।

२३२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ३ रात दिवस गुर रो ध्यान ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे।
गुर कीधो उपगार बतावे, गुर रा गुण किण विध गावे॥
- ४ गुर मोसुं कियो उपगार, ज्ञानादिक गुण रा दातार।
हुं तो हूंतो जीव अज्ञानी, मोने सतगुर कीधो ग्यानी॥
- ५ हुं तो अनाद काळ रो मिथ्याती, हिंस्या धर्म तणो पखपाती।
ते माहरी सरधा खोटी छोड़ाय, गुर सम्यक्त दे आण्यो ठाय॥
- ६ हूं खूतो थो संसार मझार, जब हूं सेवतो पाप अठार।
मोने दिष्या दे गुर कियो साध, म्हारी भव-भव मेटी असमाध॥
- ७ हूं डूबो इण संसार रे मांहि, गुर बारे काढ़्यो बांह समांहि।
साध श्रावक धर्म पमायो, त्यां सूं ऊरण किणविध थायो॥
- ८ हूं अनंत संसारी जीव थो भारी, मोने गुर कियो परत संसारी।
हूं दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोने सुलभ बोधी कियो सरळो॥
- ९ हूं तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार रा छेहड़ा रहीत।
गुर चरम करे सिर चाढ़्यो, म्हांरा संसार रो छेहड़ो काढ़्यो॥
- १० मोने गुर कियो मुगति नजीक, इंद्रां नो पिण कियो पुजनीक।
म्हारो जीतब जन्म सुधार्यो, मोने संसार थी पार उतार्यो॥
- ११ सिख सुवनीत हलुकर्मी होवे, ते गुर रा उपगार सांहमों जोवे।
जिण आगम सीषामण धारी, हिवे कुण-कुण करे विचारी॥
- १२ कोइ पटो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे।
ते पिण विनो करे जोड़ी हाथ, बले लेषवे सिर धणीनाथ॥
- १३ तिण ने करडी 'मूम धणी मेले, ते पिण धणी रो वचन न ठेले।
मर जावे तिण रा मूढ़ा आगे, धणी मेल पाछो नहीं भागे॥
- १४ तिण धणी रो पिण काचो आधार, थोड़ा में देवे पटो उतार।
बले काढ़ दे देस रे बार, कदा जीवां पिण न्हाषे मार॥
- १५ तिण धणी रो पिण वचन न लोपे, मरणे सांहमो मंडे पग रोपे।
जाणे आउं धणी रे काम, तो हूं नहीं होवूं लूणहराम॥
- १६ रिजक रोटी पटा रे काजे, मर जाए पिण पाछो नहीं भाजे।
तो हूं मुगत जावा रे काज, पंडित मरण करतो नाणुं लाज॥
- १७ गुर शिष ने मुगत गामी कीधो, मोष रो पटो अवचल दीधो॥
दलद्र दियो दूर गमाय, ग्यांन दरसन चारित तप पमाय॥

१८ जो उ शिष हुवे सुवनीत, गुर री आज्ञा पाले रूढ़ी रीत ।

ते गुर रो वचन किण विध लोपे, मरणां सांहमो तुरत पग रोपे ॥

एहवा वनीत रा गुण कह्या। ते विनीत कीधा उपगार रो जाण तिण ने वखाण्यो। तिण सूं विनीत ते गुर री आज्ञा अखण्ड पाळे। आखी उमर मुरजी प्रमाणे प्रवर्ते। गुर बांधी मर्यादा सर्व चोखीपाळे।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—“टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साधु-साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंसमात्र संका पड़े आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मांहे सूं फारने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे ने बारे नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहो मां मन फटें ज्यूं बोलण रा त्याग छै।” इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती बात करे, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भाग-हीण। तिण ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूर्यंति, जेण जाणंति तारिसं ॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध

आराध्यां इहभव परभव में सुख किल्याण हुवे।

एह हाजरी रची, संवत् १९१० रा जेष्ठ विध ५ वार

बुध बखतगढ़ मध्ये देश मालवा में।

दसवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करीने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजतां परठतां सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रकट कीधी—विरत धर्म, अविरत ते अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंधे ते राग, मरणो बंधे ते द्वेष, तिरणो बंधे ते वीतराग नो मार्ग छै।

तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी। संवत् १८५० रे वरस भीखणजी स्वामी साधां रे मर्यादा बांधी—“किण ही साध आय्यां में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो तथा गुरां ने कहिणो, पिण ओरां ने न कहिणो। घणा दिन आडा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा संवत् १८५२ वरस आय्यां रे मरजादा बांधी, तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आय्यां में दोष हुवे तो दोष रा धणी ने कहिणो, तथा गुरां ने कहिणो और किण ही आगे नहीं। रहिसे रहिसे और भूंडी जाणो ज्यूं कहणो नहीं। किण ही आय्यां दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना में लिखिया बिना विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्यां न लिखे तो ओर आय्यां ने कहिणो। सायद करने पछे पिण वेगो लिखणो। पिण बिना लिख्यां रहिणो नहीं, आय ने गुरां नै मूहदा सूं कहणो नहीं। मांहोमां अजोग भाषा बोलणी नहीं। जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवे तो रहिजो। पिण टोळा बारे हुवां पछे टोळा रा साध साधव्यां रा अवगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख करने त्याग छै। कोई साध साधव्यां रा ओगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो—‘स्वामीजी ने कहिजो, ए बावनारा लिखत में कह्यो।

तथा पचासा रे वरस साधां रे लिखत कीधो, तिण में एहवो कह्यो—“किण ही साध साधव्यां रा ओगुण बोलने किण ही ने फारने मन भांगने खोटा सरधावा रा त्याग छै। किण ही सूं साधपणो पळतो दीसे नहीं, अथवा सभाव किण सूं इ मिलतो दीसे नहीं, अथवा कषाई धेंटो जाणने कोइ न राखे अथवा खेत्र आछो न बतायां अथवा कपड़ादिक रे कारणें अथवा अजोग जाण ओर साधु गण सूं दूरो करे अथवा आपने गण सूं दूरो करतो जाणने इत्यादिक अनेक कारण उपने टोळा सूं न्यारो पड़े तो किण ही साध-साधवियां रा ओगुण बोलण रा हूंतो अणहूंतो खूंचणो काढ़ण रा त्याग छै।

तथा जिलो न बांधणो, संवत् १८४५ रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांगने आपरे जिले करें ते तो महाभारीकर्मो जाणवो, विस्वासघाती जाणवो, इसडी

घात पावड़ी करे ते तो अनंत संसार नी साइ छै। रोगिया वचे तो सभाव रा अजोग ने मांहे राखे ते भूंडो छै। या बोलां री मर्यादा बांधी ते चोखी पाळणी, लोपवा रा अनंता सिद्धां री साख करने पचखांण छै। ए पचखांण पाळण रा परिणाम हुवे तो आरे हुयज्यो। बिनै मार्ग चालण रा परिणाम हुवे गुरु ने रीझावणा हुवे ठागा सूं टोळा मांहि रहिणो न छै। तथा पचासा रा लिखत में तथा रास में जिला ने घणो निषेध्यो छै, ते माटे जिलो बांधवा रा त्याग छै।

तथा चोतीसा रा लिखत में आय्या रे मर्यादा बांधी ते कहे छै—टोळा सूं छूटक हुवां री बात माने त्याने मूरख कहीजे, चोर कहीजे, अनेक अनेक सूंस करण ने त्यारी हुवे तो ही उत्तम जीव न माने एहवो कह्यो।

तथा ५०सा रे लिखत में मर्यादा बांधी “दोष कोई ग्रहस्थ कहे जिण ने यूं कहणो—म्हाने क्याने कहो, के तो धणी ने कहो, के स्वामी जी ने कहो, ज्यूं यां ने प्राछित दिराय ने सुद्ध करे, नहीं कहो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छो। जो स्वामी जी ने न कहिसो तो थां में पिण बांक छै। ये माने कह्या कांइ हुवें, यूं कहिने न्यारो हुवे पिण आप वेदा में क्याने परे। पेला रा दोष धारने भेळा करे ते तो एकंत मरषावादी अन्याइ छै। किण ही ने खेत्र काचो बतायां, किण ही ने कपड़ादिक मोटो दीधा, इत्यादिक कारणे कषाय उठे जद गुरवादिक री निंदा करण रा अवरणवाद बोलण रा एक एक आगे बोलण रा मांहो मांहि मिलने जिलो बांधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री आंण छै। डाहा हुवे ते विचार जोयजो। लुखे खेत्र तो उपगार हुवे तो ही न रहे, आछे खेत्र उपगार देखे नहीं तो इ पर रहे, ते यूं करणो नहीं, चोमासो तो अवसर देखे तो रहिणो, पिण शेषे काल तो रहणोहीज। किण ही री खावा पीवादिक री संका पड़े तो उण ने साध कहे, बड़ा कहे ज्यूं करणो, दोय जणा तो विचरे ने आछा-आछा मोटा-मोटा साताकारिया खेत्र लोळपी थका जोवता फिरे गुर राखे तठें न रहे। इम करणो नहीं छै, घणा भेळा रहितो दुखी, दोय जणां में सुखी, लोळपी थको यूं करणो नहीं छै, ए सर्व पचासा रा लिखत में कह्यो छै।

तथा चोतीसा रे वर्ष आय्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—ग्रहस्थ आगे टोळा रा साध आय्या री निंदा करे तिण ने घणी अजोग जाणणी, तिण ने एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। तथा तूंकारो काढ़े तूं सूंसां री भागल तूं झूठाबोली इत्यादिक रो प्राछित कह्यो ते पाळणो। तथा साधां ने आय ने कहणो। गुर देवे ते दंड लेणो। एहवो चोतीसा रा लिखत में कह्यो, तथा घणा दिन पछे दोष कहे तिण ने ‘साध सीखामणी’ रा दूहा में अपछंदो कह्यो। निरलज कह्यो, नागड़ो कह्यो। मर्यादा रो लोपणहार कह्यो। तिण री बात मूळ मानणी नहीं। एहवो कह्यो। तथा घणा दिना पछे दोष कहे तिण टाळोकर ने रास में घणो निषेध्यो ते गाथा—

- १ १अवगुण सुण-सुण ने समद्विष्टी, यां ने जाणे धर्म सूं भिष्टी।
यां रा बोल्यां री परतीत नाणे, झूठ में झूठ बोलतो जाणे॥
- २ सगळा श्रावक सरीषा नांहि, अकल जुदी-जुदी घट मांहि।
समद्विष्टी री साची हुवे दृष्ट, यां ने करे थोडा मांहे खिष्ट॥
- ३ यां ने न्याय सूं देवे जाब, पाडे घणा लोकां मांहे आब।
यां री मूल न आणे संक, यां ने देखाड दे यांरो बंक॥
- ४ थे घणा दोष कहो गुरु मांहि, घणां वरसां रा जाणां छो ताहि।
तो थे पिण साधू किम थाय, जाण-जाण भेला रह्या मांय॥
- ५ जो यां में दोष घणां छै अनेक, कदा दोष नहीं छै एक।
ते तो केवळ ज्ञानी रह्य देख, पिण थे तो बूडा लेइ भेष॥
- ६ जो यां मे दोष कह्या थे साचा, तो ही थे तो निश्चे नहीं आछा।
जो झूठा कह्या तो विशेष भूडा, थे तो दोनूं प्रकारे बूडा॥
- ७ थे दोषीला ने वाद्यां कहो पाप, भेळा रह्या पिण कहो संताप।
दोषीला ने देवे आहार पाणी, वले उपधादिक देवे आणी॥
- ८ हर कोइ वस्तु देवे आण, करे विनो वैयावच जाण।
दोषीला सूं थे कियो संभोग, तिण रा पिण जाणजो माठा जोग॥
- ९ इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिण ने पाप कह्यो छै एकंत।
ए थे जाण-जाण किया काम, ते पिण घणां वरसा लग ताम॥
- १० घणां वरस किया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो धर्म।
निरंतर दोष सेवण लागा, हुआ व्रत बिहूणा नागा॥
- ११ थे कियो अकारज मोटो, छाने-छाने चलायो षोटो।
थे तो बांध्यां करमा रा जाळो, आत्मा ने लगायो काळो॥
- १२ थे गुर ने निश्चे जाण्यां असाध, त्यां ने वाद्यां जाणी असमाध।
त्यां रा हिज वांधा नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय॥
- १३ यां सूं कीधा थे बारे संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग।
सावज सेव्यो निरंतर जाण, थे पूरा मूढ़ अयाण॥
- १४ थे भण-भण ने पाना पोथा, चारित्र विण रह गया थोथा।
थे कहो अर्थ करां म्हे उंडा, थे भण-भण ने काय बूडा॥
- १५ थे विहार करता गांम-गांम, सिख सिखणी वधारण काम।
किण ने देता बंधो कराय, किण ने देता घर छोडाय॥

- १६ बले कर-कर गुर रा गुणग्राम, चढावता लोकां रा परिणाम।
बले थे गुर ने खोटा जाणता ताहि, ओरां ने क्यूं नाषता माहि॥
- १७ पोते पड़िया जाणो खाड़ मांय, तो ओरां ने नाषता किण न्याय।
ओरा ने डबोवण रो उपाय, जाण-जाण करता था ताय॥
- १८ पंच पद वंदन सीखावत ताह्यो, तिण में गुर रो नाम धरायो।
तिण गुर ने वंद्या जाणता पाप, ओरां ने कांय डबोया आप॥
- १९ ज्यूं नकटो नकटा हुवा चावे, उसभ उदै माठी मति आवे।
ज्यूं थे डूबता दोषीला मांहि, ज्यूं ओरां ने डबोवता ताहि॥
- २० ओरां सूं करता एहवो उपगार, थां रा भणिया रो ओहीज सार।
इसड़ो कूड़ कपट थे चलायो, थां रो छूटको किण विध थायो॥
- २१ जिण मार्ग में हुवा ठगो, थे दियो घणा ने दगो
ठग-ठग खाधा लोका रा माल, थां रो होसी कवण हवाल॥
- २२ आछी वसत हुंती घर मांहि, आहार पाणी कपड़ादिक ताहि।
थाने गुर जाण हरष सूं देता, सो थांरां नीकळ गया पेंता॥
- २३ म्हे थाने वांदता वारूंवार, जद म्हांने हुंतो हरष अपार।
थाने जाणता सुद्ध आचारी, थे तो छाने रह्या अणाचारी॥
- २४ म्हे थाने जाणता था पुरस मोटा, पिण थे तो नीकळिया खोटा।
म्हे थाने जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवड़िया असाध॥
- २५ थे जाण रह्या दोषीला मांह्यो, ठागा सूं थे काम चलायो।
थे जीतव जन्म बिगाड़्यो, नर नो भव निरथक हाख्यो॥
- २६ थे घणं दिनां रा कहो छो दोष, थां री बात दीसे छै फोक।
साच झूठ तो केवळी जाणे, छद्मस्थ प्रतीत नांणे॥
- २७ थे हेत मांहि तो दोषण ढंक्या, हेत तूटा कहता नही संक्या।
थांरी किम आवे परतीत, थां ने जाण लिया विपरीत॥
- २८ थे दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नही डरिया लिगार।
तो हिवे आळ देतो किम डरसी, थां री परतीत मूर्ख करसी॥
- २९ ए दोष क्यांने किया भेळा, थे क्यूं न कह्या तिण वेळा।
थां में साध तणी रीत हुवे तो, जिण दिन रो जिण दिन कहतो॥
- ३० थे दोषीला सूं कियो संभोग, थांरा वरत्या माठा जोग।
थांरी परतीत नावें म्हांने, थां रा दोष राख्या थे छाने॥
- ३१ थे तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग में चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुई मति बुध, हिवे प्राछित ले होय सुध॥

- ३२ उण री तो थारा कह्या सूं संक, पिण थे तो दोषीला निसंक।
इम कही उण ने धालणो कूड़ो, घणा बेठां देणी मुख धूड़ो॥
- ३३ ज्यूं कोइ बले न दूजी वार, किण रा दोष न ढांके लिगार।
दोष ढांक्या सूं हुवे सुवारी, टांको झलै तो अनंत संसारी॥
- ३४ संका सहित न राखे मांय, ओर साधु दोषीला न थाय।
दोषीला ने जाणी राखे मांय, तो सगला असाधु थाय॥
- ३५ इम कह्यां यां ने जाब न आवे, जब झूठी बात बणावे।
यां रा दोष न कह्या म्हें तो डरते, गुर सूं पिण लाजां मरते॥
- ३६ रखे करदे मोने टोळा बारे, मुदे तो ओहिज डर रह्यो म्हारे।
म्हे दोष सेव्यां यां रे कह्ये जाण, यां सेव्यां री न करी तांण॥
- ३७ कदे हूं दे तो दोष बताय, जब मारी देता बात उडाय।
मांहरी एकलां री आसंग न काय, तिण सूं रह्यो दोषीला मांय॥
- ३८ हिवै तो हुआ म्हे दोय, दोष सेवण न दां कोय।
इसड़ी जोम^१ री बातां बणावे, मन माने ज्यूं गोळा चलावै॥
- ३९ जब यां ने कहिणो एम, थारो साधपणो रह्यो केम।
थे तो डरता अकारज कीधो, तिणरो प्राछित पिण नहीं लीधो॥
- ४० कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थे डरता थका भर ल्यावत।
करावत पाप हर कोइ, तो थे डरता करता सोइ॥
- ४१ कदा गुर पिण भारी पाप करता, तो ही भेळा रहिता डरता।
भागळां मांहे रहता खूता, पिण एकला कदेय न हूंता॥
- ४२ इसड़ी थारी गीदड़ाइ, थे इज थारा मुख सूं बताइ।
इसड़ा प्राक्रम थां मांहे नावे, थारी आगा सूं परतीत ना आवे॥
- ४३ साधां ने डरतो मूल न रहणो, दोष देखे सताब सूं कहणो।
डरता न कह्या तो गीदड़ पूरा, हिवै किण विघ्न होस्यो सूरा॥
- ४४ एकला होयवा स्यूं डरते, दोष न कह्या थे लाजा मरते।
जो हिवै ढाकोला दोष अनेक, जाणे होय जावाला एक एक॥
- ४५ हिवै थां दोयां रे मांय, कोइ दोष दे अनेक लगाय।
तो पिण चावा^२ न करो लाजा मरता, एकला होण सूं बले डरता॥
- ४६ एकला होण सूं डरो दोइ, मांहोमां देसो दोष लकोइ।
या देख लीधी थारी रीत, हिवै जाबक नावै परतीत॥

- ४७ थारे तो मांहोमां दोष देख, हिवे तो थे ढाकसो विशेष।
 एकला होवण रो डर थाने, मांहोमां दोष राखसो छाने॥
- ४८ जो हिवै थे कहो म्हे न राखां छाने, तो हिवै बात थारी कुण माने।
 थे तो बेठा परतीत गमाय, थां री मूरख माने वाय॥
- ४९ किण ही चोर रो हुवो उघाड़ो, फिट-फिट हुवो लोक मझारो।
 घणां लोका जाणे लियो तास, पछे कुण करे तिण रो वेसास॥
- ५० ज्यूं थारो पिण हुवो उघाड़ो, दोषीला भेळा काढचो जमारो।
 परगट न कियो थे दोष, थे जन्म गमायो फोक॥

इम घणा दिनां पछै दोष कहे तिण ने भीखणजी स्वामी निवेध्यो छै। ते माटे टोळा माहै तथा बारै नीकळ्या घणां दिनां पछै दोष न कहणा। दोष रा धणी ने तुरत कहणो। पिण परपूठे ओर आगे न कहिणो।

पेंताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो— टोळा माहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साध साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंसमात्र संका पड़े आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सूं फारने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा माहै ने बारे पिण नीकळ्यां ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मनफटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पेंताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती करे, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण। तिण ने तीर्थकर रो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिरकार देणी—

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
 गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
 आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
 गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
 इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां
 इहभव परभव सुख कल्याण हुवे।

ए हाजरी रची सवत् १९१० जेठ विद ८ वार शुक्र बषतगढ में।

ग्यारहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहणो। आहार पाणी लेणो पड़े ते पकी पूछा करने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजतां परिठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड अराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रकट कीधी-विरतधर्म ने अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंधे ते राग, मरणो बंधे ते द्वेष, तिरणो बंधे ते वीतराग देवनो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

तथा संवत् १८४१ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी तिण में कह्यो-किण ही साध ने दोष लागे तो धणी ने सताब सूं कहणो, पिण दोष भेळा करणा नहीं। तथा संवत् १८५० रा लिखत में कह्यो किण ही साध-साधदियां रा ओगुण बोल ने किण ही ने फाड़ने मन भांग ने खोटा सरधावण रा त्याग छै। एहवो कह्यो तथा अनेक कारण उपने टोळा थी न्यारो पड़े तो किण ही साध-साधवियां रा ओगुण बोलण रा हुंतो अणहुंतो खूचणों काढण रा त्याग छै। रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घालने आसता उतारण रा त्याग छै, एहवो कह्यो। तथा किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहिणो अथवा गुरां ने कहिणो पिण ओरां ने न कहिणो घणां दिन आड़ा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहिज छै। तथा टोळा मांहे भेद पारणो नहीं। मांहोमां जिलो बांधणो नहीं! मिल-मिल ने टोळा सूं मन उचक्यो अथवा साधपणों पळे नहीं तो किण ही ने साथ ले जावण रा अनंता सिद्धां री साख करने पचखांण छै, एहवो कह्यो।

तथा संवत् १८५२ रे वर्स आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो-किण ही साध-साधवी में दोष देखे तो दोष रा धणी आगे कहणो के गुरां आगे कहणो के गुरां आगे कहणो पिण ओर किण ही आगे कहणो नहीं। किण ही आर्या दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना में लिखिया विनां विगै तरकारी खाणी नहीं। कदाच कारण पड़्यां न लिखे तो ओर आर्या ने कहणो। सायद करने पछे पिण वेगो लिखणो। जिण रा परिणाम टोळां मांहे रहिण रा हुवे ते रहिजो। पिण टोळा बारे हुआं पछे साध-साधव्यां रा अवगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख करने त्याग छै। बले करली-करली मरजादा बांधे त्या में पिण अनंता सिद्धां री साख करने ना कहिण रा त्याग छै। कोइ साध-साधवियां रा ओगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहिणो-‘स्वामी जी ने कहिजो’।

तथा चोतीसा रा लिखत में आर्या रे मरजादा बांधी तिण में कह्यो-टोळा रा साध आर्या री निंदा करे तिण ने घणो अजोग जाणणी, तिण रे एक मास पांचू विगै रा त्याग, जितरी वार करे जितरा मास पांचू विगै रा त्याग, जिण आर्या ने ओर आर्या साथे

मेल्यां ना न कहणो। साथे जाणो। न जाय तो पांचू विगै खात्वा रा त्याग न जाए जितरा दिन। बले ओर प्राछित जठा बारे। साधां रा मेलीया विना आय्यां ओर री ओर आय्यां साथे जाए तो जितरा दिन रहे जितरा दिन पांचू विगै रा त्याग। बले ओर भारी प्राछित जठा बारे। जिण आय्यां साथे मेल्यां तिण आय्यां भेली रहे, अथवा आय्यां मांहोमांहि सेषे काळ भेली रहे, अथवा चोमासे भेली रहे त्यां रा दोष हुवे तो साधां सुं भेळा हुआ कहि देणो न कहे तो उतरो ही प्रायछित उणने छै। टोळा सूं छूट न्यारी हुआ री बात माने त्यां ने मूर्ख कहीजे। त्यां ने चोर कहिजे, ए, सर्व संवत् १८३४ रा लिखत में कह्यो।

तथा पैताळीसा रा लिखत में जिलो बांधे तिण ने महाभारीकर्मो विसवासघाती कह्यो। तथा संवत् १८५० रा लिखत में तथा रास में जिले में घणो निषेध्यो छै, ते माटे जिलो बाधण रा जावजीव त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धको दियां टोळा बारे नीकळे तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंसमात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा अनंता सिद्धां री ने पांचोइ पंदां री आण छै, पांचूइ पंदां री साख सूं पचखाण छै। सरधा रा क्षेत्रा में एक राति उपरंत रहिणो नहीं। टोळा में पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावणा नहीं। तथा ‘साध सीखावणी’ ढाळ रा दूहा में घणा दिनां पछे दोष कहे तिण ने अपछंदे निर्लज नागड़ो मर्यादा रो लोपणहार कह्यो। तिण री बात मूळ मानणी नहीं। तथा रास में पिण घणा दिनां पछे दोष कहे तिण ने निषेध्यो छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—सेषाकाळ चोमासो आज्ञा बिना रहे जितरा दिन सूंखड़ी सहित पांचू विगै रा त्याग छै। इत्यादिक लिखत में तथा रास में तथा विनीत अवनीत री चोपी में अवनीत ने घणों निषेध्यो छै।

अजुणाकाल में भारीकर्मा जीव घणा छै। ज्यां री आत्मा वस नहीं। गुर छांदे रहिणो कठण जद ए मर्यादा लोपने टोळा बारे नीकळी ने अवगुणवाद बोले, त्यां ने श्रावक न माने जद पाछा गण में आवे त्यां रो लेखो भीखणजी स्वामी रास में ओळषायो ते गाथा—

- १ आप मांहे छै दोष अनेक, ते तो बारे न काढ़े एक।
उळटो ओरां में दोष बतावे, झूठ में झूठ जाण चलावे॥
- २ अवगुण सुण-सुण ने समदृष्टि, यां ने जाणे धर्म सूं भिष्टी।
यां रा बोल्यां री प्रतीत नाणे, झूठ में झूठ बोलता जाणे॥
- ३ श्रावक आरे करता दीसे नांहि, जद प्राछित ओट आया गण मांहि।
आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित पूरो लेणो ठहराय॥

१. लय—म्हारी सासू रो नाम छै फूली।

२४२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ४ पांचू पद विचे दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय।
तिण रा साषी ग्रहस्थ ठैहराय, तठा पछै लिया गण मांय॥
- ५ टोळा रा साध साधवियां मांहि, किण रे प्राछित ठहरायो नांहि।
किण ही प्राछित मूल न लीधो, मिच्छामि दुक्कडं पिण नहीं दीधो॥
- ६ किण ही में न काढ्यो बंक, सगळा ने कर दीधा निसंक।
प्राछित विण दीधा आया मांहि, सगळा ने सुध जांणी ताहि॥
- ७ यां री तरफ सूं चोखा जाण, गुर रे पगा पड़िया आंण।
जो ए दोष जाणे किण मांहि, तो ए आगे काढे जिसा नांहि॥
- ८ ज्यां ने असाध कह्या था मुख सूं, त्यां रा बांढ्या पग मस्तक सूं।
त्यां ने प्राछित मूल न दीधो, उळटो आप प्राछित ओढ लीधो॥
- ९ ज्यां ने पांचू व्रत कह्या भागा, त्यां रेहीज पगां आय लागा।
ज्यां ने कह्या था लोका में खोटा, त्यां ने हीज लेखव लिया मोटा॥
- १० ज्यां में काढ्या था अनेक दोष, ते तो कर दीया सगला फोक।
उळटो आपरे डंड ठैहराय, इण विध आया गण मांय॥
- ११ ज्यां ने ढीळा कहता तांणतांण, बले भागळ कहिता जांण-जांण।
ज्यां री वंदणा देता छोड़ाय, त्यां रा हीज पोते बंदिया पाय॥
- १२ ज्यां ने कहिता पेहले गुणठांण, त्यां रा ही पग बांदिया आंण।
अणाचारी कहता दिन रात, तिका पाछी न पूछी बात॥
- १३ ज्यां ने प्राछित कहिता आप, ते तो जाबक दियो उथाप।
उळटो आप डंड कराय, गण मांहे पेठा छै आय।
- १४ कहितो थो मोमे दोष न पावे, मिच्छामिदुक्कडं पिण नहीं आवे।
तिण ने प्राछित देणो ठैहराय, तठा पछै लियो गण मांय॥
- १५ कहितो आलोवण करूं नाहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि।
तिण री आलोवण करणी थाप, ते प्राछित पिण ओढियो आप॥
- १६ ज्यां में कहता कपट ने झूठ, पहिला निंघा करता परपूठ।
त्यां ने उत्तम पुरुष ठैहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय॥
- १७ ज्यां ने खोटा सरधावण ताय, कीधा था अनेक उपाय।
त्यां ने तिरण तारण ठैहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय॥
- १८ यां री करता था के इ ताण, त्यां रो गळ गयो सगळो माण।
यां री करता केइ पषपात, त्यां री पिण बिगड़े गइ बात॥
- १९ यां ने जाणता था केइ साचा, ते तो प्राछित ले हुवा काचा।
बले ताणें यां री दूजीवार, तो ए पूरा मूढ गिंवार॥

- २० आगे तो यां री राखत परतीत, निज गुर सूं हुआ विपरीत।
सुद्ध साधां ने कहुआ बले भूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे बूडा॥
- २१ जो यारे बंधिया निकाचित कर्म, तो छूट जासी आं सूं जिन धर्म।
जासी मानव रो भव हार, पड़सी नरक निगोद मझार॥
- २२ जो यां रे न बंध्यो निकाचित कर्म, कदा पड़ जाये पाछा नर्म।
कदा आलोय ने सल काढे, निज कांम सिराड़े चाढ़े॥
- २३ न्यारा थकां हुंता घणा गेरी, गण रा हुआ छा पूरा वैरी।
सर्व साधां ने असाध सरधाया, त्यां में हीज डंड ओढ नैं आया॥
- २४ यां तो च्यार तीर्थ रे मांय, कीधो थो घणो अन्याय।
पिण प्राछित ले आया मांही, टोळा री परतीत अणाई॥
- २५ घणा श्रावक हुआ निसंक, यांमेंहीज जाणियो बंक।
यां तो दोष बताया मांय, आंतो झूठी कीधी वकवाय॥
- २६ बारे थकां तो कहिता असाध, मांहे आए सरधे लिया साध।
इण विध बोल्या विपरीत, त्यां री तुरत नावै परतीत॥
- २७ टोळा रा साध साधवियां मांहि, साधपणो न कहता ताहि।
इण बात सूं भूंडा घणा दीठा, पड़िया च्यार तीर्थ में फीटा॥
- २८ कदा गुरू ने पिण दोषण लागे, तो कहिणो नहीं ओर आगे।
गुर ने हीज कहिणो सताब, घणा दिन नहीं राखणो दाब॥
- २९ बले फाड़ा तोड़ा री बात, किण सूं करणी नहीं तिलमात।
जिलो बांधणो नहीं मांहो मांहि, फेर साथे ले लावणों नांहि॥
- ३० पांचू पद विचे दे आया मांय, आलोवणा प्राछित ठहराय।
आज्ञा में चालणो रूड़ी रीत, पूरी उपजावणी परतीत॥
- ३१ आगा विचैइ रहणो विनीत, बाकी सब आगली रीत।
इत्यादिक पहली सैंठी ठहराय, पछे गण में लेणा थाप्या ताय॥

अथ इहां जे अवनीत री प्रकृति ओळखाइ, गण में तो गुरां रा गुण गावे, बारे नीकळी अवगुण बोले, फेर डंड पोत ले इ मांहे आवे, कर्म जोगे बले बारे पड़्यां अवगुण बोले ए अवनीत अजोग रा लखण न्यारो थया अवगुण बोले तथा मर्यादा लिखत सुणी आप ऊपर खांचे। बने रास में एहवी गाथा कही—

- ३२ 'विनीत सुण-सुण पामै हरष, पड़े अवनीत रै मन धड़क।
ते तो रहे चोर ज्यूं राच, लेवे आपण ऊपर खांच॥

१. लय : म्हारी सासू रो नाम छै फूली।

२४४ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

अथ अटे पिण इम कद्धो—विनीत सुण-सुण हरषे, अवनीत रे धइक पड़े, पोता ऊपर खांच लेवे। आगे पिण वीरभाण जी हुआ तो पिण विनीत अवनीत री चोपी भीखणजी स्वामी जोड़ी तिका तिण पोता ऊपर खेंची। साधां कने अनेक अवगुण बोल्या। फटावा रोउ पाय कीधो। तिण ने भीखणजी स्वामी अवनीत अजोग जाणने टोळा बारे कियो। ते विराधकपणे मूओ। जे कोइ इसड़ा लखण राखे तिण रा पिण एहवा इज हवाल हुवै तिण सूं थोड़ा वरस रे काजे अनंत सुख आत्मिक पुद्गलिक हारज्यो मती। भीखणजी स्वामी री मर्यादा सुद्ध पाळ्यां आराधक पद पावोला तिण कारण मर्यादा लोपजो मती।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कद्धो—टोळा माहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे परे तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़े आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै टोळा मां सूं फारने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा माहे नै बारे नीकळ्या पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कद्धो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती बात करे, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भाग हीण, तिण ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहिणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
 गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
 आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
 गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

‘इति दशवइकालिक में कद्धो ते मर्यादा
 आराध्यां इहभव परभव में सुख कल्याण हुवे।
 ए हाजरी रची संवत् १९१० जेठ विद १० वार सोम बषतगढ़ मध्ये

बारहवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधणा। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहणो। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी ने लेणो। सूजतो आहार पाणी पिण आगला रा अभिप्राय देख लेणो। पूजतां परठवतां सावधान पणे रहणो। मन वचन काथा गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार सरधा प्रकट कीधा—विरत धर्म ने अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंधे ते राग, मरणो बंधे ते द्वेष, तिरणो बंधे ते वीतराग देवनो मार्ग। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

संवत् १८५० रे वरस साधां रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—किण ही साध आर्यां दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो अथवा गुरां ने कहणो पिण ओरां ने न कहिणो। घणा दिन आडा घाल न दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा संवत् १८५२ रे वरस मर्यादा बांधी, तिण में कह्यो— किण ही साध आर्यां मांहे दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो के गुरां ने कहणो पिण ओरां ने कहणो नहीं। किण ही आर्यां दोष जाण ने सेव्यो हुवे ते पाना में लिख्यां विना विगै तरकारी खाणी नहीं। कोइ साध-साधव्यां रा अवगुण काढ़े तो सांभळवा रा त्याग छै। इतरो कहिणो स्वामी जी ने कहिजो इमहीज पेंताळीसा रा पचासा रा लिखत में अने रास में जिला ने घणो निषेध्यो छै। माटे जिलो बांधण रा त्याग छै। तथा घणां दिनां पछें दोष न कहणो रास में वरज्यो छै। तथा 'साध सीखावण' ढाळ रा वूहा में घणां दिन पछै दोष कहे तिण ने अपछंदो कह्यो। निर्लज कह्यो। नागड़ो कह्यो छै।

तथा संवत् १८३४ ने वरस आर्यां रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—गृहस्थां मांहे आमना जणाय ने एक-एक री आसता उतारे तिण में तो अवगुण घणाहीज छै। बले फतुजी ने मांहे लीधी तिको लिखत सगळी आर्यां रे कबूल छै। बले अनेक-अनेक बोलां री करली मर्यादा बांधी ते कबूल छै। ना कहिण रा त्याग छै।

तथा बत्तीसा रा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—उसभ उदै टोळा बारे नीकळ्यां तिण ने साध सरधणो नहीं। च्यार तीर्थ में गिणणो नहीं। एहवा ने वांटे पूजे तिके पिण आज्ञा बारे छै।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—पेलां रा दोष धार ने भेळा करे ते तो एकंत मृषवादी अन्याइ छै। किण ही ने खेव काचो बतायां किण ही ने कपड़ादिक मोटो दीधां इत्यादिक कारणे कषाय उठे जद गुरवादिक री निंदा करण रा अवर्णवाद बोलण रा एक-एक आगे बोलण रा मांहेमां मिलने जिलो बांधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री आण छै। कदा कर्म धको दीधां टोळा सूं टळे टोळा रा साध-साधव्यां रा अंस मात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा ने असाध सरधने नवी दिख्या लेवे

तो पिण अठीरा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखित में पिण इमहीज कह्यो-टोळा बारे नीकळी एक रात उपरंत सरधा रा खेत्रां में रहिवा रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करे, परत पाना लिखे, जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा चोतीसा रा लिखत में आर्या ने मर्यादा बांधी तिण में कह्यो-गृहस्थ आगे टोळा रा साध-आर्या री निंघा करे तिण ने एक मास पांच विगै रा त्याग। जितरी वार करे जितरा मास पांचू विगै रा त्याग। तथा जिण आर्या साथे मेल्यां तिण आर्या भेली रहे अथवा आर्या माहोमांहि सेष काळ भेली रहे अथवा चोमासों भेलो रहे त्यां रा दोष हुवे तो साधां सूं भेळा हुवां कहि देणो न कहे तो उतरो प्रायछित उण ने छै। तथा जिण आर्या ने ओर आर्या साथे मेल्यां ना न कहिणो साथे जाणो न जाए तो पांचू विगै खावा रा त्याग न जाए जितरा दिन। बले और प्राछित जठा वारे। एहवो कह्यो छै। तथा साधां रा मेलिया बिना आर्या ओर री ओर आर्या साथे जाए तो जितरा दिन रहे जितरा दिन पांचू विगै रा त्याग, बले भारी प्राछित जठा वारे। एहवो कह्यो।

टोळा सूं छूट हुआ री बात माने त्यांने मूर्ख कहीजे। त्यां ने चोर कहीजे। सूंस करण ने तयारी हुवे तो ही उत्तम जीव तो न माने। ए सर्व चोतीसा रा लिखत में कह्यो।

तथा आगे पिण गण बारे नीकळी अवगुण बोल्या ते पिण भूंडा दीठा। वीरभाण टोळा बारे नीकळी अवगुण बोल्या तिण री पिण बिगड़ी। तथा चंदू वीरां फतू आदि टोळा बारे थइ जन्म बिगाड़्यो। तथा बड़ो रूपचन्द चन्द्रभाण जी तिलोकचन्द जी आदि जे बेमुख हुआ त्यांरो जन्म सुधर्यो नहीं ते भणी उत्तम जीव वैमुख री संगत न करे। तथा श्री भीखणजी स्वामी रास में अवनीत ने भांत-भांत करने ओळखायो ते गाथा—

- १ मद विषय कषाय वस आत्मा, तिण सूं विनो कियो किम जाय।
तिण री बणे खूराबी अति घणी, ते सुणजो चित ल्याय॥
- २ 'कोई गण में हुवे साध अहंकारी, तिण सूं थोड़ा में हुए जाये खुवारी।
उण रा गुण कही पोगां चढावे, तो उ थोड़ा में फलफुल थावे॥
- ३ जो उण नै गुर गुरभाइ सरावे, तो मगज में पूरो न मावे।
जब रहे टोळा में राजी, ठाला बादल ज्यूं करे ओगाजी॥
- ४ इसड़ो अभिमानी दोष लगावे, तिण सूं आलोवणी नहीं आवे।
इह लोक रो अर्थी मूढ बाल, सल सहित कर जाए काळ॥
- ५ इसड़ा अभिमानी अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत।
तिण ने गुर नषेदे घणा मांय, तो उ गुर रो द्वेषी होय जाय॥

- ६ तिण झूठा ने कहे कोइ झूठो, तिण सूं तो रहे नित रूठो।
खपे छै तिण रे देवा आळ, जाणै टोळा मां सूं देउं टाळ॥
- ७ यां तो घणां साधां रे मांय, म्हारी आब न राखी काय।
म्हारी आसता चोड़े उतारे, तो हूं क्याने रहूं यांरे सारे॥
- ८ त्यां ने छोड़ ने होय जाऊं न्यारो, यां रे पिण करूं बोहत बिगाड़ो।
यां में दोष परुपूं भारी, जब खबर पड़े यां ने म्हारी॥
- ९ यां रा चेला ने बले चेली, त्यां ने फाड़ करूं म्हारा वेली।
इसड़ी चिंतवे मन मांय, मिले ओर साधां सूं जाय॥
- १० जिण विध गुर सूं मन भागे, तेहवी बात करे तिण आगे।
जिण विध गुर सूं जागे द्वेष, तेहवी बात करे छै विशेष।
- ११ बले बोले आळ पंपाळ, झूठा-झूठा दे गुर रे आळ।
बले दोष अनेक बतावे, जाबक खोटा सरधावे॥
- १२ गुर गुरभाई ऊपर थेख, त्यां रा अक्वगुण बोले अनेक।
'ज्युं ना'-ज्युं ना खुरट' उखेळै, आप रे मन माने ज्युं ठेले॥
- १३ बले आप रे स्वार्थ नावै, त्यां में दोष अनेक बतावे।
केका री तो परतीत नाणूं, त्यां ने थेट रा असाधु जाणूं॥
- १४ टोळा मांहे तो घणी ढीलाइ, कब्बां ठीक न लागे कांइ।
तिण सूं म्हारे तो हुवणो न्यारो, यां में कुण बिगाड़े जमवारो॥
- १५ जो हूं इसड़ा जाणतो यां ने, तो हूं घर छोड़तो क्याने।
हूं तो घर छोड़ ने पिछताणो, म्हे तो खोटा खाधा अजाणो॥
- १६ कळह लगावण री करे बात, जाणे फाड़ लेउ म्हारे साथ।
जब पेलो हुवे कान रो काचो, तो उ मान ले उण न साचो॥
- १७ जब ओ राखे इण री परतीत, ओ पिण बोले इणहीज रीत।
ओ तो किण ही में दोष न जाणे, इण रा कब्बा सूं ओ पिण ताणे॥
- १८ जब ओ आप रो बेली जाण, पछे गुर सूं झगड़े आण।
यां बेठाहीज उंधो बोले, आंगुणां रो पिटारो खोले॥
- १९ यां आगे बोल्यो तिणहिज रीत, गुरु आगे बोले विपरीत।
बले बोले अन्हवाषी अलाल, गुर ने देवे झूठा आळ॥
- २० जिण इण ने घाल्यो थो झूठो, तिण सूं तो बेठो थो रूठो।
तिण में दोष अनेक बतावे, मन माने ज्युं गोळा चलावे॥
- २१ हूं तो थाने न जाणूं साध, घर में थकां रो जाणूं असाध।
यां रा महाव्रत पांचूंइ भागा, सुमति गुप्त में दोषण लागा॥

- २२ यां ने राखसो टोळा रे मांहि, तो हूं बारे निकळसूं ताहि।
थे तो यांरी करो पखपात, तिण सूं मानूं नहीं थांरी बात॥
- २३ बले घणी साधवियां मांहि, साधपणो न जाण ताहि।
बले दोष घणा में बतावे, विपरीतपणे सुणावे॥
- २४ हूं धरती छोड़ परो नहीं जाऊं, यां क्षेत्रां में साथे लगो आऊं।
थां सांहमो उतरसूं आणो, ओर गया ज्यूं मौने म जाणो॥
- २५ थां रा दोष घणां ने सुणाऊं थां ने चोड़े असाध सरधाऊं।
इम बोले घणो विकराळ, संके नहीं देतो आल॥
- २६ जिण सूं बात बांधी थी भेळी, तिण साथै चेपी मैली।
कायक दोष ओ पिण काढ़े, उण ने बले पोगां चाढ़े॥
- २७ इण री आगै इ कीर्ण पखपात, झूठी साख भरी साख्यात।
जब इण नै इ नषेध्यो थो गाढो, तिण सूं ओ पिण बोले आडो-आडो॥
- २८ न्याय तणी नहीं बात, झूठी करवा लागो पखपात।
न्याय निरणां री हुंती नीत, तो इण ने नषेदे इण रीत॥
- २९ ओ तो तोमें ही छै बांक, तू दोषण राख्या ढांक।
आ तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो झूठो करे विषवाद॥
- ३० घणां दिना काढे दोष अनेक, तिण री बात न मानणी एक।
आपां रे छै इसड़ी मरजाद, हिवै क्यांने करे विषवाद॥
- ३१ इण ने इण विध घाले कूड़ो, घणां बेठा घाले मुख धूड़ो।
पिण चोरां कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विध देह॥
- ३२ ज्यूं मिलियो अवनीत^१ सूं जेह, तिण ने न निखेदसी तेह।
जब गुर जाण्या इण रे सीहे^२, ओ तो बोलतो मूल न बीहे॥
- ३३ ओ तो दीसे छै भारीकर्मो, निरलज घणो वैसरमो।
इण ने परतष सूझी भूंडी, जब गुर तो विचारी ऊंडी॥
- ३४ रखे छूट एकलो थावे, रखे संका घणां पर जावे।
रखे गूंजे पांखडी अयांण, रखे जिण मत री पड़े हाण॥
- ३५ रखे घट जायेला उपगार, वेदो उठेला लोक मझार।
जो इण ने करला कहूं इण वारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो॥
- ३६ ओ तो चढियो क्रोध अहंकारो, तो हिवे करणो कवण विचारो।
जो नरमाइ किया ठाम^३ आवै, आलोय नै सुध थावे॥

- ३७ इम जांणी की नरमाइ, परतीत पूरी उपजाइ।
किण रे संका न राखी काय, सगला ने दिया समजाय॥
- ३८ जब ओ किण विध बोले उंधो, हिवै ओ पिण बोलियो सूधो।
अब तो जावजीव रहूं मांय, गण छोड़ण री न काढ़ूं वाय॥
- ३९ इण दोषण काढ्या था अनेक, तिण री पाछी न पूछी एक।
किण ने थोड़ो घणो दंड देणो, ते पिण नहीं कढियो वेणो॥
- ४० बले घणी साधवियां मांहि, साधपणो न जाणतो ताहि।
त्यां काढणी नहीं ठहराइ, त्यां री बात न कीधी कांइ॥
- ४१ यां ने छोड़्यां रहूं गण मांय, तका पिण काढी बात न काय।
टोळा मांहै कहतो थो ढीलाइ, तिण री पाछी नहीं चलाइ॥
- ४२ सगली ढीली मेली दीधी बात, विनै सहित बोले जोड़ी हाथ।
हिवै आप घणो पिछतावे, गुरु ने वारूंवार खमावे॥

इम अठे पिण अनेक भाव कह्या ते सुण ने हलुकर्मी हुवे ते सरल प्रकृति करने आत्मा वस करे। अवनीत री संगत छोड़े। मर्यादा सुद्ध पाळे गुर री मुरजी प्रमाणे सर्व काम में प्रवते।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्या-टोळा मांहै सूं कदा कर्म जोगे टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंस मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़े आसता उतरे जिम बोलण रा त्याग छै। टोळा मांहै सूं फाड़ने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहै न बारे नीकल्या अंस मात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करे। तथा सुण ते पिण भागहीण तथा सुणे आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण। तिण ने तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति दशवैकालिक में कह्यो ते आज्ञा मर्यादा आराध्यां
उभय भवे सुख कल्याण हुवे। ए हाजरी रची संवत् १९१०
वार वार सोम जेठ विद ११ बषतगढ़ मध्ये।

तेरहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुमि पंच महाव्रत अखंड आराधणा। ईय्या भाषा एषणा में सावचेत रहणो। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पाणी पिण आगला रो अभिप्राय देख लेणो। पूजतां परठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुमि में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख ने श्रद्धा आचार प्रगट कीथा—विरत धर्म ने अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे, ते राग मरणो बंछे, ते राग मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग।

तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी—संवत् १८४१ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी—ते साध-साध मांहोमांहि भेळा रहे। तिहां किण ही साध ने दोष लागे तो धणी ने सताब सूं कहणो। अवसर देखने। पिण दोष भेळा करणा नहीं, धणी ने कद्दां थका प्राछित लेवे तो पिण गुरां ने कहि देणो। जो प्राछित न ले तो प्राछित रा धणी ने आरे कराय ने जे जे बोल लिखने उण ने सूप देणो। इण बोल रो प्राछित गुर थाने देवे ते लीजो। जो इण रो प्राछित न हुवे तो ही कहिजो। थे गाळागोळो कीजो मती। जो थे न कद्दो तो माहरा कहिण रा भाव छै। म्है थां रा दोषां रो आगे काढसूं नहीं। संका सहित दोष भासे तो संका सहित कहिसूं। निसंक पणे दोष जाणूं छूं ते निसंकपणे कहि सूं। नहीं तो अजे ही पाधरा चालो इम कहि देणो, पिण दोष भेळा करणा नहीं। जो उ आरे न हुवे तो ग्रहस्थ पक्का हुवे त्यां ने जणावणो। उण बेठाहीज कहिणो, पिण छाने न कहिणो। ए तो चोमासो बंधियो काळ हुवे जब छै। शेषे काळ हुवै तो किण ही ने कहिणो नहीं। गुर हुवे जठे आवणो। पिण गुर कने बेदो घालणो नहीं। गुर किण ने साचो करे। किण ने झूठो करे। गुर तो इण बात में नहीं। एलांण सूं कदाच एक ने झूठो जाणे, एकण ने साचो जांणे। तो पिण निश्चे नहीं। ते किण विध प्राछित देवे आलोयां विनां। पछे तो गुर ने द्रव्य क्षेत्र काळ देख ने न्याय करणोहीज छै। पिण उण ने तो एक दोष थी दोय भेळा करणा नहीं। घणां दोष भेळा कर ने आवसी तो उ हाथां सूं झूठो पडसी पछै तो केवळी जांणे छदमस्थ रा व्यवहार मांहे तो दोष भेळा करे तिण मांहे छै। लिखतूं ऋष भीखण रो छै सम्वत् १८४१ चेत विद १३

अथ इहां पिण दोष रा धणी ने सताब सूं कहणो कद्दो। एक थी दोय दोष भेळा करणां नहीं, घणां दोष भेळा करे तिण ने झूठो कद्दो।

तथा पचासा रा लिखत में पिण इमहीज कद्दो—एक दोष थी बीजो दोष भेळो करे ते तो अन्याइ छै। मांहो मांहि मिल ने जिलो बांधण रा त्याग छै। गुरवादिक ने भेळो तो आप रे मुतलब रहे। पछे आहारादिक रो कपड़ादिक घणा थोड़ा रो नाम लेइ अवर्णवाद

बोलण रा त्याग छै। बले इण सरधा रा भायां रे कपड़ा रा ठिकाणा छै विनां आज्ञा जाचण रा त्याग छै। आर्या आगे हुवे जठे जाणों नही। जाय तो एक रात रहिणो। पिण अधिको रहिणो नहीं। कारण पड़्यां रहे तो गोचरी का घर बांट लेणां पिण नित रो नित पूछणो नहीं। कने बेसण देणीं नही। ऊभी रहिण देणीं नही। चरचा बात करणी नही। बड़ा गुरवादिक रा कहा था, कारण पड़्या री बात न्यारी छै। सरस आहारादिक मिले तिहां आज्ञा विनां रहणो नहीं। बले काइ करली मरजाद बाधां तिण में ना कहिणो नहीं। आचार री संका पड़्यां थी बांधे बले कोइ याद आवे तो लिखां ते पिण सर्व कबूल छै, ए मरजादा लोपण रा अनंता सिद्धां री साख कर ने पचखांण छै, जिण रा परिणाम चोखा हुवे सूंस पालण रा परिणाम हुवे ते आरे होयजो। सरमासरमी रो काम छै नहीं। एहवो पचासा रा लिखत में कहा।

तथा बावने रे वर्स आर्या रे मरजादा बांधी तिण में कह्यो—किण ही साथ आर्या मांहे दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो के गुरां ने कहणो, पिण ओरां ने कहणो नहीं, किण ही आर्या दोष जाण ने सेव्यो हुवे तो पांना में लिख्या विनां विगै तरकारी खाणी नहीं कोइ साथ-साधव्यां रा ओगुण काढे तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो—‘स्वामी जी ने कहीजे’।

किण ही आर्या में मांहोमां संका पड़े जांणे कारण पड़्यां विनां कारण रो नाम लेने ओर आर्या आगे सूं काम करावे छै कारण रो नाम लेइ ओषध सूंठादिक उन्हो आहारादिक ल्यावे छै। इत्यादिक संका पड़े ते संका मेटण रो उपाय मर्यादा बांधी छै। जितरे गोचरी आप न उठे तिण सूं बिमणो उठणो, विहार में बोझ उपरावे जित रा दिन विगै रा त्याग छै बलै उण रो बोज बिमणो उपारणो। आछो आहार लेवे तो पाछो बिमणो टालणो। किण ही ने खेत्र आछो बताया राग द्वेष करने बात चलावा रा त्याग छै। खेत्र आश्री कपड़ा आश्री आहारपाणी आश्री ओषध भेषध आश्री बात चलावा रा त्याग छै। चोमासो कहे तिहां चोमासो करणो सेवा काळ बड़ा कहे तिहां विचरणो। ए सर्व बावना रा लिखत में कह्यो।

बले गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धको दिया टोळा बारे निकळे तो उण रे टोळा रा साथ-साधवियां रा अंस मात्र हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा अनंता सिद्धां री ने पांचू पदां री आण छै पांचौं पदां री साख सूं पचखांण छै किण ही साथ साधव्यां री संका पड़े ज्यूं बोलण रा पचखांण छै कदा उ विटळ होय सूंस भांगे तो हळुकर्मी न्यायवादी तो न माने। उण सरीषो कोइ विटळ माने तो लेखां में नहीं। किण ही ने कर्म धको देवे ते टोळा सूं न्यारो पड़े अथवा टोळा सूं आप ही न्यारो पड़े तो इण सरधा रा भाई बाई हुवे तिहां रहिणो नहीं। एक बाई भाई हुवे तिहां पिण रहिणो नहीं। वाटे वहितो एक रात कारण पड़्यां रहे तो पांचू विगै सूंखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री

साख करने त्याग छै। इत्यादिक अनेक लिखत जोड़ में अवनीत ने निषेध्यो छै। अने विनीत ने सरायो छै। विनीत प्रतीत गुरां ने उपजावे ते रीत बताइ—

- १ अपछंदा में घणां छै दोष, छांदो रुंध्या सूं पांमे मोष।
उत्राध्येन चोथाधेन मझारो, कोइ बुधवंत करजो विचारो॥
- २ गुर ने शिष री ऊपजे अप्रतीत, विनादिक में जाणे विपरीत।
जो उ शिष हुवे सुवनीत, तो उपजावे गुर ने परतीत॥
- ३ जिण-जिण बोलां री गुर रे संक, संका काढ़े नै करे निसंक।
करला-करला सूंस खावे, गुर ने परतीत उपजावे॥
- ४ सूंस कीधा इ परतीत नांणे, सूंसा ने पिण लोपतो जाणे।
तो सूंस लिख देवे कोरे पाने, ते किण सूं न राखे छाने॥
- ५ हूं इण लिख्या प्रमाणे चालूं, आज्ञा लोप कदे नहीं हालूं।
जो शिष हुवे सुवनीत, इम उपजावे परतीत॥
- ६ सूंस लिखत री नांणे प्रतीत, आगे गुर ने घणी-अप्रतीत।
तो ही हाथ जोड़े सुवनीत, विनय सहित बोले रूड़ी रीत॥
- ७ थे म्हारी परतीत मूळ न राखी, तो हिवे च्यार तीर्थ देउ साखी।
म्हारा सूंस कागद में लिखाय, च्यार तीर्थ ने देउ वचाय॥
- ८ हूं चालूं इण लिख्या प्रमाणो, कदा चूक में पड़ियो जाणो।
तो च्यार तीर्थ ने देजो जताय, ते मोने हेले निदे आणे ठाय॥
- ९ जो यां रे कनै न चालू सूधो, तो मोने कर देजो गण सूं जूदो।
पिण मो सूं किरपा करो स्वामीनाथ! म्हारे मस्तक राखो हाथ॥
- १० हूं मरजादा नहीं चूकूं, आप रो सरणो नहीं मूकूं।
आप रो छै मोने आधार, मोने उतारो भव पार॥
- ११ जब गुर कहे तूं बोले सूधो, हिवै मूळ न दीसे ऊंधो।
रखे हुवेला तू विसासघाती, बांवलिया रे बीज रो साथी॥
- १२ बावळ बीज बोयां पाणी पूगे, तो उ सूळां लियाइज ऊगे।
बावळ बीज सुहाळो थो आगे, हिवै ज्यूं वधे ज्यूं सूळां लागे॥
- १३ ज्यूं तूं रहे छै गण मांहि, घणो विनो करै छै ताहि।
रखे साध-साधवियां नै फारै, गुर सूं परिणाम उतारे॥
- १४ पछे आळ दे नीकळे बारे, ओरा नै ले जावेला लारे।
पाछला ने परूपे असाध, करेला घणो विषवाद॥

- १५ घणां जीवां रे धालेला संक, लगावे ला मिथ्यात रो डंक।
ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखज्यो खोटो॥
- १६ आ पिण संका छै थारी मोने, वार-वार कहूं हिंवै तोने।
आ परतीत उपजावे गाढ़ी, करला सूंसादिक काढी॥
- १७ जो तूं सरल छै नही अन्हाषी^१, तो तूं च्यार तीर्थ दे साखी।
जो थारे रहणो छै गण मांय, तो इण विध परतीत उपजाय॥
- १८ इम सांभळ ने सुवनीत, विनै सहित बोले रूढ़ी रीत।
आप कहो तिण ने साखी देऊं, आप कहो तिको सूंस लेऊं॥
- १९ कदा कर्म जोगे परूं न्यारो, तो ओरां नै नहीं ले जाऊं लारो।
कोइ आफे ही आवे मारी लार, तिणसूं भेलो नहीं करूं आहार॥
- २० गण में रहूं निरदावे एकलो, किणसूं मिल नही बाधूं जिलो।
किण नै रागी करै राखूं म्हारो, एहवो पिण नहीं करूं बिगारो॥
- २१ साध साधवियां री बात, उतरती न करूं तिलमात।
बले मांहोमां कलह लागे, किण री नहीं कहूं किण ही आगे॥
- २२ इण विध रहूं गण मझारो, किण रा ओगुण न बोलूं लिगारो।
एहवा सूंस करावो आप, च्यार तीर्थ नै साखी थाप॥
- २३ कदा कर्म जोग परूं न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो।
ओ पिण सूंस करावो मोय, तिण रा साखी करो सहु कोय॥
- २४ च्यार तीर्थ नै दो थे जणाय, मो छूटक री न माने वाय।
यांने ही दो सूंस कराय, पिण मोनै राखो गण मांय॥
- २५ गुर ने उपनी जांणे अप्रतीत, तो इम उपजावे परतीत।
ज्यां रे मुगत जावा री छै नीत, ते गुर ने आराधे इण रीत॥
- २६ जे समता रस में रह्या झूल, ते तो मरणो इ कर दे कबूल।
पिण गुरुकुलवासो नहीं मूके, विनादिक गुण नहीं चूके॥
- २७ सुवनीत गुरां ने अराधे, ते आत्मा रा कारज साधे।
विनौ कर गुर नै रीझावे, ते मुक्ति तणा सुख पावे॥

अथ इहां पोता री परतीत जमावण रो उपाय गुरां ने रीझावा रो उपाय स्वामी भीखणजी बतायो। तिण सूं विनैवान हुवे ते ए सीख धारी गुरां ने अराधे। तेह नो इहभव परभव में जस वधे। मर्यादा सुध पाळ्यां मुक्ति मिले। अवनीत अजोग री संगत न करे। टाळो कर अनेक फेर फितूर करे आप री जमावण वास्ते अनेक उपाय घुनराइ कुबध केलवै।

तिण नै आछी तरै सूं ओळख ने संगत करे नहीं। काळा साप सरीषा किंपाक फळ

१. मायावी।

सरीषा जाणी संग छांडे। ते भणी पैताळीसा रा लिखत में एहबो कब्बो छै टोळा माहे सूं कदाच कर्म जोग टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै यां री अंस मात्र संका पड़े आसता ऊतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा माहे सूं फारने साथे ले जावा रा त्याग छै उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै टोळा माहे अने बारे नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कब्बो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन बात करणी, भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण छै। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो। हरामखोर कहणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति^१ दशवैकालिक में कब्बो ते मर्यादा आशा सुध
आराध्यां इहभव परभव में सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९ सै १० जेठ विद ११ वार
सोम देस मालवो बषतगढ मध्ये धारानगरी के जिला में है।

चौदहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईय्यां भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा-विरत धर्म ने अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

तथा संवत् १८५० रे वर्स तथा ५२ रे वरस आय्यां रे मरजादा बांधी। तिणमें कह्यो-किण ही साध आय्यां में दोष देखे तो दोष रा धणी ने कहणो तथा गुरां ने कहणो। पिण ओर किण ही आगे कहणो नहीं। किण ही आय्यां जाण ने दोष सेव्यो हुवे तो पांना में लिख्यां विना विगै तरकारी खाणी नहीं। कोइ साधु-साधवियां रा ओगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो 'स्वामी जी ने कहीजो' जिणरा परिणाम टोळा में रहिण रा हुवे ते रहिजो। कपट ठागां सूं मांहे रहिया रा त्याग छै। टोळा बारे हुवां पछै साध-साधवियां रा अवगुण बोलण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख करने त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आय्यां री मर्यादा बांधी-टोळा रा साध आय्यां री निंघा करे तिण ने धणी अजोग जाणणी। तिण ने एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी बार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग छै। तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कदाच कर्म धक्को दियां टोळां सूं टळे तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंसमात्र हुंता अणहुंता अवगुण बोलण रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरधने नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करे ते, परत पांना लिखे जाचै ते, साथे ले जावण रा त्याग छै। इण सरधा रा भाई बाई हुवै जिण क्षेत्र में एक रात उपरंत रहिणो नहीं। ए मर्यादा उत्तम जीव हुवै ते लोपे नहीं। अवनीत नै निषेध्यां गुणग्राही तो राजी छै। उंधी प्रकृति वाला ने ऊंधो सूझे, ते द्वेष जाणे, 'सांनीयां'नै दूध मिश्री संवली? न परगमे। आगे भीखणजी स्वामी पिण किण ही री प्रकृति री खामी जाणी, तिण री खोड़ मिटावा अनेक बंधवस्ती कीधी। मेणांजी रे आंख रो कारण ते गोगूदे हुंता त्यां ऊपर भीखणजी स्वामी कागद लिख्यो सिथलपणो जाण्यो ते मिटावा अर्थे कागद भिक्षु री हाथ अक्षरां रा देखादेख लिखिये छै-

“—आय्यां मेणांजी धनांजी फूलांजी गुमानांजी गोगूदा माहे रहे तो वैसाख सुध १५ पछै चोपडी रोटी ने जाबक सूखडी वैहरण रा त्याग छै। फूलांजी गुमानांजी रे घी रो आगार छै। घी वैहरणो, पिण चोपडी रोटी न वैहरणी मारगियां^१ रै घरे आठ दिन टाळ नै नवमे दिन जाणो। एक रोटी तथा एक रोटी रो बारदानो^२ बहरणो, पिण इधको न वैहरणो। इम मारगियां रे घरे च्यार पातरां टाळ जाणो। कदा पाणी री भीड़^३ पड़े तो दूजे पातरे जाणो। पाणी धोवण ल्यावणो। पिण बीजो कांई न ल्यावणो। फूलांजी गुमानांजी कहे जठे गोचरी जाणो। ए जाए जिण बात रो लिगार मातर जणावणो नहीं। ‘यां री दाय आवे जठे जाये’ यूं कहणो नहीं। अंस मातर इण बात रो केतब करणो नहीं। ओळभो देणो नहीं, यां री दाय आवसी जठे गोचरी जासी। अंसमात्र कुलक भाव आणणां नहीं। अनुक्रमे गोचरी करणी। रोटी रा देवाळ रो घर छोड़णो नहीं। आंखिया अबल हुवां पछै साधां सूं भेळा हुवां पछै साध आज्ञा देवे जद चोपडी रोटी नै सूखडी रो आगार छै। आगनां दिया विना चोपडी रोटी नै सूखडी वैहरण रा त्याग छै। कदा मेणांजी गोगूदे वेस रहै तो फूलांजी गुमानांजी रै सूखडी रो आगार छै। गोचरी फूलांजी गुमानांजी रै दाय आवै जरे ऊठसी। ग्रहस्थ नै जणावणो नहीं। ग्रहस्थ सांभळतां यूं कहणो नहीं—म्हारे पारणो आंण दो। ग्रहस्थ कहे—आं ने पारणो आंण दो जद मेणांजी नै यूं कहणो—थे किण लेखे कहो छो साहमीं म्हारी संका पड़ै, थे भला होवो तो म्हारा पारणा री थे कदे इ बात कीजो मती। मां साधां री साध जाणा। थे क्यां ने विचे पड़ो छो।

गोगूदा सूं विहार कर नै नाथदुवारे आवणो नही। काकड़ोली राजनगर, केलवे, लाहवे, आमेट, आवणो नही। साधां कनै आवे तो ओर क्षेत्रां में वेह ने आवणो। कदा मेणांजी गोगूदे पर रहे तो आय्यां ने किण ही गांम कपड़ा नै मेलणी नही। महीं मोटो आवे जिसो गोगूदा माहे लेणो नै भोगवणो। मेणांजी धनांजी रै रागाधेखो घणो देखो, कलेस कदागरो घणो देखो, मांहोमांहि कजिया करता देखो, यां रै साधपणो नीपजतो न देखो, थां रै पिण कर्म बंधता देखो, साधपणो नीपजतो न देखो, फूलांजी नै गुमाना यां दोयां सूं आहारपाणी कीजो मती। थे दोनूं जणी उरी आवजो। चोमासो हुवै तो चोमासो उतरयां उरी आयजो। पिण यां रा कजिया में थांरो साधपणो खोड़जो मती। यां में भारी दोष थकां आहारपाणी भेलो कीजो मती। भेलो कियो तो थां ने भारी प्राछित आवसी। पछै थारीं थे जाणो। दोष लगावे ते भाया ने जणावजो। जितरी बात हुवै दोष री ते सगळी भाया नै जणायवो कीजो। ज्यूं यां नै पिण न्याइ अन्याइ री खबर पड़ै। ज्यूं हिवै अंसमात्र बात भायां बायां सूं छांनी राखजो मती। बात तो बिगर चुकी, हिवै क्यांने छांनी राखो। मेणांजी गोगूदे रद्धां घणो फितूरो हुंतो दीसै छै, तिण सूं जिण माहे दोष थोड़ो ही

१. श्रावकों।

२. सामग्री।

३. कमी।

हुवै ते बायां भायां नै तुरत रो तुरत जणाय जो। आगो काढो तो थारे घणो-घणो कजियो हुंतो दीसै छै।

फूलांजी ! गुमानांजी ! थे पाधरा न चालीया तो थां रो वसेष फितूरो ह्वे तो दीसै छै। तिण सूं थे घणां सावधान रहीजो। जेठ सुदि १५ पछै फूलांजी नै गुमानांजी रै सुंखड़ी रो आगार छै। मेणांजी रे साधां सूं भेळा हुवे जद साध आगन्यां देवे जद आगार छै—चोपड़ी रोटी सुंखड़ी रो। मेणांजी री पड़िलेहण धनांजी गुमानांजी थे दोनूं जणा वारियां-सारियां करणी, हर कोइ काम वारियां-सारियां करणो ओर आर्य्या मांदी ताती हुवै तिण नै गोचरी उठावणी नहीं। पछै उण आगां सूं कराय लेणो। पिण मांदी आगां सूं काइ काम करावणो नहीं। उण रो पिण काम साजी हुवै त्यां कनै करावणो।

हिवै फूलांजी रै बोल न्यारो—फूलांजी नै गोचरी जाबक उठावणी नहीं। लिगार मात्र काम भळावणो नहीं। फूलांजी री तरफ सूं गाढ़ी साता हुवै तो फूलांजी रै दाय आवे तो करसी। बीजी आर्य्या नै यूं कहणो नहीं—‘थे करो नही कांम’ फूलांजी री सेवा भगति करणी हुवै तो फूलांजी ने राखजो। फूलांजी री सगत हुसी तो मन होसी तो करसी। फूलांजी रा दिन परता छै, तिण सूं ए करार कीधो छै। आसंग हुवै तो राखजो। नहीं तर परी ले जावां। कोइ फूलांजी नै मेणांजी नै यूं कहे—‘म्हे थाने बेठी नै खवारां छां’ इसी आमनां पिण जणावे, तिण नै तेलो प्राछित, कै जेती वार तेल। मेणांजी रै सुंखड़ी रा त्याग सर्वथा-लापी सीरादिक रा। साधां सूं भेळा हुवै जठा तांइ, धनांजी रै छै ज्यूं। जेठ विद ६।

अथ इहां भीखणजी स्वामी मेणांजी आंख्यां रा कारण सूं गोगूदे रह्यो, त्यां री खांमी मेटवा इसड़ी बंधवस्ती कीधी। तो पिण साधपणो पालवा री दिष्ट तीखी राखी पिण मर्यादा लोपी नहीं। अनै दुष्ट आत्मा रो धणी अविनीत अजोग तिण रो स्वार्थ अणपूगां किंचत कष्ट थी टोळा बारे नीकळी भीखणजी स्वामी री मर्यादा लोपी सूस भांगी अवर्णवाद बोले, निरलज नागड़ो होय जावे, परम परम उपगारी गुर सम्यक्त चारित्र पमायो सूत्र भणायो ते कीधो उपगार ते सर्व भूल नै कृतघन होय जाय, मन मते खोटी परूपणा करे, सर्व साधां नै असाध सरधावै, ते ऊपर भीखणजी स्वामी कही ते गाथा—वनीत अवनीत री चौपी मांहिली—

१ १ते तो गुर सूं पिण नहीं गुदरे, त्यां रा कारज किण विध सुधरे।
तिण नै करे टोळा सूं न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करै बिगाड़ो॥

१.लय—बूढ़ो डिग-डिग
करतो।

२५८ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- २ सगळा साधा नै कहे असाध, बले करे घणो विषवाद।
सर्व साधां रो होय जाये वैरी, केइ एहवा छै अवनीत गेरी॥
- ३ तिण नै लोक आरै करै नाहीं, तो उ प्राछित ले आवै मांही।
त्यां न असाध परुप्या मुख सूं, त्यां रा वांदि पग मस्तक सूं॥
- ४ जो उ बले न चाळै सूधो, तो उण नै बलै करदे गुर जुदो।
जब अवनीत रै उवाहीज रीत, न्यारो कियां बोले विपरीत॥
- ५ लोका नै साधां सूं भिडकावे, आप बुगलध्यानी होय जावै।
बले कूडकपट रो चाळो, आत्मा नै लगावे काळो॥
- ६ उ तो अवगुण काढ़े अनेक, बुधवंत न माने एक।
एहवा अवनीत छै गुरदोही, तिण आत्म पूरी विणोइ॥
- ७ जो माने अवनीत री बात, त्यां रा घट मांहे आवे मिथ्यात।
एहवा अवनीत अवगुणगारा, त्यां सूं बुद्धिवंत रहसी न्यारा॥

अथ इहा भीखणजी स्वामी पिण कह्यो—

“अवनीत री याहीज रीत, न्यारो हुवां बोले विपरीत।”

एहवा अवनीत रा लखण कह्या। ते अविनीत इह लोक म फिट-फिट होवे अनै परभव में नरक निगोद में जाय अनंत काल दुख भोगवै। भीखणजी स्वामी पिण अवनीत रा फळ कड़वा कह्या छै, अवनीत नै छोड्यां गुण कह्यो छै, ते गाथा—

- १ 'उज्झिया भोगवती नै घर सूपिया रे, तो करे खजानो खुराब रे। सुगण नर।
ज्यूं अवनीत नै गण सूपियां रे लाल, तो जाए टोळा री आब रे। सुगण नर।
भाव सुणो अवनीत रा रे लाल॥ध्रुपदं॥
- २ जिण टोळा में अवनीत छै, तिण सूं आछो कदे मत जाण।
तिण री खप करने ठाम आंणजो, नहीं तो परहरो चतुर सुजांण॥
- ३ ज्यूं अवनीत नै छोड्यां थकां, ज्ञानादिक गुण वधता जाण।
मिट जाये कलेस कदागरो, त्यां नै नेड़ी हुसी निरवांण॥
- ४ ज्यां रै सिखां रो लोभ लालच नहीं, ते तो दूर तजे अवनीत।
गरगाचारज सारिषा, गया जमारो जीत॥
- ५ केइ अवनीत नरके गया, केइ जाय पड़्या छै निगोद।
आप छांदि उंधी अकल स्यूं, ते गमाय नै समगत^१ बोध॥
- ६ अवनीत में अवगुण घणां, ते तो पूरा कह्या न जाय।
तिण अनुसारे अनेक छै, ते बुद्धिवंत देसी बताय॥

७ अवनीत रा भाव सांभळी, घणो हरष पामे पर नार।

केइ भारीकर्मा उळटा पड़े, त्यां रे घट मांहे घोर अंधार॥

अथ अटे पिण अवनीत री संगति तजणी कही। तथा पैताळीसा रा लिखत में कढ्यो-
टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पडै तो साधु-साधवियां रा अंसमात्र अवगुण बोलण रा
त्याग छै। यां री अंसमात्र संका पडै आसता उतरे ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोळा मांसूं फारने साथे
ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे न बारे नीकळ्यां ओगुण
बोलण रा त्याग छै। मांहेमांहे मन फटे ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में
कढ्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करे। तथा
भागहीण सुणे, सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो।
हरामखोर कहणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवेकालिक में कढ्यो। ते मर्यादा आज्ञा आराध्यां

इह भव पर भव सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९१० जेठ विद १४ वृहस्पति

बगतगढ़े।

पन्द्रहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रा अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म, अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी। पचासा रा लिखत में कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहिणो, अथवा गुरां नै कहिणो, पिण ओरां ने न कहिणो, घणां दिनां आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै।

तथा बावनां रे वर्ष आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में इम कह्यो—किण ही साध आर्या मांहे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहणो, के गुरां नै कहणो पिण ओरां ने कहणो नहीं। किण ही आर्या दोष जाण नै सेव्यो हुवै ते पांना में लिखियां बिनां विगै तरकारी खांणी नहीं। कोइ साध-साधवियां रा ओगुण काढ़ै तो सांभळण रा त्याग छै। तथा घणां दिनां पछै दोष न कहिणा, लिखतां में तथा रास में ठाम-ठांम कह्यो छै। तथा 'साध सीखावणी' ढाळ रा दूहा में घणा दिनां पछै दोष कहे तिण नै, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो। कषाय दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो छै। तथा चोतीसा रे वर्स आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—ग्रहस्थ आगे टोळा रा साध आर्या री निंघा करे तिण नै घणी अजोग जाणंणी। तिण रे एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करै जित रा मास पांचू विगै रा त्याग। जिण आर्या साथे मेली तिण आर्या भेळी रहै अथवा आर्या मांहोमांहि भेळी रहे अथवा चोमासे भेळी रहे त्यां रा दोष हुवै तो साधां सूं भेळा हुयां कहि देणो, न कहे तो उतरो प्राछित उण नै छै।

तथा पैताळीसा रा लिखत में तथा पचासा रा लिखत में तथा रास में जिला ने घणो निषेध्यो छै तथा पचासा रा लिखत में तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—उसभ उदै टोळा सूं न्यारो पढ़ै तो किण ही साध साधवियां रा ओगुण बोलण रा नै हुंतो अणहुंतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरध नै फेर नवी दिख्या लेवे तो ही अठीला साध-साधव्यां रा ओगुण बोलण रा त्याग छै। एहवो गुणसठा रा पचासा रा लिखत में कह्यो छै। जे टोळा बारे नीकळी पोता री समदृष्टि राखे, फेर टोळा रा साध-साधव्यां

रा गुण गावै, ते पिण बिरला छै। भीखणजी स्वामी 'एकल रा चोढाळ्यां' में कह्यो छै किण सू आचार पळे नहीं, पिण समकत राखे। गण छोड़ी एकलो हुवै, पिण ओरां में दोष काढ़े नहीं।

तथा आगे केइ अविनीत थया, त्यां री भीखणजी स्वामी काण न राखी। बले नंदूजी बनाजी री प्रकृति अजोग जाणी त्यां नै कागद लिख्यो ते लिखिये छै—

आय्या नंदूजी बनाजी रतूजी सू ऋष भीखन रो कहण वांचजो। उप्रंच थांरी कूक^१ घणी सुणी छै। भायां बायां वंदणा छोड़ी सुणी छै। ये नै बनाजी मिली सुणी छै। रतु ने न्यारी कर राखो छो, मांहे मां कलेस घणो सुण्यो छै। आहार पांणी रो कजियो घणो सुण्यो छै। आचार आश्री खांमी घणी सुणी छै। दोष लगाया घणा ते सुण्या छै। आगन्यां लोप ने सरधा रा खेत्रा में फिरिया छो, खेरवे चोमासो आगन्यां विना कीधो छै, थां नै आगन्या लोपणी न थी। हिवै थां कनै धनांजी नै मेल्या छै। आचार गोचार पाळियां आछी लागसी। आपरै छंदे चाल्यां आछी लागसी नहीं। आगै दोष लागा रो प्राछित देणो छै। हिवै च्यारों इ आय्या मिल नै चालजो। सरधा रा क्षेत्रां में रहजो मती। म्हारे पिण वेगो आवण रा भाव छै। रतू ने थांरो निकाळो काढण रा भाव छै। ये रतू रो लोकां में घणो फितूरो कीयो छे। घणां गावां रा भाया वंदणा छोड़ी सुणी छै। मेवाड़ में पिण भायां बायां थांरो घणो फितूरो करै छै। साधां नै ओळंभो देवे छै। यां नै टोळा मांहे क्यूं राखे छै। यूं कहे छै। बनांजी रतु जी सू बोलै छै ते नंदूजी रा भेद में कहै छै। खेरवा मांहे थांरा फितूरा रो समाचार मां ताई आयो छै। जाबक साधपणां मांहे अन्याय करै छै, यूं कहे छै। रतु ने दुख देवे इम कहै छै। पिछेवड़ी आहारपाणी रो कजियो सुण्यो। भेषधारी मेवाड़ में ते थांरों फितूर म्हां कने लोका में कीधो। टोळा री घणी हळकाइ लगाइ। साध सत्यां रो मन थां सू भागो छै। हिवै थे चिंता कीजो मती। अबे ही आलोय पड़िकमी ने सुध होय नै चोखो पालजो। लोकां एक आय्या मेलण रो ओर कह्यो, पिण काइ आय्या आवती जाणी नहीं। धनांजी नै थां कनै मेल्या छै। ये ना कह्यो तो थांरा आचार पालण रा परिणाम दीसे नहीं। बनांजी ने फारने आपणी कीधी जाणसा। तिण सू धनांजी भेळा राखण रो ना कहीजो मती ने सरधा रा खेत्रा में चोमासो करजो मती। ये घणा क्षेत्रां में टोळा रो फितूरो करायो, तिण सू सरधा रा खेत्र वरज्या छै। हिवै च्यारों इ आय्या मांहेमांहे घणो हेत राखजो। 'खाटा-खेटों'^२ कीजो मती। लिखतू ऋष भीखन सं. १८५८ जेठ विद १२। चोपड़ी रोटी बहिरजो मती, चोपड़ी रोटी री संका पड़ी। नंदूजी रे विहार करवा री सक्त न हुवै तो मांडे चोमासो कीजो। बले अनेरे क्षेत्र चोमासो करो तो मारण मांहे सरधा रा क्षेत्र टाळ नै बिहार करजो। मां सू भेळा हुवां पहली प्राछित लियां पेहली विगै खायजो मती। च्यासूं जणी।

१. अपवाद। २. खींचताण।

इहा पिण भीखणजी स्वामी खामी मेटवा अनेक सीखामण दीधी ते भणी सुवनीत हुवै ते समभाव सूं खमे। अने खामी मेटे, विनय बधावे तो ए भव में गुरां री मुरजी वधे। सुजश हुवे। परभव मुक्ति नेड़ी हुवै। तथा विनीत अवनीत री चोपी में भाव विवध बताया ते कहे छै।

१ 'जो अगन में रुड़ी वस्त धाल्यां थकां, तो बळ जळ भस्म होय जाय हो।
ज्यूं अविनय रूपणी अगन सूं बळे, अवगुण परगट थाय हो॥

श्री वीर कछो अवनीत नै अति बुरो ॥धूपदं॥

- २ कोइ बालक नाग जाणी नै खिजाविया, तो उ पामे उण सूं घात।
इण दिष्टंते गुर री हेला नंधा कियां, पांमे एकेद्रियादिक जात॥
- ३ आसीविष सर्प अंतत रूठो थको, जीव घात सूं अधिको न थाय।
पिण गुर रा पग अप्रसन्न हुआं थकां, अबोध नै मुक्ति न जाय॥
- ४ कोइ अग्नि प्रजळती ने चांपे पग थकी, कोइ सर्प ने क्रोध चढ़ाये जाण।
कोइ तालपुट विष खाये जीववा भणी, ज्यूं गुर री असातन जाण॥
- ५ कदा अग्न न बाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो ही सर्प न खाय।
कदा तालपुट विष न मारै खाधां थकां, पिण गुर हेलणां सूं मुगत न जाय॥
- ६ कोइ पर्वत बांछे सिरसूं फोड़वो, कोइ सूतोइ सींह जगाय।
कोइ भाला री अणी ने मारे टाकरां, ज्यूं गुर री असातन थाय॥
- ७ कदा पर्वत पिण फोड़े कोइ मस्तके, कदा कोप्योइ सींह न खाय।
कदी भालो इ न भेदे टाकरां, पिण गुर हेलणां सूं मुगत न जाय॥
- ८ कोइ क्रोधी कुशिष्य अज्ञानी अहंकार सूं, बोले विगर विचारी वाण।
ते मायावियो धूरत तांणीजसी संसार में, काष्ट वूहो जाये पाणी में जाण॥
- ९ अवनीत नै सीख दिये हेत जुगत सुं, तो उ क्रोध करै तिण बार।
तो आवती लिछमी न ठेळे डांडे करी, ते तो पूरो छै मूढ गिंवार॥
- १० केइ हाथी घोड़ा छै अवनीत आत्मा, त्यां नै प्रत्यक्ष दीसै दुःख।
अवनीत धर्म आचार्य तेह नो, ते किण विध पांमे सुख॥
- ११ वले अवनीत आत्मा दुख पांमे घणो, लोक मांहे नर नार।
ते विकलेन्द्री सरीखा छै सुध-बुध बाहिरा, त्यांरो बिगड़यो दीसै आकार॥
- १२ अवनीत ज्ञान दर्शन चारित्र तणों, उ दिन-दिन पांमे विणांस।
उण नै ऊंधो सूझो ऊंधो ही अर्थ करै, बलै बुधि नै अकल रो होवे नास॥

- १३ नकटी बूटी कुलखणी नार नै, तिण नै परहरी निज भरतार।
तिण बिगड़ायल नै जोगी भकड़ादिके आदरै, ते पिण जाये तिण तार॥
- १४ नकटी नै आप सरीषा आए मिले, घणो हरष धरै मन प्रीत।
ते इधको न बंछै आपणपो खोजियां, तिमहिज जाणो अवनीत॥
- १५ नकटी जोवे जोगी भकड़ादिके, ज्युं अवनीत जोये अजोग।
उसभ उदै हुवै अवनीत रै, तो मिल जाये सरीषो संजोग॥
- १६ कांदा नै सो वार पाणी सूं धोवियां, तो ही मिटे नहीं तिण री वास।
ज्युं अवनीत नै गुर उपदेस दिये घणुं, पिण मूळ न लागे पास॥
- १७ कांदा री तो वास थोयां मुधरी^१ पढ़ै, पिण निरफळ अवनीत नै उपदेश।
जो छैड़वै तो अवनीत अवळो पढ़ै घणो, उण रे दिन-दिन अधिक कलेस॥
- १८ कोइ गुर भगता छै सुवनीत आत्मां, गुर छांदा रो चालणहार।
जो हेत देखे तिण ऊपर गुर तणो, तो अवनीत दे मुंह बिगाड़॥
- १९ वनीत ऊपर हेत होवे घणो गुर तणो, तो अवनीत नै दुख हुवै साख्यात।
जब अवगुण सूजै अणहुंता गुर तणा, बलै बांछे वनीत री घात॥
- २० अवनीत जाणे विनीत मूआं थकां, पछे मांहरो हीज हुसी आघ।
एहवा परिणामा घात बंछै सुवनीत री, तिण लीधो कुगति नो माग॥
- २१ बलै ओषध भेषध आहार पाणी तणी, उ जाणे न पाड़े अंतराय।
दुख नै असाता बंछै सुवनीत री, अविनीत नै ओळखो इण न्याय॥
- २२ ओरां रै अंतराय असाता दुख चिंतव्यां, तिण रै बंधे महामोहणी कर्म।
सितर कोड़ाकोड सागर त्यां लगे, नहीं पामे जिण धर्म॥
- २३ जो पाप उदै हुवै अवनीत रै इण भवे, तो सगळां ने लागे जेहर समान।
बले गमतो न लागै तिण रो बोलियो, आगै खुलसी दुखां री खान॥
- २४ गुर बारां सूं आयां उठ ऊभो हुवे, पग पूंज नमैं सुवनीत।
अवनीत नै इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करै तो ही भूडी रीत॥
- २५ पग पूंज व्यावच करणी अवनीत नै, ते तो कठिण घणो छै काम।
काम पड़्यां अवनीत टाळो दियै, तिण रे प्रबल अविनो नै अभिमान॥
- २६ गुर भगता उपर धेष अवनीत रो, बलै ईसको^२ ने खेदो^३ अत्यंत।
उण रा छिद्र जोवे उतारण आसता, तिण रा चरित जाणे मतिवंत॥
- २७ बलै करै वनीत सूं मूढ़ बरोबरी, पिण विनो कियो मूळ न जाय।
बलै अवगुण न सूजै अवनीत नै आपरा, तिण सूं दिन-दिन दुखियो थाय॥

१. मद। ३. जलन।

२. ईष्या।

इहां अवनीत नै भांत-भांत ओळखायो छै। ते भणी अवनीतपणो उत्तम हुवै सो छोड़ो। बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंस मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता उतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा सूं फार नै साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा माहि न बारै नीकळ्यां अंस मात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटे ज्युं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करे, भागहीण सुणे। सुणी गुरां ने न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो हरामखोर कहणो।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक में कह्यो—ते आज्ञा मर्यादा आराध्यां

इह भव पर भवे सुख कल्याण हुवै।

ए रची सं १९१० जेठ बिद १४ बगतगढ़

सोलहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधणां। ईय्या भाषा में सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रकट कीधा-विरत धर्म ने, अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंधे ते राग, मरणो बंधे ते द्वेष, तिरणो बंधे ते वीतराग देव नौ मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

तथा संवत् १८५२ वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो-किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहणो। तथा गुरां नै कहिणो। पिण और किण ही आगै कहणो नहीं। किण ही आर्या जाण ने दोष सेव्यो हुवै ते पाना में लिख्यां विना विगै तरकारी खांणी नही। कोइ साधु-साधवियां रा ओगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो-‘स्वामी जी नै कहीजो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहि रहिण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोळा बारे हुवां पछै साधु-साधवियां रा अवगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बलै करली-करली मरजादा बांधे त्यां में पिण ना कहिण-रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो-टोळा रा साध आर्या री निद्या करै, तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी बार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग छै। जिण आर्या साथे मेल्या तिण आर्या भेळी रहे अथवा आर्या मांहोमां शेषे काळ भेळी रहे अथवा चोमासे भेळी रहे त्यां रा दोष हुवै तो साधां सू भेळा हुवै जद कहि देणो न कहै तो उतरो प्रायछित उण नै छै। टोळां सू छूट हुवा री बात माने त्यां नै मूरख कहीजे। त्यां नै चोर कहीजे।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो-ग्रहस्थ साधु-साधवियां रो सभाव प्रकृति अथवा दोष कहै बतावै जिण नै यूं कहणो-मो नै क्याने कहो, के तो धणी नै कहो, के स्वामी जी नै कहो। ज्यूं यां नै प्राछित देने सुध करे, नहीं केसो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छै। जो स्वामी जी नै न कहिसो तो थां में पिण बांक छै। थे म्हाने कद्दा कांइ हुवै। यूं कहि नै आप न्यारो हुवै, पिण आप बेदा में क्याने पड़े। पेला रा दोष धार ने भेळा करै ते तो एकंत मिरषावादी अन्याइ छै।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो-कर्म धको दीधां टोळा सू टलै तो टोळा रा साध-साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा नै

असाध सरध नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करे ते, परत पाना लिखे जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—टोळा सूं टळे तो इण सरधा रा बाई भाई हुवै जिण खेवां में एक रात उपरंत रहिणो नहीं—एहवो गुणसठा रा लिखत में कह्यो। ते मर्यादा सुद्ध पाळणी।

टोळा बारे नीकळी मर्यादा लोपे अवगुण बोले तिण री बात तो उण लखणो विकळ माने पिण हळुकर्मी न माने आगे पिण टोळा बारे नीकळी अवगुण बोल्या त्यां जमारो बिगाड्यो। भीखणजी स्वामी चंदू नै टोळा बारे काढी। तिण अवगुण बोल्या। ते भीखणजी स्वामी लिख लिया ते भिक्षु रा अक्षरां री देखादेख लिखिये छै। चंदू नै टोळा बारे काढ्यां पछै चंदू लोकां आगै आय्यां रै आळ देवे छै, अवगुण बोले छै, तेहनी विगत—

१. आय्यां ढीली हालै तिण सूं म्हानै टोळा मांहे किण विध राखे।
२. भीखणजी रै कूड घणो, दगो कपट घणो, मांहे काळा बारे काळा।
३. पांच रोदयां हीरांजी खाये, पाव पाव घी खाये, सिरियारी में चोखो-चोखो आहार मिले लोळपणां री घाली खेव छोडे नहीं।
४. भीखणजी कोड कसायां विचे भारी, फतू बाई कह्यो।
५. रूपांजी रे खेतसी जी भाई, नगांजी रे वेणोजी भाई, हीरांजी मानती लाडकी, तिण सूं यां रो आघ आदर घणो, बीजा री गिणत कांड नहीं, बीजी बापरियां रोवती रहै छै, म्हारी किसी गिणत।
६. मांहोमांहे आय्यां रा थानक मांहे बायां दोय वरस हुया 'वासीदो देवे छै'।
७. ग्रहस्थ रा परवा^२ कनै गुमानां जी सारी राति रोया।
८. धनांजी कह्यो—म्हारो जीभ रो स्वाद छोड़ायो। पिण साधपणो तो स्वामी जी में कोइ नहीं।
९. बापरी धनांजी रोवे छै।
१०. नंदूजी घणी रोवे छै।
११. रतूजी घणी रोवे छै।
१२. कुसालाजी रोवे छै। ए च्यार बोल पाली माहे बायां नै साधा बेठां कह्या।
१३. मने पछेवड़ी काइ दीधी नहीं, वटको^३ इ कोइ दीधो नहीं।
१४. कनै पांच बासती थी पिण दीधी नहीं। कह्यो मां कनै को नही।
१५. म्हारी मांदा री कोइ व्यावच किण ही कीधी नहीं।

१६. नगांजी री व्यावच कीधी, उण रे भाइ वेणोजी छै ते मांहे छै तिण सूं।
१७. रूपांजीरे भाइ खेतसीजी छै तिण सूं उण री जत्न करै छै।
१८. लालांजी री वियावच करे छै। सो उण रा बेटा बहिरावै घणो, तिण सूं करै छै।
१९. पांच जणियां नै अजोग जाण नै त्यां नै मांहे क्यूं राखे।
२०. टोळा रा भेषधारी ज्यूं ए ही चाले छै। एक थानक रो फेर छै।
२१. भेषधार्यां रै नै यारे एक थानक रो फेर छै बीजूं तो भेषधार्यां विचे इ यां रै कपट घणो छै।

इम अनेक अवगुण बोल्या ज्यांरी भीखणजी स्वामी गिणत राखी नहीं। इमहीज सर्व अवनीत जाणवो। उण री संगत सूं अनेक अवगुण प्रकट हुवै। कुसोभा घणी हुवै। बलै विनीत-अविनीत री चोपी में एहवी गाथा कही ते कहै छै—

१. कोइ अवनीत आगै समजियो ए, जो उ राखै उण री परतीत।
ओरां री नहीं आसता है, तो उणरी पिण आहीज रीत के॥
अवनीत एहवा ए ॥धुप्रदं॥
२. अवनीत समझावै तेह नै, जो उ माने अवनीत री बात।
ओरां सूं रहे ओपरो, तिण रे मांहे रह्यो मिथ्यात॥
३. अविनीत नै अवनीत श्रावक मिले, ते पांमे घणो मन हरष।
ज्यू डाकण राजी हुवै, चढवा नै मिलिया जरक॥
४. डाकण जरक चढी फिरै, ज्यूं अविनीत अविनीत रै साथ।
डाकण मारै मिनख नै, ज्यूं ए करे समकत री घात॥
५. डाकण चोर राजा तणी, तिण नै राजा मारे एकवार।
अवनीत चोर जिण तणो, ते भव-भव में खासी मार॥
६. के इ काछ लंपटी कुसीलिया, ते न गिणे जात कुजात।
ग्रिधी घणा रूप रा, नीच घरै जाये साख्यात॥
७. ते फिट-फिट हुवै सगळी न्यात में, बलै राजा देवे दंड।
कुजरवी^२ वणै घणी, हुवै देश विदेशां में भंड॥
८. काछ लंपटी नी ओपमा, अवनीत नै दीधी इम जाण।
ग्रिधी घणो खाण रो, तिण सूं करै अति ताण॥
९. समजाया विनीत अवनीत रा, त्यां में फेर कितोयक होय।
ज्यू तावड़ो नै छाहड़ी, इतरो अंतर जोय॥

१. लय—कंवरयां नै दीयो डायचो।

२. दुर्दशा।

- १० अवनीत साधु ओळखाविये, इमहीज साधवी जाण।
 श्रावक नै श्रावकां तणी, तिमहीज कीजो पिछाण॥
- ११ केइक ग्रहस्थ अजोग छै, श्रावक श्रावका नाम धराय।
 अवनीत घणां साधां तणा, संके नहीं करता अन्याय॥
- १२ त्यां नै विनो धर्म सूझे नहीं, प्रबल अविनो ने अभिमान।
 दगाबाजी करै जिन धर्म में, बलै कूड़ कपट री खाण॥
- १३ ते करै साधां री असातना, बलै बोले घणां विपरीत।
 त्यांरी अवगुणग्राही छै आतमा, ते अति ही घणा अवनीत॥
- १४ एहवा अवनीत में अवगुण घणां, कहतां नावै पार।
 पिण थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणजो आंख उघाड़॥

अथ अठे भीखणजी स्वामी अवनीत नै भांत-भांत करनै ओळखायो बलै आगली ढाळ में
 पिण अवनीत जन्म कदाग्रही आदि अनेक अवगुण रा धणी नै ओळखायो ते गाथा—

- १ केइ अवनीत श्रावक श्रावका, संके नहीं बांधता कर्म रे।
 करै धर्म ठिकाणे कदाग्रहो, नहीं ओळख्यो विनै मूलधर्म रे॥
 केइ अवनीत श्रावक एहवा॥
- २ ते साध साधव्यां री निंदा करै, अवगुण बोले विपरीत।
 ते पिण सूंस कराय ग्रहस्थ कनै, त्यां री भोळा माने परतीत॥
- ३ ते सूंसा री संक रो घालियो, ते किणविध काढे निकाळ।
 जो परतीत राखे एहवा अजोग री, तो बंधे असुभ कर्म जाळ॥
- ४ ऊंधा सूंस दिया अवनीत रा, ते सरध्यां हुवै समगत नास।
 एहवा दुपचखाण दूरा करै, आलोवण करै गुर पास॥
- ५ उण कही ते सगळी कहै गुर कनै, गोपवी नहीं राखे लिगार।
 नहीं कह्यां तो सल मांहे रहे, ते मतिवंत करै विचार॥
- ६ बात अवनीत री मानिया, उण रे कुण-कुण अवगुण थाय।
 उतर जाए साधां री आसता, सुध वंदणा पिण कीधी न जाय॥
- ७ दान पिण देणी नावै भाव सूं, असणादिक च्यारूं इ आहार।
 संका सहित वहरावियां, किम हुवै परत संसार॥
- ८ उलास न आवे साधु देखिया, अनेक गुणां री पडै हांण।
 दग्ध बीज 'दाधा'-रीगो' हुवै, तिण री संगत रा ए फळ जाण॥
- ९ जो सूंस भांगण डरतो थको, जो उ नहीं काढे तिण रो निकाळ।
 तो उ भ्रमण करै इण संसार में, ज्यूं अरठ तणी घड़माळ॥

१. लय-ममकरो काया-माया। २. अर्थ ज्वलित।

- १० सूस दिराय अवगुण कहै, काढण न दे निकाळ।
एहवा अविनीत अजोग नै, बुद्धिवंत जाण देसी टाळ॥
- ११ कोइ अवनीत हुवै साधु-साधवी, तिण सूं मिले मूढ जाय।
उ अणहुंता अवगुण कहै तिके, ते धीर राखे मन मांहि॥
- १२ ते गुरु कनै आय कहै नहीं, अवनीत रो नहीं करै उघाड़।
बलै अवगुण बोलण करणै, तिण कियो छै जन्म खुवार॥
- १३ उ साच मानै अवनीत रो, बलै करै तिण री पखपात।
सुध साधां री निंघा करतो फिरै, तिण रे न मिट्यो मूळ मिथ्यात॥
- १४ अवनीत नरमांइ करै उण कने, बलै बोले मीठा-मीठा वेण।
करै कुसामदी तेहनीं, रोवे घणो भर-भर नेण॥
- १५ पछै अवगुण बोले उण कनै गुर तणा, केइ एहवा छै दुष्ट अवनीत।
गरीब होय आपो छिपाय दै, तिण री मूर्ख माने परतीत।
- १६ जो साच मानै अवनीत रो, घणां री न मानै परतीत।
पखपात करै अवनीत री, ते चिहुं गति होसी फजीत॥
- १७ ए राग नै धेष नो घालियो, कर रह्यो कूड़ी पखपात।
एहवा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूर्ख मानसी बात॥

इम इहां पिण अवनीत साध श्रावक नै घणो ओळखायो। निंघा करै तेह नै मतिहीण कह्यो। तिण की संगति सर्वथा न करणी। ते भणी पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—टोळा माहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पडै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण नां त्याग छै। यांरी अंसमात्र संका पडै, आसता उतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा सूं फार नै साथे ले जावण रा त्याग छै। टोळा माहे नै बारे नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटे ज्युं बोलण नां त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात-करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणे तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो हरामखोर कहणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो—ते आज्ञा मर्यादा आराध्यां

इह भव परभव सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९१० जेठ विद १४ वार वृहस्पति बगतगढ़ मध्यै।

सत्रहवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधनां। ईय्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहणो। तीर्थकर री आज्ञा अखंड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै आचार श्रद्धा प्रगट कीधी— विरत धर्म, अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, नै आज्ञा बारै अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो, तथा गुरां नै कहणो, पिण औरां नै न कहणो। घणा दिन आड़ा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित धणी रो उ हीज छै।

तथा संवत् १८५२ वरस आर्या रे मर्यादा बांधी, तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो दोष रा धणी ने कहिणो तथा गुरां नै कहणो और किण ही आगे कहणो नहीं। आर्या जाण ने दोष सेव्यो हुवै ते पानां में लिख्यां विना विगै तरकारी खाणी नहीं। कोइ साधु-साधवियां रा अवगुण काढै तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो—‘स्वामी जी नै कहीजो’ जिणरा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोळा बारै हुंवा पछै साधु-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बलै करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा री साध आर्या री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जित री बार करै जितरा मास पांचू विगै खावा रा त्याग छै। जिण आर्या साधे मेल्यां तिण आर्या भेळी रही अथवा आर्या मांहोमांहि सेषे काळ भेळी रहे अथवा चोमासे भेळी रहे त्यां रा दोष हुवै तो साधा सूं भेळा हुआं कहि देणो न कहै तो उतरो प्राछित उण नै छै। टोळा सूं छूट न्यारो हुआ री बात माने त्यांनै मूर्ख कहीजे।

तथा पचासा रा लिखत में कह्यो—कोइ ग्रहस्थ साधु-साधव्यां रो सभाव प्रकृत अथवा दोष कोइ ग्रहस्थ कही बतावे, तिण नै यूं कहिणो—मोने क्यांने कहो, के तो धणी ने कहो, के स्वामी जी नै कहो, ज्यूं यां नै प्राछित देने सुध करै, नहीं केसो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छो। जो स्वामी जी नै नही कहिसो तो थां में पिण बांक छै। महां नै कह्यां कांइ हुवै। इम कहि नै आप न्यारो हुवै। पिण आप बेदा मांहे क्यांने परै।

पेलां रा दोष धार नै भेळा करै ते तो एकंत मृषावादी अन्याइ छै, एहवो कह्यो।

तथा पचासा रा तथा गुणसठ रा लिखत में एहवो कह्यो—कर्म धको दीधा टोळा सूं टलै तो टोळा रा साध-साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलवा रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवे तो पिण उठी रा साध साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करै ते, परत पाना लिखे, जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा गुणसठ रा लिखत में कह्यो—टोळा सूं टलै तो इण सरधा रा भाई बाई हुवै जिण खेत्रां में एक राति उपरंत रहिणो नहीं। एहवो गुणसठ रा लिखत में कह्यो। ते मर्यादा उत्तम जीव ह्वै ते लोपे नहीं। अवनीत नै निषेध्या गुणग्राही तो राजी हुवै अनै अवनीत अजोग ह्वै ते पोता ऊपर खांचे। ऊंधी प्रगमे। आगै पिण अवनीत अजोगां रा एहवाज लखण कह्या। वीरभाण अवनीत हुओ, तिण पिण अवनीत री जोड आप ऊपर खांची।

वीरभाणजी नीं वारता भीखणजी स्वामी लिखी ते—

गांम विठोडा मांहे साधां नै विनां रा भाव सुणाय नै सर्व साधां नै पूछी नै सर्व साधां मरजादा बांधी ते मरजादा पानां मांहे। तिण उपर वीरभाण ही दिष्टंत दीधो—हिवै राज तकरार हुई छै। मुसदी पाधरा चोलियां ठीक लागसी। तठा पछै वीरभाणजी नै अणदेजी विहार कीधो। जेतावंता रे गूढ़े गया। पछै अणदेजी वीरभाणजी नै विना री ढाळ फेर सुणाइ। ते ढाळां वीरभाण जी सुण नै अणदाजी नै कह्यो—हिवै तो स्वामीजी नै पूरी परतीत उपजावणी। म्हारी तो आगै साधां में अप्रतीत घणी छै। ते परतीत उपजाइ ते अणदाजी नै कह्यो—म्हे चेला करण रा तो जावजीव पचखांण कीधा, स्वामीजी कर दे तो आगार छै।

मारी तरफ सूं तो जाव जीव लगै चेला करण रा त्याग छै। बलै परतीत उपजावा नै एक कागद। लिख्यो। तिण में अनेक बोल लिख्या। अणदाजी नै वचाय नै कह्यो—ए लिखत स्वामीजी नै संपणो छै। बीजां री तो अप्रतीत अपना स्यूं लिखत कराय-कराय लीधा छै, अनै हुंतो स्वामीजी नै हाथां सूं लिखत कर नै संपस्यूं। तिण लिखत प्रमाणे स्वामीजी चलावसी जिण तरै चाल सूं। इत्यादिक अनेक परतीतकारिया वचन कह्या, लिख्या छै। विहार करता गांव रोयट में महा विद १४ रे दिन गया। पना नै गांव सिरियारी आयो सुणियो। रोयट रा भाया नै पनो विनो नरमाइ स्वामीजी आगे घणो करै छै। तिवारै पछै महा सुध ६ अणदाजी आगे कह्यो—पना नै तो स्वामीजी भिष्ट कीधो छै। म्हारे चेलो हुतो जाण नै। एक पिछोवड़ी मटुजी आगे एक वरस ताइ अधिकी रही छै, ते साधां रखाइ छै। तिणरो निकालो साच नायो तो म्हारे टोळा मांहे रहिण रा जावजीव त्याग छै। पछै अणदोजी कहै—मोनें फारण रै वासते स्वामीजी सूं मन भांगण रै वासते स्वामीजी रा अनेक ओगुण बोल्या तेहनी विगत।

हिवै अनेक अवगुण अणदाजी आगै वीरभाणजी बोल्यो। ते अणदेजी लिखाया ते—

१. पनां नै भिष्ट कीधो म्हारे चेलो वेतौ जाण नै।
२. एक पछेवड़ी आय्यां कनै इधकी रखाइ।
३. धूरतपणो घणो छै।
४. माया कपटाइ घणी। माया आगै क्रोध मान लोभ री ठीक पड़ै नहीं।
५. भरत खेत्र में च्यार जीव भारीकर्मा छै। इण भेष में रुधनाथ, वसी, वखत-मल, देवकरण ज्युं पांचमा औ पिण भारी कर्मा दीसै छै।
६. कर्मा सूं डरता काइ दीसै नहीं। इह लोक रा अर्थी दीसै छै।
७. विना री ढाळ कीधी ते मो ऊपर कीधी छै, उपसम्यो कळहो उदीरियो छै। राग द्वेष रे वासते कीधी छै। दोय बरस तांइ न कीधी हुवेत तो हूं हिल मिल जात, इण जोड़ विना कांइ बीजा भाव थोड़ा था।
८. विनां री जोड़ ते सगळी आप ऊपर खांची।
९. म्हारे दोष लागा था तिण री आलोचना हांडोती में कीधी पिण पूरी न कीधी। टोळा मांहे आत्मा अर्थी जोवण नै रह्यो।
१०. यां रो हूं चेलो हुवो ते बंदणा कीधी ते म्हारे कर्म घणां तिण सूं चेलो हुवो।
११. म्हे वीठोड़ा मांहे लिखत में मतो घाल्यो ते सरमासरमी घाल्यो छै।
१२. पनां रा अनेक गुण कीधा पनां ने घणो सरायो।
१३. पनां नै दिख्या देने इणहीज खेत्रा में फेरां, पछै लोका नै पूछा—ओ देखो पनो किण सूं घटतो आचार पाले छै, इत्यादिक अनेक गुण किया।
१४. थां नै विगारिया ज्युं पना नै सूंस कराय नै भिष्ट कीधो छै।
१५. अणदाजी नै थां नै म्हारी आसता हुवै म्हारा ओगुण काढ़जो मती अबै थे पिण टोळा मांहे रहता कोइ दीसो नहीं।
१६. पाली रै बारणे काने कह्यो थे पोथी लेनै जाओ हूं अठा सूंइ परो जाऊं।
१७. म्हारे साधां नै फटावणा नहीं, तरे अणदेजी कह्यो—थांरा फंटाया कुण फटे छै। तरै पाछा कह्यो—डोकरो (सुखरामजी) नै अखेराम।
१८. मोनै आय्यां वैरागी कहै, पिण साध मोनै सरावै नही। वैरागी कहे नहीं। आय्यां माहरा गुणग्राम करै, पिण साध म्हारा गुणग्राम करै नहीं।
१९. मोनै साध ढीलो जाणे, तिण सूं म्हारा त्याग सरावै नहीं।
२०. मोनै कह्यो थो अबै थांरे नचिंत टोळो बांधो।

२१. आर्या आगै कोठार मांड्यो छै।
२२. म्हारा विगै रा त्याग परूपो मती, ए कहूँछूज सूंस कोय नहीं।
२३. विनां री ढाळां में माहरा कानी-कानी घाटा^१ बांध्या छै।
२४. पनां नै आमना^२ जणाय नै मोने वंदणा छोड़ा छै।
२५. माहरी आगली बातां लोकां आगै कहिता दीसै छै।
२६. विनां री ढाळा रै वाचण रो अणदाजी नै तिलोकचन्द कह्यो तै म्हा रै वासते।
२७. अणदाजी नै कह्यो थे म्हा रे साथ आवो तो कोइ अटके नहीं अखेराम तो आवै तो ठीक लागै नही।
२८. जो देवता आय नै कहै ए मोटा पुरुष छै तो मानूं।
२९. जब अणदेजी कह्यो—जो देवता आय नै कहै दूँढिया मोटा पुरुष छै, तो मानो? जब पाछो कह्यो—दूँढिया नै साचा न जाणूं।
३०. इत्यादिक अणदेजी कह्यो। अनेक अवगुण बोल्यो। मोने फाड़वा तांड और तो अबारूं मोने याद आवै नहीं। पिण बोल्यो घणां।
३१. जब अणदेजी कह्यो—थे यां नै साध सरधो छो के नहीं? जद वीरभाणजी कह्यो—असाध तो कहणी आवै नहीं। आगै ही साधां रा ढीला टोळा चालिया छै।
३२. एक खोटो दृष्टांत बली दीधो—पातसाई में च्यार जणा ठागो कर नै पातसाइचलाइ। च्यारूं जणां ज्यूं ए दीसै छै। ए सर्व बोल अणदाजी रा कह्या स्यूं लिख्या छै। लिखतूं ऋष अणदा रो। ए सर्व अणदेजी लिखाया। भीखणजी स्वामी लिख्या। त्यांरा हाथ रो पांनो छै। त्यांरी देखा देख ए उताखा छै।

इत्यादिक घणां ओगुण बोल्यो। पछै विहार कर नै गाम चेलावास में आया। भेळा हुआ। पाछली रात रा वीरभाण कने आय नै कह्यो—स्वामीजी माहरे तो आहार री संका परी, सो अबे ठीक लागै नही। एक पछेवड़ी आर्या इधकी राखी, वरस तांड साधां रखाइ। मटु कह्यो छै, जब म्हे कह्यो। इण बातरो इतरा दिन आधो क्यूं न काढ्यो। पिण भळा अबेइ निकाळो काढो। राखण रखावण वाळा ने दंड देस्या। जद वीरभाणजी कह्यो—स्वामी जी आगै तो पांच विसवा, आवै वीस विसवा अप्रतीत उपनी, थांरा भेद में रही छै। बले एक पनां नै भिष्ट कीधो छै। जब हरनाथजी बोल्यो—पछेवड़ी रो अणहुंतो क्यांने झूठ बोलो। थां रे मन में तो ओर दीसे छै। पनां नै लेवा रा परिणाम दीसै छै। ए अणहुता आळ देतो जाण्यो जब नखेद न दूरो कीयो, तिण सूं बल अवगुण बोल्यो—

१. गुप्त संकेत।

१. म्हारे कर्म घणां तिण सूं थारो चेलो हुआ।
२. थारा वचन री परतीत नही।
३. ए अवनीत री जोड़ मो ऊपर कीधी, उसम्यो कळह उदेरीयो छै। अबासू वरस दोय तांड अवनीत री जोड़ करणी नहीं छी।
४. म्हारो थानै भय मिटियो नहीं मोने अजोग जाण्यो तिण सूं जोड़ कीधी।
५. थारे मन मांहि खोट थो तरे मो कनां सुं लिखत करायो छै।
६. म्हे तो लिखत मांहे मतो घालियो ते सरमासरमी थी घालियो छै।
७. अखेराम जी कनां थी लिखत करायो ते लिखत अखेरामजी री सरधा लिखत पालण री। कोई हूं लिखत कीधो ते पाळूं नहीं।
८. हूं तो टोळा मांहे रह्यो ते आत्मा अर्थी जोवा नै, पिण दीठो नही।
९. पनां नै चेला करण रा सूंस कराया तके पाळूं नहीं। इत्यादिक अगल-डगल बोलवा लागे। जद मैं कह्यो—थे अणहुंता आळ दे नै केइ भोळा आगे अवगुण बोल नै संका घालसो। म्हे पिण थां पाछै यां क्षेत्रां में आवण रा भाव छै, इम कही नैं कमड कीधी। जद वीरभाणजी बोल्यां—थे किम साथै आवो थां रा अवर्णवाद बोलण रा भाव कोइ नहीं। कटै इ बोलूं नहीं। इम प्रतीत उपजाय नै नीकळया। तो ही सिरीयारी जाय नै दीपांबाई आगै अनेक अवगुण बोल्या। सोजत में पिण अनैक ओगुण बोल्या। तठा पछै तो ग्यांनी जाणै।

ए वीरभाणजी री वारता भीखण जी स्वांमी लिख राखी त्यांरा हाथ रा अक्षरां री देखा देख उतारी छै।

वीरभाणजी नै अवनीत अजोग जाण नै टोळा बारे काढ़्या ते बाहिर नीसरधां पछै पिण अनेक अवगुण बोल्या। सरधा पिण फिर गई। विराधक होइ नै मूआ दीसै। अनै दोनूं इ जनम बिगारया। बलि जे कोइ अवनीतपणो आवरेला तिण रा ए हवाल हुवेला। तिण अवनीत रा लखण घणा खोटा, मूढ़े मीठो परपूठे कटमी बात करै, तिण अवनीत नै भीखणजी स्वांमी निषेध्यो वनीत अवनीत री चोपी में तिण रा लखण ओळखाया ते दूहा सहित ढाळ री गाथा—

दूहा

- १ टोळा मांहे रहिवा री आसा नहीं, क्रोधी अवनीत जाणे एम।
तिण सूं छाने लोकां कनै, बोले थावरियां जेम॥
- २ गर्भवती नै कहै डाकोतरो, था रे होसी पुत्र अनूप।
पाड़ोसण नै कहै होसी डीकरी, ते पिण अतत कुरूप॥
- ३ गुर भगत श्रावक श्रावकां कनै, गुर रा गुण बोले ताम।
आप रै वस हुवो जाणै तिण कनै, अवगुण बोले तिण ठाम॥

- ४ थावरिया डाकोत ज्यूं, बोले अनेक विध कूर।
इह लोक तणो अर्थी घणो, बलि माने आपणपो सूर॥
- ५ कनै रहे तिण साधू तणो, वैर बुद्धि ज्यूं जाण।
खीटोर खोराई करै घणी, पग-पग ताणां ताण॥
- ६ 'कुह्या कानां री कूतरी, तिण रै झरै कीड़ा राध लोही।
सगळे ठाम सूं काढे हुड-हुड करी, घर में आवण न दे कोइ।

ध्रिग ध्रिग अवनीत आत्मा ॥ध्रुपदं॥

- २ कुती बिगाड़े रमणीक आंगणो, न्हाखे कीड़ा राध लोही।
वास दुरगंध आवै अति बुरी, तिण नै धुर-धुर करै सर्व कोई॥
- ३ जेहवी कुह्या कानां री कुतरी, तेहवा अवनीत नै अभिमानी।
तिण रो पाड़वो सील नै मुख अरी, तिण सूं सगळा इ दे जाए कांनी॥
- ४ अवनीत रा मुख मां सूं नीकलै, ते तो कुवचन कीड़ा सम जाणो।
रमणीक आंगणा ज्यूं सुध साध नै, पाप लगवै क्रोध उठाणो॥
- ५ धिरकरण मांहे राखे तेहनो, छिद्रग्रहे ह्वै द्रोही।
तिण नै कुह्या कानां री कुतरी ज्यूं, गण बरे काढै सर्व कोइ॥
- ६ कण सहित कुंडो छोड़ नै, भिष्टो भखे भंडसूर।
तिण भंडसूरा री ओपमा, अवनीत नै दीधी वीर॥
- ७ ते अविनो छै भिष्टा सारिखो, तिण नै अवनीत आचर लीधो।
विनै धर्म सूं अळगो पड़्यो, अनंत संसार आरै कीधो॥
- ८ तिण भंडसूरा नै मृग री, ते ओपमा अवनीत नै छाजे।
तिण रो बिगड़्यो इहलोक नै परलोक, तो ही निरलज मूल न लाजे॥
- ९ अवनीत नै अवनीत मिल्या, अवनीतपणो सीखावे।
पछै बुटकनां नै बळद ज्यूं दोनूं जणा दुःख पावै॥
- १० कुशिष रो चेलापणो, जेहवो वेस्या रो घरवास।
खिण - खिण आय विनो करे, खिण-खिण हुवै उदास॥
- ११ ते वेस्या मुतळब आप रे, करै सोले सिणगार।
पुरुष रिझावै पारका, ते किण री म जाणो नार॥
- १२ ज्यूं अवनीत बाह्य विनो करै, ते तो मुतळब रो छै यारो।
जो स्वार्थ देखे असीजतो, तो खिण मांहे होय जाये न्यारो॥
- १३ वेस्या सूं ग्रहवासो करे, तके धन खूटां पछै पिछतावै।
ज्यूं अवनीत नै कनै राखियां, ते तो काम पड़्या सीदावै॥

१. लय : सल्य कोइ मत राख जो।

२७६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ बांध्यो काळ्या री पाखती^१ गोरियो, वर्ण न आवै पिण लखण आवै।
ज्यूं विनीत अवनीत भेळा रहे, तो उ कायक कुबधि सीखावै॥
- १५ अवनीत दुखदाइ केहवो, जेहवो सोक वरते दुःखदाइ।
ते छळछिद्र जोवतो रहै, खुद्र परिणांमा रहै सदाइ॥
- १६ ज्यूं सोक रा सोक लोकां कनै, करै चावत नै बंछै घात।
ज्यूं अवनीत वरते गुर थकी, आहीज रीत विख्यात॥
- १७ कोई जात कुजात री ऊपनी, भरतार सू लडै रीसावै।
पछै ताके कुवो के बावडी, ओर साथे उठ जावै रे॥
- १८ ज्यूं अवनीत गुर सूं रूठो थको, करै संलेखणां मांडे मरणों।
मरणो अवनीत नै दोहिलो, तिण सूं ताके अवरों रो सरणों॥
- १९ तिणरो संथारो ज्यूं कुवो बावडी, तिण सूं मरै तो ही बाल मरणों।
ओर साथे उठ जाय अस्त्री, ज्यूं ओ अवीनै रो ले सरणों॥
- २० सोर ठंडो लागै मुख में घालियां, अगन मांहि घाल्यां हुवै तातो^२।
ज्यूं अवनीत नै सोर री ओपमा, सोर ज्यूं अळगो पड़ जातो॥
- २१ आहारपांणी वस्त्रादिक आपियां, सतो उ स्वानं ज्यूं पूंछ हलावै।
करडो कढ्यो उठे सोर अग्नि ज्यूं, गण छोड़ एकल उठ जावै॥
- २२ सोर आप बळे बाळे अवर नै, पछै राख होय उड़ जावै।
ज्यूं अवनीत आप नै पर तणां, ज्ञानादिक गुण गमावै॥
- २३ सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुधवंत रहसी दूरा।
ज्यूं अवनीत सूं अळगा रहे, तिके परमेसर रा पूरा॥
- २४ उतराध्येन पेहला अध्येन सूं, अवनीत ओळखायो।
बलै तिण अनुसारे निषेधियो, ते ले ले सूतर मो न्यायो॥

इम विनीत री चोपी री तीजी ढाळ में भीखणजी स्वामी ओळखायो। तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कढ्यो टोळा मांहे कदा टोळा बारै पडै तो टोळा रा साध साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पडै आसता ऊतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मांसूं फार नै साथै ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे न बारै निकळ्यां पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमांहि मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कढ्यो। ते भणी सासण री गुणात्कीर्त्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै। तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

१. पास में।

३. गर्म

२. कलमी शोरा।

आयरिण आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिण नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा आराध्यां
इह भव पर भवे सुख कल्याण हुवै।
ए हाजरी रची संवत् १९१० जेठ विद ५ वार बुध बगतगढ़
मध्ये।

अठाहरवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुप्त पांच महाव्रत अखंड आराधना। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्यकर री आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा— विरत धर्म ने अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते धेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

१८५२ रे वर्ष मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साथ आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, के गुरां नै कहणो, और किण ही आगे कहणो नहीं। किण ही आर्या दोष जाण नै सेव्यो हुवै ते पाना में लिख्या विनां विगै तरकारी खाणी नहीं। कोइ साधु-साधवियां रा ओगुण काढ़े तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो—‘स्वामी जी नै कहिजो’ जिण रा टोळा मांहे रहिण रा परिणाम हुवै ते रहिज्यो। पिण टोळा बारे हुवा पछै साधु-साधवियां रा अवगुण काढण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बले करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै छै।

तथा चोतीसा रे वरस आर्या रे मरजादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा रा साथ आर्या री निंदा करे तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण रे एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग छै। जिण आर्या साथ मेळ्यां तिण आर्या भेळी रहे अथवा आर्या मांहोमां सेवे काळ भेळी रहे अथवा चोमासे भेळी रहै त्यां रा दोष हुवै तो साधां सूं भेळा हुवा केह देणो न केह तो उतरो प्राछित उण नै छै। टोळा सूं छूट हुवा री बात माने त्यांनै मूरख कहीजे। त्यांनै चोर कहीजे।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धको दीधां टोळा सूं टळै तो टोळा रा साध-साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवै तो पिण अठीरा साध-साधवियां री संका पड़ै ज्यूं संका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोळा मांहे करै ते, परत पाना लिखे जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—इण सरधा रा भाई बाई हुवै जिण खेत्रां में एक रात उपरंत रहिणो नहीं। बाटे वहितां रहै तो एक राति कारण पड़िया रहै तो पांचू विगै ने

सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख करी नै छै। बलै टोळा मांहे उपगरण करै ते, पड़त पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावा रा त्याग छै। एक बोदो चोलपटो, एक बोदी पिछेवड़ी, बोदा रजूरणां उपरंत साथे ले जावण रा त्याग छै, उपगरण टोळा री नेश्राय साधां रा छै। ए मरजादा पाळे ते पिण लाजवंत कहीजे। कर्म जोगे गण सूं टळे तो ही अवर्णवाद न बोले। गण सूं सनमुख रहे, सासण रा गुण गावे, तो ही कर्मां सूं भारी न हुवै। गण मांहे तो गुणवांन पुन्यवांन विवेकवान हुवै सो आग्या प्रमाणे सदा रहे अनै कळा चतुराई विनयादिक करी सतगुर नै रीझावे। तथा भीखणजी स्वांमी पिण विनीत अवनीत री चोपी में अनेक बातां कही। ते ढाळ-

१ 'पाळै गुर री निरंतर आगन्यां, कनै राख्या हुवै हरष अपार जी।
बलै वरते गुर री अंगचेष्टा, तिण सफल कियो अवतार जी॥

श्री वीर वखाण्यो वनीत नै॥ध्रुपद॥

- २ जिण अभितर छोड़ी कषाय नै, नहीं मुख तणो लबाळ।
एहवा गुर समीपे रह्या थकां, छता गुण दीपे रसाळ॥
- ३ तिण नै करड़े काठे वचनै करी, गुर सीख देवे किण वार।
तो उ खिम्या करै धर्म जाण नै, पिण नांणे क्रोध लिगार॥
- ४ सुकमाळ कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखामण मोय।
सुवनीत हुवै ते इम चिंतवे, मोने हेत रो कारण होय॥
- ५ बलै उपधादिक नौ जाचवो, इत्यादिक काम अनेक।
बलै देवो लेवो और साध नै, गुर आज्ञा बिनां न करै एक
- ६ उपवास बेलादिक तप करै, करै रसादिक परिहार।
ते पिण न करै गुरु आगन्यां विनां, बलै संलेखणा संथार॥
- ७ करै व्यावच और साध नी, और पास करावै आप।
ते पिण गुरु आगन्यां विनां, एहवी जिन सासण री थाप॥
- ८ अंसमात्र करणो करावणों, ते पिण आगन्यां ले सुवनीत।
सर्व कार्य में लेणी आगन्यां, एहवी बांधी छै अरिहंत रीत॥
- ९ सुवनीत टोळा में रह्यां थकां, ते तो सगळां नै गमतो होय।
ओर साधां साथे मेळ्यां थकां, तिण नै पाछो न ठेले कोय॥
- १० आत्मा दम इन्द्रियां वस करै, उपजावे साधां नै परतीत।
बलै लोक बतावे आंगुली, एहवो न करै काम वनीत॥
- ११ विनीत सूं गुर प्रश्न हुवै, आपै ज्ञान अमूल^२।
तिण सूं सिब-रमणी वेगी वरे, रहै सासता सूख में झूल॥

१. लय : आ तो माटी रे गति छै नार नी। २. अमूल्य

२८० तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १२ अगनहोत्री ब्राह्मण अगन नै, नमस्कार करै हाथ जोड़।
घृतादिक सींचे मंत्र भणे, तिण नै आराधे मान मोड़॥
- १३ इण दिष्टते गुर नै आराधतां, केवळी थयो शिष सुवनीत।
ते पिण सेवा भगत करै गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत॥
- १४ राज मांहे हाथी घोड़ा विनीत छै, ते तो सुख पांमे सूड़ी रीत।
नर नारी रिद्ध संपति करी, सुखी दीसै छै सुवनीत॥
- १५ बलै सुखी दीसै छै देवी देवता, जयवंत मोटा रिद्ध पाय।
जावजीव लगै सुख भोगवै, लोकां में जश कीरत थाय॥
- १६ जिके पाछल भव पुन्य बांधिया, तिके भोगवे उदै आया आप।
ते पिण प्रत्यक्ष दीसै छै लोक में, जांणे विनां तणो परताप॥
- १७ ज्यूं कोइ गुर नै रीझावे विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष।
तिण रा ग्यान दर्शन चारित वधै, वेगो पावे अविचल मोख॥
- १८ के इ पेटभराइ कारणे, सीखे सिल्पकला विगनान।
ते तो भणे संसार रा गुर कने, ते पिण विनो करै मूकी मान॥
- १९ इहलोक तणा अर्थी थकां, भणे राजादिक ना कुमार।
गुर करड़ा वचन कहै तेहनै, देवे डंडादिक परिहार॥
- २० ते पिण तिण गुर रा पग पूज नै, देवे सतगुर नै सनमान।
बलै घणां संतोषे तेह नै, बलै देवे पीतीदान॥
- २१ तो सिद्धांत भणावे तेहनीं, विनेवंत किम कियो अवतार॥
ते तो गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कियो अवतार॥
- २२ इहलोक नां गुर नो विनो कियां, कदा सीझै इहलोक काज।
पिण सतगुर रो विनो कियां, पांमे भुगत पुरी नो राज॥
- २३ मूळ नै खंध थी वृष^१ नीपजे, पछै साखा पड़साखा वखांण।
पान फूल फळ रस नीपजे, ते उत्पति सहु मूळ नी जांण॥
- २४ इण दृष्टंते जिन धर्म वृष रै, विनय रूपीयो मूल वखांण।
समकत रूपीयो थांणो तेह नै, धीरज रूपीयो कंद पिछांण॥
- २५ जस रूपीयो खंध विनो वेदका, सील रूपीयो गंध पिछांण।
सुद्ध ध्यान रूपी छै कूपळा, पंच महाव्रत साखा जांण॥
- २६ प्रतिसाखा ते पचीस भावना, बहु गुण रूपीयो छै फूल।
पंच संवर रूप फळ तेह नै, दया रूपीयो रस अमूल॥

- २७ मोख रूपीयो बीज तिण फळ मझे, एहवो धर्म छै अखोभ।
ते समदृष्ट रे हिरदे विराजतो, विनै मूळ सूं रह्यो सोभ॥
- २८ ज्यूं विरख रो मूळ सूकां थकां, सीखादिक सगळा सूक जाय।
ज्यूं विनै रूप मूळ खिस गयां, सगळा गुण खय थाय॥
- २९ गुर गुर भाइ नै टोळा तणा, गुण बोले रूडी रीत।
लोक पिण गुण ग्राम करतां थकां, सुण-सुण हरषै सुवनीत॥
- ३० सिख सिखणी मिले ओर साध नै, मिले ओषधादिक अनेक।
बलै कंठकला देखी ओर री, विनीत तो हरषे विशेष॥
- ३१ किण ही साधां रो नहीं करै ईसको, सर्व साधां नै हुवै हितकार।
एहवा सुवनीत री वासावली, फेले तीनूं लोक मझार॥
- ३२ गमतो लागै तीर्थ च्यार नै, जिण सासण रो सिणगार।
एहवै सुवनीत रे पासे रह्यां, सीखावे विनै आचार॥
- ३३ ज्यांरी जात माता री निरमळी, पिता रो कुळ छै निरदोष।
ते पिण लज्या करै सहीत छै, ते विनो करै लेसी मोष॥
- ३४ ते पिण मोह कर्म पतळो पड़्यां, सुद्ध रीत जाणें बुद्धिवान।
हाड मीजा रंगी जिन - धर्म सूं, तिण नै विनो करणो आसान॥
- ३५ केइ क्रोधी अंहकारी निरलजो, भेष पहरी करै कपटाय।
इहलोक तणां अर्थी घणां, त्यां सूं विनो कियो किम जाय॥
- ३६ अवनीत में अवगुण घणां, ते तो जाबक छोड़े विनीत।
विना रा गुण सगळा आदरै, ते तो गया जमासे जीत॥
- ३७ उतराध्येन पहलाध्येन में, दसवीकालिक नवमे जाण।
बलै ओर अनेक सिद्धांत में, किया वनीत रा वखांण॥
- ३८ सतगुर तणां वनीत नै, गुण भाखया श्री भगवंत।
कोड़ जिभ्या करे वरणवे, पिण कहतां न आवै अंत॥

इम इत्यादिक वनीत रा गुण वर्णव्या, ते भणी विनयवंत गुणवंत ते सासण में रंगरता रहे।
मुरजी प्रमाणे आखी उमर तांइ अनुकूलपणे प्रवर्त्ते। अवनीत री संगत न करै। तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो-टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़े तो टोळा रा साध-साधव्यां रा अंस मातर संका पड़ै ज्यूं अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। संका पड़ै आसता उत्तरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मांहे सूं फार नै सायै जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे न बारै नीकल्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, भागहीण सुणे तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भाग्यहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हशामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयारिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयारिए नाराहेइ, समण यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा आराध्यां
इह भव पर भवे सुख कल्याण हुवै।
ए हाजरी रची संवत् १९१० जेठ विद १४ वार वृहस्पति
बगतगढ़ मध्ये।

उन्नीसवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधनां। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण अगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परठवतां सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्थकर री आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी। जिलो न बांधणो। गुणसठा रा लिखत में तथा 'साध सीखामण री ढाळ' में तथा रास में जिला नै घणो निषेधो छै।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांगनै आप-आप रै जिले करै ते तो महाभारीकर्म जाणवो। विस्वासघाती जाणवो। इसड़ी घात-पावड़ी करै ते तो अनंत संसार री साई छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कदा कोइ असुभ कर्म रे जोग टोळा मां सूं फाड़ा-तोड़ो करै, नै एक दोय तीन आदि नीकळै, घणी धुरताइ करै, बुगलध्यानी हुवै, त्यां नै साध सरधणां नहीं। च्यार तीर्थ में गिणवा नहीं। त्यां नै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वांटे पूजे ते पिण आज्ञा बारै छै। कदा कोइ फेर दिख्या लेवे-ओर साधां नै असाध सरधायवा ने तो पिण उण नै साध सरधणो नहीं, उण नै छेरवियां तो उ आळ दे काढ़े, तिण री एक बात मानणी नहीं।

तथा संवत् १८३३ से फतूजी आदि ४ भेषधार्यां मां सूं आवी। त्यां नै भीखण जी स्वामी पहिला मरजादा बांध नै पक्की खराय नै समजाय नै दिख्या दीधी, ते कहे छै—आर्या फतूजी आदि च्यारुं जणियां दिख्या लीधां पहली सीखावण आचार गोचर बतावण री विध लिखिये छै ते चारित्र संघाते त्याग।

१. ऊभी नै कीड़ी न सूजे, जद संलेखणां करणी मंडणो।
२. विहार करण री सगत नहीं, जद संलेखणां मंडणो।
३. आर्या रो विजोग पड़्यां न कल्पै, जद संलेखणां मंडणो।
४. साध कहै जठे चोमासो करणो।
५. साध कहै जठे सेषाकाळ रहिणो।
६. चेली करणी ते साधां रा कह्यां सूं करणी। आज्ञा विना करणी नहीं।
७. सिषणी कीधा पछै पिण काइ साधपणां लायक न हुवै साधा रे चित नै वैसे तो साधां रा कह्यां सूं दूर करणी।

८. साधा री इच्छा आवै जुदो विहार करावण री ओर आर्या साधे जुदी-जुदी मेले तो नां कहिणो नहीं।
९. साध-साधवियां रो कोइ खूंचणो दोष प्रकटादिक रो ओगुण हुवै तो गुरां नै कहणो। पिण ग्रहस्थादिक आगै कहणो नहीं। आहारपाणी कपड़ादिक में साधां नै लोळपणां री संका उपजे तो साधां नै परतीत उपजे ज्यूं करणो।
१०. अमल तमाखू आदि रोगादिक रे कारणै पड़्यां लेवे पिण विस्न रूप लेणो नही। लीयाइज सजै ज्यूं करणो नहीं।
११. बले सर्व साध-साधव्यां नै आचार गोचार मांहे ढीला पड़ता देखे अथवा संका पड़ती जाणे जद समचे सर्व साध साधवियां री करली मर्यादा बांधे तो पिण ना कहिणो नही। इत्यादिक सीखावण चारित संघाते अंगीकार कर लेणी। ते जावजीव पचखाण छै।

संवत् १८३३ मिंगसर विद २ वार बुध ए लिखत वंचाय अंगीकार कराय नै समायक चारित्र अंगीकार करायो छै। बले फेर छेदोपस्थापनी चारित्र दीधो, जद पिण लिखत वंचाय नै अंगीकार कीधो छै, हरष सू च्यांसु इ आर्या। अथ अहां फतूजी नै एतलो करार करी नै टोळा मांहे भीखणजी स्वामी लीधी। दीक्षा दीधी। अनै तेतीसा रा वरस में आर्या रै मरजादा बांधी। तिण में कह्यो—

तथा चोतीसा रे वरस आर्या सर्व रे लिखत में कह्यो—मांहे मांहे आर्या-आर्या ने तूंकारो दे तिण नै पांचू विगै रा त्याग। जितरा तूंकारा काढ़े जितरा पांच-पांच दिन रा विगै रा त्याग। प्रायछित आयो तिण रो मोसो बोले जितरा पांच-पांच दिन विगै रा त्याग। ग्रहस्थ आगे टोळा रा साध आर्या री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग, जिती वार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग, आर्या री मांहे-मांहे री बात कराय नै उणरो परत वचन उण कने कहे उण रो मन भांगे जिसो कहि नै मन भांगे तो १५ दिन पांचू विगै रा त्याग, मांहेमांहे कहै—तूं सूंसा री भागल छै। एहवो कहै तिण रो १५ दिन विगै रो त्याग छै। जितरी वार करै जितरा १५ दिन रो त्याग छै। आंसू काढ़े जितरी वार १० दिन विगै रा त्याग छै। के १५ दिन में बेलो करणो। इत्यादिक करलो काठो वचन कहै तिण नै जथा जोग प्राछित छै। ए विगै रा त्याग छै ते उणरी इच्छा आवै जद साधां सूं भेळा हुआं पेली टाळणा। जो नहीं टाळे तो बीजी आर्या यूं कहिण पावै नहीं तूं टाळ हीज। साधां नै कहि देणो। साधां री इच्छा आवै तो द्रव्य क्षेत्र काळ भाव जाण नै ओर डंड देसी। अनै साधां री इच्छा आवसी तो विगै रो त्याग घणो करावसी। बलै आर्या रै मांहे २ साध-साधवियां नै न कळपे, लोकां ने अणगमती लागे, उण री जातादिक रो खूंचणो काढणो, जिण भाषा रो पिण साधां री इच्छा आवै जिता दिन देवे ते कबूल करणो छै। जिण आर्या ने ओर साथे मेल्यां ना न कहिणो। साथे जाणो न जाय तो पांच विगै खावा रा त्याग न जाय जितरा दिन। बले ओर प्राछित जठा बारै साधां रा मिलियां बिना आर्या ओर री ओर आर्या साथे जाअे तो जितरा दिन रहे जितरा दिन पांचू विगै रा त्याग। बलै ओर

भारी प्राछित जिण आय्यां साथे मेली तिण आय्यां भेळी रहे। अथवा सेषेकाळ भेळी रहै अथवा चोमासो भेळी रहे त्यां रा दोष ह्मे तो साधां सूं भेळा हुआ कहि देणो। न कहै तो उतरो प्राछित उण नै छै। पछै घणां दिन आडा घालनै कहै तो साचो कहै तो झूठो कहै तो उवा जाणो, के केवली जाणो, पिण छुदमस्थ रा ववहार में तो घणां दिनां री बात उदीरे, राग-धेष रे वस आप रे स्वार्थ उदीरे, स्वार्थ न पूगां उदीरे, तिण री परतीत मानणी नहीं आवै। ग्रहस्थ मांहे आमना जणाय नै मांहोमांहि एक-एक री आसता उतारे तिण में अवगुण घणाइ ज छै। बलै फतूजी नै मांहि लीधी तिको लिखत सगली आय्यां नै कबूल छै। बलै अनेक-अनेक बोलां री करली मरजादा बांधे ते कबूल छै। ना कहिण रा त्याग छै। बलै कर्म जोगे किण ही सूं इ आचार-गोचार न पडै, मांहोमां स्वभाव न मिलै, तिण नै साध टोळा बारै काढे अथवा क्रोध वस टोळा थी अळगी परै। तिका तो कर्मां रे वस अनेक झूठ बोले। कूडा-कूडा आळ दे। अथवा भेषधार्यां मांहे जाये तिण तो अनंत संसार आरै कीनो ते तो अनेक विवध प्रकार रो झूठ बोलेइज। काइक नहीं पिण बोले एहवी भेषभंडा री तो बात भेषधारी भारीकर्मा माने, पिण उत्तम जीव न माने। टोळा सूं छूट न्यारी हुवै री बात मानै त्यां नै मूरख कहिजे, त्यां नै चोर कहीजे। ते तो अनेक-अनेक आल दे सूस करण नै त्यारी हुवै तो ही उत्तम जीव तो न मानै इत्यादिक अवगुण घणां छै। टोळा मांहे सूं पिण टळ्यां पछै टोळा रा अवगुण बोलण रा अनंता सिद्धा री साख सूं पचखाण छै। ए लिखत सगळी आय्यां नै वंचाय नै पहिला कहवाय नै मर्यादा बांधी छै। ए लिखत प्रमाणे सगळी आय्यां नै चालणो। अनंता सिद्धां री साख सूं सगलां रे पचखाण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै, लिखत प्रमाणे चाले, ते मतो घालजो। सरमासरमी रो काम छै नहीं, जावजीव रो काम छै। सवंत १८३४ रा जेठ सुदि ९।

हेठे आय्यां रा अक्षर लिख्योडा छै। एहवो चोतीसा रे वर्स आय्यां रे लिखत कियो, तिण में कह्यो – फतूजी नै मांहि लीधी तिको लिखत सगळी आय्यां रे कबूल छै। तिण फतूजी रा लिखत में कह्यो – साधां री इच्छा आवै जुदो विहार करावण री ओर आय्यां साथे जुदी-जुदी मेले तो ना कहिणो नहीं। ए आठमो बोल कह्यो छै। तिण लेखे आचार्य श्री इच्छा आवै तो सिंघाडो राखे, इच्छा आवै तो जुदी-जुदी मेले, सिंघाडो न राखे, तो पिण ना न कहणो, एहवो कह्यो।

तथा साध-साधव्यां रो खूंचणो दोष प्रकृतादिक ओगुण हुवै तो गुरां नै कहिणो, पिण ग्रहस्थां आगै कहणो नहीं। ए नवमा बोल में कह्यो। ए पिण मर्यादा सर्व आय्यां रे जाणवी।

आहारपाणी कपडादिक में साधां रे लोळपणां री संका उपजे तो साधां नै परतीत उपजे ज्युं करणो ए दसमो बोल कह्यो। ए पिण सर्व मर्यादा सर्व आय्यां नै जाणवी। अमळ तमाखू रोगादिक कारण पड्यां लेणो पिण विसन रूप लेणो नहीं। लीया इ सजे ज्युं करणो नहीं। ए इग्यारमो बोल कह्यो। ए पिण मर्यादा सर्व आय्यां रे जाणवी। कारण विनां तो अमल तमाखू लेणो नहीं। कारण सूं लेवे ते पिण गुरु आज्ञा री बात न्यारी। बलै सर्व साधव्यां नै आचार गोचार मांहे ढीळा पडता देखे अथवा संका पडती जाणो, जद सर्व समचे सर्व साध-साधवियां री करली मर्यादा बांधे तो पिण ना कहिणो नहीं। इत्यादिक सीखावण चारित्र संघाते अंगीकार कर लेणी, ते जावजीव पचखाण छै। ए बारमो बोल पिण मर्यादा सर्व आय्यां रे जाणवी। ए बारमा बोल रे लेखे आचार्य करडी मर्यादा बांधे, तिण री पिण भीखणजी स्वामी आज्ञा दीधी। ते करली मर्यादा सर्व आय्यां नै कबूल करणी, पिण ना कहिणो नहीं।

तथा बली कह्यो आर्या रो विजोग पड़्यां न कल्पे जद संलेखणा मंडणो। साध कहै जठे चोमासो करणो। साध कहै जठे सेषे काळ रहणो। ए तीजो चोथो पांचमो बोल। ए पिण मर्यादा सर्व आर्या रे जाणवी।

तथा बली कह्यो—ऊभी नै कीड़ी न सूजै जद संलेखणा मंडणो। विहार करण री सगत नहीं जद संलेखणा मंडणो। ए पहलो दूजो बोल-ए मर्यादा सर्व आर्या रे नहीं। ते इम सर्व भीखू लिखत मर्यादा, परम्परा, सूत्र अनुसारे तथा बड़ा री धारणा प्रमाणे जाण लेणो जीत ववहार बडां रो बांध्यो। आचार्य री मर्यादा सर्व अखंड पाळणी।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़े तो टोळा रा साध साधवियां रां अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंसमात्र संका पड़े आसता उतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा मांहे सूं फाड़ नै साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे न बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। इम पेलां री परती कर नै मांहोमां मन फटै ज्युं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती करै। तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूर्यंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति ^१दशवैकालिक में कह्यो। ते मर्यादा आज्ञा

सुध आराध्यां इह भव पर भव में सुख कल्याण हुवै।

बीसवीं हाजरी

पंच सुमत तीन गुप्त पंच महाव्रत अखंड आराधणां। ईय्यां भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परिठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रकट कीधा— विरत धर्म, अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

संवत् १८३२ लिखत में एहवो कह्यो—सर्व साध-साधवी भारमल जी री आज्ञा मांहे चालणो। शेषे काळ विहार चोमासो करणो ते भारमलजी री आगना सूं करणो। विना आगन्या कठे इ रहिणो नहीं। दिख्या देणी ते पिण भारमलजी रे नामे देणी। दिख्या दे ने आण संपणो। चेला री कपड़ा री साताकारिया खेतर री इत्यादिक अनेक बोलां री ममता कर नै अनंता जीव चारित गमाय नै नरक निगोद मांहे गया छै। बलै भेषधारायां रा एहवा चेह्न देख्या छै। तिण सूं सिखादिक री ममता मिटावण रो नै चारित्र चोखो पाळण रो उपाय कीधो छै। विनै मूल धर्म नै न्याय मारग चालण रो उपाय कीधो छै। भेषधारी विकलां नै भेळा करै, ते शिषां रा भूखा, एक-एक रा अवर्णवाद बोले, फारा-तोरो करै, मांहेमां कजिया राड़ झगड़ा करै। एहवा चरित्र देख नै साध्मां रे मरजादा बांधी छै। शिख साखा रो संतोष कराय नै सुखे संजम पाळण रो उपाय कीधो छै। साध-साधव्यां पिण इमहीज कह्यो—भारमलजी री आगना मांहे चालणो। सिष करणा ते सर्व भारमल जी रे करणा। ओर रे चेला करण रा त्याग छै, जावजीव लगै। भारमलजी पिण चेलो करै ते पिण बुधवंत साध कहै—ओ साधपणा लायक छै, बीजा साधां नै परतीत आवै तेहवो करणो, परतीत नहीं आवै तो नहीं करणो। कीधा पछै कोइ अजोग हुवै तो पिण बुधवंत साधां रां कह्या सूं छोड़ देणो। किण ही धेषी रा कह्या सूं छोड़णो नहीं। नव पदारथ ओळखाय नै दिख्या देणी। आचार पाळा छां तिण रीते चोखो पाळणो। इण आचार मांहे खांमी जांणे तो अबारुं कहि देणो, पण मांहेमां ताण करणी नहीं। किण ही नै दोष भ्यास जाय तो बुधवंत साध री परतीत कर लेणी, पिण खांच करणी नहीं। भारमलजी री इच्छा आवै जद गुर भाइ अथवा चेला नै टोळा रो भार सूं जद सर्व साध-साधव्यां उण री आगन्या मांहे चालणो, एहवी रीत परंपरा बांधी छै। सर्व साध-साधवी रो मार्ग चाले जठा तांइ। कदा कोइ उसभ कर्म रे जोगे टोळा मां सूं फारा तोरो कर नै एक दोय तीन आदि नीकळे। धणी धुरताइ करै। बुगलध्यानी हुवै। त्यां नै साध सरधणा नहीं। च्यार तीर्थ मांहे गिणवा

नहीं। यां नै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वांटे ते जिण आगन्या बारै छै। कदा कोइ फेर दिख्या ले ओरां साधा नै असाध सरथायवा नै, तो पिण उण नै साध सरधणो नहीं। उण नै छेरवियां तो उ आळ दे काढे, तिण री एक बात मानणी नहीं। उण तो अनंत संसार आरे कीधो दीसै छै। कदा कर्म धको दीधां टोळां सूं टलै तो उण रै टोला रा साध-साधव्यां रा अंस मात्र हूँता अणहूँता अवर्णवाद बोलवा रा अनंता सिद्धां री नै पांचो इ पदां री आण छै। पांचोइ पदां री साख सूं पचखांण छै। किण ही साध-साधव्यां री संका पड़ै ज्यूं बोलण रा पचखांण छै। कदा उ विटळ होय सूंस भांगे तो हळुकर्मी न्यायवादी तो न मानै। उण सरीषो विटळ कोइ मानै, तो लेखा में नहीं। हिवै किण ही नै छोड़णो मेलणो परै, किण ही चरचा बोल रो कांम परै तो बुद्धिवांन साध विचार नै करणो। बलै सरथा रो बोल पिण बुद्धवंत हुवै ते विचार नै संचे बेसाणणो। कोइ बोल न बेसे तो ताणांतांण करणी नहीं। केवळियां में भळावणो। पिण खांच अंस मात्र करणी नहीं। किण ही नै कर्म धक्को देवे ते टोळा मां सूं न्यारी परै। अथवा टोळा बारै अथवा आप ही टोळा सूं न्यारो हुवै तो इण सरथा रा बाई भाई हुवै तिहां रहिणो नहीं। एक भाई बाई हुवै तिहां पिण रहिणो नहीं। वाटे बहितो कारण परियां रहै तो पांचू विगै नै सूंखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंत सिद्धां री साख कर नै छै। बलै टोळा मांहे उपगरण करै ते, पाना परत लिखे ते, टोळा मांहे थकां परत पांना पातरादिक सर्व वस्तु जांचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। एक बोदो चोलपटो, मुंहपती, एक बोदी पछेवड़ी खंडिया उपरंत वोदा रजूहरण उपरंत साथे ले जावणो नहीं, उपगरण सर्व टोळा री नेश्राय साधां रा छै। ओर अंसमात्र साथे ले जावण रा पचखांण छै। अनंता सिद्धां री साख करै छै। कोइ पछै-यां खेतरां में रहिण रा सूंस क्यूं कराया। तिण नै यूं कहिणो-रागाधेधो बधतो जाण नै कलेस बधतो जाण नै उपगार घटतो जाण नै इत्यादिक अनेक कारण जाण नै कराया छै। इसो गुणसठां रा लिखत में कह्यो।

तथा संवत् १८५० रे बरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी-किण ही सोध आय्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो। तथा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहिणो। घणां दिन आड़ा घाल नै दोष बतायै तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा संवत् १८५२ रे बरस आय्या रे मर्यादा बांधी। तिण में एहवो कह्यो-किण ही साध आय्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहिणो, तथा गुरां नै कहणो और किण ही आगे कहिणा नहीं। किण ही आय्या दोष जाण ने सेव्यो हुवै ते पाना में लिख्यां बिनां विगै तरकारी खांणी नहीं। कोई साधु-साधवियां रा ओगुण काढे तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो-‘स्वामी जी नै कहीजो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो, पिण टोळा बारै हुआ पछै साधु-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंत सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बलै करली-करली मर्यादा बांधी त्यां में पिण ना

कहिण रा अनन्ता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आय्या रे मर्यादा बांधी, तिण में कह्यो—ग्रहस्थ कनै टोळा रा साध आय्या री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी बार करै जितरा मास पांचू विगै खावा रा त्याग छै। ‘तथा वनीत अवनीत री चोपी’ में अवनीत नै घणो निषेध्यो छै। तथा रास में पिण विविध विविध कर नै ओळखायो। घणो निषेध्यो। ते गाथा—

- १ 'थे घणां दोष जाणे था साख्यात, त्यां नै जाणे बांधा दिन रात।
तो थे पूरा अग्यानी बाल, थे सूलसो कितो एक काळ॥
- २ एक दोष रो सेवणहार, तिण बांधा वधै अनंत संसार।
थे घणां दोष जाण्यां त्यां मांय, त्यां रा हिज बांधा नित पाय॥
- ३ भागलां रा बांधा जाणे पायो, जिण मारग मांहे ठागो चलायो।
रह्या कूड कपट मांहे झूल, हिवै थारो होसी कुण सूल॥
- ४ जो थे गुर मांहे दोष बताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया।
तिण लेखे पिण थे इज भूडा, ग्यानादिक गुण खोइ बूडा॥
- ५ जो थे दोष कह्या यां में कूरा, जब तो थे जाबक बूडा पूरा।
थे दिया अणहुंता आळ, हिवै रुळसो किता एक काळ॥
- ६ थे दोनूं विध बूडां इण लेखे, साच झूठ तो केवळी देखे।
छद्मस्थ तो यां एहलाणे, थां नै जाबक झूठा जाणे॥
- ७ यां कनै पहिला अवगुण कहिवाय, पछै खिसट करै इण न्याय।
यां रा वचन नै सैठा झालै, यां नै पग-पग झूठा घले॥
- ८ ए तो अवगुण बोले अनेक, बुधवंत न माने एक।
यां नै जाणे पूरा अवनीत, यां री मूल नाणे परतीत॥
- ९ अवनीतां रो करै वेसास, तो हुवै बोध बीज रो न्हास।
च्यार तीर्थ सूं पड़िया काने, त्यांरी बात अज्ञानी माने॥
- १० अवनीतां रो करै प्रसंग, तो साधां सूं जाए मन भंग।
ए साधां नै असाध सरधावै, झूठा-झूठा अवगुण बतावै॥
- ११ यां रो जाय सुणे वखांण, तिण लोपी जिनवर आंण।
यां री तहत करै कोइ वाणी, आ दुरगति नी एलाणी।
- १२ किण रे उसभ उदै हुवै आंण, ते करै अवनीत री तांण।
त्यां झूठा नै साचा दे ठहराइ, ज्यां रै अनंत संसार नहीं साइ॥

१. लय : सगळा साध सरीषा नाहि।

२९० तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १३ यां नै कहि बतलावे स्वांमी, तिण में जाणजो मोटी खामी।
यां नै ऊंचो करै कोइ हाथ, तिण रे निश्चे बंधे कर्म सात॥
- १४ यां रो जाय वखाण मंडावे, बलै ओर लोकां ने बोलावे।
इसडी करै कोइ दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जाये खाली॥
- १५ यां नै च्यार तीर्थ मांहि जाणे, ते पिण पहले गुणठाणे।
यां री करै कोइ पखपात, तिण नै आय चूको मिथ्यात॥
- १६ यां सूं करै अलाप सलाप, तिण रै पिण बंधे चीकणां पाप।
यां नै वंदणा करै जोड़ी हाथ, तिण रै वेगो आवै मिथ्यात॥
- १७ यां री भाव भगत करै कोइ, वलै आदर सनमान दे सोइ।
तिण रे सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची॥
- १८ यां सूं करै विनो नरमाइ, तिण रे लागी मिथ्यात री साइ।
घणो-घणो जो यां कनै जावै, ते समकत वैगी गमावै॥
- १९ ए अवनीत नै भागल पूरा, बलै आळ दे कूड़ा-कूड़ा।
त्यां री मान लेवे कोइ बात, ते तो बूड़ चूका साख्यात॥
- २० कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यां रे कनै जाए कोइ चाल्यो।
ते तो गुर रो न माने हटको, तिण रो हुंतो दीसै छै गटको॥
- २१ चरचा बोल सीखे त्यां आगै, तिण रे डंक मिथ्यात रा लागे।
यां रो संहंसतो^१ परचो न करणो, यां रो संग जाबक परहरणो॥
- २२ समकत रा अतिचार संभाळो, तो अवनीत सूं दे जो टालो।
जोबो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत॥
- २३ ए अवगुण बोले चिठाय-चिठाय, किण ही भोळा रे संक पड़ जाय।
जो उ न करै त्यां री पखपात, तिण रो काढणो सोहरो मिथ्यात॥
- २४ त्यां री गाढ़ी झाले पख कोइ, ते नही छोड़े झूठा जाणे तो ही।
ते बूड़सी अवनीता रे लारे, त्यां एहली दियो जन्म बिगाड़े॥
- २५ कोइ लीधी टेक न मेलै, आप रे मन मांनै ज्युं ठेळे।
जिण धर्म री रीत न जाणे, मूढ मूर्ख थको, यूं ही तांणे॥
- २६ यां कनै करै पोसो सामाइ, यां कनै करै पचखाण जाइ।
तिण री पिण जाणजो मति काची, जिण मारग में नहीं आछी॥
- २७ जे अवनीत रा पखपाती, त्यां री सुण-सुण बळ उठे छाती।
अवनीतां रो करै उघाइ, जब पिण मूढो देवे बिगाड़॥

- २८ कोइ गण में हुवै अवनीत, तिण सू गाढ़ी बांधे पीत।
ते पिण ओगुण बोलावण रे काम, इसड़ा छै मेला परिणाम॥
- २९ जिण रो धेष छै घण दिन पेळो, दुष्ट परिणाम जीव छै मेलो।
तिण रे उदै हुवै कर्म मिथ्यात, ते तुरत माने त्यां री बात॥
- ३० ते अवनीतां री करै पखपात, तिण रे आय चूको मिथ्यात।
खप करै त्यां री करवा थाप, तिण रे उसभ उदै हुआ पाप॥
- ३१ जाणो अभिमानी नै अवनीत, तो ही राखे त्यां री परतीत।
तिण रे परतख पूरो अंधारो, बूढ़े छै अवनीत रे लारो॥
- ३२ जिण नै गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नै मूढ़े लगावे।
त्यां कनै गुर रा अवगुण बोलावे, पछै लोकां में आप फैलावे॥
- ३३ करै जिण तिण आगै बात, करै अवनीतां री पखपात।
अवनीतां नै साचा सरधावे, गुर मांहे ओगुण दरसावे॥
- ३४ वांटे तो गुर नै सीस नांम, करै अवनीतां रा गुण ग्राम।
ते होय बेठा अवनीतां री लारी, बलै ओरां नै खपे करवा खुवारी॥
- ३५ गुर सू लोकां रा परिणाम फाड़ै, आप बिगड़्यो ओरां नै बिगाड़े।
इसड़ो श्रावक विश्वासघाती, ते पिण होय चूको मिथ्याती॥
- ३६ गुर री सांची बात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाय बेली।
हर कोइ अवनीत छूटे, तिण रो बेली आप होय उठे॥
- ३७ साधां रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सू बात करै दिल खोले।
अवनीत नै मिलिया अवनीत, त्यां री तेहीज करै प्रतीत।
- ३८ गुर सू पिण जाबक नहीं तोड़े, अवनीत सू पिण सटके नही जोड़े।
धर पाधर रह्या छै देख, छळ-छिदर जोवे छै विशेष॥
- ३९ जो अवनीत नै लोक न माने, तो आप पिण होय जाए काने।
अणसरते दबिया रहे मांहि, पिण लखण भदरलीया ताहि॥
- ४० केइ श्रावक दोपड़पीटा, ते पिण पडिया यां रे संग फीटा।
जो कोइ बंध निकाचित पाड़े, ते पिण अनंत संसार वधारे॥
- ४१ केइ श्रावक भागल साख्यात, ते भागलां री करै पखपात।
जाणो चोर सू मिल गई कुती, झूठी बात करै अणहुंती॥
- ४२ ते भागला नै कहै उत्कष्टो, तिण री पिण मत हो भिष्टो।
तिण भागला नै भागल मिलिया, जब पूरीजे मनरलिया॥
- ४३ असाधां नै सरधे साध, साधां नै सरधे असाध।
दोनूं प्रकारे मूर्ख बूढ़े, ते पिण जाय बेससी तूंडे॥

- ४४ एहवा अभिमानी नै अवनीत, होसी चिहुं गति मांहै फजीत।
यां नै भूंडा कह्यां लोकां आगै, यांरा पखपाती रे दाह लागै॥
- ४५ ए समचे भाव कह्या छै जाण, कोइ आप में म लीजो तांण।
एहवा अवगुण छै तिण मांय, ते छोड़्यां विण सुख नही थाय॥
- ४६ ए बिगड़ायल जैन रा पूरा, त्यां नै कर दिया गण सूं दूरा।
लाज सरम त्यां अळगी मेली, भेषधारी भागल त्यांरा बेली॥
- ४७ ए साधां में दोष बतावै, ते भेषधार्यां रे मन भावे।
यां री ठंडी कीधी यां छाती, ए पिण हुवा त्यां रा पखपाती॥
- ४८ यां तो दुरगति री नींव दीधी, भेष धार्यां रे खरची कीधी।
इण खरची सूं होसी खुराब, पड़सी चिहुं गति मांहै आब॥
- ४९ ए तो आगै इ देता था आळ, ते झूठ रो क्यांनै काढ़ै निकाल।
ओ सहजे पड़ियो झूठ पाने, हिवै ए क्यांनै राख्या छाने॥
- ५० भेषधार्यां रा श्रावक आवै, त्यां सूं तो घणा मिल जावै।
त्यांनै मीठा वचना बोलावे, त्यां आगै गुर में दोष बतावै॥
- ५१ जब ए पिण राजी होय जावै, असणादिक आछी रीत वेहरावे।
बलै ए पिण यां नै पोगां चढावै, वारूवार ओगुण बोलावे॥
- ५२ बलै मांहोमां कळहो दे लगाय, आंमी सांमी भेटी मेले ताय।
यां रे आगै इ साधां सूं धेष, तिण सूं यां री मांने वशेष॥
- ५३ बलै यां नै पूछै केइ एम, थांनै गण बारै काढिया केम।
जब ए कहै म्हानै काढ़ै क्यांनै, म्हे तो ढीळा जांणे छोड्या यानै॥
- ५४ इसड़ा झूठ बोले जांण-जांण, तिणरो कठेइ नहीं परमाण।
यां नै छोड्या एकीका नै ताय, तका तो बात दीधी छिपाय॥
- ५५ कमलप्रभा आचार्य ने देखो, तिण विचे यां री बिगड़ी विशेष।
उण वचन फेर्यो एक वार, तो उ रुलीयो अनंत संसार॥
- ५६ ए तो बके घणां दिन रात, कूड़ कपट सहित करै बात।
बलै विवधपणे देवे आळ, तो ए रुलसी कितो एक काळ॥
- ५७ इसड़ा अनंत हुआ नै होसी, परभव सामो विरला जोसी।
बलै आरा अजूणा मांहि, म्हे पिण देख लिया छै ताहि॥
- ५८ ए भाव कह्या तिण मांहि, कोइ बोल टळै छै ताहि।
केइ अनुसारे मेल्या छै न्याय, कोइ बोली रो फेर छै मांय॥
- ५९ इत्यादिक यां में ओगुण जांण, जब लाग छै जेहर समांण।
यांनै निन्हव जांणे किया दूर, तिण में मूळ म जांणजो कूड़॥

६० सेंतीसै बरस समत अठार, काती सुध एकम सनीसरवार।

निन्हव भागल रो विसतार, कीधो पादू गांम मझार।

इम रास में पिण स्वांमी भीखणजी अवनीत नै टालोकर नै भांत-भांत कर नै ओळखायो छै।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहबो कह्यो छै—टोळा मांहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारै परै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मातर अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंसमातर संका परै आसता उतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सूं फार नै साथे ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहै नै बारै नीकल्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती करै, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण, तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था विणं पूर्यंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध

आराध्यां इह भव पर भव में सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९१४ रा सावण सुदि ८

इकीसवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्त महाव्रत अखंड आराधनां । ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो । आहारपाणो लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो । सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो पूजतां परिठवतां सावधानपणै रहणो । मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो । तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी । भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख श्रद्धा आचार प्रगट कीधा— विरत धर्म, अविरत अधर्म । आज्ञा माहै धर्म, आज्ञा बरै अधर्म । असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव रो मार्ग छै । तथा विविध प्रकार री मर्यादा बांधी ।

संवत् १८५० रे वरस मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—सर्व सांधां नै सुद्ध आचार पालणो नै मांहोमां काढ़ो हेत राखणो । तिण ऊपर मर्यादा बांधी—कोइ टोळा रा साध-साधवियां में साधपणो सरधो तिको टोळा माहै रहिजो, कोइ कपट दगा सूं सांधां भेलो मांहि रहै तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै, पांच पदां री आण छै । साध नाम धराय नै असांधां भेलो रह्यां अनंत संसार बधै छै । जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते इतरी परतीत उपजावो । किण ही साध-साधव्यां रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै । किण सूं इ साधपणो पळतो दीसै नहीं अथवा सभाव किण सूं ही मिलतो दीसै नहीं अथवा कषाई धेठो जाण नै कोइ कनै न राखे अथवा खेव आछो न बतायां अथवा कपड़ादिक रे कारणे अथवा अजोग जाण नै ओर साधु गण सूं दूरो करै अथवा आप नै गण सूं दूर करतो जाण नै इत्यादिक अनेक कारण उपने टोळा सूं न्यारो पड़ै तो किण ही साध-साधवियां री निंदा करण रा ओगुण बोलण रा हुंतो अणहुंतो खूचणो काढ़ण रा त्याग छै । रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै । कदाच कर्म जोगे अथवा क्रोध रे वसै साध-साधवियां नै असाध सरधे आप में पिण साधपणो सरध नै फेर साधपणो लेवे तो पिण अठीरा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै । खोटा कहिण रा त्याग ज्यूं रा ज्यूं पाळणा छै । पछै यूं कहिण रा पिण त्याग छै—म्हे तो फेर साधपणो लीधो, अबे म्हारे आगला सूंसां रो अटकाव कोइ नही, यूं कहिण रा पिण त्याग छै । किण ही साध-साधव्यां ने पिण साध-साधव्यां री आसता उतरै, साध आर्या री संका पड़ै ज्यूं असाधपणो सरधे ज्यूं बोलण रा त्याग छै । किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, अथवा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहिणो । घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छै, प्राछित रा धणी नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणो । नहीं लेवे तो उण नै मुसकल छै । ए सर्व संबत् १८५० रा लिखत में कह्यो ।

तथा संवत् १८५२ रे वरस मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध

साधवी में दोष हुवै तो दोष रा धणी नै कहणो, पिण ओर किण ही आगै कहणो नहीं। रहिसे-रहिसे ओर भूडी जाणे ज्युं करणो नहीं। किण ही आय्यां दोष जाण नै सेव्यो हुवै ते पानां में लिख्या विनां विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड़्यां न लिखै तो ओर आय्यां नै कहणो, सायद कर ने पछै वेगो लिखणो, पिण विनां लिख्यो रहिणो नहीं। आंय नै गुरां नै मूहड़ा सूं कहणो नहीं। मांहेमां अजोग भाषा बोलणी नही। जिण रा परिणांम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो, पिण टोळा बारै हुआ पछै साध-साधवियां रा अवगुण बोलण रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख कर नै छै। कोई टोळा बारै नीकळी री बात उण लखणो हुवै ते माने, भेषधारी भागल जिण धर्म रा धेषी होसी ते मानसी। पिण उत्तम जीव तो माने नही। बलि कोइ याद आवै ते पिण लखणो। बलै करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में अनंत सिद्धां री साख करी नै ना कहिण रा त्याग छै। ए मर्यादा पाळण रा परिणांम हुवै तो आरै होइजो। सरमासरमी रो काम छै नहीं।

तथा जिलो न बांधणो। संवत् १८४५ सा रा लिखत में कह्यो-टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांग नै आप-आप रे जिले करै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो विसवासघाती जाणवो। इसड़ी घात-पावड़ी करै ते तो अनंत संसार नी साई छै। इण मर्यादा प्रमाणे चालणी नावै तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै। धनै अणगार तो नव मास मांहे आत्मा रो कल्याण कीधो, ज्युं इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो पिण अप्रतीतकारियो काम न करणो। रोगिया विचे तो सभाव रा अजोग नै मांहे राख्यो भूंडो छै। यां बोलां री मरजादा बांधी ते चोखी पाळणी। अनंता सिद्धां रो साख कर नै पचखांण छै। ए पचखांण पाळण रा परिणांम हुवै ते आरै हुयजो। विनै मार्ग चालण रा परिणांम हुवै, गुरु नै रीझावणा हुवै, साधपणो पाळण रा परिणांम हुवै, ते आरै हुयजो ठागा सूं टोळा मांहे रहणो न छै। जिण रा परिणांम चोखा हुवै ते आरै हुयज्यो। आगै साधां रे समचे आचार री मरजादा बांधी ते कबूल छै। बले कोइ आचार्य मरजादा बांधे ते याद आवै ते पिण कबूल छै। एहवो पैताळीसा रे वर्स कह्यो-

तथा पचासा रा लिखत में जिला नै निषेध्यो छै। ते भणी जिलो ते तो संजम नै टळो छै। विनीत नै अवनीत री संगत सूं बिगांडो हुवै ते भणी कुसंगत उत्तम जीव करै नही कुसंगति सूं अनेक अवगुण ऊपजे ते ऊपर स्वांमी भीखणजी दिष्टंत दियो ते गाथा-

१ गळियार गधो घोड़ो अवनीत ते, कुट्यां विण आघा न चाले रे।

तिण अवनीत नै काम भळावियां, कहां नीठ-नीठ पार घाले रे॥

धिग धिग अवनीत आत्मा॥

१. लय-शल्य कोई मत राखज्यो।

२९६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- २ गलियार गधो घोड़ो मोलवे, तो खाडेती घणो दुःख पावे।
ज्यूं अवनीत नै दिख्या दियां, पछै पग-पग गुर पिछतावे॥
- ३ बुटकने गधेड़े दुराचारी, तिण कीधी घणी खोटाइ।
आप छांदे रह्यो उजाड़ में, एक बळद नै कुबद सिखाइ॥
- ४ तिण अवनीत बळद नै तुरकियां, मार गाडा मांहि घाल्यो।
बुटकना नै आय जोतरयो, हिवै जाय उतावळो चाल्यो॥
- ५ ज्यूं अवनीत नै अवनीत मिल्यां, अवनीतपणो सीखावे।
पछै बुटकनां नै बळद ज्यूं दोनूं जणा दुःख पावे॥

इम इहां पिण कह्यो—अवनीत नै अवनीत री संगति सूं अविनीतपणो वधे, ते माटे अवनीत री संगत घणी खोटी। सूत्र में पिण अवनीत नै ठाम-ठाम ओळखायो छै। अवनीत नै उंधो ही सूजे, उंधो ही अर्थ करै।

- १ 'केइ विनीत अवनीत भण्या दोनूं गुर कने, पिण विनय सहित भणियो विनीत हो। भवि०
तिण सूं सूधो इ सूजे नै सुधो इ अर्थ करै, भण-भण नै उंधो पड़ै अवनीत हो॥
श्री वीर कह्यो अविनीत नै अति बुरो॥

- २ ते विनीत अवनीत मार्ग में जाता थकां, हथणी रो पग देखी तांम।
अवनीत कहै हाथी गयो इण मारगो, उ बोल्यो निसंग पणे आंम॥
- ३ वनीत कहै हथणी पिण कांणी डावी आंख री, ऊपरराजा री रांणी सहित।
बलै पुतर रत्न तिण री कूख में, विवरा सुध बोल्यो वनीत॥
- ४ बलै आगै गयां बाई प्रश्न पूछियो, ते उभी सरवर पाळ।
म्हारो पुत्र प्रदेश गयो मिलसी किण दिनै, जब अवनीत कहै कीधो उण काळ॥
- ५ हूं काटूं रे बाटूं जीभइली तांहरी, तूं विरओ बोले केम॥
तूं धसको क्यूं न्हाखै रे पापी एहवो, जब विनीत बोलै छै एम॥
- ६ वनीत कहै पुत्र ताहरो घर आवियो, आज मिलसी तोसूं निसंक।
इण रो वचन 'म' माने झूठ बोले घणो, इण रे जीभ बेरण रो बंक॥
- ७ ए दोनूं इ बोलां में अवनीत झूठो पड़्यो, साच उतरियो विनीत।
जब अवनीत धेष धर्यो गुर ऊपरै, कहै मोने न भणायो सूड़ी रीत॥
- ८ एहवी उंधी करै विचारणा, आय गुर सूं झगड़्यो अविनीत।
कहै मो नै न भणायो थे कूड़-कपट करी, बलै बोल्यो घणो विपरीत॥
- ९ अविनीत नै बोल्यो जाण बुरी तरे, तिण सूं गुर पूछ्यो दोयां नै विचार।
निरणो करै संका काढ़ी अवनीत री, पिण उण रो तो उहीज आचार॥

१० इह लोक रा गुर रा अवनीत री, अकल बिगड़ गइ एम।
तो धर्म आचार्य रा अवनीत री, उंधी अकल रो कहवो केम॥

इम वनीत अवनीत रा विचारणा रो फेर कह्यो। ते माटे अवनीतपणो छोड़े, वनीतपणो आदरे।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो छै—टोळा मांहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता ऊतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा बारै फाड़ नै साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहि अनै बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै। तथा भागहीण सुणे तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भाग-हीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयारिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था विणं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयारिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराध्यां इह भव परभवे सुख कल्याण हुवै। ए हाजरी रची संवत् १९१४ रा सावण विद ७

बाइसवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधणा । ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणो लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो । सूजतो आहार पिण आगला रौ अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परिठवतां सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वांमी सूत्र सिद्धान्त देख नै आचार सरधा प्रगट कीधी— विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग । तथा विविध प्रकार री मर्यादा बांधी— किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो। तथा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहणो। घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्रायछित रो धणी उ हीज छै।

तथा संवत् १८५२ रे वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो तथा गुरां नै कहिणो, और किण ही आगै कहणो नहीं। किण ही आर्या जाण नै दोष सेवे तो पाना में लिख्यां विना विगै तरकारी खांणी नही। कोइ साध आर्या रा अवगुण काढ़ै तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो स्वामी जी नै कहिजो। जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोळा बारै हुवा पछै साधु-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बलै करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा रा साध आर्या री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी बार करै जितरा बार मास पांचू विगै रा त्याग छै। जिण आर्या साथे मेल्यां तिण आर्या भेली रहै अथवा आर्या मांहे मांहे सेषे काळ भेली रहै अथवा चोमासे भेली रहे त्यां रो दोष साधां सूं भेळा हुवा कहि देणो। नहीं कहै तो उतरो प्राछित उण नै छै। टोळा सूं छूट न्यारी हुवां री बात मानै त्यां नै मूरख कहिजे, चोर कहीजे, तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धको दीधां टोळा सूं टळै तो टोळा रा साध-साधवियां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरण नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठीरा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै। उपगण टोळा मांहे करै ते, परत पाना लिखे जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो किण ही नै कर्म धको देवे तो टोळा सूं न्यारो पडै अथवा टोळा सूं आप ही न्यारो थयो। इण सरधा रा बाई भाई हुवै तिहां रहिणो नहीं। वाटे वहतो एक रात, कारण पड़िया रहै तो पांचू विगै नै सूखड़ी खावा रा त्याग छै।

अनंता सिद्धां री साख कर ने। कोइ टोळा रा साध-साधवियां में साधपणो सरधो, आप मांहे साधपणो सरधो, तिको टोळा में रहिजो। कोइ कपट दगा सूं साधां भेळो रहै, तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै। पांच पदां री आण छै, साध नाम धराय नै असाधा भेळो रद्धां अनंत संसार वधे छै, जिण रा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ, किण ही साध-साधव्यां रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटो सरधावण रा त्याग छै। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेळां री परती करण रा त्याग छै। जिणरो मन रजाबंध हुवै, चोखीतरे साधपणो पळतो जाण नै रहिणो। आप में पेळां में साधपणो जाण नै रहिणो ठागा सूं मांहे रहिण रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो-कोइ कर्म जोगे टोळा मांहे सूं फाड़ातोड़ो करी नै एक दोय तीन आदि नीकळे, धणी धुरताइ करै, बुगल ध्यानी हुवै, त्यां नै साधु सरधणां नही। च्यार तीर्थ मांहे गिणवा नहीं। त्यां नै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वांटे पूजे ते जिण आगन्या बारे छै कदाच फेर दिख्या तीर्थ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वांटे पूजे ते जिण आगन्या बारे छै कदाच फेर दिख्या लेइ ओर साधां नै असाध सरधाववा नै तो पिण उण नै साध सरधणो नही। उण नै छेरवियां तो उ आल दे काढ़े तिण री एक बात मानणी नहीं, उण तो अनंत संसार आरै कीयो दीसै छै।

इहां पिण टोलोकर नै घणो निषेध्यो छै। केइ कर्म वसै गण छोड़ नै नीकळे, केयक तो एकला ही नीसरे, अनै केयक दोय तीन आदि नीकळ नै पछै एक-एक फिरता रहै। अनेक-अनेक उंधी परूपणां करै। तिण नै भीखणजी स्वांमी एकल रा चोढाळ्यां में तथा एकल री चोपी में एहवी गाथा कही-

दोहा

- १ भला कुळ री बिगड़ी तिका, जोवे विराणां साथ।
ज्यूं साध बिगड़्यो आचार थी, ते किण विध आवै हाथ॥
- २ आज्ञा लोपी सतगुर तणी, तिण में ओपमा छै गळियार।
आप छांवे एकलो भमे, ज्यूं ढोर फिरै रुळियार^१॥
- ३ बिगड़्या धान री पाखती, बेठां दुरगंध आय।
ज्यूं एकल री संगत किया, बुद्धि अकल पत^२ जाय॥
- ४ जो एकल नै आदर दीये, तो वधै घणो मिध्यात।
फूट पड़ै जिण धर्म में, ते सुणजो विख्यात॥

१. घर-घर भटकने वाला।

२. प्रतिष्ठा

- १ 'जिण सासण में आज्ञा बड़ी, आ तो बांधी रे भगवंता पाळ।
ए तो सज्जन असज्जन भेळा रहे, छांदे चाले रे प्रभु वचन संभाळ॥
बुधवंता एकल संगत न कीजिये॥
- २ छांदो संध्यां विण संजम नीपजै, तो कुण चाले पर नी आग्या मांय।
सहु आप मते हुवै एकला, खिण भेळा खिण बिखर जाय॥
- ३ आप मते एकला हुआ, तो सासण में पर जाए घमडोल।
एहवा अपछंदा री करै थापना, ते पिण भूला भेद न पायो रहणी भोल।
- ४ वेराग घटै उण री पाखती, के उण संगत आवै मूळ मिथ्यात।
के साधा सूं उतर जाए आसता, साची सरंध्यां एकल री बात॥
- ५ ते तो भिड़कावै साधां रा समदाय सूं, आपस में बोले विरुवा वैण।
बलै छिदर धरावै एक-एक नै, साधूं दीठा बळे अंतरंग नैण॥
- ६ नकटादिक चोर कुसीलिया, वधी चावै आप आपणी न्यात।
ज्यूं भागल नै भागल मिलै, घणूं हरखे करे मनोगत बात॥
- ७ चोरी जारी आदि खून अकारज कियां, राजा कपडै करै छविछेदे खोड़।
बलै देश निकाळो दे काढियां, त्यां नै राखै भील मेणादिक चोर॥
- ८ ते बिगाड़ करै तिण देश मे, भील मेणां त्यां नै आंणी-आंणी साथ।
दुःख उपजावै रेत^१ गरीब नै, धन ले जावै कर कर त्यांरी घात॥
- ९ त्यां नै असणादिक आदर दियां, लफरो लागै भांग्या राजा तणी आंण।
कदा राय कोपे तो धन खोस ले, जीवां मारे तिण रा ए फल जांण॥
- १० इण दिष्टंते सांथां रा समदाय में, दोषण सेव्यां साधु काढै गण बार।
ते आप छंदे एकला रहै, के भागल आगै पाछै फिरे लार।
- ११ ए तो साधां रा अवगुण बोलता, मुख मीठो खेले अंतर घात।
ओछी बुद्ध वाला नै विगोवता, कूड़ी कथणी कूड़ी कर-कर बात॥
- १२ त्यां री भाव भगत संगति किया, तिण भांगी भगवंत नी आंण।
ते तो दुःख खमे इण संसार में, उत्कृष्टा अनंत जन्म मरण जांण॥
- १३ चोर नै तो आहार आदर दियां, इह लोके धन जीतब नो विणास।
भेषधारी नै भागल एक तणी, संगति कीधा कर्म तणी रास॥
- १४ उसनां कुसीलिया नै पासथा, अपछंदा संसतादिक जांण।
त्यां नै तीर्थ में गिणवा नही, आ कर लीजो जिण वचन प्रमाण॥

१. लय—चोर हंस अनै कुसीलिया।

२. प्रजा।

- १५ ए तो हेलवा निंदवा जोग छै, कष्ट करवा तिण री ज्ञाता में साख।
 त्यां रो संग परचो करणो नही, सूत्र मांहे भगवंत गया भाख॥
- १६ यां तो अनंत संसार आरै कियो, इहलोके परलोके हुसी भण्ड।
 तिण नै आहारपांणी ओषद दियां, तिण नै आवे चोमासी रो डंड॥
- १७ भेळा वेस सझाय करवी नहीं, नहीं करणो त्यां रे साथे विहार।
 यां रो संग परचो करता थंका, ग्यान दरसन चारित्र रो विगार॥

इम एकल नै ओळखायो। तिण की संगति सूं समकत आदि घणां गुणां रो नास हुवै, अवगुण नीपजे। ठांम-ठांम सूत्र में एकला नै रहणो वरज्यो छै। आचारंग व्यवहार वेद कल्प आदि अनेक साख छै। बलै भीखण जी स्वामी पिण एकला नै सफा वरज्यो छै। ते गाथा—

- १ . 'केकां सूं तो भेळो रहिणी नावै, तिण सूं फिरे एकलो आप।
 ते सुध साधां नै असाध परूपै, बलै करै एकलो रहण री थाप रे॥
 भवियण जोवो रे हिरदै विचारी, थे तो अंतर आंख उधाड़ी रे।
 भवियण एकल छै जिण आगन्यां बारी॥
- २ ओ किण कारण फिरे छै एकलो, ते तो भोळा नै नहीं ठीक।
 तिण रा कूड़ कपट नै दोष सेवण री, कुण करै तहतीक॥
- ३ तिण एकल मांहे अनेक अवगुण छै, बलै कूड़-कपट रो भंडार।
 ते एकल रहै छै सगळां सूं डरतो, रखे करेला म्हारो उधाड़॥
- ४ तिण एकल रा सील आचार री, तिण री भोळा करसी परतीत।
 के इ चतुर विचखण डाहा होसी ते, एकल नै जाणे विपरीत॥
- ५ केइ क्रोधी कषाड़ लोळपी होसी, ते तो फिरसी एकेला।
 केइ विषे तणे वस फिरे एकला, एहवा एकल कदेय न भला॥
- ६ ठांम-ठांम सूत्र मांहे श्री वीर नषेध्यो, साधु नै एकलो रहणो नांहि।
 केइ एकल नै साध सरधे न बांदे, ते पिण पड़िया मोटा फंद मांही॥
- ७ इम सांभळ उत्तम नर नारी, एकल दूर तजीजे।
 उत्तम साधु सुद्ध आचारी त्यांनै, हरष सहीत गुर कीजे॥
- ८ इण पंचमे आरै फिरै एकला, ते नेमाइ निश्चे भिष्टी।
 विवेक विकल जिण आगन्यां बारै, त्यां नै साध न सरधे समदृष्टि॥

इहां पिण एकल में तो साधपणो बिलकुल नहीं तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—टोळा माहि कदाच कर्म जोगे टोळा बार पड़ै तो टोळा रा साध साधव्यां रा अंश मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता उतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै।

१. लय—जे जे कारण जिन-आज्ञा मांहे छै।

३०२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

टोळा मां सूं फार नै साथ ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहे अनै बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्त्तन रूप बात करणी। भाग-हीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणै, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर रो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध

आराध्यां इह भव में पर भवे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९१४ रा सावण विद ६।

तेईसवीं हाजरी

पांच सुमति तीन गुमि पंच महाव्रत अखंड आराधनां । ईर्ष्या भाषा में सावचेत रहिणो । आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो । सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो । पूजतां परिठवतां सावधान पणे रहणो । मन वचन काया गुमि में सावचेत रहिणो । तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी । भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा— विरत धर्म नै अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बरि अधर्म । असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछे ने द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग छै । तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी । सर्व साधां नै सुद्ध आचार पाळणो । मांहोमां गाढो हेत राखणो । जिण ऊपर मरजादा बांधी— कोइ टोळा रा साध-साधव्यां में साधपणो सरधो, आप मांहे साधपणो सरधो, तिको टोळा मांहे रहिज्यो । कोइ कपट दगा सूं साधां भेळो रहै, तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै । पांचूं पदां री आण छै । साध नाम धराय नै असांधां भेळा रह्या अनंत संसार वधे छै । जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ । किण ही साध-साधवियां रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै । किण ही सूं साधपणो पळतो दीसै नहीं अथवा सभाव किण सूं इ मिलतो दीसै नही अथवा कसायी धेटो जाण नै कोइ कनै न राखे अथवा खेव आछो न बतायां अथवा कपड़ादिक कारण अथवा अजोग जाण नै और साध गण सूं दूरो करै अथवा आप नै गण सूं दूरो करतो जाण नै इत्यादिक अनेक कारण उपने टोळा मां सूं न्यारो पड़ै तो किण ही साध-साधवियां रा ओगुण बोलण रा, हुंतो अणहुंतो खूंचणो काढण रा त्याग छै । रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै । कदा कर्म जोगे अथवा क्रोध वस साधां नै साधवियां नै सर्व टोळा नै असाध सरधे, आप में पिण असाधपणो सरध नै फेर साधपणो लेवे तो ही पिण अठीरा साध-साधवियां री संका घालण रा त्याग छै । खोटा कहीण रा त्याग ज्यूं रा ज्यूं पाळणा छै । पछै यूं कहिण रा पिण त्याग छै । म्हे तो फेर साधपणो लीधो, अबे म्हारे आगला सूंसा रो अटकाव को नही, यूं कहिण रा पिण त्याग छै, किण ही साध आर्या नै पिण साध आर्या री आसता उतरे साध आर्या री संका पड़ै ज्यूं असाधपणो सरधे ज्यूं बोलण रा त्याग छै । किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहिणो, अथवा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहिणो, घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छै । किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री परती करण रा त्याग छै । जिण रो मन रजाबंध हुवै चोखीतरे साधपणो पळतो जाणे तो टोळा मांहे रहिणो । आप में अथवा पेला में साधपणो जाण नै रहिणो । ठागा सूं रहिवा रा

अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै। टोळा मांहे रहै जठा तांइ उण रा छै टोळा सूं न्यारो हुवै जद पानां टोळा रा साधां रा छै। साथे ले जावण रा त्याग छै। परत पाना जाचे ते पिण बड़ा री टोळा री नेश्राय जाचणा, आप री नेश्राय जाचण रा पचखाण छै। जे कोइ अजाणपणे जाचणी आवै तो पिण परत पाना बड़ा रा छै, टोळा रा छै, वा नै पिण साथे ले जावण रा त्याग छै। पातरो लोट जाचे टोळा मांहे थकां ते पिण बड़ा री नेश्राय जाचणो। बड़ा देवे ते लेणो, ते पिण टोळा मांहे छै जठा तांइ। टोळा बारै जाय तो साथे ले जावण रा त्याग छै। कपड़ो नवो हुवै ते पिण टोळा बारै ले जावण रा त्याग छै। दिख्या देणी ते पिण बड़ा रे नांमे देणी। आप आप रै चेलो करवा रा त्याग छै। आगै पानो लिखियो छै—तिण में साधां रे मरजादा बांधी छै—तिण प्रमाणे सगळा रे त्याग छै उवा मरजादा पिण उलंघण रा त्याग छै। जो किण ही साध मरयादा रो उलंघवो कीधो अथवा आगन्या मांहे नहीं चलिया अथवा किण ही नै अथिर परिणांमी देख्यो अथवा टोळा मांहे टिकतो न देख्यो तो ग्रहस्थ नै जणावण रा भाव छै। साध-साधव्यां नै जणावण रा भाव छै। पछै कोइ कहोला म्हारी लोकां मांहे टोळा मांहे आसता उतारी। तिण सूं घणां सावधान पणे चालज्यो। एक-एक नै चूक पर्या तुरत कहिज्यो। महां ताइ कजियो आणज्यो मती। उठे निवेरज्यो, पूछ्यां अथवा अणपूछ्यां बीती बात कइ देणी बाकी उठै ही निवेर लेणी। कोइ टोळा मां सूं टळ नै साध-साधवियां रा दोष बतावै अवर्णवाद बोले तिण नै झूठाबोलो जाणणो। साचो हुवै तो ज्ञानी जाणे। पिण छदमस्थ रा व्यवहार में तो झूठो जाणणो। एक दोष सूं बीजो दोष भेळो करै ते तो अन्याइ छै। डाहा हुवै ते विचार जोयज्यो। लूखे खेतर तो उपगार हुवै ते छोड़ नै न रहे, आछे खेतर उपगार न हुवै तो ही पर रहै। ते यूं करणो नहीं। चोमासो तो अवसर देखे तो रहणो, पिण सेषे काळ तो रहणो ही। किण री खावा पीवादिक री संका पड़ै तो उण नै साध कहै, बड़ा कहै ज्युं करणो, दोय जणां तो विचरे नै आछा आछा मोटा साताकारियां क्षेत्र लोळपी थकां जोवता फिरै नै रहै, गुर राखे तठे न रहै, इम करणो नहीं छै। घणां भेळो रहितो दुखी, दोय जणां में सुखी, लोळपी थको यूं करणो नहीं छै। आप किण ही नै परत पाना उपगरण देवे ते तो आघाइज^१ देणा पिण न्यारो हुवै जद पाछा मांगण रा त्याग छै। जिण री आसंग हुवै ते देज्यो। आर्या सूं देवो लेवो लिगार मातर करणो नहीं। बड़ा री आला विना आगै आर्या हुवै जठै जाणो नहीं। जाए तो एक रात रहिणो, पिण अधिको रहिणो नहीं, कारण पड़िया रहै तो गोचरी रा घर बांट लेणां, पिण नित रो नित पूछणो नहीं। कने बैठण देणी नहीं उभी रहिण देणी नहीं, चरचा बात करणी नहीं। बड़ा गुरवादिक रा कह्या थी कारण री बात न्यारी छै। सरस आहारादिक मिलै तिहा आग्या विना रहिणो नहीं, बलै काइ करली मरजादा बांधी तिण में ना कहिणो

१. सम्पूर्ण रूप से ।

नहीं। आचार री संका पड़्यां थी बांधे, बलै कोइ याद आवै ते लिखां, ते पिण सर्व कबूल छै। ए मर्यादा लोपण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखाण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै, सूंस पाळण रा परिणाम हुवै, ते आरै होयज्यो। सरमासरमी रो काम छै नहीं। संवत् १८५० रा लिखत में बात कही। इम इत्यादिक मर्यादा अनेक-अनेक बंधवस्ती में रहै हरष सहित अंगी करे अनेक-अनेक त्याग सिद्धां री साख पंच पंदा री साख सुं च्यार तीर्थ री साख सुं अन्य मती देख्या पिण ते सर्व सोगन लाज छोड़ नै भांग देवे। पछै आप मते फिरे अनेक-अनेक परूपणां करै घुनराइ करै। तथा लोक देखाउ करणी पिण करै। पिण टाळोकर री सनंथ न्ही लेखवणी इसी श्री भीखणजी स्वामी कही ते ढाळ कहै छै—

- १ 'घर छोड़ी ली गुर कनै दिख्या, केइ दुःखदाइ हुवै चेला।
गुर नै उथापे हुवा छै अग्यांनी, गण सुं पड़िया फिरै अकेला॥
ए टोळा रा अवगुण बोले टालोकर, तिके प्रतक्ष साधां रा धेपी रे।
जो किण रा मन मांहे संका हुवै तो, अरुबरु ल्यो देखी॥धुपदं॥
- २ साधपणो कहै म्हेइज पाळां, ते हिया तणे बल बोले।
कर्मा रे वस क्यूं ही न सूजे, ए मोह मिथ्यात में डोले॥
- ३ सांग साधू रो पिण अकल न काइ, सीख दिया करै कजिया।
रात दिवस करै छै निंघा पूरी, बलै छोड़ी लोकां री लजिया॥
- ४ अनेक साधां री करै छै निंघा, पोते होय बेटा बाजे वैरागी।
ते अपछंदा जिण आग्या बारै, ज्यांसूं मुगत पुरी रही आधी॥
- ५ जो सीत काळै रहै सदा उघाड़ा, बले लूखी खावै रोटी।
पिण नंघा न छूटी सुद्ध साधा री, तिके भेष लेइ हुवा खोटी॥
- ६ मास-मास करै पारणो कोयक, बलै सहै सूरज रो तापो।
तो पिण गरज सरै नही काइ, तिण खोयो नंघा कर आपो॥
- ७ छिद्रगवेषी नै दुष्ट परिणामी, तिण वरत किया नव कोटि।
झूठ बोलण री पिण संक न राखै, तिण रे भोळप मोटी॥
- ८ क्रोध मांहे सदाइ रहै कळिया, मान मांहे नहीं मावै।
आप री कीरत आप कहै मूरख, पड़्या लोकां में पमावै॥
- ९ देवाळिया नै देवाळिया सूजे, साहूकारां नै उड़वै।
ते बिगड़ायल भेष रा भारीकर्मा, सुद्ध साधां रो सुजश गमावै॥
- १० आप ने अणहुंतो उतकष्टो थापै, बलै उतमा नै खोला।
साध साधवियां नै निजरा दीठां, त्यांरा बलै आंख्यां रा डोला॥

१. चतुर विचार करी ने देखो।

- ११ कदा पांणी छोड़ नै धोवण लेवै, बलै पंच विगै देवै त्यागी।
पिण साधां री निंदा करणी न छूटी, तिण सूं विपत रही नित लागी॥
- १२ कदा लकड़ी जिम जे काया सुकावै, पिण नंदा करणी नही छूटी।
बलै साधू ज्युं पूजावै लोकां में, ज्यां री हिया निलाड़ी री फूटी॥
- १३ अपछंदा केइ पूत कुपात्र, घणी हिया मांहे घातो।
दुखदाइ जीव जवा सरीषा, ज्यां रे हुंकारे मूंहगी बातो॥
- १४ गुर निंदक महामोहणी बांधी, पाप समण ते पूरा।
दोय सूत्रां मांहे पाठ उघाड़ा, निंदक लबाळ ते कूड़ा॥
- १५ अळगा थइ नै अवगुण बोले, त्यां री अकल गइ दपटाइ।
संपत आवतां कूटी नै काढ़ै, आ विपत नै नेड़ी बुलाइ॥
- १६ मूर्ख मन में नहीं विचारे, मारै कह्या हुसी किम भूंडो॥
संघ उथाप नै धर्म रा धेपी, बलै मांडे मुगत नै मूंहडो॥
- १७ उलटबुद्धि अळखवणा बोले, अवगुण साधां रा गावै।
माठी गति रा पावणा पापी, एलै^१ जन्म गमावै॥
- १८ निंदक नीच उघाड़ा कूवा, जिण में पड़ै मत अंधा।
मूरख मोह अग्यान में खूता, त्यांरा पिण केइ होय बैठा बंदा॥
- १९ लख चोरासी में गोता खासी, भमसी दड़ी^२ जिम दोटो।
उतकण्ठो काळ अनंतो रुलसी, इण मत झाळ्यो खोटो॥
- २० ज्यांनै नै टाळ दिया टोळा सूं दूरा, त्यां में अविनय रो ओगुण भारी।
त्यांरो टोळा में टिकणो अति दोरो, गुर रा नहीं आज्ञाकारी॥
- २१ सतगुर री परतीत ज राखो, जो तिरिया चावो भव पारो।
ज्युं सुखे-सुखे सिवपुर में जाओ, तिहां वरतसी जे जे कारो॥

इम इत्यादिक अनेक-अनेक टाळोकर रा अवगुण कह्या ते भणी तेहनी संगत न करणी।

तथा पैताळीसा रा लिखत में एहवो कह्यो—टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता ऊतरे ज्युं बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सू फार नै साधै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहे अनै बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटै ज्युं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै। तथा भागहीण सुणै तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण तिण नै तीर्थकर रो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन अधिकार देणी।

१. अफल। ३. गेंद।

२. शिथिल।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
इति दशवैकालिक में कह्यो । ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध
आराध्यां इह भव पर भवे सुख कल्याण हुवै।
ए हाजरी रची संवत् १९१४ रा भादवा विद ६।

चौबीसवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्त पंच महाव्रत अखंड आराधणां । तीर्थकर आचार्य री आज्ञा सुद्ध पाळणी । तथा भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धांत देख सरधा आचार प्रगट कीयो—विरत में धर्म, अविरत में अधर्म । आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म । असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग ।

तथा संवत् १८५० रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बांधी—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, तथा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहिणो । घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै ।

तथा संवत् १८५२ वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो दोष रा धणी नै कहिणो, तथा गुरां नै कहिणो, पिण और किण ही आगै कहिणो नही । किण ही आर्या दोष जाणनै सेव्यो हुवै ते पांना में लिखियां विनां विगै तरकारी खाणी नही । कोइ साधु-साधवियां रा अवगुण काढ़ै तो सांभळवा रा त्याग छै । इतरो कहणो—‘स्वामी जी नै कहिजो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो । पिण टोळा बारै हुवा पछै साधु-साधवियां रा अवगुण बोलण रा अनंत सिद्धां री साख कर नै त्याग छै । बलै करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में पिण रा कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै । तथा चौतीसा रा वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा सूं छूट न्यारो हुवा री बात माने त्यां नै मूरख कहीजे त्यां नै चोर कहीजे ।

तथा पचासा रा लिखत में तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धक्को दीधां टोळा सूं टळै तो टोळा रा साध-साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै । टोळा नै असाध-सरध नै नवी दिख्यो लेवे तो पिण अठीरा साध-साधवियां री संका घालण रा त्याग छै । उपगरण टोळा मांहि करै ते, परत पाना लिखे जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै ।

तथा जिलो न बांधणो संवत् १८४५ रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहे पिण साधां रा मन भांग नै आप-आप रे जिले करै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो, विसवासघाती जाणवो । इसड़ी घात-पावड़ी करै ते तो अनंत संसार नी साइ छै । इण मर्यादा प्रमाणे चालणी नावै । तिण नै संलेखणां मंडणो सिरे छै । धनै अणगार तो नव मास मांहे आत्मा रो कल्याण कीधो ज्युं इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो । पिण अप्रतीतकारियो काम न करणो, रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग नै मांहे राख्यो भूंडो छै यां बोला री मर्यादा बांधी ते लिखी छै, ते चोखी पाळणी । अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखांण छै । ए पचखांण पाळण रा परिणाम हुवै ते आरै हुयजो । विनै मारग चालण रा परिणाम

हुवै गुरु नै रीझावणां हुवै साधपणो पाळण रा परिणाम हुवै ते अरै हुयजो। ठागा सूं टोळा मांहे रहिणो न छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते अरै हुयजो। आगै साधां रे समूचे आचार री मर्यादा बांधी ते कबूल छै। बलै कोइ आचार्य मर्यादा बांधे ते याद आवै ते पिण कबूल छै। उण नै साधु किम जाणिये जे ऐकलो वेण री सरधा हुवै। इसडी सरधा धार नै टोळा मांहे बेठो रहै। माहरी इच्छा आवसी जद एकलो हुंसूं, इसडी सरधा सूं टोळा मांहे रहै ते तो निश्चे असाध छै। साधपणो सरधे तो पहिला गुणठाणा रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं मांहे रहे छै, तिण नै मांहे राखै जाण नै त्यां नै पिण महादोष छै। तथा बली पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—बली कोइ करली मर्यादा बांधे तिण में ना कहणो नही, आचार री संका पड़्या थी बलै कोइ याद आवै ते लिखां ते पिण सर्व कबूल छै। ए मर्यादा लोपण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखाण छै। जिण रा परिणाम हुवै ते अरै होयजो। सरमासरमी को काम छै नहीं।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—टोळा सूं न्यारो हुवै तो इण सरधा रा भाया बाया हुवै तिहां रहिणो नही, एक भाई वाई हुवै तिहां पिण रहिणो नही। वाटै बहितो एक रात कारण पड़िया रहै तो पांचू विगै सूखडी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख कर नै छै। ते भणी अवनीतपणो छोड़ मर्यादा सुद्ध पाळे ते विनीत तथा सूत्र में पिण वनीत नै सरायो ते पाठ—

“एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं—तद्दिडीए, तम्मुत्तिए, तप्पुरक्कारे तस्सन्ना तन्निवेसणे, जयं विहारी, चित्तनिवाती, पंथनिझाइ, पलिवाहिरे”—आयारो १।५।५।

अथ इहां वनीत नै ओळखायो आचार्य री दृष्ट प्रमाणे दृष्ट राखणी। आचार्य रा जाणपणां लारै जाणपणो राखणो कह्यो। इत्यादिक अनेक कार्य में आचार्य री मुरजी प्रमाणे विचरणो।

तथा संवत् १८४५ रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहे सूं कदा कर्म जोगे टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता ऊतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा सूं फाड़ नै साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोळा मांहे न बारै नीकळ्या पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहेमां मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी, भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा सुणे ते भागहीण, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण, तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥
इति दशवैकालिक में कब्बो । ते मर्यादा आज्ञा आराध्यां
इह भव पर भव में सुख कल्याण हुवै।

पच्चीसवीं हाजरी

पंच समिति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधनां । ईर्ष्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो । आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो । सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो । पूजतां परिठवतां सावधानपणे रहणो । मन वचन काया गुप्ति में सावधानपणे सचेत रहणो । तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी । श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देख नै आचार श्रद्धा प्रगट कीधा— विरत धर्म, अविरत अधर्म, आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म । असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछै ते धेष, तिरणो बंछै ते वीतराग नौ मार्ग छै । तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी । किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, तथा गुरां नै कहणो । ओरां नै न कहिणो घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छै ।

तथा संवत् १८५२ रे वरस आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो दोष रा धणी नै कहणो, तथा गुरां नै कहिणो, पिण और किण ही आगै कहिणो नहीं । आर्या जाण नै दोष सेव्यो हुवै ते पानां में लिख्या विनां विगै तरकारी खाणी नही । कोइ साधु-साधवियां रा ओगुण काढै तो सांभळण रा त्याग छै । इतरो कहिणो—‘स्वामी जी नै कहिजो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो, पिण टोळा बारे हुवां पछै साधु-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै । बलै करली-करली मर्यादा बांधे त्यां में पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै ।

तथा चोतीसा रे वर्स आर्या रे मर्यादा बांधी, तिण में कह्यो— गृहस्थ कनै टोळा री साध आर्या री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण रे एक मास पांचूं विगै रा त्याग छै । जितरी वार करै जितरा मास पांचूं विगै खावा रा त्याग छै । जिण आर्या साथे मेल्यां तिण आर्या भेळी रहै अथवा आर्या मांहो मांहि शेषे काळ भेळी रहै अथवा चोमासे भेळी रहै, त्यां रा दोष हुवै तो साधां सूं भेळा हुवा कहि देणो, न कहै तो उतरो प्रायछित उण नै छै । टोळा सूं छूट हुवां री बात माने त्यां नै तो मूरख कहीजे, त्यां नै चोर कहिजे ।

तथा पचासा रा लिखत में तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म धक्को दीधां टोळा सूं टळे तो टोळा रा साध-साधव्यां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै । टोळा नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठीरा साध-साधवियां रे संका घालण रा त्याग छै । उपगरण टोळा मांहे करै ते, परंत पाना लिखे जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै ।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—किण नै कर्म धक्को देवे तो टोळा सूं न्यारो पडै

अथवा टोळा सूं आप ही न्यारो थयां इण सरधा रा भाई बाई हुवै त्यां रहणो नही। वाटे वहतो एक रात कारण परिया रहै तो पांचू विगै सूंखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख करै नै छै। कोइ टोळा रा साध-साधवियां में साधपणो सरधो आप मांहे साधपणो सरधो तको टोळा मांहे रहिजो। कोइ कपट दगा सूं साधा भेल्लो रहै तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै। पांचू पदां री आण छै। साध नाम धराय नै असाधां भेल्लो रह्या अनंत संसार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध-साधव्यां रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेल्ला री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजाबंध हुवै चोखी तरह साधपणो पळतो जाणे तो टोळा मांहे रहिणो। आप में अथवा पेल्ला में साधपणो जाण नै रहिण, ठागा सूं मांहि रहिवा रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखांण छै। तथा साध-सिखावणी ढाल में तथा रास में पिण तथा घणां लिखंता में जिला नै निषेध्यो छै। फाड़ा तोड़ो करै, आमी साहमी बातां कर नै साध-साधव्यां रा मन भांग नै मन फड़वै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो। दगाबाजी कपटी जाणवो। विसवासघाती जाणवो। तथा महा मोहणी रा ढाळ में पिण एहवो कह्यो, ते गाथा—

१९ 'गुण वधिया गुर ही नेसरा त्यां सूं दगो करै मन मांय रे।

छळ छिद्र जोवै चोर नी परै, शिष-शिषणी लेवे फटाय रे॥

इम कर्म बंधे महा मोहणी॥

२० साध साध्वी श्रावक श्रावका, त्यानै फारण रो करै उपाय।

गुर सूं मन भांगे ते नो, झूठा-झूठा अवगुण दरसाथ॥

२१ करै विसासघात मांहे थको, मुख मीठो खोटो मन माहि।

बलै जिलो बांधे और साध सूं, आप रो कर राखे ताहि॥

२२ राजा नही तिण नै राजा कियो, राज दीधो मोटे मंडाण।

ते तो उपगारी छै मूळगो, तिणनैइज दुख देवे जाण॥

२३ सर्पणी इंडा गलै आप रा, अस्त्री मारै निज भरतार।

बलै चाकर मारै ठाकुर भणी, गुर नै शिष्य न्हाखे मार॥

२४ मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नै हणै माठे ध्यान।

कोइ मारै अधिकारी पुरुष नै, कुल में दीवा समान॥

२५ कोइ संत ऋषेस्वर मोटको, घणां जीवां रो तारणहार।

द्वीपा समान डूबता जीव नै, त्यां नै हणे कोइ धेषधार॥

- २६ कोइ चारित्र लेवा उठीयो, केइ चारित्र पाळै ताथ।
तिण चारितियां नै चारित्र थकी, भिष्ट करवा करै उपाय॥
- २७ उत्कष्टा ग्यानी केवळी, त्यां रे संजम तप री समाधि।
ते तो प्रतिबोधे भव्य जीव नै, त्यां रा बोले अवगुणवाद॥
- २८ न्याय मार्ग छै सुध मुगत रो, तिण सूं तपतो रहै दिन रात।
तिण मार्ग सूं चूकाय दे, खोटी सरथा हिया में घात॥
- २९ आचार्य उवज्झाया त्यां कनै, साधु हुबो छोड़े मायाजाल।
बले भणियो सिद्धंत त्यां कनै, त्यां नै ही निंदे मूर्ख बाल॥
- ३० आचार्य उवज्झाया तेह नी, न करै सेवा भगत मन सुध।
विनो वियावच पण करै नही, अहमेव पणां री बुध॥
- ३१ आचार्य उवज्झाया त्यां कनै, ग्यान दर्शन चारित्र पाय।
त्यां सूं पिण मूढ करै बरोबरी, बलै सनमुख झगड़े आय॥
- ३२ आचार्य उवज्झाया त्यां कनै, समझे कियो परत संसार।
बलै संजम रे सनमुख किया, त्यां रा अवगुण बोले वारूवार॥
- ३३ आचार्य उवज्झाया गण थकी, अवनीत नै देवै दूर टाळ।
जब अवनीत क्रोध तणे वसै, हेले दे दे झूठा आळ॥
- ३४ आचार्य उवज्झाया तेह नी, वंदणा छुड़वै संका घाल।
उत्तमा री उतारै आसता, दुष्ट अवनीत री ए चाल॥
- ३५ आचार्य उवज्झाया ऊपरै, कोइ पड़िबजै पूरो मिथ्यात।
तिण अवनीत नै संवलो सूजै नहीं, करै जोम^१ नै गाढ री बात॥
- ३६ कोइ बहुश्रुती निश्चै नही, ते कहै हुं छूं बहुश्रुती साध।
मो बरोबर सुतर कुण भण्यो, अभिमांनी करै झूठो विवाद॥
- ३७ कोइ तपसी तो निश्चै नहीं, ते कहै हुं छूं तपसी घोर।
तिण नै तीन लोक रा चोर सूं, उत्कष्टो कह्यो वीर चोर॥
- ३८ बालक तपसी गरढा ग्लान छै, त्यां री न करै वैयावच देख।
ते छती सगत धेठो थको, बलै राखे त्यां ऊपर धेष॥
- ३९ बलै कपट केलव झूठो कहै, हुं करूं छूं वैयावच ताथ।
पिण दुष्ट परिणामा तेह नै, उळटी देवे अंतराय॥
- ४० कलह कारणी कथा कहै, बलै घालै मांहि-मांहि खेद।
आंमी-सामी करै लगावणी, पाड़ै च्यार तीर्थ में भेद॥

- ४१ चेला रो मन भांगे गुर थकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग।
 यां नै भेद घाली न्यारा करै, तिण पैर बिगाड़्यो सांग॥
- ४२ गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्यां सूं दूर करै भरमाय।
 जीवै ज्यां लग भैळा हुवै नहीं, एहवी मोटी देवै अंतराय॥
- ४३ गण मांहि वसै साध-साधवी, त्यां में पाड़े विषेरो कोय।
 चित्त भंग करै यां रो एहवो, कदै फेर मिलाप न होय॥
- ४४ साधवी गण सूं फाड़ नै, आप रा कर राखै ताहि।
 गुर सूं छानै-छानै बांधे जिलो, मूर्ख चोरी करै गण मांहि॥

इम भेद पाड़े, जिलो बांधै, तिण नै घणो निषेध्यो छै।

तथा पैताळीसा रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंसमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंसमात्र संका पड़ै आसता ऊतरे ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सू फार नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा माहै नै बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था विणं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध

आराध्यां इहभव पर भवे सुख किल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९१४ रा मृगसर सुध १४

छब्बीसवीं हाजरी

पंच सुमति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड पालणां। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा कर नै ताय तपाय नै निरदोष लेणो। पिण गोळा सूं लेणो नहीं। दातार नै पिण निरदोष देणो।

तथा भीखणजी स्वामी सूत्र देख सरधा आचार प्रगट कीधा—विरत में धर्म, अविरत में अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म नै पाप। असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछै ते द्वेष, तिरणो बंछै ते वीतराग देव रो मारग।

तथा संवत् १८५० रा लिखत में कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, तथा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहणो। घणां दिन आड़ा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा संवत् १८५२ वर्स आर्या ने मर्यादा बांधी, तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, तथा गुरां नै कहणो, पिण और किण ही आगे कहणो नहीं। किण ही आर्या जाण नै दोष सेव्यो हुवै ते पानां में लिख्यां विना विगै तरकारी खांणी नहीं। कोई साध-साधवियां रा ओगुण काढ़ै तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहणो—‘स्वामी जी नै कहिज्यो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहि रहिण रा हुवै, रहिज्यो। पिण टोळा बारै हुवा पछै साध-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। बलै करड़ी मर्यादा बांधे त्यां में पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। तथा चोतीसा रे वर्स आर्या रे मर्यादा बांधी तिण में कह्यो—टोळा रा साध-साधवियां री निंदा करै तिण ने घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी बार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग छै। जिण आर्या साथै मेल्या तिण आर्या भेळी रहै, अथवा आर्या मांहोमां शेषे काळ भेळी रहै अथवा चोमासे भेळी रहै, त्यां रा दोष देखे तो साधा सूं भेळा हुवां कहि देणा। न कहै तो उतरो प्रायछित उण नै छै। टोळा सूं छूटक न्यारा हुवा री बात माने त्यां ने मूर्ख कहिजे। त्यां नै चोर कहिजे।

तथा पचासा रा तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—धक्को दीधां टोळा सूं टलै टोळा रा साध-साधवियां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा रा साध साधव्यां नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवै तो पिण अठीरा साध-साधवियां री संका घालवा रा त्याग छै। उपगण टोळा मांहि करै ते, परत पाना लिखे ते जाचे ते, साथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—किण ही नै कर्म धक्को दीधां टोळा सूं न्यारो परै

अथवा आप ही न्यारो थयां इण सरधा रा बाई भाई हुवै त्यां रहिणो नहीं। बाटै वहैतो एक रात कारण पड़िया रहै तो पांचू दिगै नै सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख कर नै छै। टोळा रा साध-साधवियां में साधपणो सरधो, आप माहै साधपणो सरधो, तिको टोळा माहै रहज्यो। कोई कपट दगा सूं साधा भेलो रहै, तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै। पांचू पदां री आण छै। साध नाम धराय नै असाधां भेलो रह्या अनंत संसार बधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध साधवियां रा ओगुण बोल नै किण रो मन भांग नै खोटा सरधावा रा त्याग छै। किण ही रा परिणाम न्यारा हुवण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री पडती करण रा त्याग छै। जिणरो मन रजाबंध हुवै चोखी रीते साधपणो पळतो जाणो तो टोळा माहि रहिणो। कोई कपट दगा सूं रहिणो नहीं। आप में अथवा पेला में साधपणो जाण नै रहिणो। ठागा सूं माहै रहिण रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखांण छै। तथा भीखणजी स्वामी चंदू वीरां नै अजोग जाण नै काढी ते ढाळ-

१ 'टोळा बारे काढी जद रोवती बोली, म्हांने मती काढो आप टोळा बारै। विलविलाट तो कीधा इण विविध प्रकारे, इण बोल्या में साच न जाण्यो लिगार।
टोळा री टाळोकर रो संग न कीजै॥धूपदं॥

- २ मर्यादा बांधी ते तो लोप दीधी छै, सूंस कराया ते पिण दिया उड़ाय। अनंता सिद्धां री आण पिण भांगी छै पापण, तिण नै कुण राखसी टोळा रे मांय।
- ३ गुर-बैन ने फाड़ नै चैली कीधी छानै, ओ पण मोटो दोष चोरी लागो॥ बलै दोष अनेक चोड़े-धाड़े सेव्या, तो ही टोळां माहै रहिवा रो मन आघो॥
- ४ कूड़ा-कूड़ा आळ साधवियां नै दीधा, गुर-बैन ने चैली करवा रे तांड। तिण रो मन भांग्यो साधु-साधव्यां थकी, तिण नै कुण राखसी टोळा रे माहि॥
- ५ साध साधव्यां ने असाध ठहराया, आप तो पोते साधवी ठैरी। विकलां आगै वणी छै कूकड़धम ज्युं, एहवी जैन री बिगड़ायल गैरी॥
- ६ हिवै साध आय काढी सगळां री संका, आळ दिया त्यांरो काढ्यो निकाळो। जब लोकां पिण झूठी जांणे लीधी तिण नै इण पापण रो मूढो कर दियो काळो॥
- ७ फिट-फिट हुइ छै च्यारुं तीर्थ में, च्यारुं तीर्थ में जांणी खोटी विशेष। कद्दो निरलजी नागड़ी लज्जा रहीत छै, या तो पैहर बिगाड़्यो साधु रो भेष॥
- ८ थोड़ी घणी जो यां में लाज शर्म हुवै तो, सैहदा लोकां में मूढो नहीं दिखावे। पिण लाज न सर्म जाबक छोड़ बैठी, बलै साधपणा रो नाम धरावै॥
- ९ ए साधपणो तो खोय बैठी छै, बलै समकत पिण दीसै छै खोइ। ए लौकिक रो पिण डर नही राखै, यां नै हटकण वालो न दीसै कोइ॥

- १० ए गामां नगरां रलियाळ ज्यूं फिरती, साध साधवियां रा अवगुण गावै।
झूठा-झूठा आळ साधां ने दैइ, काचा नै साधां सेती भिड़कावै॥
- ११ जे हीण-पुनिया हीण-बुद्धि जीव छै, ते जाय बैससी भागळां रे पास।
बलै अशुभ कर्म उदै आया छै, ते करसी भागळां रो विसवास॥
- १२ ए झूठा-झूठा आळ देवे साधां रे, त्यां भागळां री कोइ मानसी बात।
तिण रे पिण असुभ कर्म उदै आया छै, यां री संगत किया सूं आवै मिथ्यात॥
- १३ त्यां विकळां कनै करै सामाइ, त्यां विकळां कनै जाय सुणै वखांण।
बलै हाव भाव करै त्यां विकळां सूं, त्यारै पका बूड़ण रा ए हीज एहलाण॥
- १४ समदृष्टि नै यां रो संग न करणो, बलै न करणी यां सूं पीत।
ए अनंत सिद्धां री आंण करै तो ही, यां री तो मूळ न करणी प्रतीत॥
- १५ अनंत सिद्धां री आंण तो घणी वार भांगी, त्यां विकलां री कुण राखसी प्रतीत।
यां रा सूंस तणी परतीत राखै तो, ते पिण होसी घणां फजीत॥
- १६ यां नै सैदी जांण यां सूं भेळप राखै, यां सूं मिल नै करै कोइ बात।
त्यां रे समकम रा पजवा पडै हीणा, आवतो आवतो आवै मिथ्यात॥
- १७ ज्यां रे साधां रा अवगुण बोलावणा होसी, ते तो विकळां ने जाय बतलावै।
सेणा समदिष्टी श्रावक हुसी ते, त्यां विकळां कनै क्यां रे तांइ जावै॥
- १८ ए तो भागळ तूटळ भिष्ट होय बैठी, त्यां विकळां ने मूढे विकळ लगावै।
'यां रा माजना' रा' या सूं प्रीत बांध नै, साध साधव्यां रा अवगुण बोलावे॥
- १९ बलै आछो-आछो आहार खावण रे कारण, भेषधारां रा श्रावकां सूं मिल जावै।
साधां सूं लड़ण आवै बाजार रे मांहि, भेषधारां रा श्रावकां नै साथे ल्यावै॥
- २० जांणे साधां रा ओगुण बाजार में काढ़ूं, तो राजी होय नै म्हांनै आछो वहरावे।
पिण दोनूं बाजार में पड़ गया फीटा, जब मूढो बिगाड़ नै पाछा जावै॥
- २१ जो या सरधा यांरा घट माहै हुवै तो, सरधा पमाइ छै त्यां रा गुण गावै।
समकत रो माहै सींचो^२ हुवै तो, त्यां रा अवगुण बोलणी किणविध आवै॥
- २२ सुध साधां री वैरण होय बैठी, बलै भेषधारां सूं प्रीत बणावै।
भेषधारां पिण यां नै जांण लीधी छै, तिण सूं ए पिण यां नै मूढे न लगावै॥
- २३ कहि कहि नै कितरोयक कहूं, यां रा चाळा नै चरित्र विविध प्रकार।
पिण ए साधपणा लायक नही दीसे, तिण सूं काढ़ दीधी छै टोळा रे बार॥
- २४ यां बिगड़ायलां नै ओळखावण काजे, जोड़ कीधी खेरवा सेहर मझार।
संवत् अठारे नै वर्श चोपने, सावण सुध सातम नै रविवार॥

तथा पैतालीसा रा लिखत में कह्यो—टोळा मांहि कदाच कर्म जोगे टोळा बारै पड़े तो साध साधवियां रा अंस मात्र ओगुणवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा सूं फाड़ नै साथे ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहै न बारै नीकळे तो पिण अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कह्यो। ते भणी सासण री गुण कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, सुणे ते पिण भागहीण, सुणी आचार्य नै न कहै, ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंती, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां
इहभव में परभव में कल्याण सुख हुवै।

ए हाजरी रची द्वितीय जेठ विद ७ वार शुक्र सैहर बीदासर मध्ये।

सताईसवीं हाजरी

पंच समिति तीन गुप्त पंच महाव्रत अखंड आराधना। ईश्वर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजतां परिठवतां सावधान पणे रहिणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्थकर री आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धांत देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछे ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

किण ही साध आर्य्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी ने कहणो, तथा गुरां नै कहणो, पिण ओरां नै न कहिणो। घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै।

तथा संवत् १८५२ रे वरस आर्य्या रे मर्यादा बांधी तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्य्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, पिण और किण ही आगै कहणो नही, ओर किण ही आर्य्या दोष जाण नै सेव्यो हुवै तो पाना में लिख्यां विना विगै तरकारी खांणी नही। कोइ साध-साधवियां रा अवगुण काढ़ै तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहिणो—‘स्वामी जी नै कहिजो’ जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोळा बारै हुवा पछै साध-साधवियां रा ओगुण बोलण रा अनंत सिद्धां री साख करनै त्याग छै। बलै करली-करली मरजादा बांधां त्यां में पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। तथा चोतीसा रे वर्स आर्य्या रे मरजादा बांधी तिण में कह्यो—ग्रहस्थ कनै टोळा रा साध आर्य्या री नंदा करै, तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एकमास पांचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करै तिण नै जितरा मास पांच विगै खावा रा त्याग छै। जिण आर्य्या साथे मेल्या तिण आर्य्या भेली रहै अथवा आर्य्या मांहोमांहि सेषेकाळ भेली रहै। अथवा चोमासे भेली रहै। त्यां रा दोष हुवै तो साधा सूं भेळा हुवा कह देणो। न कहै तो उतरो प्रायछित उण नै छै। टोळा सूं न्यारी हुवा री बात माने तिण नै चोर कहिजे, मूर्ख कहिजे।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—कर्म थक्को दीधां टोळा सूं टळै तो टोळा रा साध-साधवियां रा हुंता अणहुंता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोळा नै असाध सरधनै नवी दिख्या लेवै तो पिण अठीरा साध-साधव्यां री संका घालण रा त्याग छै। उपगण टोळा मांहे करै ते, परत पाना लिखे जाचै ते, साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—किण ही नै कर्म थक्को देवै तो टं. ा सूं न्यारो पड़ै। अथवा

टोळा सूं आप न्यारो थया, इन सरधा रा बाई भाई हुवै त्यां रहणो नही। एक बाई भाई हुवै तिहां रहिणो नही। बाटै बहतो एक रात कारण पडिया रहै तो पांचू विगै ने सूखड़ी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्धां री साख कर नै त्याग छै।

तथा संवत् १८५० रे वर्स कब्बो—कोइ टोळा रा साध-साधव्यां में साधपणो सरधो, आप मांहि साधपणो सरधो, तिको टोळा में रहिज्यो। कोइ कपट दगा सूं साधां भेलो रहै तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै। पांचू पदां री आण छै। साध नाम धराय नै, असाधां भेलो रह्यां अनंत संसार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध-साधव्यां रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेळा री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजाबंध हुवै चोखी तरे साधपणो पळतो जांणे तो टोळा मांहे रहिणो, आप में अथवा पेला में साधपणो जाण नै रहिणो ठगा सूं मांहि रहिवा रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै। इम पचासा रा लिखत में कब्बो। ते भणी पेली तो गण में रहै जरेअनेक विनय भक्त करे, गणरी रीत सर्व साचवे, मर्यादा पाळे अनै सासण नै दिढावे। पछै स्वार्थ अणपूगां गण सूं टळै ने अनेक अवगुण आळ पंपाळ फरमी भाषा, झूठी भाषा आदि अनेक झूठी भाषा आदि अनेक झूठ बोले तो तिण री बात एक लेखां में नी। आगै पिण वीरभाण जी तेरा माहिलो नीकळ नै अनेक अवर्ण फिरमा वचन बोल्यो, तिण उपर भीखणजी स्वामी जोड़ी ढाल उण री कहण री बाता घाली उण रा चिरत पिण ओळखाया ते गाथा—

- १ 'अनंता सिद्धां री साख करै नै, चेलो करण रा किया पचखांण।
ते पिण सूंस भांगै चेला कीधा, तिण अनंत सिद्धां री भागी है आंण।
तिण नै साधु किणविध सरधीजे ॥धूपदं॥
- २ सूंस भांगे नै चेला करतो नही सक्कै, तेतो होयग्यो निश्चे इ भागळ भिष्टी।
ते तो पड़ गयो च्यार तीर्थ नै बारै, तिण नै किण विध साध सरधे सम दिष्टी॥
- ३ सगळा साध भेळा होय मरजाद बांधी, तिण मर्याद में सूंस किया छै अनेक।
ते पिण सूंस सगळा इ भांग्या, झूठ बोले मूढ विना विवेक॥
- ४ सगळा साध मिल नै मरजादा बांधी, ते सूंस लिख्या छै पाना रे मांय।
तिण लिखत हेठे सगळा आखर कीधा, अनंत सिद्धां री साख ठहराय॥
- ५ ए सूंस मर्यादा भांगे तिण नै, गिणवो नहीं च्यार तीर्थ रे मांही।
बलै तिण नै नंदक जाणवो च्यार तीर्थनो, तिण नै वदि त्यां नै पिण आगन्या नाहीं॥
- ६ इसड़ा सूंस कर नै पाना में लिख्या, अनंता सिद्धां री साख कर नै ताय।
ते पिण सूंस सगळा इ भांग्या, बलै जांणी-जांणी बोले मूसावाय॥

- ७ कदै कहै म्हे लिखत में नांहि, कदै कहै म्हे लिखत आरै न कीधो ।
कदै कहै म्हे लिखत में आखर न कीधा, कदै कहै म्हे एक ससो कर दीधो ॥
- ८ कदै तो कहै म्हे लिखियो सरमासरमी, लिखत हेठे अखर कर दीया ताय ।
कदहि कहै मोने कहि नै कराया, कदै कहै म्हे तो लिखियो सांकड़े आय ॥
- ९ कदै कहै मो सूं कपटाइ दगो करै नै, लिखत हेठे आखर कराया ।
कदै कहै एकलो हो तो जाणी नै, म्हे डरते थके आखर कीया छै ताय ॥
- १० कदै कहै यां रा टोळा में रहसूं, तठा ताइ म्हारे छै पचखांण ।
कदै कहै लिखत म्हारे ताई कीधो, ए सगला इ मो उपर कीधा मंडाण ॥
- ११ कदै कहै अविना री ढाळां जोड़ी, ते सगली ढाळां मो उपर कीनी छै ताहि ।
चेला नै कह्यो ठाम-ठाम कहो थे, हिवै किण विध रह सूं टोळा रे मांहि ॥
- १२ इत्यादिक झूठ बोले छै अनेक प्रकारे, परभव रो डर मूल नआणे लिगार ।
जांणी झूठ बोले अग्यानी, खोय दियो तिण संजम भार ॥
- १३ अनंता सिद्धां री साख करै सूस कीधा, ते सगळा सूंस भांगे नै हुबो एकलो ।
ते होय गयो अपछंदो अवनीत, तिण नै साध सरध्यां किम होसी भलो ॥
- १४ सुद्ध साधां नै ढीला कहि-कहि अग्यानी, आप भागळ थको उत्कृष्टो बाजे ।
तिण नै च्यारूं इ तीर्थ साध न जाणे, तो पिण निरलज मूळ न लाजै ॥
- १५ ज्यां नै ढीला जाणे त्यां रा टोळा रा भागळ, त्यां भागळां माहे मन जावण रो कीधो ।
त्यां सूं नरमाइ करै कह्यो मो नै ल्यो थे, त्यां पिण तिण नै माहै नहीं लीधो ॥
- १६ थे कहो तो दूर करूं म्हारा चेला, थे कहो तो थानै परतीत उपजाउं ।
थे मोनै चलावौ जिण रीते चालू, थे मो नै माहै ल्यो हुं थां माहै आऊं ॥
- १७ दोय वार गयो त्यां में जावा नै काजै, जातां अनेक कोस रो पेंडो कीधो ।
त्यां नै अनेक बार कह्यो थे मो नै माहै ल्यो, तो पिण तिण नै त्यां माहै न लीधो ॥
- १८ ज्यां नै ढीला जाणे त्यां रा टोळा रा भागळ, उत्कृष्टो प्राछित छै त्यां रे मांय ।
त्यां भागळां पिण तिण नै माहै न लीधो, तिण भागळ री भोळा नै खबर न काय ॥
- १९ इसड़ा मोटा-मोटा दोष जांणी नै सेवै, तिण भिष्टी री भोळा करसी परतीत ।
तिण नै साध सरधे तिकखुत्तो कर वादे, ते पिण चिहुंगति माहै होसी घणां फजीत ॥
- २० सुध साधा नै मूर्ख ढीला परूपे, पोते भारी दोष सेवण लागो ।
बलै कूड़ा-कूड़ा आळ देता नही संके, ते तो विरत बिहुणो होय गयो नागो ॥
- २१ तिण भागळ नै ओळखावण काजै, जोड़ कीधी नेणवा सैहर मझार ।
समत अठारे नै वरस अड़ताले, महा विद अमावस नै सोमवार ॥

इम अनेक भांत फिरमा वचन बोले, ए जिन मार्ग रीत छै नही । ते माटे संवत् १८५० रा
लिखत में कह्यो—जिण रो मन रजाबंध हुवै चोखी तरै साधपणो पळतो जाणो तो टोळा में रहिजो

आप में अथवा पेला में साधपणो जाण नै रहिणो। ठागा सूं मांहि रहिवा रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखांण छै।

तथा पैतालीसा रा लिखत में कइयो—उण ने साधु किम जाणिये। जो एकलो होण री सरधा हुवै इसड़ी सरधा धार नै टोळा मांहि बेठो रहै म्हारी इच्छा आवसी तो मांहि रहिसूं, माहरी इच्छा आवसी जद एकलो होसूं, इसड़ी सरधा धार नै टोळा मांहि बेठो रहै ते तो निश्चे इ असाध छै, साधपणो सरधे तो पेहला गुणठांणा रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं मांहि रहै तिण नै मांहि राखै जाण नै त्यां नै पिण महादोष छै। कदाच टोळा मांहि—दोष जांणे तो टोळा मांहि रहिणो नहीं। एकलो होय नै संलेखणा करणी। वैगो आत्मा रो सुधारो करणो। आ सरधा हुवै तो टोळा मांहि राखणो, गाळा गोळो कर नै रहै तो उण नै न राखणो उत्तर देणो, बारै काढ़ देणो, पछै इ आळ दे नीकळे तो किस्सा काम रो। तथा पैतालीसा रा लिखत में कइयो छै—टोळा मांहि पिण साधां रा मन भांग नै आप रे जिले करै ते तो भारीकर्मो जाणवो विसासघाती जाणवो। इसड़ी घात पावडी करै ते तो अनंत संसार री साइ छै। इण मरजादा प्रमाणे चालणी नावै तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै। धनै अणगार तो नव मास मांहि आत्मा नो कित्याण कीधो। ज्यूं इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो। पिण अप्रतीतकारियो काम करणो। रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग नै मांहि राख्यो भूंडो छै। ते भणी पैतालीसा रा लिखत में कइयो टोळा मांहि कदाचित् टोळा बारै पड़ै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंस मातर अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मातर संका पड़ै आसता उतरै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा मां सूं फार नै सायै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा मांहि न बारै नीकळ्यां पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमांहि मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत में कइयो।

ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी, भागहीण हुवै सो उतरती बात करै तथा भागहीण सुणै, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण, तिण न तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंती, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक में कइयो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्यां

इहभव में परभव में सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची संवत् १९ से १४ रा वर्से द्वितीय जेठ सुध ३ नखत्र पुष्प

वार सोम।

अठाईसवीं हाजरी

पांच समिति तीन गुप्ति पंच महाव्रत अखंड आराधणां। ईर्या भाषा एषणा में सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहारपाणी पिण आगला रो अभिप्राय देख लेणो। पूजतां परिठवतां सावधानपणे रहिणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीर्थकर नी आज्ञा अखंड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धांत देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा मांहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म। असंजती रो जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछे ते द्वेष, तिरणो बंछे ते वीतराग देव नो मार्ग। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बांधी।

संवत् १८५० रे वरस मर्यादा बांधी सर्व साधां रे, तिण में कह्यो—किण ही साध आर्या में दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहणो, अथवा गुरां ने कहणो, पिण ओरां नै न कहणो। घणां दिनां पछै आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै। किण नै ही कर्म धक्को देवै ते टोळा सू न्यारो पड़ै तो इण सरधा रा भाई बाई हुवै तिहां रहिणो नही। एक बाई भाई हुवै तिहां पिण रहिणो नही बाटे बहितो रहै तो एक रात, कारण पड़्यां रहै तो पांचू विगै सूखड़ी खावा रा त्याग छै।

तथा पैतालीसा रा लिखत में कह्यो—साधां रा मन भांग नै आप आप रे जिले करै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो। विसवासघाती जाणवो।

तथा पचासा रा लिखत में तथा रास में पिण जिला नै घणो निषेध्यो। तथा पैतालीसा रा लिखत में कह्यो—उण नै साधु किम जाणिये जो एकलो हुण री सरधा हुवै, इसड़ी सरधा धार नै टोळा मांहे बेठो रहै, म्हारी इच्छा आवसी तो मांहे रहसूं, म्हारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसूं। इसड़ी सरधा सरधा सू टोळा मांहे ते तो निश्चेइ असाध छै। साधपणो सरधे तो पेला गुणठाणा रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सू मांहे रहै तिण नै मांहे राखे जाण नै त्यां नै पिण महादोष छै। कदाच टोळा मांहे दोष जाणे तो टोळा मांहे रहिणो नही। एकलो होय संलेखणा करणी वैगो आत्मा रो सुधारो करणो। आ सरधा हुवै तो मांहे राखणो। गाळा गोळो कर नै रहै तो राखणो नहीं, उत्तर देणो, बारै काढ देणो, पछै इ आळ दे नीकळे तो किसान कांम रो। इम इत्यादिक अवनीत वेमुख नै ओळखायो छै अनै दुष्ट आत्मा रो धणी अवनीत अजोग तिण रा स्वार्थ अणपूणा किंचत कष्ट थी पिण टोळा बारै नीकळी भीखणजी स्वामी री मर्यादा लोपी सूंस भांगी अवर्णवाद बोले। निरलज नागड़ो होय जावै। परम उपगारी गुर समकित चारित्र पमायो, सूत्र भणायो, ते कीधो उपगार सर्व भूल ने कृतघन होय जगत में फिट-फिट होवै।

तथा सूयगडांग भगवती आदि सूत्रे ठाम-ठाम कह्यो—जे कोइ समण माहण कनै धर्म रूप एक वचन पिण हीया में धारे ते पिण गुर नो उपगार जांणी नै वंदै, नमस्कार करै ३२४ तरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

सतकार सनमान देवै। कल्याणीक मंगलीक धर्मदेव चित अहलादकारी जांणी नै त्यां गुर री सेवा करै, त्यां रो उपगार कदै इ भूलै नही, जिण उपर एक ब्रव्ये दिष्टंत—

जिम कोइ एक मानवी सूळी हेठे आंण उभो राख्यो। सूळी चढावा लागा इतले एक साहूकार आव्यो। जब चोर बोल्यो—सेठजी मो नै जीवां बचाओ आप राखो, आपका हुकम में रहिसूं, आपरी चाकरी करसूं, आपरो गुण कदे इ भूलूं नही, इत्यादिक घणी नरमाइ कीधी। जब सेठ नै अनुकंपा आइ जद कळा चतुराइ सीखाइ। एकदा प्रस्तावे खामी पड़्यां सेठ करला वचन कह्या। जब ते लूणहरामी रीस में आय सेठ कनांसूं निकळ्यो। चोरपत्नी में आय रह्यो। चोरां सूं जाय मिल्यो। चोरां सूं मिल नै चोरां नै साथ लेने सेठ घरे सातो देवा चोरी करवा आयो। पहिला सेठ ने खबर पड़ गइ हुंती ते लूणहरामी चोरां सूं जाय मिल्यो है। सो कदा बिगाड़ कर उभो रहै तिण कारण सेठ पहिला हवेली रे कनै चोकी पहरायत सावधान पणे राख्या। ते चोरा सहित लूणहरामी नै कपड़ लीयो। राजा नै सूण्यो। राजादिक सर्व लोक फिट-फिट करवा लागा। देखो ! सेठ तो इण नै सूली कनांथी जीवां बचायो, ते सर्व उपगार भूल नै ज्यां रो हीज बिगाड़ करवा लागो। सेठ तो इण सूं क्युंइ अवगुण कियो नही। देखो लूण-हरामी कृतघनी हरामखोर नीं चाल। ज्यां जीवां बचायो ज्यां सूं हीज उपराठो हुवो, इम सर्व कहवा लागा। पछै राजा हुकम कियो—इण कृतघ्न नै काळो मूढो करी, गधै चढाय नगर में उद्घोषणा करो-कृतघ्नपणो कियो जिण रा ए फळ भोगवै। पछै राजा हुकम थी काळो मूढो करी गधै चढाय नगर में फेर उद्घोषणा करी भूडे हवाले मारचो। जे लूणहरामी रे साथै चोर आया त्यां नै पिण भूडे हवाले मार्या।

इण दृष्टंते कोइ मिथ्यादृष्टी हुंतो तिण नै सतगुर मिल्या। त्यां समजाय समकित श्रावकपणो पमाय नै साधु कीधो। नरक निगोद रा अनंत दुःख मेट्या एहवो उपगार सतगुर कियो। बले तिण नै कला सिखाई ते सिष में खांमी पड़्यां गुरां निषेध्यो तथा तिण रो स्वार्थ अणपूंगा धैष में आयो। छानै -छाने साधां कनै अवगुण बोल फटावा रो उपाय करवा लागो। तिण सरीषा इ अविनीत तिण नै साथै लेइ टोळा बारे नीकळे, अवर्णवाद बोले, देखो अवनीत री रीत। गुरां समकित चारित्र पमाय, सिद्धांत भणाय, अनंता नरक निगोद रा दुःख मेट्या ते सर्व उपगार विसारे घाल, त्यां रो विनो भगत करणो तो ज्यां ही रह्यो अपूठो किंचित स्वार्थ रे वास्ते अवगुण बोले। तिण सूं गुर कांइ अवगुण कियो, गुरां तो असंजती रो संजती कीयो, अनंत काळ नरक निगोद में रुळता अनंत भूख तिरखा सीत तस विवध प्रकार नी मार इत्यादिक दुख नो नास नो करणहार अमोलक चारित्र तिण नै पमायो। जावजीव तांइ त्यां रे मूहदे आगै हाथ जोड़ सेवा करै तो त्यां सूं उरण नही हुवै। गुरां तो इण सूं इसो उपगार कीयो। त्यां रा हीज अवगुण-बोलवा लागो। देखो ! लूणहरामी कृतघनी री नीत। टोळा मांहे छतां तो पंच पदा में नाम घाले तिखुत्ते सूं वंदणा करै। लोकां नै वंदना सीखावे। तिण में गुर को नाम घलावै गुरां के गुणां री जोड़ कर नै सुणावे अनै टोळा बारै निकळ्यां अवगुण गावै। फेर पोते दंड लेइ पाछो गण में आय नै गुर रा गुण

गावै। कदा फेर अजोगाइ देख्या बारै काढ़े, कदा कर्म वसै आफै ही नीकळे, उलंठपणो करै अवगुणवाद बोले, पेली सूंस कीया ते सर्व भांजे, इहलोक परलोक री सर्व लाज मूकी विटळ हुवै। तिण री बात मानणी नहीं, संगत बिलकुल करणी नी, भीखणजी स्वांमी रास में वरज्यो ते गाथा—

- १ ए तो अवगुण बोलै अनेक, बुधवंत न माने एक।
यां नै जाणे पूरा अवनीत, यां री मूळ नांणे परतीत॥
- २ जो अवनीत रो करे विसवास, तो हुवै बोध बीज रो नास।
च्यार तीर्थ सूं पड़िया काने, त्यां री बात अज्ञानी माने॥
- ३ अवनीत रो करै परसंग, तो साधां सूं जाये मन भंग।
ए साधां नै असाध सरधावै, झूठा-झूठा अवगुण बतावै॥
- ४ यां रो जाय नै सुणे वखांण, तिण लोपी जिनवर आंण।
यां री तहत कहै कोइ वांणी, आ दुरगति नी एलांणी॥
- ५ किण रे उसभ उदै हुवै आंण, ते करै अवनीत री तांण।
त्यां झूठा नै साचा दे ठेहराइ, त्यां रे अनंत संसार री साई॥
- ६ यां नै कहि बतलावे स्वांमी, तिण में जाणजो मोटी खांमी।
यां नै उंचो करै कोइ हाथ, तिण रे निश्चे बंधे कर्म सात॥
- ७ यां रो जाय वखांण मंडावै, बलै और लोकां नै बोलावै।
इसड़ी कोइ करै दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जाए खाली॥
- ८ यां नै च्यार तीर्थ में जाणे, तो पिण पहिले गुणठाणे।
यां री करे कोइ पखपात, तिण रे आय चूको मिथ्यात॥
- ९ यां सूं करै अलाप-संलाप, तिणरे बंधे चीकणा पाप।
यां नै वंदणा करै जोड़ी हाथ, तिण रे वेगो आवै मिथ्यात॥
- १० यां री भाव भगत करे कोइ, बलै आदर सनमान दे सोइ।
तिण रे सरधा नही दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची॥
- ११ यां सूं करै विनो नरमाइ, तिणरे लागी मिथ्यात री साइ।
घणो-घणो जो यां कनै जावै, तो समकत वैगी गमावै॥
- १२ ए तो अवनीत भागळ पूरा, बलै आळ दे कूड़ा-कूड़ा।
त्यां री मान लेवे कोइ बात, ते तो बूड़ चूका साख्यात॥
- १३ कोई भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यां रे कनै जाय कोइ चाल्यो।
ते तो गुर रो न माने हठको, तिण रो हुंतो दीसै छै गटको॥

१. लय : मारी सासू रो नाम छै फूली

३२६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १४ चरचा बोल सीखे त्यां आगै, तिण रे डंक मिथ्यात रा लागै।
यां रो संसतो^१ परचो न कहणो, यां रो संग जाबक परहरणों॥
- १५ समगत रा अतिचार संभाळो, तो अवनीत सूं देजो टाळो।
जोवो आणंद श्रावक नी रीत, राखो सुतर नी परतीत॥
- १६ ए अवगुण बोले चिठाय-चिठाय, किण ही भोळा रे संका पड़ जाय।
जो उ न करै त्यां री पखपात, तिणरो काढणो सोहरो मिथ्यात॥
- १७ त्यां री गाढी झाले पख कोइ, ते नही छोड़े रूढ झूठा जांणे तोइ।
ते बूझसी अवनीता रे लारे, त्यां ऐहलै दियो जन्म बिगाड़े॥
- १८ केइ लीधी टेक न मेले, आप रे मन माने ज्यूं ठेले।
जिण धर्म री रीत न जांणे, मूढ मूरख थको यूं ही तांणे॥
- १९ यां कनै करै को सामाइ, यां कनै करे पचखाण जाइ।
तिण री पिण मत जांणजो काची, जिण मारग में नही आछी॥
- २० जे अवनीतां रा छै पखपाती, त्यां री सुण-सुण बळ उठे छाती।
अवनीतां रो करै उघाड़, जब पिण मूढो देवे बिगाड़॥
- २१ कोइ गण में हुवै अवनीत, तिण सूं गाढी बांधे प्रीत।
ते पिण अवगुण बोलावण रे कांम, इसड़ा छै मेला परिणाम॥
- २२ ते अवनीत री करै पखपात, तिण रे आय चूको मिथ्यात।
पख करै त्यांरी करवा थाप, तिण रे उसभ उदै हुवा पाप॥
- २३ जांणे अभिमानी नै अवनीत, तो ही राखै त्यां री परतीत।
तिण रे परतख पूरो अंधारो, बूड़े छै अवनीतां री लारो॥
- २४ जिण ने गुर रा ओगुण सुहावै, ते अवनीत नै मूढ़े लगावै।
त्यां कनै गुर रा अवगुण बोलावै, पछै लोकां में आप फैलावै॥

इत्यादिक भीखणजी स्वामी रास में कही बलै और पिण समास घणो है। ते रास में जोय लेवो। इम जांण उत्तम जीव हुवै ते अवनीत री टाळोकर री निंदक री बेमुख री बेपता री कळहगारा री संगत न कर्या समकत चोखी रहै। बलै पैताळीसा रा लिखत में कद्धो-टोळा मांही कदाच कर्म जोगे टोळा बारे पड़ै तो साध-साधवियां रा अंस मात्र अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै। यां री अंस मात्र संका पड़ै आसता ऊतरे ज्यूं बोलण रा त्याग छै। टोळा सूं फार नै साथै ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोळा माहें न बारै नीकळ्यां पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मांहोमां मन फटै ज्यूं बोलण रा त्याग छै। इम पैताळीसा रा लिखत में कद्धो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन रूप बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य नै न कहै ते भागहीण। तिण नै तीर्थकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

- १ आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥
- २ आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥
- इति 'दशवैकालिक' में कह्यो ते मर्यादा आज्ञा अखंड आराध्या
इहभव परभव में सुख कल्याण हुवै ।

परंपरा नीं जोड़

ढाळ १

दूहा

- १ परंपरा नां बोल बहु, गणि बुद्धिवंत री थाप।
दोष नहिं छै तेहमें, जीत ववहार मिलाप॥
- २ आगम, श्रुत, आणा धारणा, जीत, पंचमो जोय।
ए पंच ववहारे वर्ततां, श्रमण आराधक होय॥
- ३ ठाणांग^१ ठाणें पांच में, तथा सूत्र ववहार^२।
भगवती अष्टम शतक में, अष्टमुद्देशे सार॥
- ४ तिण सूं जीत ववहार में, दोष नहिं छै कोय।
नीतिवान गणपति तणों, बांध्यो जीत सुध जोय॥
- ५ सुध आलोची मुनि करे, असम्यक् पिण सम्यक् कहिवाय।
आचारंग^३ अध्ययनपंचमें, पंचम उद्देशे वाय॥
- ६ भारीमाल युवराज पद, बत्तीसै गुणसठे वास।
भिक्षु पिण ते लिखत में, भाख्यो एम विमास॥
- ७ बोल सरधा चरचा तणों, काम पडै किणवार।
बुद्धिवंत न्याय विचार नें, संचे बेसाणणो सार॥
- ८ कोइ बोल बैसे नहीं, तांण न करणी रंच।
केवळियां नें भोळावणो, अंश न करणी खंच॥
तथा—
- ९ पैताळीसा रा लिखत में कह्यो, कोइ श्रद्धा आचार रो बोल ताय।
सूत्र रो अथवा कल्प रा, बोल तणीं मन मांय॥
- १० कदाच^४ समझ पडै नहीं, गुरू तथा भणणहार^५ वाय।
कहै तिको मानणौ कह्यो, नहि तो केवळियां नें देणो भळाय॥
- ११ तथा जोड़ किवाइया तणीं, चौपनै कीधी स्वाम।
तिण माहै पिण थापियो, जीत ववहार सुधाम॥

१. ठाणं ५।१२४,

२. ववहार, १०।६,

५. कभी

३. भगवई सतं ८।३०१

६. बुद्धिमान

४. आयारो ५।९६

“भवियण” जोवो रे हृदय विचारी, म करो तांण हियारी रे भ०।

तांण कीधा सूं घणीं खुबारी ॥धूपदं॥

कोइ कहै किवाड़ियो कितोएक मोटो, तिण रो सूतर^२ में नहिं उनमान^३।
इणरो उनमान तो जीत ववहार सेती, थाप^४ करसी बुद्धिवान रे॥
हाथ सवा रे आसरै लांबो नैं पेहलो^५, एहवो बांध्यो उनमान।
इण बातरो निश्चो केवळी जाणे, उनमान सूं जाणे बुधवान॥
ज्यूं साध साधवी रे पछोवरी^६ रो, पेहली तीन हाथ उनमान।
पिण लांबी रो निकाळ^७ तो नही सूतर में, पांच हाथ थापी बुधवान॥
ज्यूं किवाड़िया लांबा नैं पेहला री, आ पिण थाप करी छै ताम।
ते निश्चो तो केवळजानी जाणै, तिण री खांच तणों नही काम॥
(आचार्य भिक्षु कृत किवाड़िया री ढाळ) (गा. २१ से २४)
तथा—

सूतर मांही तो मूळ न बरज्यो, पंरपरा में पिण बरज्यो नांही।
तिण सूं जीत ववहार निर्दोष थाप्यां री, संका म करो मन मांहि॥
जो कवाड़िया री संका पडै तो, संका छै ठाम-ठाम।
ते कहि कहि ने कितराएक केहूं, संका रा ठिकाणा तांम॥
साधुतो हिंसा रा ठिकाणा टाळे, छद्मस्थ तणें ववहार।
सुध ववहार चालतां जीव मर जाये तो, विराधक नहीं छै लिगार॥
जिण-जिण बोलां रो निकाळो^८ नहीं छै, ते केवळियां ने भळावो।
कवाड़ियां री ताण करे ने, मत कोइ झूठ लगावो॥
मोनै तो कवाड़िया रो दोष न भासे, जाणे नैं सुध ववहार।
जो निशंक दोष कवाड़िया में जाणो, तो मत वहरजो लिगार॥
किवाड़िया रो दोष कहै तिण ऊपर, जोड कीधी पादू मझार।
संवत अठारह नैं वर्ष चोपने, बैसाख विद दसम नैं मंगलवार॥

(गा. ४७ से ५२)

इहां भीखणजी स्वामी आपणा ववहार में जीत ववहार थापे तिण में दोष न कछो। सुध ववहारे चालतां जीव मर जावै तो पिण विराधक नहीं, तिम सुध ववहार जाण नैं थाप्यो तिण में

१. लय-रे भवियण सेवो रे साधु सयाणा

२. सूत्र-आगम ६. चदर

३. परिमाण ७. निर्णय

४. स्थापना ८. स्थान

५. चौड़ा ९. निर्णय

३३२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

पिण दोष नहीं। अनै ते जीत ववहार में पाछला ने दोष भ्यासै तो छोड़ देणो। आगे निर्दोष जाण नें सेव्यो त्यां नें दोष न कहिणो। तथा रामचरित्र रे छेहड़े दूहा स्वामीजी जोदया निहां एहवो कह्यो—

दूहा

“बले परंपरा नी बात ने, मिलतो देखी न्याया।

सुध जाणो तो मानजो, झूठ दीजो छिटकाय॥”

अथ इहां पिण जीत ववहार में परंपरा नी बात सुध जाणो तो मानणी कही। असुद्ध जाण्या पछै छोड़ देणी कही। तथा सुयगडायंग श्रुतस्कंध दूजो अध्ययन पांचमा में एहवी गाथा कही—

अहाकेम्माणि भुंजंति, ‘अणमणस्स कम्मुणा’।

उवलित्ते त्ति जाणिज्जा, अणुवलित्ते, त्ति वा पुणो॥

एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारी ण विज्जई।

एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं विजाणए॥

(सुयगडो २ अ० ५ गाथा ८, ९)

अथ इहां पिण कह्यो—‘आधाकर्मी पिण सुध ववहार में निर्दोष जाणी नें भोगवै तो पाप कर्म करि न लिपावै। तिम आचार्य बुद्धिवंत साधु आपणा ववहार में निर्दोष जाणी नें जीत व्यवहार थापे तिण में पिण दोष न कहिणो। तथा भगवती, ठाणांग, ववहार सूत्र में पांच ववहार कह्यो ते पाठ—

कतिविहे णं भंते! ववहारे पणत्ते? गोयमा!

पंचविहे ववहारे पणत्ते, तं जहा आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से

तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से

तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से

तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से

तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा

१. साधु के निमित्त बनाया हुआ।

आगमेणं, सुएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं।

जहा-जहा से आगमे सुए आणा
धारणा जीए तहा-तहा ववहारं पट्ठवेज्जा।

से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा
निग्गंथा ?

इच्चेतं पंचविहं ववहारं जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा तहिं-तहिं अणिस्सि-
ओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ॥

(—भगवई—सतं ८।३०१, ववहारं उ० १०, ठाणं ५।१२४)

इहां पांच ववहार में धारणा ववहार अनै जीत ववहार पिण कइयो। सुध
सरधा आचारवंत साधु नो बांध्यो जीत ववहार में दोष नहीं। ने जीत ववहार ना केतला एक बोल
कहे छै—

दूहा

- १२ जीत ववहार ना बोल नो, आखूं छूं अधिकार।
दृढ़ समदृष्टि निपुण ते, नाणे संक लिगार॥
१३ नित्य पिंड सुखे न बहिरणो, दूजी वार बलि देख।
उण घर जाये गोचरी, तिण में इतो विशेष॥
१४ जीत ववहार बड़ा तणों, सांभळजो नर नार।
भिक्षु स्वाम तणीं भली, मर्यादा सुखकार॥

- ए^१ तो स्वाम बड़ा सुखकारी रे, भिक्षु नी बुद्धि भारी
बांधी दृढ़ मर्यादा उदारी रे, सूत्र न्याय अनुसारी॥ धुपदं॥
१५ ठाम^२ मांहि भावे नहीं रे, धोवण पाणी जोय।
पाछो जाय नें ल्यावणो, दोष नहीं छै कोय॥
१६ जे किवाड मांहि हुवै तो, पाछो जाय नें ल्यावै।
आछ^३ छाछ रे वासते, दूजी बार पिण जावै॥
१७ माथादिक ने कारणे रे, पाछे कीधो पाणी।
बचियो हुवै धोवतां ते, पाछे ल्यावै जाणी॥

१. लय : एतो जिन मारग रा।

२. पात्र।

३. छाछ को गर्म करने के बाद उसके ऊपर
नितर कर आया हुआ पानी।

- १८ धोवण दालादि तणों रे, कंदोइ नो तिणवार।
रांगणादिक^१ ने कारखाना रो, ल्यावे वारूवार॥
- १९ मुंजादिक नो बचियो हुवै, 'कोरी सलादिक'^२ जाणो।
गार गोबर नो पछै नीपनो, बार-बार जइ ल्याणो॥
- २० बले गांवडिया^३ गांव में, आथण^४ निपजतो जाणै।
गाढा-गाढ^५ कारण तिरखा^६ रो, वूजी बार जइ आपै॥
- २१ कारण पड़ियां रोगिया, नितपिंड लेवै आहारो।
जीतववहार वीर वच देखी, अंतर भर्म निवारो॥
- २२ विषम जायगां उलंघता, नितपिंड समय सुजाणो।
पिण नहि छै ए सहज विहार में, गाढा-गाढ पिछाणो॥
“आधाकर्मी ने मोल रो लीधो, नहीं बहरणो 'करड़े काम'”^७।
निरदोषण नै नितपिंड आहार, कारण परया लेणो कड्यो ताम॥
आधाकर्मी नै मोल रो लीधो, ओ तो निश्चे उघाडो^८ असुध।
नितपिंड ढीला^९ परता जाणी बरज्या, आ तीथंकरां नी बुध”^{१०}॥
- २३ सहजे और कारण गयो, गृहस्थ रे घर सोय।
गृहस्थ अणचिंत्यो धामें तो, ते पिण लेणो जोय॥
- २४ साधु गयां पहिली नीपनों, ते पिण पछै लेवाय।
दाल खाखरा आदि मांग ले, नहीं लोळपणों मन मांय॥
- २५ मुनि गृहस्थ रे घर गयो, बहिरावता ते भूलो।
पाछो आवता ते गृहस्थ बोलावै, ते पिण लेणौ सूलो^{११}॥
- २६ वस्त्रादिक धोवण भणीं, दिशा काज कुण चेहरे^{१२}।
दंत-मसूदादि कारण उदक, तमाखू पिण नति वेहरे॥
- २७ सुखे समाधे एक धर्णी नों, अन्यक्षेत्रे नित्य आहारो।
जुवो क्षेत्र चूला नो अथवा, कहिए मोड़ा^{१३} बारो॥
- २८ इत्यादिक अनेक बोल सुध, जाणी आचार्य थापै।
जीत ववहार तास जिन आणा, बुद्धिवंत नाहिं उथापै॥

१. रंग आदि के कारखाने।

२. आटियों को धोने के लिए बनाया हुआ।

३. छोटे गांव

४. सायंकाल

५. विशेष रोगादि की स्थिति

६. तृषा

७. कठिन परिस्थिति में

८. प्रत्यक्ष

९. शिथिल

१०. अच्छी तरह

११. रोके

१२. दरवाजा।

- २९ आगम श्रुत नैं आणा धारणा, जीत पंचमो साधक।
पंच ववहार पणे प्रवर्त्या, आज्ञा तणों आराधक॥
- ३० ए ठाणांग भगवती ववहारसूत्रे, आख्यो एम जिणंदा।
तो जीत ववहार उथापै ते तो, प्रगट जैन रा जिंदा॥
- ३१ भिक्षु स्वाम तर्णी ए बांधी, उत्तम वर मर्यादो।
विमल चित आराधे सुगणां, मेटी भर्म उपाधो॥
- ३२ उगणीसे चवदे विद नवमी, मास बैसाख मझारो।
जयजश गणपति संपति जोड़ी, लाडणूं महा सुखकारी
- ३३ समण छतीस आर्जिका बाणु, च्यार तीर्थ रंगरेळा॥
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रतापे, गणपति संपति मेळा॥
- ३४ प्रथम ढाल ए बोल परंपरा, प्रगट सरस गुण गाथा।
जयजश जोड़ करी सुध जाणी, गणपति सम्पति साता॥

ढाळ २

दूहा

- १ सूत्र तर्णी अपेक्षाय बहु, बोल परम्परा मांय।
रहिस^१ केयक नी समय में, केयक बोल अपेक्षाय॥

१भवियण जोवो रे हृदय विचारी, पांच ववहार छै सुखकारी।

शंक म राखो लिगारी रे भवियण जोवो॥ध्रुपदं॥

- २ नदी नावा री आगन्या दीधी, सूत्र में जिनराय।
तिण री अपेक्षाय पृथ्वी आदि पिण, जिन आगन्या कहिवाय रे॥
- ३ प्राण बीज हरी पाणी ने माटी, छते रस्ते न जाणो ते पंध।
दूजे आचारांग^३ तीजे अध्ययने, प्रथम उद्देशे तंत॥
- ४ खाड विषमभूमि कादा ने मारग, छते रस्ते जाणो नाहि।
दसवैकालिक^४ पंचमे अध्ययने, पहिला उद्देशा माहि॥
- ५ विषम कादा ने मारग साध्वी पड़ती ने, साधु राखे हाथ संभाय।
वृहत्कल्प^५ रे छठे उद्देशे, रस्तो नहीं तो विषम मारग जाय।
- ६ वृहत्कल्प^६ रे पहिले उद्देशे, रात्रि सज्झाय दिशा अर्थे जाणो।
दिन रा मेह में दिशा जावा री आज्ञा, रात्रि नी अपेक्षाय पिछाणो॥
- ७ साधु तीन हाथ चोड़ी पछेवड़ी राखै, साध्वी री अपेक्षाय।
साधु रे चोड़ी पछेवड़ी रो निर्णय, सूत्र में दीसै नाय॥
- ८ दसवैकालिक रे तीजे अध्ययने^७, मर्दन कियां अणाचार।
अंजन वमन स्नान मूंह धोयां, गळा हेठला केश विदार॥
- ९ वृहत्कल्प^८ रे पंचमे उद्देशे, कह्यो कारणे मर्दन करणो।
अंजन वमन स्नानादिक नो, न कह्यो कारण रो निरणो॥
- १० तिण मर्दन री अपेक्षाय अंजन घाल्यां, कारणे नहीं दोष लिगारो।
बलि वमन करै जहर गोळी गिलियां, कारण पड़ियां मूंह धोवै सारो॥

१. रहस्य

२. लय-रे भवियण जिन आगन्या सुखकारी

३. आचार चूला ३।६, ७

७. दसवैआलियं ५।१।४

५. कप्पसुतं ६।७, ८

६. कप्पसुतं १।४५

७. दसवैआलियं ३।९

८. कप्पसुतं ५।३८ ३९

- ११ तिण गर्दन री अपेक्षाय स्नान पिण, कारण पड़्यां करै साथ।
गळा हेठला केश पिण कापे, थयां गुंबडादिक नी व्याध॥
- १२ कारण पड़ियां सुगंध पिण सूंघे, बलि आरिसा में मुख देखे।
कांबळादिक नो छत्र पिण राखै, कारण पड़ियां विशेषै॥
- १३ तिण कारण वाळा अंतरघर^१ में वेसै, कह्यो दशवैकालिक^२ मांय।
कारण पड़ियां रेच पिण लेवै, कारणे दंत मसी लगाय॥
- १४ बासी राख्यां अणाचार कह्यो छै, ते पिण मेहादिक कारणे राखै।
कह्यो नशीथ^३ रे इय्यारमें उद्देशे, पिण मुख मांहे मूळ न चाखै॥
- १५ विशेष कारण नित्यपिंड आहार बहिरे, सहज रे कारण औषध नित्यपिंड।
पहिला पोहर रो छेहला पोहर तर्णी, तथा मर्दन अपेक्षाय सुमंड॥
- १६ कह्यो आचारंग^४ दूजे श्रुतखंधे, पंचमें उद्देशे मांय।
उचारादिक चालतां लागे, लूहे तृणादिक थी मुनिराय॥
- १७ तृण कांकरा थी लूहणो चाल्यो, पिण पांणी सूं धोवणो न दाख्यो।
पाणी सूं धोवै ते अपेक्षा वचन थी, शुचि लेणो नशीथ में भाख्यो।
- १८ शुचि नी अपेक्षाय और जागा पिण, उचारादिक टाळै पाणी लगाय।
ए पिण अपेक्षा वचन थी मानो, तिम नितपिंडादिक कहिवाय।
- १९ छत्र राख्यां अणाचार कह्यो छै, ते पिण कारणे राखणो भाख्यो।
ववहार^५ सूत्र रे आठमें उद्देशे, साठ वर्ष ना स्थविर ने दाख्यो।
- २० विहार करतां माथे ओढै तो, साधु ने दंड मासीक।
नशीथ^६ सूत्र रे तीजे उद्देशे, इकोतरमो बोल तहतीक॥
- २१ छत्र नी अपेक्षाय कारण पड़िया, माथे ओढ्यां नही डंड।
तिम पहिला पोहर रो चोथे पोहर चाल्यो, तिणरी अपेक्षाय नित्यपिंड॥
- २२ साठ वर्ष नां स्थविर नें कल्पे, सूतां पिण गुणवी नशीत।
ववहार^७ सूत्र रे पंचमुद्देशे, बे तीन बार गुणे धर पीत॥
- २३ ते नशीथ री अपेक्षा और सूत्र गुणे तो, स्थविर ने दोष न दीस।
थिवर री अपेक्षाय अशक्तिवंत साधु, सूतां सूत्र गुणे सुजगीस॥

१. शयनागार आदि

६. निसीहज्झयणं ३।६९

२. दसवे आलियं ३।५, ९

७. ववहार सुत्तं ५।१८

३. निसीहज्झयणं १९।७ ९

४. आचार चूला १।५१

५. ववहार सुत्तं ८।५।

- २४ बलि गाज बीज री असझाइ कही छै, ठाणांग^१ दशमें ठाण।
 पिण आद्रा नक्षत्र थी चित्रा तांड, न गिणें जीत ववहार थी जाण॥
- २५ नव रुपियां रा दाम रो लेणो, नवमें ठाणे^२ अर्थ मझार।
 हाथ रा पना स्यूं पनरे हाथ री, पछेवड़ी नीं ए जीत ववहार॥
- २६ मास चोमास रह्या एक क्षेत्रे, बड़ां लारे बलि रहिणो।
 ए पिण जीत ववहार भिक्षु नो, तिण में दोष किम कहिणो॥
- २७ बीजी ढाळ मांहि बोल कछ्या बहु, जाणी नै सुध ववहार।
 उगणीसे पनरे मृगसर विद आठम, जयजश हर्ष अपार॥

२. ठाणं ९।३०

१. ठाणं १०।२०

ढाल ३

सं० १८५० में रूपचंद अखैरामजी ने भीखणजी स्वामी में १५९ दोष निकाले। उनको स्वामीजी ने लिपिबद्ध कर लिया। उन दोषों से कतिपय दोषों का जयाचार्य ने निम्नोक्त गीतिका में निराकरण किया है। दोष संख्यानुसार गाथाओं के पहले लिखे गये हैं। उनकी समग्र तालिका परिशिष्ट) में देखें।

दूहा

- १ रूपचंद अखैरामजी, अठारे पचासे पेख।
गण सूं टळी भिक्षु मझै, काढ्या दोष अनेक ॥
- २ केयक बोल अछता कह्या, केयक बोल निर्दोष।
जाणी भिक्षु थापिया, त्यां में कह्या अणहुंता दोष ॥
- ३ सूत्र थी तथा जीत थी, सुध ववहार सुजाण।
केयक बोल त्यां माहिला, आखूं उधम आण ॥

(१. रजुहरण सूं माखी उडावणी नहीं)

सुध^१ ववहार सुणो भवजीवा ॥ धुपदं ॥

- ४ रजोहरण ने पूंजणी सेती, काम पड्यां साधु माखी उडावै।
ते पिण पक्की वायु री जेणा थी, तिण मांहि दोषण किणविध थावै ॥

(२. सूर्य उगां विण पडिलेहण करणी नहीं)

- ५ चक्र दीठै छतै करै पडिलेहण, जद कीड़ियादिक प्रगट वृष्टि में आवै ॥
तिण बेला आहार ओषध नहि लेणो, रवि प्रगट ववहार जाणी बहिर ल्यावै ॥

(४. गोचरी नीकळ्यां पछै ठिकाणे आयां पेहिलां कठेइ वैसणो नहीं)

- ६ गोचरी गयां ठिकाणे आयां पहली, अंतर घर विण बेठां दोषण नांहि।
दशवैकालिक^२ पंचमा रे पहिले उद्देशै, साधु ने आहार करणो कह्यो गोचरी मांहि।

(५. बायां नें थानक में बेसण देणी नहीं।

६. बायां सूं चरचा बात करणी नहीं।

७. बायां साढ्यो जोवणो नहीं।

८. बायां नें वैसाणे ते आछो खावा रे अर्थे)

१. लय—आ अनुकंपा जिन आगन्या में।

२. दसवैकालियं ५।२।८२, ८३

७ बायां ने सीखायां दोष नहिं छै, सेवा करायां पिण दोष नहीं छै।
नवमे शतक भगवती^१ एकतीसमें उद्देशै, सेवा करवा वाली ने उपासका कही छै।

(९ आर्या नें थानक में बेसाणणी नहीं।

१० आर्या सूं चरचा करणी नहीं।

११ आर्या नें सूतर री वाचणी देणी नहीं।

१२ आर्या साह्यो जोवणो नहीं।

१३ कारण विना आर्या नें आहार देणो नहीं।

१४ वैतकल्प में जाबक आर्या नें साधां रे थानक वरज्या छै. १७ बोल।

इम साधु नें पिण १७ बोल आर्या रे थानक वरज्या)

८ असझाइ में आर्या नें साधु, सूत्र बंचावै कह्यो ववहार^२।

आहार भोगवणो ने बेसणो चाल्यो, सातमे^३ उद्देशै बहु विस्तार॥

९ वृहत्कल्प^४ में सतरे बोल वर्या, 'ते विकट' बेळा' अर्थ मांहि पिछाणो।
ववहार पाठ में आगन्या दीधी, तिण सूं विकट बेळा रो अर्थ सुध जाणो॥

१० सतरे बोलां में ऊभी रहिणी पिण वर्जी, ते विकट बेळा संध्या पड़्यां कहाय।
तिण वेला सझाय आहार न कळपे, संलग्न सतरे बोल कह्या जिनराय॥

११ ऊभो रहिवो^५ बेसवो^६ सूयवो^७, निद्रा^८ विशेष निद्रा^९ चिहुं आहार।
बड़ी^{१०} लघु नीत^{११} बलखो^{१२} सेडो^{१३}, सझाय^{१४} काउसग्ग^{१५} पडिमा^{१६} विचार॥

१२ विकट बेळा सतरे बोल न करणा, विकट बेला विण दोषण नांय।
केयक बोलां री आज्ञा पाठ में, केयक बोल त्यांरी अपेक्षाय॥

१३ साधु रे स्थानक साध्वी आहार भोगवै, ए पिण ववहार सातमा^{१७} उद्देशा माय।
ते ऊभी रह्यां विण आहार करे किम, विकट बेळा रो अर्थ साचो इण न्याय॥

१४ दशाश्रुतस्कंध^{१८} दसमें अध्ययने, श्री वीर तणा समोसरण मझार।
साध साधवियां नियाणा कीधा, त्यांने श्री जिन सुध किया तिणवार॥

१५ आर्या नें आहार देणो पिण चाल्यो, चोथे ठाणे^{१९} दूजा उद्देशा मांय।
ऊभो रह्यां विण आहार दीयै किम, विकट बेळा रो अर्थ साचो इण न्याय॥

१६ साधु नें संभोगी^{२०} कह्या छै, सातमे उद्देशै सूत्र ववहार।
आहार मांहोमां देवै लेवे ते संभोगी, ऊभो रह्यां विण किम लियै-दियै आहार॥

१. भगवई ३१।९

५. सूर्यास्त के बाद

२. ववहार सुत्तं ७।१९

६. ववहार सुत्तं ७।३

३. ववहार सुत्तं ७।३

७. दसासुयक्खंधो १०।२२, ३४

४. कप्पसुत्तं

८. ठाणं २।२७४

९. ववहार सुत्तं ७।३

- १७ आर्या नें दीक्षा देणी पिण चाली, प्रायश्चित देइ नें सुध पिण करणी।
ववहार सूत्र रे सातमें उद्देशै, ऊभो न रहणो तो दंड दीक्षा किम वरणी॥
- १८ पेहला छेहला पोहर विण ओर काळ में, सूत्र कालिके री न करणी सझाय।
साधु री नेश्राय आर्या नें कल्पै, सातमों उद्देशो ववहार^१मांय॥
- १९ आर्या रे स्थानक साधु जाये तो, खंखारादिक किया विण नही जाणो।
सूत्र नशीथ^२ उद्देशे चोथे तिण सूं, विकट वेळा रो अर्थ सुध पिछाणो॥
- २० असझाइ साधु रे तथा साध्वी रे, ववहारे^३ कह्यो वांचणी देणी मांहोमांय।
ऊभो रह्यां विण वाचणी किम देवै, विकट बेला रो अर्थ मिलतो इण न्याय॥
- २१ साधु रे स्थानके साध्वी ने बेसणो, ए पिण ववहार सातमा उद्देशा मांय।
ते उभो रह्या बिन किम दिने बेसणो, विकट बेला रो अर्थ साचो इण न्याय॥
- २२ उदक तीर साधु साध्वियां नें, ए सतरे बोल वरज्या जिनराय।
वृहत्कल्प^४ रे पहिले उद्देशै, ए तीर पाणी स्यूं निकट कहिवाय॥
- २३ उदक तीर ऊभो रहणो कह्यो छै, आचारंग^५ तीजे अध्ययन रे दूजे उद्देश।
ए तीर पाणी सू दूर जाणवो, दूजे आचारंग पाठ में रेस॥
- २४ तिम सतरह बोल साधु रे स्थानक समणी नें, वज्या ते विकट वेला आसरी जाण।
सझाय बेसण नें आहार नी आज्ञा, अविकट वेला रो पाठ पिछाण॥
(१५. रात री आर्या नें नेरी उतारे)
- २५ आर्या साधां सूं नेडी उतरे, तिण मांहे दोष कहे छै अजाण।
ते किण ही सूत्र मांही वज्यो नही छै, पिण ऊंधमती करे उळटी ताण॥
- २६ एकण जायगां कारण विण रात्रि न रहणो, पिण नेडी अलगी रो न दाख्यो वैणो।
पांच कारण सूं रात्रि पिण भेलो रहणो, पांचमे ठाणे^६दूजे उद्देशै जोय लेणो॥
- २७ दिन रा साधु रे स्थानक आर्या नें, सुखे आहार बेसण री आज्ञा दीधी।
तिण मांहि दोष परुप्यो अज्ञानी, तिण प्रत्यक्ष खांच गळा में लीधी॥
- २८ ए सूत्र ना वचन उथापै अज्ञानी, पाठ रो न्याय न जाणे अंधा।
त्यांनै सूत्र शस्त्रपणें प्रणम्या, बिगडायल जैन तणां जे जिंदा॥
- २९ कहै आर्या रो संग परचो कीधा, स्नेह भाव कर्म बंधन रो टाणो^७।
तिणरे लेखै आहार विगय भोगवै साध, इहां पिण लोळपणां री लहर रो ठिकाणो।

१. ववहार सुत्तं ७।१६ ५. आचारचूला ३।३७

२. निसीहज्झयणं ४।२२ ६. ठाणं ४।१०७

३. ववहार सुत्तं ७।१९ ७. अवसर।

४. कप्पसुत्तं १।१९

- ३० बले महिं बहुमोला कळपता वस्त्र, भोगवियां ममता रो ठिकाणो।
तिणरे लेखे वस्त्र पिण न भोगवणां, भोगवे तो पोता री भाषा रा अजाणो॥
- ३१ राग भाव ममत लोळपणां री, लहर आवे तिण री नहीं थाप।
ते तो छै सर्व आलोवण खाते, पिण ते कार्य री आज्ञा दीधी जिन आप॥
(१६. रातरी बायां नें थानक में बैसारे (नाथ दुवारे))
- ३२ रात्रि समय बायां^१ थानक मांहि, दूजे खंड रही सुणै वखाण।
तिण मांहि दोष साधु ने न लागे, एक खंड रह्या पहिली बाड़ री हाण॥
(१७. गृहस्थ साथे विहार करै)
- ३३ गृहस्थ साधु नें पहुंचावण आवे, अथवा दाम दियां बिनअन्य पठावै।
तिण रो साधु नें दोष न लागे, सावद्य आमना^२ नाहि जणावै।
- ३४ फलाणे^३ गाम जाणो छै म्हारे, कोई जातो हुवै तो साथ बतावो।
जद गृही पोते आवै तथा मेलै दूजा नें, निज कुशल बंछै पिण सावज रा न भावो॥
- ३५ आदमी नें थे दरसण करावो, इम न बोलै सावज वायो।
तिण रो सावज चालणों तो नहीं बंछै, निज कुशल बंछै भाखा सुमति जणायो॥
- ३६ भाषा सुमति स्यूं वीर प्रभू पिण, न्यातीला ने सीख दीधी विख्यात।
आचारंग^४ दूजै श्रुतखंधे, पनरमाध्येन मांहे कहि बात॥
- ३७ काळ कियां भासा सुमति स्यूं साधु, स्वजनादि गृहस्थ भणी जणाय।
'छठै' ठाणै^५ कह्यो-आज्ञा न उलंघै, और भाषा समिति पिण तेहनी अपेक्षाय॥
- ३८ गृही नें सर्प खाधां कोई झाड़ो देवै छै, मुनि पिण जाय राखै तिहां काय।
ववहार^६ सूत्र रे पांचमें उद्देशे, निज कुशल बांछै पिण झाड़ो बंछै नाय॥
(२२. गृहस्थ साथे गोचरी जाए।
२३. गृहस्थ जागां जोवै।)
२४. गृहस्थ आय ने जागां बतावै।
२५. गृहस्थ आय ने कहै अमकडियै घर अनादिक छै)
- ३९ गोचरी रा घर पूछ्यां गृहस्थ नें, साथे आय गृहस्थ घर बतावै।
उतरवा री जायगां देख आय उतारे, तिण मांहि दोष साधु नें न थावे॥
- ४० गृहस्थ घरां मांहि देख आवी कहै, अमकडिया घर असणादिक पाणी।
साधु बहिरे सुध भिक्षा बंछी, सावद्य गमन न बंछै जांणी॥

१. बहनें।

५. ठाणं ६।३

२. आज्ञा।

६. ववहार सुत्तं ५।२१

३. अमुक।

४. आचार चूला १५।३४

- (२६. रोगीया ने नितपिंड न लेणो।
 २७. खेतसीजी रे आयण रा तीन च्यार दिस दाल ने जाता।
 २८. रोगी रे वासते आय्यो ते बधै तो बीजां ने खाणों नही।
 २९. छते पाणी रोगीया रे खातर नितपिंड ल्यावै)
- ४१ रोगी अर्थे नितपिंड पिण लेणो, दालादि अर्थे बहु दिशि जावै।
 कांइ चरकी फीकी कठै मिलै ते कारण, पिण बीजां अर्थे जाणी अधिक न ल्यावै॥
- ४२ रोगी अर्थे नितपिंड आय्यो, बधे तो बीजां ने करणो आहार।
 तिण मांहे दोष कोइ मत जाणो, बीजां अर्थे तो जाणी न ल्यावे लिगार।
 (३१. पातरा रंगणा नहीं।
 ३२. रोगन लगावणो नही।
 ३३. सुगंध रों दुगंध करणो नहीं।
 ३४. सुवर्ण रो दुवर्ण करणो नही।
 ३५. हींगलू धोवणो नहीं)
- ४३ तीन पुंसली^१ उपरंत तैलादिक, अथवा वर्ण इम जाणो विशेष।
 पात्रा रे लगायां डंड चोमासी, नशीथ^२ सूत्र रे चउदमें उद्देश॥
- ४४ वर्ण रे कहिवे रंग पिण आयो, रोगान परंपरा थी जाणों।
 ते पात्रा रे लगावै नै वासी राखै, तिण मांहि दोष कोई मत माणो॥
- ४५ ममता सू लेप लगावणों नाहि, फाटवादि कारण थी रंग लगावै।
 ते तीन पुसली उपरंत वज्यो छै, नशीथ चवदमें उद्देश कहावे॥
 (३६. आर्या ने मेली पछेवरी देणी नही)
- ४६ साधु आर्या ने देवै ओढी पछेवड़ी, ते धोया बिन भोगवणी नाहि।
 साधु मांहोमांहि देवै नें लेवै, ते पछेवड़ी धोवणी नहि कांइ।
 (३८. पडला रे बदले कपड़ो राखे)
- ४७ पडला^३ रे बदले कपड़ो राखै, ते कारण बिन ओढणों नाहि।
 कल्प घट्यां तंतु दुर्लभ जाणै तो, ओढ्यां पहिर्यां दोष न दीसै कांइ।
 (३९. स्याही उघाड़ी सुकावै)
- ४८ स्याही उघाड़ी सुकावै तावडै, इमहिज हिंगलू नें पिण जाणों।
 माछरादिक नी जो जाणै अजयणा, जब तो न मेलै उघाड़ी पिछाणों॥
 (४०. सुधिया पहिलेहण करै)

१. चुलू

३. बिछौने के ऊपर बिछाया जाने वाला वस्त्र

२. निसीहज्झयणं १४, १४, १५, १८, १९

३४४ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

४९. चोथो पोहर लाग्यां करणों पडिलेहण, चक्र सूझे जठा तांइ ववहार।
अछाया पिण लागती नही दीसै, रवि अदृष्ट पिण तस पुद्गल तिण वार॥

(४१. सुधिया पडिकमणो करै)

५०. रवि अर्ध बिब में पाणी नही पीणो, तठा पछै तुरत मांडै पडिकमणो।
तिण मांहि पिण दोष मूल न दीसै, मुहुर्त रात्रि गयां तांइ करणो॥

५१. दिवस रात्रि नैं विचाले पडिकमणुं, करणो उत्कृष्टपणों कहिवाय।
अनुयोगद्वार^१ में पाठ उघाड़ो, तिण रो बुद्धिवंत जाणै न्याय॥

५२. अर्धबिब पडिकमणो मांडे, ए उत्कृष्ट भांगे छै ताय।
इमहिज सूर्य उर्ग जठा तांइ, पडिकमणो कीधां दोषण नांय॥

५३. एक मुहुर्त रात्रि पाछली हुवै जद, पडिकमणो मांड्यां दोषण नाय।
शीघ्र कियां रात्रि रहै थाकती^२, तिण में पिण दोष नहि जणाय॥

५४. इमहिज रात्रि पाव घड़ी गयां सूं, पडिकमणो मांड्या दोष न कोय।
मुहुर्त रात्रि तांइ करै संपूरण, तिण मांहे दोष किसी पर होय॥

५५. पहिलो मुहुर्त ने छेहलो मुहुर्त रात्रि नो, ए तो छै काळ पडिकमणां रो ताय।
तिण बेलां पडिकमणों कियां दोष नहीं छै, ओर सूतर नहीं न करणी सज्जाय॥

५६. प्रथम चरम पोहर रो पगां सूं छायां, मापो कह्यो छै उत्तराध्ययन^३ मांय।
विचला दोय पोहर रो काळ होवै जितरो, पहिला छेहला पोहर रो पिण
इतरो कहिवाय॥

५७. ज्यां लग सूर्य दृष्टि आवै काळ जितरो, पहिलो छेहलो पोहर जो ओछो जाणो।
सूर्य अदृष्ट इतरो काळ दिवस छै, तिणस्युं दिन रात्रि मध्य पडिकमणो ठाणो॥

५८. रवि कोर दबी जाणी पाणी न पीणो, ए पिण जाणज्यो सुध ववहार।
पिण अपकाय री अजयणां न दीसे, पडिकमणो पिण मांड्या नही दोष लिगार॥
(४२ पडिलेहण करे जठा तांइ जाबक बोलणो नहीं।)

४३ गोचरी सूं आयां पछै सझाय करणी)

५९. उपधि पडिलेहता बोलणो नही छै, शंभी बोल्यां नहि दोष लिगार।
गोचरी स्यूं आवी जघन्य^४ सझाय करने, सुखे समाधे करणों आहार॥

(पोहर पोहर री च्यार काळ री सझाय करणी)

६०. पहिले छेहले पोहर दिवस रात्रि में, जघन्य सझाय पांच गाथा^५ नी ताय।
उपयोग सहित करणी सुखे समाधे, राई पडिकमणो चउवीसत्थो सझाय॥

१. अणुओगदाराई सूत्र २८ गा. २।

४. कम से कम

२. अवशिष्ट

५. बत्तीस अक्षरों का एक गाथा होता है

३. उत्तरज्झयणाणि २६.१३।१४

(४५. पोहर सूं इधिकी नींद लेणी नहीं इधिकी लेवे तो अठारै पाप रो
सेवणहार छै। माठा माठा सुपना आवै पांच वैरी जागै छै)

- ६१ आहार किया पहिलां दिन रा सूइ ने, सुखे निद्रा लियां दोष नहीं छै।
जीमी सुखे सूइ निद्रा न लेणी, बाल वृद्ध रोगी री बात न्यारी कही छै।
६२ इमहिज पोहर रात्रि तांइ जाणो आचारंग तीजा अध्ययन पहिले उद्देशे।
टीका में कह्यो आचार्य री आज्ञा सूं, दूजा पोहर सूं नींद लेणी ए रेस॥
(४८. खंडिया धोवण ने नित पांणी ल्यावै।)

४९. स्याही रै खातर पाणी ल्यावै वधै ते पीयै ते नित (नितपिंड)

- ६३ खंडीया धोवण पाणी नित्य ल्यावे, स्याही आदि निमित्ते नित्य ल्यावे।
'लेई' करवा निमित्त रोटी पिण ल्यावै, तिण मांही दोष कहो किम थावै॥
६४ सेज्यातरपिंड ग्रह्यां डंड भाख्यो, सेज्यातरपिंड भोगवियां पिण दंड।
नशीथ^१ सूत्र रे उद्देशे बीजे, प्रगट बे पाठ कह्या छै अखंड॥
६५ राजपिंड ग्रह्यां प्रायश्चित्त कह्यो छै, राजपिंड भोगवियां पिण दंड।
नशीथ^२ सूत्र रे उद्देशे नवमें, इणरा पिण बे पाठ कह्या छै अखंड॥
६६ नितपिंड भोगवियां प्रायश्चित्त कह्यो छै, नितपिंड ग्रह्यां दंड न दाख्यो॥
नशीथ^३ सूत्र रे उद्देशे दूजै, पाठ एक श्री जिनवर भाख्यो॥
६७ सेज्यातर रा दोय पाठ कह्या छै, राजा पिंड ना पिण पाठ छै दोय।
नितपिंड रो एक पाठ कह्यो छै, तिण सूं धोवादिक कारणे ग्रहणों सोय॥
(५४ पातरो कपड़ो कारण पडियां पिण दोढ मास सुं इधिको राखणो नहीं)

- ६८ साधु जी वस्त्र आप रे निमित्ते, दोढ मास यूं अधिको न राखे।
नशीथ^४ सूत्र रे पहिले उद्देशे, और साधु काज राख्यां दोष कुण दाखे।
६९ प्रमाण थी अधिक पात्र अळगी दूर थी, आणणों आचार्यादिक रे काज।
तिण मांहे आहार भोगवणो चाल्यो छै, बवहार^५ आठमें उद्देशे समाज॥
७० तीन तीन पात्रा पोता रा कल्प में, कोइ फूटो तथा रंग लगायो।
कल्प में घटे जितरे पात्र भोगवणों, तिण सूं भोगवणों कह्यो दिसे जिनरायो॥
(५५ कोइ नवो दिख्या ले तिणरै वास्ते पिण न राखणो)

- ७१ नवो दीक्षा कोइ लेणहार छै, तिण रे अर्थे पिण दोढ मास उपरंत।
वस्त्र पात्र जो अधिको राखे, तिण में पिण दोष न कहे मतिवंत॥

१. निसीहज्जयणं २।४५, ४६

४. निसीहज्जयणं १।५४

२. निसीहज्जयण ९।१, २

५. बवहार—सुत्तं ८।१६, पाठान्तर

३. निसीहज्जयणं २।३१-३५

- ७२ आचार्यादिक अर्थे वस्त्र पात्र आणें, गणी पिण साधु साध्वियां काज।
दर्शन करवा आवै त्यारे अर्थे, दोड मास सूं अधिक राखे सुख काज॥
(५९ दिख्या ले तिणरे रोगांन हींगलू बधै तो लेणो नहीं, इधिको लेवै छै)
- ७३ दीक्षा ले तिण रे काजे मोळ लेवै, वस्त्र पात्र रंग रोगान।
बीजा साधु अर्थे मोळ लेवे तो, ते नहीं बहिरे संत सुजान॥
- ७४ दीक्षा वाला अर्थे वस्त्र पात्रादिक, दीक्षा लियां पछे जे मोळ लीधा।
ते पिण कल्पे नही मुनिवर नैं, पहिलां मोळ लिया कल्पे छै सीधा।
(६० जिणमें जाणपणों थोडो तिण नैं दिख्या दै)
- ७५ जाणपणों सिखाय ने दीक्षा देणी, संक्षेपरुचि सम्यक्त कही सार।
अठावीसमें उत्तराध्ययन^१ में आख्यो, तिण मांहे दोष म जाणो लिगार।
- ७६ स्वाम भिक्षु विस्ताररुचि नी, सम्यक्त सोल कळा जोड़ कीधी।
द्रव्य क्षेत्र काळ भाव निक्षेपा, जाण्यां विस्ताररुचि प्रसिद्धी॥
(५८ केलू री जायगां में चोमासो करै।
६५ थान आखौ राखै
६६ विना फारयां राखै)
- ७७ केलू री जायगां चोमासो कीधां, तिण में पिण दोष कोइ मत जाणो।
देश बाड फाड्यां आखो थान नांहि, ए पिण न्याय हिया में पिछाणो॥
(६७ चिलमिलि राखै)
- ७८ बे तीन साधां में एक चिरमली, च्यार पांचा में चिरमली दोय।
छ सात साधां में तीन चिरमली, इम अनुक्रमे राखणी अवलोय॥
- ७९ तीन च्यार पांच साध्वियां में, एक चिरमली नैं उडघो एक।
छ सात आठां में दोय राखणा इम अनुक्रमें जाणो सुविशेख॥
- ८० चिरमली रे बदले तंतु राखे, ते गणि विण पहिरणो ओढ़णो नाय।
गणी आणा कारण री बात न्यारी, तथा कल्प घट्यां दुलभ जाणी नैं ताय॥
- ८१ चिरमली रा कल्प रो तंतु न पहिरणो, सूत्र में इम चाल्यो नाय।
तिण स्यूं गणी गणपति नी आज्ञा स्यूं, भोगव्यां दोष न दीसे कांय॥
- ८२ चिरमली रा कल्प में तंतु राख्यो, ते भोगवे गणी तथा गणी नी आण।
एक चोलपटो तीन पछेवडी उपरंत, एक साथै नहीं भोगवै जाण॥
(६८ पाणी ठारै)

८३ ठारणीयां^१ सू पाणी ठारे जयणां सू, ए पिण भिक्षु नो जीत ववहार।
तिण माहे दोष कोइ मत जाणो, रस्तानादिक^२ रा कल्प में ठारणीयो सार॥
(६९ ऊंची जायगा रहै)

८४ पगथ्यां^३ री नाल ऊंची जायगां रहिणो, निसरणी वाली अंतलिख न रहिणो।
तिण जायगां तो रहिणो वज्यो^४ आचारंग^५ में, बली अंतलिख जायगां रो आहार न
लेणो॥

(७० सेज्यातर भोगवै)

८५ जो साधु जेहनी जायगा रात्रि सूवे छै, तिण घर रो ते साधु ने नहीं लेणो आहार।
बीजी जायगा सूवे तो साधु वेहरी लेवे, तिण में दोष नहीं छै लिगार॥
८६ दोय हाटां जोडे^६ दोय धणीं री, आमा-सामा साधु सूवे नित्य जोय।
तो बेहुं घर टालण रो काम नहीं छै, जायगां छोड्यां सेज्यातर^७ नहीं छै कोय।
८७ नित प्रते सूवे ते सेज्यातर रो, अजाणे बहिर्यां भोगव्यां दंड आवै।
जायगां छोडण रो काम नहीं छै, बहिर्यां पछै जाणे तो एकंत परठावै॥
८८ बारह प्रकार रो परठणो चाल्यो, सेज्यातरपिंड कह्यो तिण माह्यो॥
अजाणे बहिर्यां पछै खबर पड़े तो, आहार परठे पिण जायगां छोडे किण न्यायो॥
८९ अजाणे आहार सेज्यातर रो बहिर्यो, जायगां छोडवा री धारी भोगवै आहार।
तो पिण अजाण रो प्रायश्चित आवै, जायगां न छोडे तो परठणो सुविचार॥
(७८ आर्यां बेठां मात्रो करै)

९० पंचमी सुमति तणों जे कार्य, साधु करे आर्यां रे ठिकाणे।
आर्यां करे साधु रे स्थानक, तीजी सुमति ज्यूं पंचमी जाणे॥
९१ गवेषणा^८ ग्रहेषणा^९ भोगेषणा^{१०}, ए तीन भेद तीजी सुमति रा ताय।
साधु रे स्थान समणी आहार भोगवे, तिम हिज पंचमी सुमति जणाय॥
(८० माथो ढांक ने चालै)

९२ दिशा गोचरी ने विहार करंता, कारण बिन माथो ओढ़ी नहीं चाले।
व्यावच कीधां करायां निर्जरा, दशाश्रुतस्कंध^{१०} संपदा सुगुण निहाले॥
(८७ कवाड़ी रो आहार लै)

१. जल को ठंडा करने के लिए पात्र पर लगाया जाने वाला वस्त्र

२. जल पात्र को ढंकने का वस्त्र

७. प्रारम्भिक खोज।

३. पेड़ियां।

८. भोजन आदि ग्रहण करते समय जांच।

४. आधारचूला १।८७, ८८

९. भोजन आदि के उपभोग में उपयोग।

५. पास-पास।

१०. दशासुयस्कंधो ४।२३

६. जिसके मकान में रात्रिवास हो, शय्यातर कहा जाता है।

- ९३ सुध ववहार किवाड्या केरो, खोलाय ने बहिर्यां दोषण नाहि।
पवन ओषधि अर्थे खोले जयणां सूं, पोळ री बारी पिण खोले दिन निशि मांहि॥
(९२ मेह बरस रह्यां तुरत उठै)
- ९४ मेह बरसे छेहडे धीमो पड़े छै, कांयक बूंद पड़े पछै थंभे।
तिण सूं मेह वर्ष रह्यां तुरत उठै छै, सुध ववहार जाणी अवलंबे॥
(९३ फुंहारा (परटै))
- ९५ फुंहारा^१ एकंत जयणां सूं परटै, प्रथम उद्देशे आचारंग^२ मांय।
प्रत्यक्ष दृष्टि आवे पाणी में, त्रस निजरां देखी न लीये मुनिराय॥
(९४ गुठली आंबा री आंबली री परटै)
- ९६ गुठली आंबा री नें आंबली केरी, बहु आहार सहित बहिर्यां दोष नाहि।
घणो न्हाखणो पडे थोडो खाणो पडै तो, ते आहार वर्ज्यो आचारंग^३ मांहि॥
(९६ आमना जणावै सामाचार री)
- ९७ सावद्य आमना नाहि जणावै, पूछ्यां रो जाब सुध निरवद देवे।
अमकडिया पासे थे दीक्षा लेवो, 'आसोच्चा केवली'^४ पिण इम कहेवे॥
(१०० घणां साधु साधवी भेळा रहै)
- ९८ घणां साधु साधवी रहे भेळा तिण में, दोष कहै ते मूर्ख बालो।
पूछी निसंक जाणी सुध लेणो, दशवैकालिक^५ पंचमें अध्ययन संभाळो॥
- ९९ घणां संत भेळा रह्यां दोष बतावे, ते कर रह्या मूर्ख कूड़ी रुढो।
अणहुंतो दोष परूपै अज्ञानी, बूडो रे बूडो निकेवल बूडो॥
- १०० घणां साधु साधवी रहे गुरु पासे, ते तो अधिक वैरागी अमूळो।
तिण माहे दोष कहै कोई मूर्ख, ते भूळो रे भूळो निकेवल, भूळो॥
- १०१ घणां साधु-साधवी रहै गुरु पासे, त्यां अधिक जीभ्या बस कीधी अपूठी।
उत्कृष्ट गुण ने अवगुण थापे, त्यांरी फूटी रे फूटी अभ्यंतर फूटी॥
- १०२ दोय कोस तांड करे गोचरी, शीत उष्ण कष्ट सहे अपूठो।
तिण निर्जरा धर्म नें अधर्म थापे, ते झूठो रे झूठो निकेवल झूठो॥
- १०३ आधाकर्मी आदि रो नाम लेइ ने, दोष कहे मूढ़ बिना विचारो।
पूछी निसंकपणे लियां मुनि ने, दोष न लागे मूळ लिगारो॥

१. पानी में पैदा होने वाले सूक्ष्म द्वीन्द्रिय जीव।

२. आचारचूला १।१।३

३. आचारचूला १।१३३, १३४।

४. किसी से धर्म श्रवण किए बिना ही सहज रूप से केवल ज्ञान प्राप्त करनेवाले।

५. दसवेआलियं ५. १।१६

- १०४ घणां भेळा रह्यां में दोष बतावै, विवेक रो विकळ धर्म रो धेखी।
लोळपी के कष्ट खमणो दुर्लभ है, तसु प्रकृति रोग के उलंठ^१ विशेषी॥
- १०५ गुरु छंदे रह्यां शीख सुमति वृद्धि हुवै, निर्मळ चरण नी धारणा होवे।
प्रकृति वश हुवे नित्य गुरु वच सुण, प्रत्यक्ष गुण नें तो मूढ़न जोवे॥
- १०६ बाणी सुणी ने केइ सत्य काढ़े, दोष निर्दोष बहु बोल धारे।
संपति गणि नीं वलि सारण बारण, इत्यादिक गुण ते मूढ़ क्युं न विचारे॥
- १०७ द्रव्य क्षेत्र काळ भाव जाणे, आचारज अवसर देख घणां भेळा राखे।
अवसर देखे तो अल्प ठाणें रहे, पिण मूर्ख बिच में पड़ी कांइ चाखे॥
(१०१ चिणा रा होळा नै सेक्या मकीया रा कण लै।
१०२ गोघूंदा में ओषद री लकरी वासी राखी।
१०६ पाछली रात रा पग मात्रा सूं छाटै, चोपडै)
- १०८ चणा रा होळा मकिया रा कण लेणा, शरीर रे राख मसळे निशि मांहि।
रात्रि लघु नीत स्यूं कर धोवे, तस मिटावा ने तन रे पिण लगाहि॥
(१०७ डावडो पडेल आम्ना जणाइ खेतसीजी)
- १०९ ऊंची जायगां साधु उतरिया, डावडा^२ ने कहै यां नहीं रहणो।
ते पिण हेला निंदा टाळवा काजै, तिणरो जीवणो बंछी न बोलणो बेणो॥
(११० लिखत करावणौ नहीं)
- ११० लिखत करावै ते वृद्ध मर्यादा, तिण मांहि दोष कहै ते अयाण।
आचार्य नीं आणां धारणा वर्तवो, प्रथम उद्देशे पंचमें ठाण^३॥
- १११ आचार्य ने दृष्टि चित्त केडे वर्तवुं, सर्व कार्य में आगल तसु करणा।
प्रथम आचारंग^४ पंचमध्ययनै, चोथा उद्देशा मांहि ए निरणा॥
(११३ कपडो विना पडिलेह्यां न वैहरणो।
११६ आर्या रे कपडो कह्यो ज्युं पनौं राखणो इत्यादिक घणा कह्या)
- ११२ कपडो जाचे ते उपर स्यूं पडिलेहणो, आर्या रे पछेवड़ी च्यार।
तीन हाथ रा पना री च्यारूं, राख्या में दोष न दीसे लिगार॥
(१२० आहार किसी बार री मरजादा नहीं)
- ११३ आहार किसी बार करणो साधु ने, वृहतकल्प^५ रे पंचमें उद्देशे न्याय।
सूर्य उग्यां थी वृत्ति आहार री, आथम्यां सुधी कही जिनराय॥
(१२१ आहार नें घी सूं चूरे तो सवाद आवै।
१२२ कोरी रोटी न भावे तो तरकारी ल्यावै।

१. उदंड

३. ठाणं ५।१६७

५. कप्पसुत्तं ५।६

२. छोटा बच्चा।

४. आर्यो ५।६८

१२३ दूध सूं रोटी मसळणी नहीं)

११४ रोटी घी स्यूं चूरे तथा दूध में मसळे, सहजे खांड आयां घाले खीर रे मांय।
कारण बिना विगय तरकारी, मांगी नें नहीं ल्यावे ऋषिराय॥

(१२४ किवाड जडे जठै रहै)

११५ किवाड जडे तठे साधु रहे तो, लघु बड़ी नीत री जायगां मांहि होय।
तो साधु नै दोष कोइ मत जाणो, मुनि किवाड जडै उघाडे नहीं कोय॥

(१२८ दोय साधां नें न रहिणो चौमासा मांहै।

१२९ तीन आर्या नें न रहिणो चौमासा मांहै।

१३४ नसीत बाच्यां विना चौमासो करै)

११६ दोय साधु तीन आर्या ने, सेखे चौमासे कल्पे ताम।
नशीथ बांच्या विन संत सत्यां नें, दोय रात्रि उपरंत नहीं रहणो एकण गाम॥

(१३० आर्या ने आडो न जड़णो कवाड)

११७ ताळो किवाड जयणां सूं खोलायां, आर्या उतरे अवलोय।
पोते पिण खोले तो दोष नहीं छै, कूंची असूजती न मंगावणी कोय॥

११८ साधु पिण साधवियां रे काजे, ताळो खोले तो दोष न कहणो।
शीळ राखण श्रमणी किवाड जडै छै, कवाड न हुवै तो पछेवड़ी बांधी ने रहणो॥

(१३८ गाम में धोवण पाणी बहिर नें विहार कीधो पाछो आवै तो त्यांरी वेहरणो नहीं)

११९ धोवण पाणी बहिरी विहार कीधो छै, पूठो आवे तो ते घर रो आहार।
पछे नीपनो ते पिण लेवे, दूजे दिन आयां तो नहीं लेणो लिगार॥

१२० विहार करंता आहार पाणी लेवे छै, असूझतो घर हुवै तिणवार।
पाछो आवे तो ते घर रो न लेणो, बुद्धिवंत न्याय सूं लीज्यो विचार॥

१२१ रात्रि साधु सती जे गाम रह्या छै, आहार बहिस्थां तथा अणबहिर्या सोय।
पर गाम गोचरी जइ पाछा आवै तो, पाछे रह्यां री रीत ज्यूं यांरी पिण होय॥

(१३९ ईर्या जोवतो बहिरावण आयो पाछो जातो अजैणा करे तो बहिरणो नहीं)

१२२ ईर्या जोवतां बहिरावण आयो, पाछो जावतां जो करे अजयणां।
तिण ने असूझतो हुवो किम कहिजे, बहिरावतां अजयणा करे तो नहीं लेणा॥

१२३ रूपचंदजी ने अखेरामजी, स्वामी भीखणजी में काढ़्या दोष।
त्यां माहिला बहु बोलां रो उत्तर, सांभळ धारज्यो आण संतोष॥

१२४ स्वाम भिक्षु दोयां ने समझावी, प्रायश्चित देइ लिया गण मांय।
यां माहिला कोई दोष बतावे, ते विवेक रा विकळ कहीजे ताय॥

१२५ सुध ववहार नी दाळ तीजी ए, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद।
उगणीसे पनरे तीज सुद मगसर, जयजश गणपति संपति लाध॥

ढाळ ४

दोहा

- १ बोल गोचरी ना हिवे, आखूं छूं अधिकार।
छद्मस्थ ना ववहार में, सुध जाण किया अंगीकार॥
- २ सुध जाणो तो सेवज्यो, ए गणपति आणा ताय।
असुध जाणे कोई बोल ने, तो दीज्यो छिटकाय॥

‘महामुनिराया रे।

मुनिवर ने सुखकार। म०। कांइ कढ्या पंच ववहार । म०।

कांई सूत्र भगवती मझार । म०। कांई शतक आठमें सार । म०।

कांई अष्टमुद्देश मझार । महा० ॥ धृपदं ॥

- ३ (१) पृथ्वी हरी लगाय नें मुनिराया रे, न जाणो गाम पर गाम। महामुनिराया रे।
ऊभा पग मेलण जायगां हुवै मु०, तो दोष नहीं छै तांम । म०॥
- ४ जाणे सचित्त रज लागती, तो रात्रि रहिनें प्रात।
आहार पाणी जाची करी, आणे इण विध बात॥
- ५ (२) करी गोगुंदा थी गोचरी, आया रावलिया गाम।
रावलिया संत आगे हुंता, ते आहार भोगवे ताम॥
- ६ रावलियां संत आगे हुंता, ते दूजे दिन ताय।
जावे गोगुंदे गोचरी, दोष नहि तिण मांय॥
- ७ (३) तथा रावलिया थी गोचरी, त्यां मेल्यां गोगुंदे ताय।
पूठे संत आया नवा, कांई गाम रावलिया मांय॥
- ८ नवां संत आया छै तेहनें, कांई दूजै दिन पिण आम।
मेले गोगुंदे गोचरी, तो पिण दोष नहीं छै ताम॥
- ९ (४) तथा गाम न्हानों जाणी करी, कांई बहु संतां ने ताम।
गोगुंदे राखे सही, कांइ घर फरसावण काम॥
- १० नित्य-नित्य गोगुंदा थकी, कांइ इक-इक मुनिवर आय।
तेहनो बहिस्थो सहु भर्णी, कळपै रावलिया मांय॥
- ११ (५) तथा गोचरी बिन कियां, निशि राखे पुर बार।
एकेक नित्य बोलावियां, तसु फश्यो कळपै आहार॥
- १२ (६) रावलिया संत आगे हुंता, तिहां गोगुंदा थी आय।
तिण बेळा नादेसमा थकी, कांइ बलि आया मुनिराय॥

१. लय—आज आनंदा रे.....।

३५२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- १३ जे गोगुंदा थी आविया, त्यां पासे घर फरसाय।
दूजे दिन विहार कराय दे, पाछला ने कळपे ताय॥
- १४ तथा गोगुंदा थी आविया, ते दिन फर्श करे विहार।
पूठे मुनि रह्या त्यां भणी, दूजे दिन कळपे आहार॥
- १५ (७) तथा गोगुंदा थी आविया, कांइ ते दिन बहरी आहार।
विहार करे विण भोगव्या, ते दिन कळपे सार॥
- १६ (८) तथा गोगुंदा थी आविया, ते दिन ग्रही भोगव विहार।
नहीं कळपे ते दिन ते घरे, दूजे दिन कळपे सार॥
- १७ (९) गोगुंदा थी आविया, दूजे दिन बहरी विहार।
त्यां बेहुं दिन फर्श्या तिके, पाछला ने कळपे सार॥
- १८ (१०) गोगुंदा थी आविया, कांइ दूजे दिन भोगवी विहार।
त्यां बेहुं दिन फर्श्या तिके, पाछला ने न कळपे सार॥
- १९ (११) तथा गोगुंदा थी आविया, कांई घर फर्श्या ते टाण^१।
संत रावल्यां जे हुंता, त्यां मांइयो पात्र अजाण॥
- २० गोगुंदा थी आविया, दूजे दिन करै विहार।
तो पिण त्यां सहु मुनि भणी, ते घर रो नहि कळपे आहार॥
- २१ (१२) रावल्यां संत आगे हुंता, कांई गोगुंदा थी च्यार।
बे मुनि पहिला आय ने, बहिरे रावल्यां आहार॥
- २२ पूठे जे बे मुनि हुंता, ते फर्शी बिचलो गाम।
तिण दिन आव्या रावल्यां, घर नहि फर्श्या ताम॥
- २३ प्रथम मुनि बे आविया, ते दूजे दिन कियो विहार।
पछे आया ते तिहां रह्या, तो पिण कळपे सार॥
- २४ (१३) तथा रावल्यां संत आगे हुंता, बलि गोगुंदा थी आय।
बेहुं संता घर फर्शिया, गाम रावल्यां मांय॥
- २५ विहार कियो दूजे दिने, मुनि आगला ताय।
दोनूं ना घर फर्शिया, पाछला ने कळपे नाय॥
- २६ रावल्यां गोगुंदा तणों, कांइ ओळखायो ले नाम।
इण अनुसारे जाणवा, कांइ अपर नगर पुर गाम॥
- २७ इमहिज गाम मांहे मुनि, केइ रहे पुर बार।
गोगुंदा रावल्यां नों कळ्यो, तिमहिज जाणो सार॥
- २८ विहार करी चोमासे नो, पुर बाहिर कळपे मास।
तिण कारण पर गाम ज्युं, पुर बाहिर न्याय विमास॥

- २९ मास-मास कळपे अछै, पुर बाहिर ने मांय।
प्रथम उद्देशे पेखळ्यो, वृहत्कल्प^१ में न्याय॥
- ३० (१४) विहार गोगूदा थी करी, 'सेमटाल' रे मांय।
करी गोचरी आविया, 'रावलियां' में ताय॥
- ३१ कदाच जो दूजे दिने, 'सेमटाल' ते आय।
पहिले दिन घर फर्शिया, तसु कळपे ते नाय॥
- ३२ अपर संत साथे हुवै, ते फर्शे घर जेह।
तसु बहिर्यो अन्य मुनि भणी, कळपै मुनि दत्त एह ॥
- ३३ (१५) संत मुनि किण गाम थी, घर फर्शी तिणवार।
विहार कियो विन भोगव्या, अथवा भोगव विहार॥
- ३४ शकुनादिक ना जोग स्यूं, कदाच पाछा आय।
ते घर पाछे नीपनों, ते पिण कळपे ताय॥
- ३५ पहिलां घर हुवो असूझतो, विहार करी फिरी आय।
ते घर तसु कळपे नहि, घर असूझता रे न्याय॥
- ३६ पहिले दिन घर फर्शिया, दूजे दिन करी विहार।
फिर आयां कळपे नहि, नित्यपिंड दोषण धार॥
- ३७ (१६) विहार तणीं मन धार नैं, घर फरस्या ते मुन्न।
कदाच विहार हुवे नहि, नहि कळपे पछे निपन्न॥
- ३८ विहार तणी मन धार नैं, घर फरस्या अणगार।
केइक विहार कियो सही, केइक रह्या तिवार॥
- ३९ विहार कियो पुर बार थी, फिर आया किण जोग।
पछे नीपनो ते घरे, कळपे तास प्रयोग॥
- ४० (१७) संत बहु किण गाम में, कांइ सहज कारणीक सोय।
कळपे उष्ण आथण^२ तसु, नित्यपिंड न कळपे कोय॥
- ४१ (१८) प्रथम दिवस घर फरसिया, नहीं कळपे दूजे दीह।
संत आया पर गाम सूं, तसु कळपे सुध लीह॥
- ४२ त्यां नित्यपिंड प्रभाते फरसिया, सुखे आथण कळपे नाय।
कारणीक त्यांमें हुवे, तिण अर्थे कळपाय॥
- ४३ आगे मुनि मांहे हुंता, सहज कारणीक जेह।
तसु अर्थे नित्यपिंड घर तणीं, नवा संत आणेह॥
- ४४ (१९) अधिक कारण हुवै केहनै, तो नित्यपिंड अन्नपाण।
नवा आगला मुनि बिहुं, कांइ बहरी आपे आण॥

१. कप्पसुत्त १/७

२. सायंकाल

- ४५ (२०) सहज कारण में भोगवे, नित्यपिंड औषध सार।
गोळी चूरण लवंग ने, हरडे सूंठ उदार॥
- ४६ अचित काली मिरच नें आंवला, काई जीरो मेथी जाण।
अजमो नें आसाळियो, धाणा-लूण पिछाण॥
- ४७ नेत्र रक्षा रे कारण लिये, घृत ने मिरच बिदाम।
आद देइ बहु जाणवा, गणि आणा सुं ताम॥
- ४८ वाय मेटवा ने लिये, काई मेथी लकार^१ आदि।
गरमी मेटण कारणे, माखण चरण-समाधि॥
- ४९ अधिक कारण पच नित्य लियै, करवाली^२ रंध^३ आदि।
जीत व्यवहार भिक्षु तणों, तिण में नाहि उपाधि॥
- ५० (२१) किण ग्रामेबहु मुनि रहे, केइ राख्या पुर बार।
उत्कृष्ट बे कोस लगे सही, तास गोचरी न्यार॥
- ५१ इक-इक नित्य बोलाय ले, घर फरसावण काज।
तो पिण दोष दीसे नहि, कळप जू जूओ साज॥
- ५२ मास कळप बारै रहे, मास रहे पुर मांय।
कळप एह पर गाम ज्युं, तिण सुं दोषण नाय॥
- ५३ (२२) किण गामेबहु मुनि रहे, केइ राख्या पुर बार।
पुर रहे ते घर फरसता, थयो असूझतो तिण वार॥
- ५४ पुर बाहिर थी बोलाय ले, तथा अपर गाम थी सोय।
तो पिण दोष दीसे नहीं, जुदी गोचरी जोय॥
- ५५ (२३) बिहार करी बहु मुनिवरू, केइ आया पुर माय।
बहिरता त्यारे हुवो, असूझतो घर ताय॥
- ५६ पूठे मुनि पर गाम नी, अथवा ते पुर बार।
करी गोचरी आविया, तसु ते घर कळपे सार॥
- ५७ (२४) त्यां बीच गोचरी नां करी, घर असूझतो जेह।
पुर आया कळपे नहि, साथ विहार करेह॥
- ५८ (२५) साथ विहार धुर सुं कियो, केइ मुनि रह्याज लार।
केइक पुर बाहिर रद्या, नहि करी गोचरी सार॥
- ५९ केइक पहिलां गाम में, करी गोचरी आया।
पछे नीपनो आहार ते, पछला ने कळपे नाय॥

१. लड्डू ३. दलिया आदि।

२. रोटी

- ६० (२६) किण ही गामें मुनि हुंता, थयो असूझतो बहिरन्न।
अथवा पाछे नीपनो, तथा फ़र्यो पहिले दिन्न॥
- ६१ ए तीनूं कल्पे सही, नवा आया ने निहाळ।
तसु बहिर्यो बीजा भणी, कळपे मुनि दत्त भाळ॥
- ६२ (२७) विहार करे दूजे दिनें, विण भोगव्यां नवा मुनीश।
त्यां पहिले दिन फरसिया, कळपे आगला ने जगीश॥
- ६३ (२८) विहार कियो दूजे दिने, केइक नवा पिछाण।
केइक नवा तिहां रह्या, नहि कळपे सहु ने जाण॥
- ६४ (२९) किण ग्रामे बहु मुनि हुंता, त्यां करी गोचरी सार।
तठा पछे मुनि आविया, त्यां नहि बहिर्यो आहार॥
- ६५ पिण तसु दीधूं भोगव्युं, दूजे दिन आगला विहार।
कळपे त्यां मुनिवर भणीं, त्यां फरस्या घर नो आहार॥
- ६६ (३०) किण गामे बहु मुनि हुंता, बलि आया नवा अणगार।
पछे करी आगला गोचरी, नवा न बहिर्यो आहार॥
- ६७ पिण तसु दीधो भोगव्यो, दूजे दिन आगला विहार।
नहि कळपे त्यां मुनिवर भणी, त्यां फरस्या घर नो आहार॥
- ६८ (३१) किण गामे मुनिवर हुंता, नवा संत बलि आय।
चोविहार तप तेहनें, पिण ग्रहवा रो कल्प जणाय॥
- ६९ संत आगला रे तिके, नितपिंडादि त्रिहुं जोय।
नवा संत आणे दियो, तसु दोष न दीसे कोय॥
- ७० भोगवण रा तसु त्याग छै, पिण ग्रहिवा रा नहि त्याग।
तिण सूं अन्य मुनि कारणे, बहिरे ते महाभाग॥
- ७१ (३२) साध्वियां पर गांम थी, आहार उदक वत्थ ताय।
आणै सिर खंध धर करी, ईर्या सहीत सुखदाय॥
- ७२ (३३) तथा साध ने साधवी, विहार गोचरी मांय।
असणादि बिहुं कर ग्रहे, तो पिण दोषण नाय॥
- ७३ पाछे बोल कह्या तिके, भिक्खु भारीमाल ऋषिराय।
तसु बारे पिण रीत थी, तिण सूं दोष नहीं तिण मांय॥
- ७४ उगणीसै पनरे समे, विद फागण तीज पिछाण।
जयजश गणपति लाडणूं, कांड जोडी सरस सुजाण॥
- ७५ ढाल चतुर्थी नें विषे, कह्यो जीत ववहार सुजास।
भिक्षु भारीमाल ऋषिरायथी, जयजश हर्ष विलास॥

ढाल ५

दोहा

- १ बोल गोचरी ना बलि, आखूं छूं अधिकार।
जीत ववहार छठा तणों, पंचमी ढाल उदार ॥

- १अखिल आचार हिये धरणा रे, सुध आचार हिये धरणा।
जीत ववहार तणी जिन आणा, तास अंगीकरणा ॥धूपदं॥
- २ नाज संघटे गृहस्थ बेठो रे, वंदन अर्थे ऊठ मुनि पद प्रणमत चित सेठो।
हिवे बहिरावण मन हीसे रे, तास हाथ स्यूं लीधा मुनि ने दोष नहीं दीसे ॥
प्रथम बहिरावण रे काजे रे, सचित्तसंघटा थी तो नहीं उद्यो पूछ्यां भ्रम भाजे।
निसंक करने मुनि वर बहिरे रे, सुध ववहार प्रवर्ते तिण ने उत्तम कुण चेहरे ॥
बली गणपति कहे ज्यूं करणा रे ॥जीत०॥
- ३ पृथ्वी पाणी रा संघट थी, वंदन ने उद्यो तो पिण नहीं लेणो तसु कर थी।
सूक्ष्म रज जाणी ने टाले, अपर बोल आणा गणपति नी तन मन सुध पाळे ॥
बलि मुनि आवंता देखी, रोटी फेर तथा लकड़ी चूळा में दे पेखी।
तथाबलि अपर सचित जाणी, निज पोता रे निमत्त अलग मेल्या ते पहिछाणी ॥
तास कर सूं पिण परहरणा ॥
- ४ मुनि गोचरी गयां पहली, असूझती जे वस्तु हुवै ते संत निमित्त वहली।
सूजती करे को अयाणा, किण हि खेत्र में ते वस्तु तिण दिन नहि ले स्याणा ॥
तेहिज क्षेत्रे पिण तसु कर स्यूं, अन्य चीज पिण नहि लेणी ते असूझती धुर स्यूं।
अन्य क्षेत्रे तेहने हाये, वस्तु अनेरी लीधां दोष दीसे विधि बाते ॥
असूझतो घर नहि उच्चरणा ॥
- ५ किण हि क्षेत्रे मुनि बहिरंता, असूझती जे वस्तु हुई ते नहि ले गुणवंता।
अन्य क्षेत्रे पिण ते ढालें, अन्य चीज अन्य क्षेत्रे तास कर लिये आण पाळें ॥
जास घर असूझतो थायो, तिण क्षेत्रे हर कोइ वस्तु नहि ले मुनिरायो।
अन्य क्षेत्रे वस्तु बीजी, तेहज घणी नी चीज लिया दोषण मुनि ने नहीं जी ॥
जूवा क्षेत्रां नां कर निरणा ॥
- ६ हवेली मांहे इक जाणी, मोड़ा बाहिर चोको प्रमुख जुदो ते पहिछाणी।
हाट घर जुदो प्रत्यक्ष दीसे, नोहरा नो निकाल जुदो ते पिण न्यारो कहीसे ॥
धणी बे इक घर बेहचाणो, ते पिण खेतर जुदो-जुदो छै न्याय हिये आणो ॥

१. लय—अमरापुर को पंथ सदा श्री जैन धर्म.....।

- बली मेड़ी ओरो भाडै, ते पिण खेतर जुदो जाणवो गणि आणा सारै॥
हिवे चूलां^१ ना उच्चारणा॥
- ७ हवेली एक मांहि जाणो, दोय चूला पिण सगळां रो जीमण भेळो माणी॥
बिहुं चूलां रो इक खेतं, हिवे चूला तो जुदो क्षेत्र सांभळज्यो समचेतं॥
हवेली एक बंधव च्यारो, इक कोठी नो धान खावे चिहुं चुला तसु न्यारो॥
प्रथम दिन ले इक बंधव नो, बीजे दिन बीजे चूले ले तास तथा पर नो॥
असूजता में इमहीज वरणा॥
- ८ गृहस्थ घर दोय तणां ज्यांही, करत रसोइ इक चूले जळ लूण भेळो त्यांही॥
एक दिन इक घर मुनि फरसे, दूजे दिवस लिये बीजा नो दोषण ना दरसे॥
एक घर असूजतो होयो, तिण कर तिण चूले बीजा नी वस्तु ले जोयो॥
एक नी जायगां उत्तरीयां, सेज्यातर में बेहुं टाळणा लवण पाणी भिलिया॥
निमळ ववहार हिये धरणा॥
- ९ सेठ नें दोय त्रिया जाणी रे, एक हवेली जुदी-जुदी रहे जुदो क्षेत्र माणी॥
सेठ जीमे बारे-बारे, इक दिन ल्होड़ी रे बीजे दिवस बडी तारे॥
एक रे असूजतो हूवो रे, तो बीजी रे वहिरे मुनिवर क्षेत्र जाण जूवो॥
सेठ सेज्यातर जो होयो रे, तो दोनूं रो आहार न लेणो थणी एक जोयो॥
बहु विध हैएहना निरणा॥
- १० भरत श्रेणिक प्रमुख रायो रे, बहु अंतेउर जुदा-जुदा रहिवास तास थायो॥
मुनि बहिरंता अन पाणी रे, असूजता नें नितपिंड नी इक रीत क्षेत्र माणी॥
बारह व्रत धारक बहु राणी रे, व्रत बारमो निपजावा मन अधिक हर्ष जाणी॥
इत्यादिक न्याय बहु पेखी रे, क्षेत्र जुदा नो जीत परम्परा जाणो सुविशेखी॥
ढाळ पंचमी अदल निरणा॥

१. चूल्हा॥

ढाल ६

दोहा

- १ असूझतो घर किम हुवै, तसु विवरो कहिवाय।
असूझतो घर ना हुवै, ढाल छठी में न्याय॥
- २ (१) १ गयो गोचरीये मुनिराज, गृही घर असणादिक काज।
सचित्त स्यूं कर खरड्या के नाय, इसडी साधू रे मन-माय॥
- ३ साधु वज्यो नहि ते प्रस्ताव, तुज कर सूं लेवा रा न भाव।
थोड़ा घणो हलावी हाथ, गृहस्थ दिखावे मुनि ने विख्यात॥
- ४ साधु हाथ देख्यो अवलोय, सचित्त रत खरड्यो कर जोय।
हुवो असूझतो घर तेथ, तिण दिन बहिरणो नहि ते खेत॥
- ५ आहार पाणी आदि वस्तु वरणी, बाजोटादिक राख कतरणी।
तिणरी वस्तु ते क्षेत्र मझार, तिणहिज दिवस न लेणी लिंगार॥
- ६ (२) हुवो असूझतो ते खेत, तिहां दूजा री वस्तु सचेत।
तिणहिज दिन मुनिवर लेवे, तिण मांय दोष कुण केहे॥
- ७ (३) सचित्त स्यूं खरड्यो के नाय, मुनि कहे तूं हाथ मति हलाय।
वज्यो पछे गृह हाथ हलाय, साधु ने बतावे ताय।
- ८ साधु सचित्त स्यूं खरड्यो कर जाण, तिणरा कर स्यूं न लेवे पिछाण।
तेहिज असूझतो हुवो सोय, घर असूझतो नहि कोय॥
- ९ मुनि गृही नें असूझतो देख, हां नां न कढ्यो सुविशेख।
तिणरा कर स्यूं लेवा रा न भाव, 'आरे' कियो नहीं' ते प्रस्ताव॥
- १० बहिरावा नें उद्यो धर मन्न, तेहिज असूझतो तिण दिन्न।
घर असूझतो मत जाणो, आरे न कियो ते न्याय पिछाणो॥
- ११ (४) किणरे मनुष्य घणां घर मांय, एकण नें आरे कीधो ताय।
बीजा नें तो आरे नहीं कीधा, सहु उदया बहिरावण सीधा॥
- १२ ज्यारे सचित्त रो संघटो होय, तेहिज असूझतो अवलोय।
तिण दिन त्यांरा हाथ सूं न लेणो, पिण घर असूझतो नहि कहणो॥
- १३ (५) गृही घर गयो बहिरण मुनिराज, गृहस्थ उद्यो बहिरावण काज।
साधु हां नां कढ्यो नहिं चाव, सूझतो छै तो लेवा रा भाव॥

१. लय-विना रा भाव सुण सुण गूंजै।

२. स्वीकृति नहीं दे।

- १४ साधु जायगां पडिलेही विमास, हेठे सचित्त निकळ्यो तास।
घर असूझतो थयो ताय, कांइक आरे कीधो इण न्याय॥
- १५ (६) गयो गृही घर बहिरण मुनिंद, तिण नें पहिला वरज्यो तज धंध।
तूं ऊठे मत कदाचित सोय, थारे हेठे सचित्त जो होय॥
- १६ तिण सूं चोफेर जायगां पडिलेहूं, तथा और कने आहार लेऊं।
इम बरज्यो तिण नें ऋषिराज, गृही उदयो बहिरावण काज॥
- १७ हेठे सचित्त निकल्यो पिछाण, तेहिज असूझतो थयो जाण।
घर असूझतो थयो, नाय आरे कीधो नहीं मन-मांय॥
- १८ (७) घर बाहिर मुनि नें देख, गृहस्थ उदयो बहिरावण विशेष।
हेठे सचित्त देखी मुनिराय, तेहिज असूझतो थयो ताय॥
- १९ (८) घर बाहिर मुनि नें देख, अजयणा करी वस्तु विशेष।
आधी पाछी करे कोइ गृहस्थ, अशुद्ध थया दातार नें ते वस्त॥
- २० (९) घर में आया देखी मुनिराज, असंयति गृही साधु रे काज।
साध नां नां करता जोरी दावे, सचित्त संघटा स्यू वस्तु उठावे॥
- २१ थयो असूझतो ते दातार, बले वस्तु असूझती धार।
घर असूझतो नहि कहीज, किण ही क्षेत्र न लेणी ते चीज॥
- २२ (१०) मुनि नें खबर नहीं ते टाणे, साधु नें बहिरावण वस्तु आणे।
आवता सचित्त संघटीजे, ते दातार वस्तु असूझती कहिजे॥
- २३ (११) साधु आरे कीधो तिण वार, बहिरावण उदयो दातार।
सचित्त रहित पुरुष रो जोय, चालतां संघटो हुवो सोय॥
- २४ सचित्त रो संघटो हुआ नाहि, किलामना न उपनी कांई।
तिण ने असूझतो नहीं कहेणो, सुध ववहार जाणी नें लेणो॥
- २५ (१२) साधु दातार नें कियो आरे, सचित्त सहित पुरुष नो तिवारे।
संघटो थया हुई जीव घात, इम असूझतो घर थात॥
- २६ किण ने कियो मुनि आर, बहिरावा ने चाल्यो दातार।
इतले किण ही मूळा री दीधी, तथा और सचित्त री प्रसिद्धी॥
- २७ (१३) तथा बहिरावण जाता सागी, मेहादि जळ नी छांटा लागी।
घर असूझतो थयो तेथ, तिण दिन लेणो नहीं ते खेत॥
- २८ (१४) कछोटी^१ रे संघटै बैठी बाई, तिण रे सरीर लागे छै ताहि।
जळ लोदयो^२ लूण रो ठाम^३, कछोटी रे संघटे पड्यो ताम॥

१. कठोती

३. बर्तन

२. लोटा

- २९ तिण रे हाथ सूं आहार न लेणा, कछोटी हाल्या होय अजेणा।
कछोटी रे संघटे तन जाण, कछोटी हालवा रो ठिकाण॥
- ३० (१५) तथा कछोटी रे पलो लागे, सचित्त कछोटी री संघटे छै सागे।
देतां अजयणा^१ न जाणे लिगार, लेवे देखी शुद्ध ववहार॥
- ३१ (१६) लूण पाणी रा ठाम छै सागे, संघटे बेठो तथा पलो लागे।
तिण रा हाथ स्यूं न लेणो आहार, लूण पाणी सूक्ष्म विचार॥
- ३२ (१७) साधु गोचरी गयो तिवारे, दातार नैं कीधो आरे।
बहिरावत हाथ सवा हाथ, ऊंचा स्यू पड़ी वस्तु विख्यात॥
- ३३ ते वस्तु न्हानी-फोरी^२ जाणे, अजयणा न भ्यासे तिण टाणै।
तिणरा कर स्यूं आहार पाणी बेहरे, जाण ववहार ना नहीं चेहरे॥
- ३४ नान्ही फोरी वस्तु किण ने कहिये, आचार्य कहै ते सरधहिये।
ते पिण बुद्धिवंत स्यूं मिल थापे, तिण ने उत्तम नहीं उथापे॥
- ३५ (१८) सवा हाथ थकी उपरंत, एक चावळ ऊंचा थी पडंत।
जद असूझतो घर थायो, इमहिज रांध्या मूंग मोठ तायो॥
- ३६ (१९) ओडो, छाबल्यो धान भरयो पेख, ऊपर वस्त्र स्यूं ढांक्यो विशेष।
वस्त्र रे पलो लागो बहिरातं, इम असूझतो घर थांत॥
- ३७ (२०) धान भरयो ओडा ऊपर पेख, मोटी वस्त्र री गांठ छै एक।
बहिरावता गांठ पलो लागंत, अजयणा न जाण्या लिये संत॥
- ३८ (२१) बलि ओडो धान समेत, तथा ऊपर वस्त्र गांठ तेथ।
बहिरावता तन फरसावे, तो असूझतो घर थावे॥
- ३९ (२२) असंयति गृहस्थ तिण वार, बहिरावा काज खोल्यो किवाड।
ते रस्ते गोचरी न जाणो, बीजे रस्ते निर्दोष पिछाणो॥
- ४० (२३) घर मांहि ओरा रो किवाड, कांइक बहिरावी खोल्यो तिवार।
जब तो असूझतो घर थायो, पहिलां आरे कीधो इण न्यायो॥
- ४१ कांइक बहिरी बलि बहिरावंत, मुनि वर्जत किवाड खोलंत।
वस्तु किवाड मांहली लीह, दातार असूझतो ते दीह^३॥
- ४२ (२४) एक पोळ में घर दोय च्यार, तिण मांहिले एक खोल्यो द्वार।
मुनि बहिरावा भाव आणो, तिण रस्ते पिण घर नहीं जाणो॥
- ४३ लोग आया गया तिण पंथ, एक मुहूर्त पाछे संत।
पोळ में दूजा रे घर तिहां जायो, दूजा तो किवाड नहीं खोलायो॥

१. अयत्ना

३. दिन।

२. हल्की

- ४४ (२५) एक पोळ में घर दोय च्यार, सगळाइ खोलायो किवाड।
तिण रस्ते सगळां रे न जाणो, बीजे रस्ते निर्दोष पिछाणो॥
- ४५ (२६) साधु अर्थे खोल्यो है किवाड, किवाड बारली वस्तु ले सार।
रस्तो असूजतो सहहिये, घर असूझतो नहि कहिये॥
- ४६ (२७) धणी रा कह्यां विना किवाड, दूजे खोल्यो मुनि अर्थे धार।
तिण रस्ते इक मुहूरत तांई, बहिरावा काजे जाणों नाहि॥
- ४७ लोक आया गया निज काज, एक मुहूर्त पछे मुनिराय।
जावे तिण घर बहिरण तांई, घर रो धणी खोलावा में नाहि॥
- ४८ धर्म द्वेषी दूजा रो किवाड, खोल्यो कलुष भाव मन धार।
जो ए इण घर बहिरण जाय, तो हूं निंदसूं लोकां मांय॥
- ४९ तेहनी पिण पूर्व रीत, लोक आयां गया सुवदीत।
एक मुहूर्त पाछे पिछाण, जाए गोचरी तिण मग जाण॥
- ५० (२८) शेषे काळ चोमासे ताम, गोचरी कळपे पर गाम।
दोय कोस तांई मुनिराज, जाए आहार पाणी रे काज॥
- ५१ (२९) गुरुआदिक रा दर्शन काज, चोमासा में जाय मुनिराज।
सुखे दोय कोस उपरंत, तो तिणहिज दिन पाछो आवंत॥
- ५२ (३०) बले गाम तथा पर-गाम गोचरी करता गुण धाम।
सचित्त लगाय नें नहीं जाणो, हिवै तिणरो न्याय पिछाणो॥
- ५३ उभा पग देवे तितरी है जाग^१, तो दोष नहीं तिण माग।
उभा पग देतां जो लग जाय, ते उपयोग री खामी जणाय॥
- ५४ (३१) इमहिज चौमासे दर्शन काज, सचित्त टाळी जावे मुनिराज।
सेखे काळ जइ रहै रात, तिण री तो जुदी छै बात॥
- ५५ (३१) बाजरी माल^२ ने समलाइ^३, सांमो चीणो^४ मलेचो^५ कहाइ।
इत्यादिक यां स्यूं मिलता पेख, न्हाना धान कह्या सुविशेख॥
- ५६ एहवा नान्हा धान रो जाण, आटो छाण्यो अछाण्यो पिछाण।
तिण रे संघटे न लेणो आहार, तिणरो बुधवंत न्याय विचार॥
- ५७ (३३) ए न्हाना धान तणों आटो ताय, पड़ियो है कछोटी रे मांय।
ओसणियो तथा अणओसणियो, कछोटी माटा मांहि धरियो॥
- ५८ तिण रे पलो लागो बहिरात, लीधां दोषण नहीं जणात।
जो संघटो सरीर नो लागै, नहि लेणों असणादिक रागे॥

१. जगह। २, ३, ४, ५ एक प्रकार के सूक्ष्म दाणे वाले धान्य विशेष।

- ५९ (३४) गेहूं जब मक्की चणा जवार, इत्यादिक मोटा धान विचार।
यांरो छाण्यो आटो बहिरंत, अछाण्यो नही लिये संत॥
- ६० (३५) आहार थोड़ो जाणे तो सुचंग, मोटा धान रा आटो ले मंग।
ओसणियो तथा अणओसणियो, राग द्वेष रहित अनुसरियो॥
- ६१ तिण में नीसरे धान रो दाणो, तो घर असूझतो हुवो जाणो।
सुध ववहार जाणी ते लेवे, तिण में बुद्धिवंत दोष न केहवे॥
- ६२ (३६) घृत तेल दूध वही मांहि, धान रो दाणो नीसरे ताहि।
तो घर असूझतो नहीं थाय, तिण रा फर्श स्यूं अचित्त जणाय॥
- ६३ (३७) मुनि कीधो दातार नें आरे, छींक उवासी आइ तिण वारे।
नाकस्यूं सूं सूं कियो ने खांसी, घर असूझतो नहीं थासी॥
- ६४ (३८) आरे किया पछेदातार, अजयणा स्यूं थूके तिणवार।
घर असूझतो जद कहणो, जेणा स्यूं थूक्यां तसु कर सूं लेणो॥
- ६५ (३९) आरे कियां पछे मन रंगे, अजयणा सूं तमाखू सूंधे।
तो असूझतो घर केहणो, जयणा सूं सूंध्यां तसु कर लेणो॥
- ६६ (४०) दातार रे मूढ़ा में जाण, छोल्या सांठा रो गट्टो पिछाण।
तिणरा कर स्यूं लियां दोषण नांय छोल्यो गट्टो अचित्त कहिवाय॥
- ६७ साधां ने बहिरावता सोय, सांठा नो गट्टो छूहो जौय।
तिण ऊपर जो पग लागे, तिणरा कर सूं बहरी लिये सागे॥
- ६८ (४१) आंधो पांगुलो छै कोइ भाई, अथवा पूरे मासेछै बाई
इत्यादिक एहवा कारण वाळो, सूझतो बेठो तिण काळो॥
- ६९ कोइ सूझतो लेइ आहार, ज्यांरा मूढ़े आगे म्हेले सार।
तिण हाथ सूं ले मुनिराय तिणमें दोषण कहीजे नांय॥
- ७० (४२) सूजती पूर मासे बाई, साधु ने बहिरावा ताई
दूजो सूझतो आहार लेवा ने, गयो तसु कर स्यूं बहिरावा ने॥
- ७१ पूरे मासे बाई बेठी जेहने, सहजे सचित्त आवी लागे तेहने।
घर असूझतो न कहाय, बहिरावा रो कार्य जद नांय॥
- ७२ (४३) तिण रा मुख आगल मेलवा ने, कोई गयो वस्तु लेवा ने।
सचित्त लाग्नां असूजतो थायो, पहिलां आरे कीधो मुनिरायो॥
- ७३ (४४) साधु वर्जतां पिण दातार, बहिरावण उठ्यो तिण वार।
सचित्त ऊपर लागो पाय, तेहिज असूझतो कहिवाय॥
- ७४ तिण उपाइचो धोवण रो ठाम, साधु ने बहिरावण काम।
सूझती रोटी आदि उपाइ, साधु ने देवा री मन धारी॥

- ७५ पिण तिण पगलो न भरियो तिवार, तिण रा कर स्यूं न लेणो लिगार।
अनेरा नां हाथ सूं ते चीज, लीधां दोष किसी पर कहीज॥
- ७६ (४५) वस्तु उठाय ने पग भरियो, साधु नें देवा संचरीयो।
तो ते वस्तु अनेरा^१ ने हाथ, बहिरे नही मुनि विख्यात॥
- ७७ (४६) साधु वरजतां पिण दातार, बहिरावा उठ्यो तिण वार।
सचित्त वस्तु छै तिणरे पाहि^२, तेहिज असूझतो कहिवाहि॥
- ७८ तिण उपाइयो धोवण रो ठाम, तथा ढाकणी अळगी करी ताम।
तथा रोटी कर सूं संघटाय, अन्य कर स्यूं पिण ते लीये नांय॥
- ७९ तिण ने आरे न कीधो सोय, घर असूझतो नहि होय।
आरे कियां असूझतो थाय, विचार जोवो मन मांय॥
- ८० (४७) साधु गोचरी गयो तिवार, बोल्या बे त्रिण च्यार दातार।
सहु देस्यां थोड़ो-थोड़ो आहार, सहु ने आरे किया अणगार॥
- ८१ सहु बाहिरावतां एकण रे, सचित्त संघटो हुवो तिण रे।
घर असूझतो इम थाय, आरे कीधा तिण न्याय॥
- ८२ (४८) साधु गोचरी गयो तिवार, बोल्या बे त्रिण च्यार दातार।
म्हारा सहु रा बहिरावण रा भाव, साधु बोल्या ते प्रस्ताव॥
- ८३ अमकडीया^३ रा कर स्यूं सोय, मुज बहिरवा रा भाव होय।
ओरां ने तो आरे नही कीधा, सहु उठ्या बहिरावण सीधा॥
- ८४ आरे न कियां सचित्त संघटाय, घर असूझतो नहि थाय।
सचित्त लागो आरे कियो जिण रे, घर असूझतो हुवो तिण रे॥
- ८५ (४९) जळ लोट्या रे संघटे बेठी बाई, दूजी बहिरावण वाळी आई
बहिरावण वाळी कनै बाल, संघटे वाली ने सूपे ते काळ॥
- ८६ तो पिण तिणरा कर स्यूं न लेणो, आरे कीधां असूझतो केहणो।
पहिलां बरज देवे मुनिराय, तो तेहिज असूझतो थाय॥
- ८७ छठी ढाल बहु न्याय समागम, उगणीसे सोलह महाविद आठम।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, सुख संपति जयजश पाय॥

१. अन्य

२. पास

३. अमुक

ढाळ ७

दोहा

- १ कुण-कुण वस्तु हाथ सूं, लेवे महा मुनिराय।
ढाळ सातमी ने विषै, जीत परंपर मांय॥
- २ ^१धोवण उष्णोदक, कर स्यूं ले मुनिराय।
जल इकबीस जात नूं, बलि तसु मिलतो ताय॥
- ३ आचारंग^२ दूजे, प्रथमध्ययन पिछाण।
सप्तम अष्टम उद्देशे, वारू श्री जिण बाण॥
- ४ कर स्यूं ले आछण, इकबीसा में ताम।
वर अर्थे अनूपम, आछण एहवो नाम॥
- ५ उन्ही छाछ उपरली, मुनि निज कर स्यूं उतारी।
आछण ले तेह में, दोष न सुध ववहारी॥
- ६ बलि मांड चावळ नों, ते पिण कर स्यूं लेवे।
इक बीस जात में, न्याय विवेकी वैवै॥
- ७ बलि ओषध-भेषज, कर स्यूं लेवे ताम।
दान चवदे प्रकार में, न्यारा तेहना नाम॥
- ८ हिवे विगत ओषध नी, कहूं कितायक नाम।
अचित्त मीरच नें जीरो, एलायची नें बिदाम॥
- ९ बलि उचित्त सिंघाड़ा, नोजा, पीस्ता, दाख।
खारक, सोपारी, इसबगुल, अभिलाख॥
- १० अजमो आसाळ्यो, मेथी ने खुरमाणी।
बलि अनारदाणा, अचित्त किया ले जाणी॥
- ११ बलि लवण, जायफळ, पबोड़ी^३, कूंगा^४ पेख।
कर स्यूं ले बिराली, अचित्त कियां सुविशेख॥
- १२ लवंग, सूंठ, गूंद, बलि, कस्तूरी नें कपूर।
बलि अचित्त नीवझर, गोली चूरण भूर॥

१. लय-नमूं अनंत चौबीसी

२. आयांर चूला १।१०१

३. अरेठा के बीज

४. इमली के बीज

- १३ बलि अचित्त पीपळ ले, हळद, लोद, ले हाथ।
बलि कुटक चीरायतो, नींबू अचित्त विख्यात॥
- १४ बलि दाळचीनी ले, जावंत्री ने खटाई।
कायफळ ने फिटकडी, मेदा लकडी ताई॥
- १५ दाडिम नों छोडो^१, अमल, तमाखू जाण।
मुरबा रा आंवला, गुळकंद, सेत^२ पिछाण॥
- १६ हरडे, बेहडा, आंवला, सोनामुखी, नसोत।
खेरसार एलियो, ओषध अर्थ सुहोत॥
- १७ इत्यादिक वस्तु, ओषध अर्थे जाण।
कर स्यूं ले मुनिवर, बलि मांगी ले पिछाण॥
- १८ ए सगली वस्तु, ओषध विन मुनिराय।
कर स्यूं नहीं लेवे, बली मांगी ले नांय॥
- १९ नित सूंघण खावण, लिये तमाखू आद।
अंजन कर स्यूं ले, बलि तनु-लेप संवाद॥
- २० ए सगळी वस्तु, पाडियारी मुनिराय।
जो पाछी देवे, तो पिण दोषण नांय॥
- २१ लूंग सूंठ आद जे, गृहस्थ धामे जोय।
कारण सूंठ आद जे, ओषध निज कर लेवो।
- २२ लवंग, सूंठ आद जे, ओषध निज कर लेवो।
हिवै कुण-कुण वस्तु, ओषध कर स्यूं न ग्रहेवो॥
- २३ गुल, खांड, पतासी, दूध दही पकवान।
घृत, ओषध अर्थे पिण, कर स्यूं न लिये जाण॥
- २४ लाडू मेथी ना, खाजा, सांकुली आद।
ओषध अर्थे पिण, कर स्यूं न लिये साध॥
- २५ माखण नें बूरो, केरीपाक तरकारी।
ओषध अर्थे पिण, कर स्यूं न लिये लिगारी॥
- २६ कपडा रे लगावा, तेलादि पहिछाण।
कर स्यूं नहीं लेवे, गणि आणा अगवाण॥
- २७ तन मरदन काजे, कर स्यूं लेवे तेल।
पिण घृत नहीं लेवे, ए सुगुरु आण शिष्य झेल॥

- २८ वस्त्र तन रे लगावा, मेण, गुगल कर आण।
ओघादि धोवण, गूंद आणे निज पाण॥
- २९ गृहस्थ री आज्ञा स्यूं, गूंबडादिक तन काज।
आटो ले कर थी, बलि मलम चरण सुख काज॥
- ३० पात्रा रे लगावा, तेल अने रोगान।
कर स्यूं नहीं लेणो, जीत ववहारे जाण॥
- ३१ लखारादिक अन्यमति, तेह तणी ए रीत।
जो हरख धरि कहै, ल्यो धे कर सूं नचीत॥
- ३२ दृढ श्रावक बले रागी, तेहनां कर सूं ल्यावै।
चावै सो लेइ, ते दिन पाछो ठावे॥
- ३३ पाडियारो कही ल्यायो, पिण ते दाय^१ न आयो।
निशि राख्यां विण सूपै, तो पिण दोषण नांयो॥
- ३४ कपडो निज कर स्यूं, पाडियारो मुनि ल्यावे।
पछे गृही ना कर स्यूं, बेहरी ने वरतावै॥
- ३५ गृही ने कर जाची, पाडियारो जो ल्यावे।
पछे धारी फाड़ दे, तो पिण दोष न थावे॥
- ३६ गृही कर थी तंतु, आधो कदाचित ल्यावे।
पछे धारी न देणी, न कल्प्यां परठावे॥
- ३७ स्याही नें हींगळू, गोळी संपेतो जंगाल^२।
इत्यादिक रंग बहु, कर स्यूं ले मुनि माल॥
- ३८ पात्रा रे लगावा, साजी गोबर छार^३।
बलि और कारण ए, कर स्यूं ले सुविचार॥
- ३९ डोरा सूत नें डांडी, पाटी पूठा पेख।
कर स्यूं ए लेणा, जीत ववहार सुलेख॥
- ४० राब छाछ नें रोटी, अपर बलि अन्य जात।
कर स्यूं नहि लेणा, ए परंपर बात॥
- ४१ मकिया रा कण पिण, कर स्यूं खेर न लेणा।
रस ने बलि होळा^४, इत्यादिक इम कहणा॥
- ४२ ए वस्तु कही छै, तेह तणे अनुसार।
केइ कर स्यूं लेणी, केइ न लेणी लिगार॥

१. पसंद

३. राख।

२. एक प्रकार का रंगविशेष।

४. कच्चे धुने हुए चने।

- ४३ कहि कहि कहुं कितरो, वस्तु बहु जग जाण।
गणि आणा आपे, तेहिज करज्यो प्रमाण॥
- ४४ कारण विन मुनिवर, विगय व्यंजन तरकारी।
मांगी ने न लिये, बलि मिरचादि विचारी॥
- ४५ कारण स्युं मुनिवर, विगय व्यंजन तरकारी।
मांगी ने लीधां, दोष नहीं छै लिगारी॥
- ४६ पाणी छाछ आछ ने, आटो रोटी आदि।
क्षुधा मेटण ने, मांगे भाव समाधि॥
- ४७ बलि क्षुधा मेटण ने, राब मांगी ने ल्याय।
कांठा री कोर नी, राब व्यंजन में जणाय॥
- ४८ छाछ राब तणीं परे, मांगी इखु रस ल्यावे।
पिण लोळपणां नी, चित नी लहर मिटावै॥
- ४९ भिक्षु भारीमाल, ऋषिराय सुपसाय।
जयजश सुख संपति, गण वृद्धि हरख सवाय॥
- ५० चालीस निनाणु, संत सत्यांरा मेळा।
वर शहर लाडणूं, गणि संपति रंग रेळा॥

लघु रास

दोहा

- १ क्रोधी मांनी लोळपी, वलि अविनय कपट अथाय।
(तिण री) वणी खुराबी अति घणी, ते सुणज्यौ चित्त लाय॥

चौपाई—

- २ 'षट अवनीत'^१ तणों अधिकार, ते सांभळज्यो बहु विस्तार।
मूळगा नांम अछै तसुं ताही, ते तौ इहां नहीं कहिवाई॥
३ अधिक अवनीत दूजो तीजो ताम, चौथो पांचमो छठो ए नाम।
एहिज नांम संज्ञा थी जांणी, ते ओळख लीज्यो पहिछांणी॥

हिवे अधिक अवनीत वर्णन

- अपछंदा^२ अविनीत, टाळोकर होसी घणा फजीत ॥ ध्रुपदं॥
४ गण मांहि एक अधिक अवनीत, तिण दुष्टी री खोटी रीत।
स्वार्थ पूगतो जाण्यो तिवार, जद गण में अधिक हुंसीयार॥
५ स्वार्थ काजै गुरु नै अधिक रीझावै, गण गणपति रा गुण गावै।
जांणै आचार्य-पदवी म्हारै घरे आसी, ओ तौ पुद्गल सुख नों प्यासी॥
६ तिण सूं गण में रहै घणुं फळियो नै फूळ्यो, ओतो आपरै स्वार्थ भूल्यो।
बले साथां नै डरावी कहै इम तांम, थारै पडसी म्हांसूंज काम॥
७ परम भक्ता गुरु रो अति पूरो, निज स्वारथ काज सनूरो।
सासण नै ओ तो अधिक दिढावै, गुरु रा गुण पिण अति गावै॥
८ मुझ बंधव नै पदवी आसी, तो म्हारो कुडव-काण बध जासी।
मुझ घर पदवी आसी अमोल, तिण सूं म्हारौ पिण रहिसी तोला॥
९ बंधव रै तो संजम नी नीत, इण रै स्वारथ री छै प्रीत।
पछै स्वार्थ पूगतो जाण्यो नांही, जब कलुष भाव मन मांहि॥
१० जिम-जिम स्वारथ देख्यौ हीन, तिम-तिम होय गयो दीन।
जिम-जिम स्वारथ घटतो दीठो, तिम-तिम क्रोध अंगीठो॥
११ जिम-जिम स्वारथ घटतो देखी, तिम-तिम क्रोध विशेषी।
जिम-जिम स्वारथ दीठो अधूरो, तिम-तिम बिगड़्यो नूरो॥
१२ जिम-जिम स्वारथ अणसीझंतो, तिम-तिम मन खीजंतो।
ओ स्वार्थ अर्थे बाह्य सुविनीत, इण रै गणिका वाली प्रीत।

१. छोगजी चतुर्भुज जी आदि । विस्तृत जानकारी के लिए—

देखें—'शासन समुद्र' भाग ६ (मुनि नवरत्नमलजी लिखित)

२. लय—पुन्यवंतो जीव पाछिल.....

- १३ मन मांहे हुंती मोटकी आस, ते तौ जाबक हुआ निरास।
मन रौ मनोरथ इण रौ न फळियौ, जब अधिक द्वेष परजळियो॥
- १४ गणपति ऊपर पूरो द्वेष, इणरै कर्म तणीं काळी रेख।
छानै-छानै गण गणपति केरा, ओ तौ अवगुण बोलै घणोरा॥
- १५ छानै-छानै गृहस्थ आगै विसेख, गुरु रा अवगुणबोलै अनेक।
हाजरी में नित्य त्याग करंतो, छानै-छानै अवगुण बोलंतो॥
- १६ गृहस्थ कहै-थानै बोलणो नांही, जद कहै म्हे तो ओळखाई।
ग्राम परग्राम रा भाई आवै, तयारै आगै पिण अवगुण गावै॥
- १७ साधां आगै पिणकहै छानै-छानै, जिण रै असुभ उदे ते मानै।
खबर पड़ी गणपति नै तिवार, जब निखेद्यो परषद मझार॥
- १८ अविनीत पणारो अवगुण देखी, गुरु चोडै निखेद्यै विसेखी।
यां तो सर्व साधां रै मांही, म्हारी आब न राखी कांई॥
- १९ बले आसता इण विधि चोडै उतारै, तो हूं क्यानै रहूं यारै सारै।
यानै छोडी नै हूं हुय जाउं न्यारो, यारै पिण करूं बहुत बिगाडो॥
- २० दोष परूपूं यामें भारी, जब खबर पडै यानै म्हारी।
बलि परिचादिक री मरजादा कीधी, ते अविनीत खांच गलै लीधी॥
- २१ गुरु सांकडी^१ विविध मरजादज करता, किण ही सूं मूल न डरता।
बले अगवाण नहीं विचरावै, संकडाइ में रहणी किम आवै॥
- २२ एहवो विचार अधिक अवनीत, महा कपटी खोटी नीत।
एकला री आसंग नहीं आवै, जद बीजानै बेली उठावै॥
- २३ ओ तो आगै गण थी टळियो न हुंतो, पिण इण रासा में ओ धुर जूतो।
और फटावण में ओ अगवाण, तिण सूं अधिक अवनीत पिछांण॥

इति अधिक अवनीत वर्णन

- २४ गण मांहे केइ आगै निकळिया, दण्ड लेइ पाछा वळिया।
पिण अवर्णवाद स्वभाव छै ज्यांरो, अविनय रोग मिट्यो नहीं त्यांरो।
- २५ ते पिण प्रतिकूल गणपति केरा, मन वेदै कष्ट घणोरा।
परचादिक रो रोग ज्यांरै भारी, बले लोळपी क्रोधी अहंकारी॥
- २६ एहवा अवनीतां सूं मिलियौ जाय, त्यां सूं बांधी प्रीत सवाय।
यारै पिण गुरु सूं अंतरंग धेख, अधिक अविनीत मिलियां विसेख॥
- २७ चोर सूं जाणै मिल गइ कुत्ती, झूठी बातां करै अणहुंती।
तिण अधिक अवनीत भणीं अगवाण, कीधो त्यां अविनीतां जांण॥

१. कठिन।

- २८ शिकारी स्वान नै करै अगाडी, तिण इण नै कीधो अविचारी।
द्वेष तणै वस अवळी सूझै, ते दिन-दिन अधिक अळझै॥
- २९ परचो निखेध्यां अधिक दुख पावै, विरुद्ध बोलतां लाज न आवै।
मांहोमांहि हुआ अवनीत भेळा, एक स्थान बैसी करै हेला॥
- ३० छानै-छानै गुरु में^१ अवगुण बतावै, मन मानै ज्युं झूठ चलावै।
तिण चोरपली कोइ जाय अजाण, तिण नै पिण न्हंखै फंद में ताण॥
- ३१ अवनीत-अवनीत मिल बांधै जिलो, तिण नै कर्मा दीधो टिलो।
सुगुरु कहै तिण नै वच सूधो, तो पड़ जाये मूरख ऊंधो॥
- ३२ इण सूं बीजा अवनीत मिल्या त्यांरी बात, सांभळजो अवदात।
दूजो अवनीत ते दशकै वास, तीनां साथ निकळियो तास॥
- ३३ राजनगर थी लक्ष्मीचंद ध्यायो, ग्राम मजेरै जइ समझायौ।
दोय तौ पाछा नाया गण मांय, दूजा अविनीत नै समझाय॥
- ३४ लेइ आयौ ऋषि माणक पाहि, दंड ओढ़ आयौ गण मांहि।
स्वामीजी दंड देसी ते लेसूं, रुडी रीत हिवै रहेसूं॥
- ३५ गुरु पै समाचार कहिवाया तास, भळायो मोती ऋषि पै चउमास।
ए दूजो अविनीत आवी गण माय, चउमासो करि गुरु पै आय॥
- ३६ जनब्रंद मांहि मोटै शब्द रोयो, कहै मोनै कर्मा डुबोयो।
हाथां में हथकड़ी पगा में बेडी, बलि घालै गल तोख घणेरी॥
- ३७ हुंतो एहवो छूं मोटो अपराधी, गण नो अवर्णवादी।
म्हे अवगुण आपरा बोल्या अनेक, पूरा कहिणी न आवै विशेष॥
- ३८ एम कहीनै लिखत करायो, विविध त्याग तिण मांह्यो।
जावजीव गण थी टळवा रा जाण, पंचपद नीं साखे पचखांण॥
- ३९ और नै साथ ले जावा रा त्याग, अनंत सिद्धां री साखे ए माग।
टोळा बारै टळ अवर्णवाद, हुंता अणहुंता विराध॥
- ४० तीर्थकर गणधर केवळी जाण, त्यांरी साख थकी पचखांण।
किंचित लै'र में बोले जोय, तो भव-भव में रक्तपीती होय॥
- ४१ त्याग जिलो बांधण रा कीधा, धणै हरष सहीत प्रसीधा।
क्षेत्र में एक रात्रि उपरंत, त्याग कीधा धर खंत॥
- ४२ बतीसै पैतालीसै मर्याद, बांधी पचासै गुणसठै वाध।
सर्व मर्याद लोपण रा पचखांण, अनंत सिद्धां री आण॥

१. कुशिष्याः कुग्रहाश्चैव, मिलिता यत् परस्परम्
अनर्थयैव जायंते, गुरुयदि न पश्यति॥

- ४३ लिखत हेठै अक्षर कर दीधा, घर्ण हरष अंगीकार कीधा ।
गणपति साधां नै पूछी वाय, एहनै प्राछित कितरो आय ॥
- ४४ तीजो^१ अविनीत बोल्यो वाय, इण नै प्राछित दसमो आय ।
तीजै अवनीत पांने लिख्यौ एम, ते सांभळ जो धर प्रेम ॥
- ४५ लिखिया बीजा अवनीत तणां कर्म ताय, ते सांभळ जो चित्त ल्याय ।
फाड़ा-तोड़ा री बातां अनेक, घणां साधां सूं कीधी विशेष ॥
- ४६ गुरु सूं वेमुख हैवा री बात, घणां साधां सूं कीधी साख्यात ।
गण बारै लेजावण घणां साधानै, घणां दोष बताया त्यानै ॥
- ४७ साधा नै सूंस दराइ विशेष, अवगुण बोल्या अनेक ।
स्वामीजी नै बात कही तौ जाण, थानै अनंत सिद्धां री आण ॥
- ४८ स्वामीजी नै शासण नै सरधावा असाध, इणविध बोल्यौ विराध ।
दोय पाट सुद्ध चाल्या लूंका रै, हिवै गाळा गोळो घणो यारै ॥
- ४९ औ तो राग द्वेष सू भरिया सोय, यामें साधपणो किम होय ।
फलांणोजी त्यांर फलांणो छै त्यारी, घणां साधां नै कह्यो तिवारी ।
- ५० बले कळो-म्हे तो धार बैठा कदेई, बले अमकडियो मो साथेई ।
कोरा असाधु ए तो छै सोय, दलदस्यां नै परा छोड़ो जोय ॥
- ५१ ए ढीला चालै छै छोड़ देवो यानै, इह विधे आख्यो साधानै ।
कही भेद पाडण बातां विविध प्रकारी, पिण साधां तो यारी न धारी ॥
- ५२ बले मोनै पदवी रो लोभ बतायो, पिण म्हे तो न मांनी वायो ।
थे किम नहीं मांनो छो ताय, जद हूं बोल्यो इमवाय ॥
- ५३ स्वामीजी रा साधु लेइ जाउं लारो, तो लोक कहै पाइयो इण धाड़ो ।
हुंतो इसड़ो काम न करूं मलीन, जब काया^२ होय निकळिया तीन ॥
- ५४ खोटी-खोटी बातां कीधी अनेक, इण रै आचारज सूं द्वेष ।
तिण सूं सिद्धांत रा वचना रै लेख, इण रा कर्म देखतां विशेष ॥
- ५५ एहवा मोटा दगादार नै ताय, प्राछित दशमो आय ।
पछै तो गुरु नै भ्यासै ते खरी छै, इम पानां में लिखि उच्चरी छै ॥
- ५६ दूजा अवनीत री बात प्रसिधी, तीजै अवनीत इम लिख दीधी ।
पछै तीनूं टळ्यां में दोय नाथा तत्थ, कही दूजा अवनीत री बत्त ॥

इति द्वितीय अवनीत वर्णन

- ५७ उवे नीकळ्या जद तीजै अवनीत, पोता री उपजावण प्रतीत ।
गुरु नै कहै गण थि नीकळवा रा जाण, म्हारै जावजीव पचखांण ॥

- ५८ एहिज संत एहिज अज्जा सार, एहिज मारग उदार।
इण हिज मारग में मर पूरा देऊं, पिण गण थी जुदो नहीं ह्वेऊं॥
- ५९ और नै साथै ले जावा रा त्याग, इम पचखया हरष अथाग।
और भेलो पिण जावा रा त्याग, बोल्यो विधि धर अतिराग॥
- ६० आप लिखत करो म्हारी राखो प्रतीत, इत्यादिक घणों कह्यो सुरीत।
इम कही करायो लिखत अनूप, ते सांभळजो धर चूप॥
- ६१ जावजीव रहिणो गणपति आण, संथारो करि करणो कल्याण।
पंच पदां री साख थी जाण, गण थी टळवा तणां पचखाण।
- ६२ अनंत सिद्धां री साख थी जाण, साथै ले जावण रा पचखाण।
अनंत सिद्धां री साख थी एम, और साथ जावा रा नेम॥
- ६३ गणबारै बे भेळा रहिवा रा जाण, पंच पद नी साखे पचखाण।
ऊ आवै तो ही राखण रा एम, अनंता री साखे नेम॥
- ६४ गणथी टळ हुंता अणहुंता जाण, अवगुण बोलण रा पचखाण।
गणधर तीर्थकर केवळ नाणी, त्यांरी साख थी ए त्याग जाणी॥
- ६५ गण थी नीकल किंचित लै' हर में बोले, तो भव-भव में रक्त पीती झोले।
रुढै नरक निगोद में अनंत संसार, एह बीज छै अधिक उदार॥
- ६६ तिण सूं किंचित मात्र पिण जाण, अवगुण बोलण रा पचखाण।
गण में असाधु सरथी नवी दिक्षा लै जाण, तो पिण अवगुण बोलण रा पचखाण॥
- ६७ हिवै नवो म्हे चरण लीयो धर भाव, हिवै सूंसां रो नहीं अटकाव।
इम पिण कहिण तणां पचखाण, त्याग ज्यूं रा ज्यूं पाळणां जाण॥
- ६८ नीकल नै पूछ्यां अणपूछ्यां जाण, लै' र में पिण बोलण रा पचखाण।
इक निशि उपरंत क्षेत्रां रै मांहि, रहिवा रा त्याग छै ताहि॥
- ६९ गण थी नीकल पोथी पाना पिछाण, लेइ जावा तणां पचखाण।
टोळा मांहे तथा टळ नै तेम, किण रै संक घालण रा नेम॥
- ७० जिलो बांधण रा पिण छै नेम, मन भागण रा पिण एम।
खोटा सरधावण रा पचखाण, पंच पद नीं साख सूं जाण॥
- ७१ बलि अनंत सिद्धां री साख सूं माग, खोटा सरधावण रा त्याग।
इणपंचमा काल रै मांहिअबार, भारीकर्मा जीव बहु धार॥
- ७२ निज स्वभाव आत्म बस नांही, दोहरो परच्छंद रहिणो त्याहि।
जद दूजां रा अवगुण सूझै अपार, असाधु सरथ हुवै न्यार।
- ७३ बोले बहु विध आळ जंजाळ अयाण, इम करिवा रा पचखाण॥
पंच परमेश्वर सिद्ध भगवान, त्यांरी साख सूं ए पचखाण।

- ७४ जावजीव सिद्धां री साख सूं जाण, ए त्याग भांगण रा पचखांण।
अनंत सिद्धां री साख सूंजाण, ए त्याग भांगण रा पचखांण।
- ७५ मर खपणो सूंस भांगणा नाही, ए तो त्याग जावजीव ताई।
मन तीखो हुवै तो आरे होय जो ताम, नहीं सरमासरमी रो काम॥
- ७६ मूंहढै और नै और मन मांहि, इम तो साधां नै करणो नाही।
पछै और रो और बोलणो नाहिं, और बोल्यां घणो दुख थाहि॥
- ७७ गण बारै निकळ अवगुण बोलै सोय, तो भव-भव में रक्तपीती होय।
भूंढै हवाल मरै दुख पावै, बले नरक निगोद में जावै॥
- ७८ तिण सूं भिक्षु नीं रजा सुभाग, जावजीव लोपण रा त्याग।
बतीसै पैताळीसै पचासै सांधी, बले गुणसठै मर्याद बांधी॥
- ७९ ते रजा लोपण रा जाण, पंच पद नीं साखे पचखांण।
बले अनंत सिद्धां री साख सूं जाण, मर्याद लोपण रा पचखांण॥
- ८० बलि गणपति करली मर्याद, बांधै धर अहलाद।
ते पिण नटवा रा पचखांण, अनंत सिद्धां री आण॥
- ८१ गण थी टळीनै किंचित् पिण जाण, लै' र में बोलण रा पचखांण।
अरिहंत सिद्ध गणधर भगवान, पंच पदनीं साखे पचखांण॥
- ८२ उगणीसै दशै नै फागुण मास, सुदि नवमी ए लिखत प्रकास।
तीजै अविनीत ए लिखत कारायो, हेठै अक्षर लिख दीया ताह्यो॥
- ८३ ए लिखत वाची नै दशकत कीधा, इम लिख दिया अक्षर सीधा।
सुध परिणाम दीसै तिण वेर, वर्ष कितै लियो मोह घेर॥
- ८४ इण रै पिण परचा रो रोग विख्यात, तिण सूं इण री पिण बिगड़ी बात।
गणपति परचो करवा दै नाय, जब अवगुण सूझै अथाय॥
- ८५ जिभ्या रो लोळपी अधिकाय, संकडाइ में रहिणी न आय।
अविनय रोग अधिक प्रगटियो, बल चरण पाळण थी घटियो॥
- ८६ ज्यां साथै मेल्या त्यां उत्तर दीधो, जब नीकळवा मन कीधो।
बालपणां रो अविनय न्हालो, स्वामी हेम कह्यो गोसाळो॥
- ८७ वचन त्यांरो खाली किण विध जाय, ओ तो सांप्रति मिलिया आय।
पोतै दशमो प्राश्चित लिख्यो थो पानै, तिण नै लेइ नीकळीयो छानै ॥
- ८८ तेरां रै वर्ष बिहुं मिल भेळा, नीकळनै करी गुरु नी हेला।
अवगुण बोल्या अनेक प्रकार, तुरत कहितां न आवै पार॥

- ८९ आसरै तीन मास न्यारा रह्या ताय, तिण में कीधी घणी बकवाय।
श्रावक अरै करता दीसै नहि, जब प्राछित ओढ आया मांहि॥
- ९० आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित देशी ते लैणो ठहराय।
तिण रा साखी गृहस्थ ठहराय, तथा पछे लीया गण मांय॥
- ९१ टौळा रा साध-साधवी मांहि, किण रै प्राछित ठहरायो नाहि।
किण ही प्राछित मूळ न लीधो, मिच्छामि दुक्कड़ं नहीं दीधो॥
- ९२ किण ही में नहीं काढ्यो बंक, सहुनै कर दीधा निसंक।
प्राछित विण दीयां आया मांहि, सगळा नै सुध जाणी ताहि।
- ९३ यांरी तरफ सूं चोखा जाण, गुरु रै पगां पड़ीया आण॥
जो अै दोष जाणै किण मांहि, तो अै आघो काढै जिंसा नाहि।
- ९४ दोषण ज्यां में कह्या था मुख सूं, त्यांरा वांदीया पग मस्तक सूं।
त्यानै तो प्राछित मूळ न दीधो, उळटो आप दंड ओढ लीधो॥
- ९५ ज्यांरा महाव्रत कह्या था भागा, त्यांरैइज पगां आय लागा।
ज्यांने कया था लोकां में खोटा, त्यांनैज लेखव लीया मोटा॥
- ९६ ज्यांमै काढ्या था दोष अनेक, ते तो छोड़ दीधी सर्व टेक।
उळटो आपरै दंड ठहराय, इण विधि आया गण मांय॥
- ९७ ज्यांनै ढीला कहिता ताण-ताण, त्यांराइज पग वांघा आण।
ज्यांसूं लोका नै देता भिड़काय, त्यांराइज पग वांदीया आय॥
- ९८ ज्यांनै अणाचारी मुख सुं आख्यात, तिका पाछी न पूछी बात।
ज्यां में दोषण कहिता आप, ते तो जाबक दीया उथाप॥
- ९९ उळटो आपरै दंड कराय, गण मांहि बैठा छै आय।
ज्यां में कहिता कपट नै झूठ, हेळा निंदा करता पर पूठ॥
- १०० उत्तम पुरुष त्यांनै ठहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय।
ज्यांनै खोटा सरधावण ताय, कीधा था अनेक उपाय॥
- १०१ त्यांनै तिरण तारण ठहराय, प्राछित ओढ आया त्यां मांय।
यांनै जाणता था केइ साचा, ते तो 'प्राछित ले' हुआ काचा॥
- १०२ बले जो तांणै यांरी दूजी वार, तो अै पूरा मूढ गिंवार।
न्यारा थका हूँता घणा गैरी, गण रा हुआ था पूरा वैरी॥
- १०३ सर्व साधा नै खोटा सरधाया, त्यांमेइज दंड ओढ आया।
यां तो च्यार तीर्थ रै मांय, कीधो थो घणो अन्याय॥

- १०४ प्राछित लेइ आया गण मांही, टोळा में प्रतीत अणाई।
 श्रावकां आगै कह्या ते हुआ निसंक, यामेईज जाणीयो बंक।
 १०५ यांतो दोष बताया मांय, आ तो झूठी कीधी बकवाय।
 टोळा रा साधु-साधवी मांहि, दोषण कहिता ताहि॥
 १०६ इण बात सूं तो भूंडा घणा दीठा, पड़िया च्यार तीर्थ में फीटा।
 अै तो प्राछित ले गण मांही आया, सगळा साधां नै सुध ठहराया॥
 १०७ गणपति रा गुण नीं बहु जोड़, अै तो करवा लागा धर कोड।
 ऊभा होय परषद में आत्म निंदै, गया काळ रो पाप निकंदै।
 १०८ कहै कर्म जोगै म्हे बारै नीकळीया, पिण भाग्य जोगे पाछा मिलीया।
 बलि निज अवगुण जोडां करि ताहि, अै तो कहै परखद रै मांहि॥
 १०९ बलि जोड में गणि गुण गावै अथागै, आप स्वाम सीमंधर सागै।
 तिण हिज टांगै एक बलि टळियो, विहार में विण पूछ्यां नीकळियो॥
 ११० तीजा अवनीत रो ए बहिनोइ, तिण नै कर्मा दीयो विगोइ।
 आसरै दोय मास रहि सीधो, इण पिण मांहि आवी दंडलीधो॥
 १११ ओ पिण ऊभो रहि परषद मांहि, निज आतम निंदै ताहि।
 अै गण सूं नीकळ नै पाछा आया मांय, केइ वर्ष कर्म उदै आय॥

इति तृतीय अविनीत वर्णन

- ११२ अविनय रोग वध्यो अधिकाय, बले लोळपी अधिक अथाय।
 दूजा तीजा अविनीत रै सोग, इणरै परचा रो पिण अति रोग॥
 ११३ परचो निषेध्यां घणो दुख पावै, मन में अति सीदावै।
 टाळोकर नै निषेधै सोय, तो वेदल विलखा होय॥
 ११४ संकडाइ में रहिणी न आय, यारै पुद्गल सुख नीं चाय।
 आगैवाण पिण नहीं विचरावै, ते पिण दुख बहु पावै॥
 ११५ बलि स्वार्थ नहीं पूगै जिणां रा, जद अवगुण बोलै गुरां रा।
 अविनय रोग वध्यो अधिकाय, संग अविनीतां रो सुहाय॥

इति चतुर्थ अविनीत वर्णन

- ११६ एक^१ बले अविनीत थो ताहि, तिण री प्रकृति कठोर अथाय।
 ज्यां साथै मेलै त्यांनै दुखदाइ, ते पिण सूंपै गुरु नै आई॥

इति पंचम अविनीत वर्णन

- ११७ अधिक अविनीत पहिलो कह्यौ ताहि, गण में अधिकाई री मन मांहि।
 तिण री आसा बांछा पूगी नहीं काय, जद मिलियो च्यारां सूं जाय॥

१. पांचवां लघु छोगजी।

- ११८ यारै पिण हुंतो अविनय रो रोग, आय मिल्यो सरीखो संजोग।
पांचूँइ मिलनै बांध्यो जिल्लो, यानै कर्मा दीधो टिल्लो॥
- ११९ विनयवान भाई^१ गुणवान सूं तोड़ी, मूढ अविनीतां सूं प्रीत जोड़ी।
अधिक अविनीत रे कपट अपार, परपंच तणों नहीं पार॥
- १२० एकदा निशि बहु साधां रै मांय, तीजो^२ अविनीत बोल्यो वाय।
म्हानै दीक्षा लियां नै थया घणां वास, छोटा लारै विचरूं तास।
- १२१ कुडब-कायदो म्हारो नहीं कोय, ते हूं मन में जाणूं छूं सोय॥
रखे संसार घणो वध जाय, नहीं तो कर देखाउं ताय।
- १२२ गुरु कहै थारै याही मन मांय, तो हूं साधां नै लेउं बोलाय।
थे करतां थकां देखाळोळा कबही, हूं कर देखाळूं अबही॥
- १२३ इम सुण डरनै बोल्यो इम वाण, हूं तो छूं कीड़ी समाण।
हूं कहितो और नीकळ गयो और, इह विधि बोल्यो तिण ठोर॥
- १२४ घणां साधु कहै आ थे सूं कहि वाय, इम बोल्या बहु मुनिराय।
तठा पछै आसरै मास तांड, औ पांचूं रह्या गण मांही॥
- १२५ गुरु नै वादै तिक्खुता रो पाठ गुण नै, गुण कीर्त्ति अधिक थुणी नै।
आप तीर्थकर देव समान, बेहुं टक तज मान।
- १२६ मुख ऊपरै तो करै गुण ग्राम, छानै-छानै जिलो बांधै ताम।
गणपति रै मुख तो गुण गावै, छानै-छानै अवगुण दरसावै॥
- १२७ मुख ऊपर तो बोलै राजी-राजी, छानै-छानै करै दगाबाजी।
गणपति नै बादै जोड़ी हाथो, पगां में देवै नित्य-नित्य माथो॥
- १२८ वंदन करत करै गुण ग्राम, सारा पहिली लै गुरु रो नाम।
पंच पदां री वंदणा में कहेवै, तिण में गुरु रो नाम नित्य लेवै॥
- १२९ लोकां आगैइ करै गुण ग्राम, पिण मन रा मैळा परिणाम।
हाजरी नित्य प्रति लिखनै बतावै, ऊभा परषद मांहे सुणावै॥
- १३० ते हाजरी तणीं कहूं छूं बात, सांभळजो विख्यात।
हाथ जोड़ी नै आप सूं ताम, अरज करूं छूं स्वाम॥
- १३१ भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, बलि जय आचार्य ताय।
यांरी बांधी मर्याद अमूल्य, म्हारै छै सर्व कबूल॥
- १३२ खोळी में सास रहै जठा तांड, ज्यां लग जीव रहै तिण मांहि।
अनंत सिद्धां री साख थी जाण, म्हारै लोपण रा पचखाण॥

१. बड़ा छोगजी (छोटा भाई)।

२. कपूरजी।

- १३३ आप छो महा दयाल कृपाळ, बलि परम पूज्य छो गोवाळ।
प्रभु गणपति रा गुण कह्या छतीस, त्यां गुणां सहित छो जगीस॥
- १३४ पंच महाव्रत ना छो पालक, च्यार कषाय ना टालक।
पंच आचार पंच समिति वंत, वर तीन गुप्ति धर तंत॥
- १३५ पंचेन्द्रिय जीपक महा गुणधारी, नववाड सहित ब्रह्मचारी।
तारण तिरण एहवा गुण धाम, हूं आपनै जाणूं छूं स्वाम॥
- १३६ साधु साधवी तुम गण मांहि, पाळै आपरी आज्ञा ताहि।
वीर थकां चवदै सहस्र छतीस, हूं जाणूं छूं तास सरीस॥
- १३७ साधुपणों सुध सरधूं सारां में, बलि संजम सरधूं म्हांमें।
आप तणी आज्ञा जे सोय, लोपी टाळोकर होय॥
- १३८ तास अढाड द्वीपना चोर, तेहथी अधिको जाणूं घोर।
अवर्णवाद रो बोलण हारो, महा मोटको पापी विकारो॥
- १३९ महा मोहणी नों बांधण वाळो, भागल भृष्ट अन्याइ न्हालो।
तेह संसार अनंत बधारै, अनंत जन्म मरण विस्तरै॥
- १४० नरक निगोद जो जावण वाळो, एहवो जाणूं छूं दुःख आळो।
तास बात मानै तसुं चोर, झूठाबोलो जाणूं छूं घोर॥
- १४१ म्हारै एहवो काम करवा रा त्याग, जावजीव तांइ ए माग।
और नै साथै ले जावा रा जाण, जावजीव पचखांण॥
- १४२ बलि टाळोकर भेलो तेम, आहार करिवा रो नेम।
पुस्तक नै बलि पाना अनेक, ले जावण रा त्याग विशेष॥
- १४३ इक निशि उपरंत श्रद्धा रा खेत्र, तिहां रहिवा रा त्याग छै तेथ।
अंस मात अवगुण बोलण रा पचखांण, बले अनंत सिद्धांरी आंण॥
- १४४ पंच पदांरी साख सूं जाण, अवगुण बोलण ना पचखांण।
घणै मन तीखै राजीपा सूं जाणी, लिख्यो घणो हर्ष दिल आणी॥
- १४५ सरमासरमी थी लिख्यो नहीं छै, हेठै निज अक्षर संवत् सही छै।
निज-निज कर ते लिखी नै संत, ऊभा नित्य प्रति सहु वांचंत॥
- १४६ उगणीसै चवदा रा वर्स थी साथी, जय गणि मर्यादा ए बांधी।
नित्य प्रति मिति लिखि निज नाम, परषद में मुनि वांचै तमाम॥
- १४७ उगणीसै वीसै माघ सुदि जाणी, आ तो वारस तिथि पिछाणी।
परषद में सहु मुनिवर भेळा, ऊभा पांचूं वांची तिण वेळा॥
- १४८ इण विधि नित्य प्रति त्याग करंता, घणां हरष सूं लिखियो कहंता।
तेरस गणपति कियो विहार, बहु संतां तणै परिवार॥

- १४९ अधिक अविनीत विण च्यारू^१ टळिया, छानै विण पूछ्यां निकळिया।
साधां जाण्यो रह्या हैला मार्ग गाम, दूजै दिन पिण नाया ताम॥
- १५० अधिक अवनीत कपट करि सोय, पहिला छानै पांना सूप्या जोय।
अे तो लारै रह्यो निज मतळब जान, पाछिलो देखवा वर्तमान॥
- १५१ अधिक अविनीत कहै हूं जाउं, उणा कनै म्हांरा पांना ल्याउं।
समझै तिण नै ल्याउं समझाय, इम कही गुरां नै वाय॥
- १५२ किण ही कह यो चरण रा नहीं परिणांम, टळियो सैहजेइ कचरो ताम।
जद कहै एक तिरै तो ही आछो, हुं समझाय ल्याउं पाछो॥
- १५३ पछै तीसरे दिवस पटमोहच्छब मांय, निज जोड़ गणि गुण गाय।
पद युवराज तणा धर कोड़, गुण गाया गाथा जोड़॥
- १५४ पछै दोय^२ जणा नै सुगुरु पठाया, घणा कोस च्यारूं पै आया।
दूजै संत तो निषेद्या सीधा, अधिक अविनीत तो डेरा दीधा॥
- १५५ समझावतां पाचूंइ बोलै, अवगुणां रो पिटारो खोलै।
बोलां रा जाब देई समझाया, दूजै दिन पांचूं ठाय आया॥
- १५६ क्षेत्र भळावो कहिजो गुरु नै सोय, मृगसिर मांहि दर्शन करां दोय।
कह्यौ पांच पद में घालसां नाम, बले आया पोहचावा ताम॥
- १५७ कह्यौ छ रात्रि बारै रह्या तसुं दंड, गुरु देसी ते लेस्यां अखंड।
गण में दोष कह्या ते अनेक, छोड़ दीधी बोलां री टेक॥
- १५८ ते बोल छोड़णा ठैहराया नाहि, गण में दंड ठैहरायो न कांड।
उळटो दंड पोतै ओढनै^३ आया, टळ आबरू अधिक गमाया॥
- १५९ समझाय साधु^४ आयो गुरु पास, समाचार सुणाया तास।
नागोर नो चोखलो गुरां भळायो, जद त्यां पाछो कहिवायो॥
- १६० मन मान्या क्षेत्रां मांहि विचरस्यां, स्वामीजी रै नामै शिष्य करस्यां।
दिख्या देइ नै संपां नहीं ताय, जद गुरु नहीं मानी वाय॥
- १६१ गण^४ में आय नव दिन घाल्यो नाम, पछै बारै नीकळिया ताम।
इण विधि इण में आवा हूवा तयारी, जब दोष न रह्या लिगारी॥
- १६२ गणपति नहीं किया अंगीकारी, जब चाल्या मूंह बिगाडी।
अपछन्दा अविनीत, टाळोकर होसी घणा फजीत॥

१. कसूमबी से निकले—जीवोजी, कपूरजी, संतोजी, छोगजी (लघु)।

२. चतुर्भुजजी और हंसराज जी को।

३. मुनि हंसराज।

४. नव दिन तक पंच पदवंदना में गुरु का नाम बोला।

ऋषि हंसराज कृत—

- १ 'टाळोकर च्यारुं हुआ गण बारो, अधिक अक्कीत बोल्यो तिवारो।
इण रा जावण रा परिणाम, जब कुकली^२ बोल्यो तिण ठाम॥
- २ गुरु सूं बोल्यो जोडी हाथ, म्हारी अरज सुणो स्वामीनाथ।
म्हारा पांना हुंता ते सार, ले गया गण सूं बार॥
- ३ आपरी आणा हूं चाहूं, म्हारा पांना लेइ नै आवूं।
कोइ समझ जाय सारो, तिण नै पिण ले आउं लारो॥
- ४ ओ तो घणो मीठो बोलै सोई, म्हारै साधु साथै मेळो कोइ।
किण रो भळो होय जावै, तो लाभ आप नै थावै॥
- ५ ओ तो केलवै कपट नै कूर, गण सूं हँवा दूर।
गुरु नै खबर नहीं छै ताम, इण रा दुष्ट घणां परिणाम॥
- ६ जब गुरु बोल्या तिण वार, म्हारै चावना नहीं लिगार।
तूं अर्ज करै बारंवार, ऋषि हंस मेळां थारी लार॥
- ७ मन में तो कपट छै भारी, इसा परिणामां सूं हुवै खुवारी।
ऋषि हंस नै खबर न काय, ओ तो इसडो करै छै अन्याय॥
- ८ मजल करि नै गया त्यां चलाय, ऋषिहंस तो आगै जाय।
भागल बैठा छै सोय देखी नै उदासी होय॥
- ९ म्हे थारो ल्याया नांय, म्हारै लारै आया छो कांय।
दूजो कुण छै थारी लार, नाम सुणनै हरष्या तिवार॥
- १० इतरै अधिक अक्कीत आय, सगळा भागल ऊभा थाय।
मन में तो सगळा हरषाय, दूजा री सरम सूं बोलणी आवै नांय॥
- ११ ऋषि हंस कहै सुविशालो, थे कांय लगावो आतमा नै काळो।
थे गुर आज्ञा सूं हुवा बारो, खोय दियो संजम भारो॥
- १२ जब औ कहै म्हारै संका पड़ी सोय, इतरा बोल कह्या ते जोय।
अगळ डगळ बोल्या तिण वार, त्यां में सुद्ध नहीं छै लिगार॥
- १३ जब म्हे कह्यो क्यांनै करो सोरो^३, थे तो हुआ गुरां रो चोरो।
थे तो बुढापै जमारो खोयो, धोलां में धूल नखोयो॥
- १४ हाजरी में ऊभा राखै महाराज, म्हानै आवै घणेरी लाज।
म्हे कह्यो सुविनीत ऊभा रहै आय, थानै लाज क्यूं आय॥

१. लय : विनय रा भाव सुण-सुण गूजै ३. हो हल्ला।

२. धूर्त।

- १५ किण रा बाप ऊपर बीजळी पड़ी हुवै सोय, बेटो पिण डर राखै जोय।
ज्यूं म्हे हुआ गण बारो, म्हे म्हां ऊपर धारां सारो॥
- १६ स्वामीजी परचो उडावै, म्हांनै दुख घणेरु थवै।
ऋषिराय तणों वरतारो, म्हेतो याद करां बारंवरो॥
- १७ ऋषि हंस कहै परचो खोटो, तिण सूं पड़ जाय जाबक तोटो।
स्वामीजी कहै सो न्याय, थे दुख वेदो थारै रोग घट मांय॥
- १८ दूजो तीजो बोल्यो तिण वारो, म्हारै बोल रो करो निरधारो।
म्हारै हीयै देवो वैसायो, मांन लेसां थारी वायो॥
- १९ पिण म्हारै रहिवा रो ठिकाणो नाहि, दुख आहार पाणी रै ताहि।
घणा भेल्लो रह्यो नहीं जाय, तिण सूं गण बारै म्हे थाय॥
- २० म्हे यांनै निषेद्या भांत-भांत, ते तो जाण रह्या जगनाथ।
अधिक अविनीत बोल्यो नाहि, निषेद्यो तो पिण गमै नाहि॥
- २१ बोलां रा दीया जाब, ते तो मान लिया सताब।
मन री तो खबर नहीं कोय, व्यवहार देख लियो सोय॥
- २२ सर्प नै दूधज पाय, तो तुरत जहर हुय जाय।
थानै स्वामीजी दीधी साता, थे तो होय गया ताता॥
- २३ अधिक अविनीत नै पूछ्यो तिवारो, थारा परिणाम कांड धारो।
जब बोल्यो पांचमां सूं प्यारो, हूंतो नहीं रहूं यांसूं न्यारो॥
- २४ लिखत कर दियो सोय, हाथ काट दिया छै जोय।
एक मास पछै च्यारूं आहारो, भोगवणा नहीं लिगारो॥
- २५ हंस कहै त्याग करता अनेक, थे तो मानो नहीं छो एक।
खोटा त्याग थे पाळो, साचा इतरा क्युंनै संभाळो॥
- २६ इम कह्यां रो जाब न आयो, मूंन झाळ रह्यो मन मांढ्यो।
विविध वैराग विविध सुबातो, कही घणी विख्यातो॥
- २७ अधिक अविनीत कहै बातां कही सांची, पिण म्हारी मति होय गइ काची।
माठी गति रो आउखो बंध्यो म्हारो, किण रो टाळ्यो न टळै लिगारो॥
- २८ म्हे कह्यो थारै साता री चावना पूरी, तो गुरु री आज्ञा पाळो रूडी।
थे शासन सन्मुख थाय, कदा नागोर री पटी देवै भलाय॥
- २९ इम सुण नै सगळा जिवारो, नेवरा खावै वारंवरो।
इण विधि निभजासां सोय, जो गुरु नी आज्ञा होय॥
- ३० म्हे छ दिन रह्या गण वारो, तिण रो प्राछित देसी सारो।
हरष धरी आदरसां, गुरु नै पाए पड़सां॥

- ३१ म्हे विचार्यो तिवारो, यांरो सुधर जाय जमारो।
कपट री खबर नहीं मोय, व्यवहार देख लियो सोय॥
- ३२ हाथ जोड़ी नै ऊभा ह्वेवो, पूर्व सांहमो मूहदो कर देवो।
मिच्छामि दुक्कड़ थारै सोय, स्वामीजी प्राछित देसी जोय॥
- ३३ म्हे कहां छा मान मोड़, वंदना गुरां नै कर जोड़।
वंदणा में घालसां नाम, म्हांरा जाण जो दृढ परिणाम॥
- ३४ ए तो बोल्या सगळा सीधा, घणा लोकां नै सायद कीधा।
म्हे विहार कीधो जिवारो, पहुंचावण आया लारो॥
- ३५ गुरां नै आय कही सर्व बात, जब आज्ञा दीधी साख्यात।
नागोर री पटी में रहीजो, चौमासो ऊतरयां दोय दर्शन कीजो॥
- ३६ यांरो निभाव करण सोइ, ए आज्ञा दीधी जोइ।
त्यानै कह्यो बे गृहस्थ जाय, कर्म उदा सूं मान्यो नांय॥
- ३७ बले निकळीया गणवारो, ओ तो हार दियो जमारो।
ओरां रो नाम लेवण लागा, हुआ व्रत विहूणा नागा॥
- ३८ कोइ आपरो टापरो देवै लगाय, ओरां री चिंता किम थाय।
यां लगायो आतमां नै काळो, यारै झूठ रौ नहीं छै टाळो॥
- ३९ डाकण नै नीला कांटा में बाळै जिवारो, जब वा करै सोर अपारो।
मोटा कुळ री रो नाम बतावै, कुलवंत सैणा^१ रै दाय न आवै॥
- ४० ज्यूं भृष्ट भागळ हुआ छै तेह, ते अवरां रो नाम लेह।
समझू तो देसी जाब, पाइसी घणा लोकां में आब॥
- ४१ इम मांहो मांहि हुइ बात, संक्षेप कही विख्यात।
ऋषि हंस उगणीसै इक्कीसै सारो, जोइयो भागल नो अधिकारी॥

ढाळ मूळ

- १६३ टाळोकर पांचूं टळ्या गण वार, उदै आया असुभ अपार।
मन चाहा देश तणी दीसै हांम, पिण पइसी विपत्ति अपूठो तांम॥
- १६४ रसतै ठाकुर नै मिल्यो एक डूंब, गुण दूहो कह्यो पग लूंब।
जोड़ो पगरखी रो ठाकुर दियो, आगै जाय डूंब चिंतवियो॥
- १६५ विण मांग्यो ए दीधो जोड़ो, मांग्यो ह्वै तो दे घालतो घोड़ो।
लारै जाय कहै पुन्यवंत छो आप, मोनै घोड़ो देवो मां बाप॥
- १६६ ठाकुर कोरडा री दीधी बे च्यार, जब चाल्यो मूंह बिगाड़।
तिम जाण्यो दीसै पहिला क्षेत्र भळाया, अबकै देसी मन चाह्या॥

१. मन्त्रवादी।

२. लय : पुन्यवन्तो जीव पाछल भव।

- १६७ आपद पडसी अपूठी आय, तिका बात सुणो चित्त ल्याय।
नवी दीक्षा आवै जिसा वाया यां बीज, तिका आगल बात कहीज॥
- १६८ त्यां थी पांचूं जणा चाल्या आघा, हुआ व्रत विहूणा नागा।
दोय सौ इकवीस ठांणा सूं तोडी, निकळिया गण छोडी॥
- १६९ तीर्थ च्यार थकी पिण तूटी, दुख वेदनी लीधी आकूटी^१।
विपत रूप कर लीधी कुहाडी, चरण रूप संपदा उखाडी॥
- १७० चरण रूप लक्ष्मी नै भगाइ, लीधी आपद नैज बुलाइ।
चरण चिन्तामणि निज कर आयो, एतो अँहलै^२ साटै गमायो॥
- १७१ गणपति ना अति अवगुण गावै, मन मानै ज्यूं गोळा चलावै।
गुरु उपगार कियो थो भारी, यां तो घाल्यो सर्व विसारी॥
- १७२ कृतघ्न कीधो उपगार न जाणै, यांनै मोह कर्म अति ताणै।
गुरु उपगार कियो अधिकाय, त्यांरी यारै न दीसै तमाय॥
- १७३ आचार्य उवज्झाया ना वैरी, अँ तो अंतरंग माँहै गैरी।
लोकां नै भर्म माँहि ए पाडै, ए तो आसता चोडै उतारै॥
- १७४ गणपति पै भणै अवगुण गावै, महा मोहणी कर्म बंधावै।
कह्यो समवायंग दशाश्रुतखंध, ते पिण जाण्यो नहीं मोह अंध॥
- १७५ समक्त्व चारित्र ना दातार, त्यांनै किम घालीजै विसार^३।
एक वचन सीखै समण महाण पास, त्यांनै वाँदै पूँजै सुविमास॥
- १७६ पंचमै ठांणै आचार्य सोध, त्यांरां अवगुण बोल्यां दुरबोध।
अपछंदा पडिया गण सूं जूआ, च्यार तीर्थ में फिट-फिट हुआ॥
- १७७ पश्चिमी थली में आया चलाय, तिहां अवगुण बोल्या अथाय।
हर कोइ मनुष्य यां पासै आवै, जब गुरु माँहि दोष बतावै॥
- १७८ निंघा तिकोइज यांरै ज्ञान, यांरै निंघा तिकोइज ध्यान।
श्रावक हुंता ते चतुर सुजाण, यांनै वंदणा छोडी खोटा जाण॥
- १७९ किण ही पूछ्यो गण में सरधो काँई, बोल्यो चरण सरधां गण माँही।
छठो गुणठाणो तो कहिता जावै, बले अवगुण पिण दरसावै॥
- १८० बारोटिया^४ जिम देश उजाडै, जाणै म्हांनै ठिकाणै बैसाडै।
तिण विधि यारै दीसै मन मांय, मन मान्यो दै देश भलाय॥
- १८१ अथवा सिंघाडो कर देवै म्हांरो, मन एहवो दीसै छै यांरो।
गुलहजारी को लेवै नाम, त्यांनै देश भलायो ताम॥

१. जाणबूझ कर।

३. विस्मृत।

२. निष्फल।

४. छापामार (घरभेदी)

- १८२ तिण सूं एहवा दीसै परिणाम, निश्चै तो ग्यानी जाणै ताम।
बिगड़ायल औ जैन रा पूरा, पड़िया च्यार तीर्थ सूं दूरा॥
- १८३ लाज सर्म त्यां अलगी मेळी, भेखधारी भागल त्यांरा बेली१।
साधां में औ बहु दोष बतावै, भेखधार्यां रै मन भावै॥
- १८४ ठंडी कीधी भेखधार्यां री छाती, औ पिण हुआ त्यांरा पखपाती।
नींव असाता वेदना री दीधी, भेखधार्यां रै खरची कीधी॥
- १८५ पिण इण खरची सूं होसी खुराब, जासी भव-भव मांहै आब।
भेखधारी तो आगैइ देता था आळ, ते झूठ रो क्यानै काढै निकाळ॥
- १८६ ओ तो सहजेइ पड़्यो झूठ पानैं, हिवै औ क्यानै राखै छानै।
भेखधार्यां रा श्रावक आवै, त्यांसूं तो घणां मिल जावै॥
- १८७ मीठै वचन करि त्यांनै बोलावै, गुरु मांहै दोष बतावै।
औ पिण यां सूं राजी होय जावै, असणादिक आछी रीत बहिरावै॥
- १८८ बले औ पिण यांनै पोगां चढावै, वास्ववार अवगुण बोलावै।
किण नै कहै म्हांमै आसी उदार, किण नै कहै आसी मुनि च्यार॥
- १८९ किण नै कहै आसी संत तेर, किण नै कहै आसी तीन फेर।
किण नै कहै आर्या रो सिंघाडो एक, म्हांरो थको छै विशेष॥
- १९० बहु विध एक करै बकरोल, मोह कर्म थी किलोल।
लोकां साधां नै कह्या आय, औ तो बोलै इण विध वाय॥
- १९१ ऋषि हरखचंद नै आसाढ मंझार, मिल्यो अधिक अविनीत तिवार॥
हरख कहै थे आ कांइ कीधी, जद यां कह्यो होणहार सीधी॥
- १९२ वीर छद्मस्थ गोसाळा नै सीस, कीधो तो म्हांरो कांइ जगीस।
म्हे तो या जांणी नहीं थी कांइ, गण बाहिर रहिसां ताहि॥
- १९३ छोगजी लारा सूं आय ले जासी, ते पिण ना या विमासी।
स्वामीजी पिण मुनि मेल्या न कोइ, घणी वाट नागोर में जोइ॥
- १९४ पछै तो घणी खंच मै जाणी, बात पड़ी पहिछाणी।
हरख कह्यो अबैइ ताय, पड़ो स्वामीजी रै पाय॥
- १९५ जद कह्यो बोल पंच चिहुं तथा दोय, छोड़्यां गण में आवणो होय।
जब हरख कह्यो बोल एक पिण ज्यांही, छूटतौ दीसै नांही॥
- १९६ कह्यो बोल छूटां विण गण मांहि, सर्वथा आवां नाहीं।
देश-देश लोकां में बात, प्रसिद्ध हुई विख्यात॥

- १९७ लोक कहै बहु दोष बताया, बोल छोड़ायां विण आया।
तिण सूं बोल छोड़्यां विणआवां सोय, आछी न लागै कोय॥
- १९८ रूप कृषि कह्यो-इसड़ो मान, न करणो साधु नै जान।
अधिक अवनीत बोल्यो जद बाणो, दाय आवै ज्युं जाणो॥
- १९९ हरख कह्यो-इसड़ो मान करीनै, क्युं हूवो खुराब टलीनै।
इण रै अशुभकर्म उदै हुआ आण, मुख सूं पिण नीसरै खोटी बाण॥
- २०० वेमुख हुवै जो एक बलाइ, ते पिण करै बिगाडो जाइ।
महे तो पंच छां इण विध आखी, मूढामूढी साधां नै भाखी॥
- २०१ दूजै अवनीत संतां नै एम, सुद्ध बात कही धर प्रेम।
गण में संत अज्जा तपसी छै, ते म्हारै शिर ऊपर सही छै॥
- २०२ थानै असाधु कहै कोइ ताय, तिण सूं चरचा करां महे जाय।
पिण करां कांइ गळा तांइ भरिया, तिण कारण महे नीसरिया॥
- २०३ संत कहे-मुख गणपति अज्जा, त्यांसूं थारै छै द्वेष अकज्जा।
जद कहै-थे तो जाणो छो जी, पाछो मुनि नै एम कह्यो जी॥
- २०४ महे तो घणोइ कह्यो दलद्रीयां नै, पश्चिम थली कांनी जावो क्यांनै।
उठी रह्या हुंता तो इति हुंती क्यांनै, कोइ जाणै न जाणतो म्हानै॥
- २०५ पहिला महे बारै नीकळ्या था ताहि, किणहि जाण्यो किणहि नांहि।
इह विध दीनपणै भाखंत, बारै टळियां रा फळ चाखंत॥
- २०६ गुरु यांरी तिथ^१ न कीधी काय, यांनै जाबक दिया छिटकाय।
देश-देश रा श्रावक जाण, यांनै जाण्या जै'र समाण॥
- २०७ चतुर विचक्षण श्रावक सोइ, यांरी अइ'न राखै कोई।
हुंती मन मांन्या क्षेत्र विचरवा री आस, ते पिण हुआ निरास॥
- २०८ जाण्यो अधिक मास हुआ दीक्षा आय, इम तीनां विचार्यो ताय।
जिम-जिम दिवस नैडा अति आवै, तिम तिम अधिक सीदावै॥
- २०९ पांचूं अविनीत चौमासे ताम, तीन^२ संत हुंता तिण गाम॥
गाउ^३ ऊपर इक सैहर उदार, तिहां चउमासै संत च्यार^४॥
- २१० जोधांणै गणपति पास तिवार, आया कागद में समाचार।
स्वामीजी म्हारो करै सिंघाड, दंड देसी ते लेसां धार॥
- २११ पूछा नों उत्तर गणपति दीधो, लिखी नै सिखायोज सीधो।
करार सिंघाड़ा रो करिनै जाण, मांहै लेवां रा पचखाण॥

१. खोज खबर।

२. इज्जत।

३. तेजपाल जी आदि जसौल में।

४. कोष।

५. मुनि हरषचंद जी आदि।

- २१२ इम लेवा री आज्ञा नाहि, बले बोल न छोड़णो कांइ।
बोल छोड़ी नै संतां नै ताहि, लेवा री आज्ञा नाहि।
- २१३ आत्म रो यारै करणो कल्याण, तो गण मांहै लैणा जाण॥
आत्म कल्याण जो करणो नाहि, तो औ जासी यांरी कमाई॥
- २१४ किण रै गरज है इम लिखि पांनै, गुरु सीखाया दिया श्रावकां नै।
ए कागद सुण नै ढीला पड़िया, मरम टळ्यां रा गळिया॥
- २१५ जद एक विनीत श्रावक नै ताहि, यां घाल्यो विष्टाळा^१ मांहि।
ते श्रावक कहै साधां पे आय, मोनै टाळोकर कही वाय॥
- २१६ बोल-चाल री तो म्हारै न कांइ, दोय^२ कहै म्हानै लेवो मांही।
नवी खेचल^३ म्हानै नहीं देवै, खातरी रा अक्षर लिखीया जिवार॥
- २१७ सिंघाडा री नै बोल री न कोय, नवी खेचल नही दै मोय।
जब सुद्ध परिणाम जाण्या तिणवार, साघां अक्षर लिखण कहिवै॥
- २१८ लिखंता बले बोल्यो करी नरमाय, इम म्हारी आळी लागै ताय।
अरज स्वामीजी सूं करनै ताय, बोल-चाल री देसी मिटाय॥
- २१९ घणी नरमाइ करिनै एहवा, अक्षर लिखीया तैहवा।
खेचल आश्री बोल ए ताम, साधां तो लिख्यो इण परिणाम॥
- २२० बोल छोड़ लेवा री आज्ञा नाहि, समाचार गुरां रा पहिलांइ।
त्यां बोलां री मानै किम संत, तिण सूं खेचल रा बोल मानंत॥
- २२१ स्वामीजी जिको देसी तिको दंड, अंगीगार म्हे करसां अखंड।
इण विध दंड धारी नै सोय, आयो पहिलो पंचमो दोय॥
- २२२ दूजी वार निकळीयां नै हुआ छमास, जद गण मांहि आया तास।
भाद्रवा विद तेरस तिथि ताहि, आया दोनूं जणा गण मांहि॥
- २२३ टोळा रा साधु साधवी सुवंस, त्यारै दंड ठैहरायो न अंस।
उळटो आपरै दंड ठैहराय, इण विध आया गण मांय॥
- २२४ ढीला ज्यांनै कह्या गण मांही, त्यारै दंड ठैहरायो न कांइ।
गण मांहि दोष कहिता था अथायो, तिण रो दंड किंचित् न ठैहरायो॥
- २२५ दोष कहिता गुरु प्रमुख मांही, तिण रो दंड ठैहरायो नाहि।
दोष कहीनै निकळीया बार, कियो दंड पोते अंगीकार॥
- २२६ बलि जो दोष कहै बीजी बार, तो औ पूरा मूढ गिंवार।
ज्यां मांहै दोष कह्या था थूल^४, तिण रो दंड न ठैहरायो मूळ॥

१. प्रपंच

३. तकलीफ।

२. चतुर्भुज जी छोगजी (लघु)

४. बड़े-बड़े।

- २२७ ज्यां मांहि दोष कह्या था अनेक, त्यांरै दंड न ठैहरायो एक।
ज्यां मांहि दोष कह्या भारी, त्यांरै न ठैहरायो दंड लिगारी॥
- २२८ अवगुण ज्यांमै कहिता दिन रात, त्यांरै दंड री न कीथी बात।
दोय रात्रि रहीं पंचमो अवनीत, साधां ने बोल्यो इण रीत॥
- २२९ म्हांरै जूं न्हांखवा री श्रद्धा सोय, इम कही निकळियो जोय।
जावा लागा दूजा चौथा मांहि, त्यां तिण लीधो नाहि॥
- २३० पछै बे कोश गाम जइ पाछो आयो, पांणी लीला री अजयणा अथायो।
पछै जूं न्हांखवा रो दोष कही नै, गण में आयो एक रात्रि रहींनै॥
- २३१ हिवै तीजा अवनीत री बात, सांभळजो अवदात।
सवा छ मास नीकळिया वार, जद मन में कियो विचार॥
- २३२ अधिक दिवस थयां सुं अवधार, देवैला नवो चरण उदार।
वंदणा में नाम घाल करूं साखी, ज्यूं रहै इसी विधनाकी॥
- २३३ तेजसी नै साखी करि कहै आम, हूं घालूं वंदना में नाम।
आचार्य चौमासो तिण दिशि लीनी, तिकखुतो गुण वंदना कीनी॥
- २३४ पंचम पद में घालेसुं नाम, ते पिण थांरी साख छै ताम।
इण विध प्रतीत पूरी उपजाइ, ते छानी न राखी काइ॥
- २३५ संवत्सरी ना दिन नीं ए बात, हिवै आगै सुणो अवदात।
गाउं सैहर तिहां चौमासै संत, एक गृहस्थ आवी भाखंत॥
- २३६ तीजा अविनीत तणा समाचार, ते सांभळजो विस्तार।
त्यां कह्यो पांच बोल करो अंगीकार, तो हूं गण में आवूं इण वार॥
- २३७ १. मोनै तप देवै पिण छेद न देवै, २. म्हांरा पोथी पांना नहीं लेवै।
२. स्वामीजी भेल्लो बहु साधां मांहि, बे निशि थि अधिक राखै नाहि॥
- २३८ ४. आगै बगसीस ज्यूं री ज्यूं राखै, कांम बेज प्रमुख री न आखै।
५. मांहि लेइ नै न छोडै मोय, तो हूं गण में आवूं सोय॥
- २३९ तिण गृहस्थ नै साधां कही बात, छेद तप तो स्वामीजी रै हाथ।
दोय रात्रि उपरंत री ताणै, ते पिण स्वामीजी जाणै॥
- २४० दोष विना तोनै छोडै नांय, बोल बीजां री अरज कराय।
इण विधि गण में आवा री धारी, दोष री नहीं रही लिगारी॥
- २४१ अधिक अवनीत पंचमो^२ जाण, हिवै तास वृतांत पिछांण।
छमास बारै रही गण मांहि आया, त्यांरा घट मांहि अधिकी माया॥

१. गव्युति-दो कोश।

२. छोगाजी (लघु)

- २४२ गण में बे मास रही नै ताम, बले करै उदंगळ आम।
दूजै गाम जइ इक साधु^१ फटाय, चौमासा में ले आयो ताय॥
- २४३ इण विध चौड़े पाइयो तिण धाड़ो, ते पिण बाजार मझारो।
ते पिण धाड़ो चौमासा मांझो, बीजा गाम थकी ले आयो॥
- २४४ साधां जाण्यो ऐ दगादार पूरा, जद कर दिया गण थी दूरा।
बहु विध कपट कियो गण मांहि, घणां लोकां जाणै लिया ताहि॥
- २४५ बीजो, तीजो चौथो तीनूं भेळा था दूठो^२, आहार पाणी तीजा^३ सूं तूटो।
धुर पंचम छठो यां तीनां सूं ताय, तीजो अविनीत मिलियो आय॥
- २४६ छठो गुणठाणो फिरियो सरधीयो, तिणसूं आहार पाणी किम कीयो।
ए पिण विकळां रै नहीं छै विचार, कियो आंख मींचनै अंधार॥
- २४७ छठो गुणठाणों तो फिर गयो पहिला, दीक्षा विण कियो संभोग बहिला।
रखे अधिक दिवस थयां छठो फिर जाय, तिण भय सूं पोतै आया मांय॥
- २४८ दोनूं तीजा अविनीत सूं संभोग कीधो, पिण नवो चारित्र नहीं दीधो।
दीक्षा दियां विण कियो संभोग, तिण सूं लागो जोग नै रोग॥
- २४९ तो ए छठो फिरियो तिण सूं संभोग करता, मन मांहै मूळ न डरता।
गण में आया पछै दोनूं नै आम, कोइ पूछां करै तिण ठाम॥
- २५० थया तीनां नै साढा छ मास उपरंत, थामै चरण पावै कै न हुंत।
जद तो कहै छठो नहीं पाय, तो टळियां पछै किम थाय॥
- २५१ गण में थकां रो श्रध्दो छठो फिरियो, तठा पछै नवो न उच्चरियो।
त्यानै गृहस्थ सरीखा जाण्या भेषधार, तिण सूं दीक्षा विण किम कियो
आहार॥
- २५२ गण में थकां री श्रद्धा जाणै साची, जद तो भेळा थया मत काची।
कै असाधु श्रध्दया ते श्रद्धा जाणो, झूठी, तो थानै दीक्षा आवै अपूठी॥
- २५३ रह्या साढा छमास थकी अधिक बार, तिण में चरण सरधो इह वार।
तो बे मास तांइ न सरध्दो चरित्त, इण लेखै थारै आयो मिच्छत्त॥
- २५४ थारै लेखै साधु न सरध्दो असाध, थारै लेखै सम्यक्त्व विराध।
कुदेव नै देव सरधै बे मास, नवो चरण आवै तास॥
- २५५ सरधै अजीव नै जीव बे मास, नवो चरण आवै तास।
सरधै अधर्म नै धर्म बे मास, नवो चरण आवै तास॥

१. कस्तूरजी को हरषचंद जी स्वामी के पास लाया गया।

२. दुष्ट

३. कपूरजी से।

- २५६ थारै लेखै साधु नै असाध बे मास, सरध्यां नवो चरण आवै तास।
गण नीं श्रद्धा नै खोटी कह्यां ताय, थानै नवो चरण इम आय॥
- २५७ जो गण में छतां री श्रद्धा सुद्ध कैहणी, तो नवी दिख्या त्यानै देणी।
रह्या साढा छ मास उपरंत, त्यां नै नवी दिख्या आवंत॥
- २५८ ए सुध श्रद्धा जाणो सूत्र न्याय, तो नवी दिख्या यानै आय।
ए श्रद्धा सुद्ध तो संभोग न करणो, असुद्ध जाणो तो थानै उचरणो॥
- २५९ थे नवी दिख्या यानै नहीं दीधी, तथा पोतै पिण नवीं न लीधी।
थे बहुविध न्याय निरणो नवी धार्यो, संभोग कियो अविचार्यो॥
- २६० यां सूं नवी दिख्या विण संभोग कीधो, जग माहै अपजश लीधो।
छठो^१ अविनीत रही दिन दोय, जिहां हुंतो तिहां आयो सोय॥
- २६१ दंड ओढ आयो गण मांहि, त्यांरा समाचार कह्या ताहि।
जूं न्हाखवा री श्रद्धा छै यारै, घणो ढीलापणो छै तीनां रै॥
- २६२ पछै हूं गयो बीजा^२ चोथा^३ रै ठिकाण, त्यां मुझनै कही इम वाण।
थे कांइ कीधो ए भागल भृष्टी, महा कपटी अन्याइ दुष्टी॥
- २६३ ऊतो शसण मोटो छै तसु छोडी, क्यूं आयो भागला में दोडी।
जूं न्हाखवा री श्रद्धा छै यां रै, महा दगादार कपट्यां रै॥
- २६४ जूंआं न्हाखै जिण नै म्हे कह्यां ताय, मांस गाय नो खाय।
इण विध यांसूं कहिणी आवै नांहि, तिण सूं क्यूं रहै तूं यां मांहि॥
- २६५ यां तो चउरासी बोल पसूपा दोष, पाछा सेळभेळ किया फोक।
त्यां मांहिला बोल घणां सेवै एह, त्यां में दोष पिण नहीं सरधेह॥
- २६६ कैतो रहिणो उण शासण मांय, कै म्हारै सैमल होय जाय।
कच्छ गुजरात में एकांत जाय, सारां आत्म कारज ताय॥
- २६७ इत्यादिक कही बहु विध वाय, जिण सूं पाछो आयो गण मांय।
हिवै अधिक अविनीत तीजो पंचम जाण, औ तीनूंइ भेळा पिछाण॥
- २६८ दूजो अविनीत नै चोथो बे भेळा, जुओ-जुओ संभोग न मेला।
तीजो अविनीत हरष ऋषि पास, काती सुदि चोथ कह्यो तास॥
- २६९ पंचपदां में घाल्यो नाम, दिवस घणै अभिराम।
घालसूं नाम बले हूं सदाई, प्रतीत हरष नै उपाई॥
- २७० बोल-चाल रो तो रह्यो नहीं कोय, थारै ज्यूं म्हारैइ होय।
ऋषि ज्ञान भणी कहै गुरु छै थारै, ते पिण गुरु छै म्हारै॥

१. कस्तूर जी वापस गण में आ गए। ३. संतोजी।

२. जीवोजी।

- २७१ मृगसिर विद नवमी^१ तेजसी नै कही छै, सर्व साबत बात सही छै।
चौमासो उतरखां मुनि राया, गुरु रा दर्शन करिवा आया॥
- २७२ छठो अविनीत कहै गुरु आगै, सांभळजो अनुरागै।
हुं बे दिन त्यां रही गण मांहि आयो, घणी ढीलाइ देखी त्यां मांह्यो॥
- २७३ विविध बेरीत जाण्यो त्यांरो ठागो, तिण सूं पाछो पगं आय लागो।
काती सुदि ग्यारस नदी रै मांह्यो, तिहां नाम चर्चा रै ते आयो॥
- २७४ मोनै कह्यो थे मांनो म्हारी बात, नहीं तो मरसूं करी अपघात।
नांगळो लेइ नै पासो लीधो, मुझ देखतां प्रगट प्रसीधो॥
- २७५ नांगळो लेइ नै तिरछो नडीयो, पछै दाढ देइ अडवडीयो।
जद दया आइ म्हारै मन मांह्यो, वचन दियो जावा रो ताह्यो॥
- २७६ छठै कही ए अधिक अविनीत री बात, ओछी अधिकी जाणै जगनाथ।
म्हारै पिण बैहम पड़चो मन मांय, तिण सूं चित्त विभ्रम अथाय॥
- २७७ पिण तीनूं में जावा रा पचखांण, दूजा चौथा में जासूं जाण।
कदा ए फेर दीक्षा लेवै जाण, तो पिण यांमै जावा रा पचखांण।
- २७८ बले क्षेत्र में रहिवा तणा नेम, उतरती पिण करवा रा एम॥
आचार्य रै मूंहडै ए जाण, किया जावजीव पचखांण।
- २७९ गुरु कह्यो त्यांग भांगै ए सोय, तो भव-भव रक्तपीती होय।
पछै गुरु नै बांदी नै गण सूं निकळियो, विचै अधिक अविनीतज मिलियो॥
- २८० तिण लेवा रा किया अनेक उपाय, दिन इक निशि खप करी ताय।
तिण रै तो सैमल हुआ नांय, मिलियो दूजो चौथा सुं जाय॥
- २८१ अधिक अविनीत पूठा थी ध्यायो, ते तीनं कनै चल आयो।
त्यां भेळो थावा रो उपायज कीधो, पिण त्यां तिण नै मांहि न लीधो।
- २८२ दूजो चौथो छठो विहार करीनै, गया कोश अनेक चली नै।
'धुर तीजो पंचम'^२ तिण वेलो, आहार पाणी तीनं रै भेळो॥
- २८३ तीनूंइ गुरु दिश कियो विहार, गण में आवा री धार।
इह अवसर गणपति रै पायो, ओ तो 'बाव' थकी चल आयो॥
- २८४ मूलजी कछी कुलंबी जाण, मुनि वेस श्रावक पहिछाण।
गुरु रो दर्शन करि बोल्यो ताम, आयो आपरा दर्शन काम॥
- २८५ बिच मांहि मिलिया तीन अविनीत, महांसूं बांधी अधिक प्रीत।
मोनै दिख्या देवा उपदेश दीधो, कहै कार्य हिव तुम सीधो॥

१. कार्तिक विद नवमी होनी चाहिए।

२. चतुर्भुजजी, कपूरजी छोगजी, (लघु)।

- २८६ आपरा अवगुण बोळ्या अनेक, पूरा कहिणी न आवै विशेष।
पोल घणी जाणै निज मांय, तिण सूं हाजरी नित्य लिखाय॥
- २८७ साधा नै ऊभा राखै मुख आगै, इम लोकां में आछी न लागै।
साध-साधवी घणां रहै भेळा, निज कीर्ति काज स मेळा॥
- २८८ म्हांनै न्यारा विचरावै नांहि, बहु दोष अछै गण मांहि।
तिण कारण गण सूं निकळिया, विहार में विण पूछ्यां टळीया॥
- २८९ जद म्हे कढ्यो दोष जाणो इण मांहि, तो चरचा करवी स्वामीजी सूं त्यांहि।
पिण छांना मांना भागवो नहीं भोर, छानै भागतां येईज चोर॥
- २९० जिनमत में भागवो नहीं छांनै, चोड़े पूछवा बोल गुरां नै।
जद कहै बोल म्हे पूछां जिवारै, म्हांनै बोलवा न दै तिवारै॥
- २९१ गळो ग्रहै हाजरी रै मांहै, म्हांनै ऊभा करदै ताहै।
करै फजीत लोकां रै मांहि, तिण सूं डरता पूछी सकां नाहि॥
- २९२ पूर्व भव में स्वामीजी आप, कोइ तापस था महा ताप।
साधां ऊपर तो दया नहीं आलै, ऊभा कर देवै तड़कै उन्हाळै॥
- २९६ अज्जा नै तो खमा-खमा कहै छै, त्यांरा कैहणा में आप रहै छै।
बले कढ्यो स्वामीजी तो परमांधामी छै, सांधा ऊपर दया नहीं छै॥
- २९४ तीजै अवनीत कढ्यो बले एम, ऋषिराय वरतारै खेम।
जुदा-जुदा लेइ नै सिंघाड, विचरता हुंता अणगार॥
- २९५ पचपदरा जिसा क्षेत्रां में तास, करता दोय ठाणां चउमास।
तिहां बैठा सीखावां म्हे बायां भाया नै, ए बात म्हारै मन मांनै॥
- २९६ बले मन मान्य विचरता खेत्त, बाई भाई सेवा करता तेथ।
आगै अम्हे एहवी औसां करता, अब तो रहां छां डरता॥
- २९७ साधां रा तो भांग न्हाख्या सिंघाडा, किम विचरै हूंस कर न्यारा।
इत्यादिक अवगुण बोळ्या अनेक, जद म्हे कढ्यो आण विवेक॥
- २९८ दशा रै साल हूं आयो मेवाड़, जद थे अवगुण बोळ्या अपार।
म्हारै पिण कर्म बंधाव्या अपारी, ते हूं याद करूं वारूंवारी॥
- २९९ तें दिन थी तुम्हणै हूं सोय, साधू न सरधूं कोय।
स्वामीजी नै सुद्ध साधू जाणूं, थारी प्रतीत न आणूं॥
- ३०० पछै कमर बांध हूं आवण लागो, मोनै लेग्यो दुकान में आघो।
अधिक अविनीत कढ्यो मुख आगै, तुम्हे जावो सो आछी न लागै॥

- ३०१ तुम्हे आधारभूत छो अम्ह नै, कह्यो करी सजल लोचन नै।
कह्या नरम रूप वच सरागकारी, पिण म्हे तो न मान्या लिंगारी॥
- ३०२ गण मांहि आवा तणी हूस राखै, बले अवगुण इण विध आखै।
त्यानै विवेक रा विकळ कहीजै, त्यांरा कार्य किण विध सीझै॥
- ३०३ गुरु रा दर्शण करवा श्रावक एक, आय कह्या सुगुरु नै विशेष।
हूं आवतो दर्शन करिवा काम, तीजै अविनीत मुझ कह्यो ताम॥
- ३०४ बोल चाल री तो म्हारै न कांय, म्हे पिण पगां पडां छां जाय।
गण मांहे दोष जाणै ए ताय, तो इम कहि किम मांहि आय॥
- ३०५ जद दिख्या दियां विण लेवा रा त्याग, जय गणि कीधा सुद्ध माग।
तीनूंइ गणपति ना समाचारो, सांभळिया तिण वारो॥
- ३०६ दिख्या दियां विण पांचां नै जाण, मांहि लेवा रा पचखांण।
छठा नै काळ थोडो थयो जास, तिण सूं मिलियां पडै ठीक तास॥
- ३०७ ए त्याग सुणी थया अधिक उदास, त्यांरा मन री न पूगी आस।
तिण सैहर थकीं इक बाई आई, तिण गणपति नै बात सुणाई॥
- ३०८ कह्यो तीजा अविनीत तणो अवदात, मोनै मिलियां कही तिण बात।
आप त्याग किया ते सांभळ कान, मोनै इण विध बोल्या बान॥
- ३०९ देखो अमकडिया री माजी स्वामीजी, 'दीक्षा दियां विण आखडी' लीजी।
म्हे तो गण में आवा री धारी, देखो स्वामीजी कांय विचारी॥
- ३१० इतला दिन रह्या इण गाम, गण में आवा रै काम।
देखो अमकडिया री माजी प्रसीधो, म्हे तो बालपणै चरण लीधो॥
- ३११ वर्ष इता चरण पाळ्यो ताह्यो, म्हांसूं नवो लियो किम जायो।
एक घडी तांइ ऊभा दिख्यात, बाई कह्यो म्हांसूं करी बात॥
- ३१२ पचपदरै पोस विद मांय, तीनूंइ तिहां आया चलाय।
जय गणपति रै पास जिवार, आयो तीजो अविनीत तिवार॥
- ३१३ सन्मुख वंदना कीधी जोडी हाथ, घणां देखतां प्रगट विख्यात।
म्हे तो वंदना रो संभोग कीधो, घणा दिवस तांइ नाम लीधो॥
- ३१४ सुणियो दिख्या विण नहीं लै मांहि, तठा पछै वंदना छोडी ताहि।
म्हांनै नवी दिख्या आवै किण न्याय, हिवै जय गणपति कहै वाय॥
- ३१५ गृहस्थ पिण वंदना में घाले छै नाम, कारण वनणा रो नहीं ताम।
चउमासा मांहि मुनि था त्यांसूं, संभोग न कीधो ज्यांसूं॥

- ३१६ साढा छ मासे नाया गण मांय, नवी दीक्षा आवै इण न्याय।
बोल्यो—आपनै भ्यासै तिको करो सोय, न करूं आप सूं चरचा कोय॥
- ३१७ बले कहै हूंतो छूं कीड़ी समान, आप हाथी समान सुजान।
जय कहै—सम्यक्त्व राखजो सोइ, बोल्यो सम्यक्त्व चारित्र दोइ॥
- ३१८ जय कहै—चरण सरथै आप मांहि, तो सम्यक्त्व पिण रहै नांहि।
जद कहै—कदै मार्ग रहै नांहि, नीकळ्यां चरण किम न कहाइ॥
- ३१९ जय कहै—नीकळ्यां में चरण कहीजै, तो पाछलां नै स्यूं सरथीजै।
इम कहां पाछो जाब न आयो, पछै आयो जिण दिशि जायो॥
- ३२० पहलै दिन सिरदारांजी पूछ्यो ताहि, म्हांनै साधु सरथो कै नांहि।
दिख्या विण न ल्यां म्हारै ए मर्याद, जद कहै हूं तो सरथूं साध॥
- ३२१ किण ही नै कही दीसै छै बात, तिण आय पूछी साख्यात।
यां वंदणा मांहे नाम घाल्यो हुलासी, ते वंदणा यांरी यूं ही जासी॥
- ३२२ जय गणि कहै—यूंही किम जाय, तिण री हुई निर्जरा ताय।
अधिक अविनीत सिरदारांजी पाय, बोल्यो इह विध वाय॥
- ३२३ इतरा दिवस रह्या उण ग्राम, ते मांहि आवण रै काम।
गणपति नांहि किया अंगीकार, जद कर गया तीनूं विहार॥
- ३२४ हिदै बार^१ अधिक अविनीत, बेहुंनै मेल गयो अनीत।
त्यां तीनां कनै जावा भणी प्रसीधो, अनेक कोसां रो पैडो कीधो॥
- ३२५ त्यां तो तिण नै आदरिया नांय, जद छठा नै लेग्यो फटाय।
धुर अविनीत गयो तिहां थि आघो, घणा लोकां जाण लियो ठागो॥
- ३२६ हिदै तीजो^२ पांचमो^३ बलि गणि पै आय, मांहि आवा करी नरमाय।
महा विद बारस तिथि वदीत, गुरु नै मिलियो तीजो अविनीत॥
- ३२७ लोकां सुणतां—कहै ए गुरु म्हांरा, म्हे चेलां छा यांरा।
जय कहै—गुरु तो कहै छै साख्यात, तो क्यूं न करै ऊंचो हाथ॥
- ३२८ बोल्यो आहार पांणी रो संभोग न कांइ, तिण सूं वंदणा करां म्हे नांहि।
जो करै आहार नो संभोग उदार, तो म्हे वंदणा करां इह वार॥
- ३२९ जय कहै—पहिला वंदणा कीधी जोग, जद पिण न हुंतो संभोग।
वंदणा तिहां कीधी धर प्रेम, तो इहां करै नहीं केम॥
- ३३० कोइ कहै—म्हारी माता बांझ तेम, गुरु कही न वादै ते एम।
लोक कहै ए तो ओळंभो साचो, खराखरी ए जाचो॥

१. अलग। ३. छोगजी (लघु)

२. कपूरजी।

- ३३१ पंचम^१ अविनीत गुरु पै आय, गण में आवा रा किया उपाय।
गुरु कहै दिख्या दीया विण सोय, म्हे तो मांहे न ल्यां कोय॥
- ३३२ कहै आप दिख्या विण त्यागज लीधा, पिण सरूपचंदजी न कीधा।
जय कहै—सर्व साधां रै नेम, दिख्या विण लै केम॥
- ३३३ महा सुदि नवमी तांइ सुविशेष, इम बातां हुइ अनेक।
इण विध गण में आवण आघा, बले दोष बतावण लागा॥
- ३३४ साढा इग्यारै मास लग ताहि, चारित्र सरध्यो गण मांहि।
तठा पछै तो जाणे सर्व ज्ञानी, पिण ए तो प्रत्यक्ष पिछांनी॥
- ३३५ अधिक अविनीत रै संभोग यां सूं, तिण सूं श्रद्धा जूदी की त्यां सूं।
गणपति हाजरी लिखत सुणाया, ज्यांरा हाथ रा अक्षर दिखाया॥
- ३३६ घणां गांमा में वंदणा रा त्याग कराया, ते सुण नै द्वेष भराया।
लोक पूछ्यां बोलै आळ पंपाळ, झूठा देवै बहु विधि आल॥
- ३३७ साधां में दोष कहे अविवेक, त्यारै कर्म तणी काळी रेख।
साधां में दोष बतावै मूढ, ते कर रह्या कूडी रूढ॥
- ३३८ साधां में अणहुंता दोष बतावै, ते तो गाळां रा गोळा चलावै।
किण नै कहै अक्षर कीधा, ते डरता थका लिख दीधा॥
- ३३९ कोरडां नी मार मतो घालै तेम, म्हे पिण अक्षर किया छै एम।
किण नै कहै भिक्षु स्वाम निकळीया, तिम म्हे पिण यांसूं टळिया॥
- ३४० किण नै कहै ए ढीळा चालै, दोष सेवतां नै कुण पालै।
किण नै कहै सेलक नै ढीळो जाणी नै, चेला गया छोडी नै॥
- ३४१ किण ही पूछ्यो छानै क्यूं नीसरीया, पूछी नै नहीं टळिया।
जाब करवा री आसंग न कांय, तिण सूं छानै नीसरिया ताय॥
- ३४२ किण नै कहै चेला री प्रतीत न गुरु नै, ज्यूं गुरु री प्रतीत न शिख नै।
किण नै कहै मोटा भांडा छोट न लागै, इम दृष्टान्त दै लोकां आगै॥
- ३४३ किण नै कहै पडै किण वेळा कोपरियो^२, कदे राय^३ पडै कदे सडीयो।
इम पड़तां-पड़तां पड़ जाय बघारा, इम जाण नै हुय गया न्यारा॥
- ३४४ तिण नै बुद्धिवंत ह्वै ते पाछो कहै एम, दोष जाण्या पछै रह्या केम।
एक दोष सूं बीजो भेलो करै ताही, लिखत पचासै कह्यो अन्याई॥
- ३४५ किणनै कहै दोष जाणै रह्या क्यांनै, दोष जाण्यां पछै छोड्या यानै।
इण विधि झूठ बोलै जाण-जाण, तिण रो नहीं कटैई प्रमाण॥

१. छोगजी (लघु)

३. तरेड़।

२. पत्थर का टुकड़ा।

- ३४६ दंड लेई मांहि आवण साजै, बलि दोष कहिता नहीं लाजै।
दंड लेई मांहि आवण बैठा, बलि दोष बतावै धेटा॥
- ३४७ दंड लेई मांहि आवा री हाम, हिवै दोष कहै किण काम।
दंड लेई मांहि आवा नै त्यारी, बलि दोष कहै छै गिंवारी॥
- ३४८ दंड लेई मांहि आवण पूरा, बले दोष कहै छै कूडा।
दंड लेई मांहि आवत तूठा, बले दोष बतावै झूठा॥
- ३४९ दंड लेई मांहि आवै जाणी, बलि दोष कहै छै अनाणी।
दीक्षा विण और दंड जो देवै, जब तो गण में आवी लेवै॥
- ३५० दीक्षा लेवा रा नहीं परिणाम, तिण सूं बोलै बहु विधि ताम।
'दीक्षा विण त्याग कीया' सहु जानै, ते प्रगट पिण नहीं छानै॥
- ३५१ 'लहुडा' रै पगै पड़णो काठो कांम, तिण सूं दोष तणो लेवै नाम।
ओ पिण झूठ बोलै साख्यात, घणां वर्सा री कहै छै बात॥
- ३५२ दोष जाणै तो वंदणा में नाम, क्यूं घाल्यो घणां दिन ताम।
वंदणा तणो म्हे कीधो संभोग, संवच्छरी सुभ जोग॥
- ३५३ पछै दोष री बात रही क्यूंही, झूठा दोष बतावै यूंही।
किण ही पूछ्यो थे दोष कहो गण मांहि, थे पिण सेव्यो घणां वर्स ताई॥
- ३५४ घणा वर्स रह्या असाधां मांय, तिण सूं नवी दीक्षा त्यां नै आय।
जद कहै नवी दीक्षा नावै म्हांनै, दोष जाण्या पछै यांनै॥
- ३५५ दोष न जाण्या म्हांरो न यांरो, न गयो साधुपणो सगळां रो।
त्यांनै कहिणो थो इता वर्स तांइ, दोष न जाण्या कांइ॥
- ३५६ तिण सूं थारो थे साधुपणो थापो, यांरो थे कांय उथापो।
ए पिण दोष हिवड़ा जाणै नांय, तो यांरो संजम किम जाय॥
- ३५७ घणा वर्सा रो चरण इम थारो, तो इमहिज चरण इणां रो।
इतरा वर्सा रो संजम गयो नांहि, निर्दोष जाण सेव्या ताहि॥
- ३५८ हिवड़ां पिण बोल तेहिज छै तेम, यांरो चारित्र जावै केम।
बोल आगै हुंता हिवड़ां तेहीज, तो चारित्र किम न कहीज॥
- ३५९ न्याय दृष्टि करि मन में विचारो, म करो आंख मीच नै अंधारो।
घणा वर्सा रो चरण पोता में सरधै, कहै प्रगट पिण नहीं पडदै॥
- ३६० इतरा वर्सा रो चरण गण में पिण थापै, तो हिवड़ां कांय उथापै।
इतरा वर्सा रो चारित्र यांरो न थारो, दोष सेव्यां तो न गयो किणां रो॥

- ३६१ थे गण में थकां निर्दोष जानंता, जद टाळोकर दोष कहंता।
पिण थे निर्दोष जाणी सेव्या जब ही, तिणसूं तिको संजम सरधो अबही॥
- ३६२ ज्यूं हिवडां संत दोष न जाणै, थां सरीखा टाळोकर ताणै।
पिण संत निर्दोष जाणी नै सेवै, तिणसूं त्यां में दोष कुण कहेवै॥
- ३६३ तेह टाळोकर दोष कह्यां थी, थांरो संजम न गयो सेव्यां थी।
ज्यूं हिवडां टाळोकर दोष बतावै, तो म्हारो संजम किम जावै॥
- ३६४ गया काळ रा टाळोकर जेह, वर्त्तमान रा छेंह।
दोनूं टाळोकर सरध्यां में तत्थ, थारो सरधो गया काळ रो चारित्त॥
- ३६५ तिमहिज हिवडां वर्त्तमान काळ, म्हे सेवां निर्दोषण न्हाल।
थे दोनूं टाळोकर दोष बतायो, तो म्हारो चारित्र किम जायो॥
- ३६६ बोल थाप गण में गयै काळ, त्यांरो चारित्र सरधो विशाल।
हिवडां ते ही बोल थाप पिण तेह, तेहिज संत गुणगेह॥
- ३६७ बोल थाप हिवडां पिण थाय, हिवडा नहीं सरध्यां पहिलाइ।
चरण पहिला तिको हिवडां पिण थाय, हिवडा नहीं सरध्यां पहिलाइ नांय॥
- ३६८ निर्जरा हेटै छोडै जे बोल, पिण जाणै निर्दोष अमोळ।
दोष न जाण्या बोल छै तेहवो, छोड्यो पिण नहीं छोड्या या जेहवो॥
- ३६९ स्वाम भिक्षु पिण इम कही बात, लिखत-पैताळीसै अवदात।
सरधा आचार कल्प रो बोल, तथा सूत्र नो बोल अमोल॥
- ३७० गुरु तथा भणणहार कहै जाण, करवो तिमज साधु नै प्रमाण।
नहीं वैसे तो केवळियां नै भळायो, पैताळीसै भिक्षु फुरमायो॥
- ३७१ ए वचन धार्यां सम्यक्त्व नै नहीं जोखो, ज्यूं पांमै अविचल मोक्षो।
ए भिक्षु वच अंगीकार करीजै, मन नी ले'र मेटीजै॥
- ३७२ पंच ववहार भगवती मझार, बले ठाणांग नै ववहार।
जीत ववहार पंचमो दाख्यो, तिण सूं वीर आराधक भाख्यो॥
- ३७३ आख्यो आचारंग मांहि जिनेश, पंचमध्येन रै पंचमुदेश।
सम्यक सुद्ध जाणी मुनि सैवै, जिन असम पिण सम कहिवै॥
- ३७४ तेरै अंतर कह्या भगवती मांय, संका राख्यां मिथ्यात वेदाय।
श्री जिन भाखै ते सत्य निसंक, इम धारी तजै मन बंक॥
- ३७५ तास आज्ञा नो आराधक कहीजै, ए वचन अंगीकृत कीजै।
तथा बले आचारंग कह्यो जिनेस, पंचमध्येन रै चउथै उद्देश॥
- ३७६ तदिद्वीए-आचार्य नी दृष्टि देखी, प्रवर्तै सुविनीत विशेखी।
तम्मुत्तिए-आचार्य नै अभिप्राय, तन्मय पणै रहै ताय॥

- ३७७ तस्सन्नी-गणपति जाणै ते ज्ञान, तिमहि जाणै सुजान।
तप्पुरक्कारे-गणप्रति नै जाण, करै सहु कार्य में अगवाण॥
- ३७८ इहां कब्बो जाण पणो गुरु नो होय, तिम पोतै जाणवूं सोय।
कार्य सर्व मांहि अगवाण, करै आचार्य नै सुजाण॥
- ३७९ ए वचन देखतां जिनेश्वर आप, करी आचार्य नी थाप।
बुद्धिवंत विनयवंत मिलि जेह, गुरु थापै ते अंगीकरेह॥
- ३८० गण मांहि सेव्या सतरा वर्स बोल, थारो न गयो चरण अमोळ।
ज्यूं म्हे पिण हिवडां निर्दोषजानंता, म्हांमै दोष क्यूं ताणंता॥
- ३८१ जब कहै म्हे दोष जाणा तिण लेखै, थामै दोष सरधां सुविशेखै।
थे निर्दोष जाणी सोय, पिण म्हारै लेखै दोष होय॥
- ३८२ तिण नै कहिणो थे सेव्यो इता वर्स तांइ, थारै लेखै दोष थां मांही।
थानै इतरा वर्सा रो दोष न लागै, निर्दोष जाण सेव्या सागै॥
- ३८३ म्हे पिण निर्दोष जाण ए बोल, तो म्हारो चरण अमोल।
थारो गयो काळ म्हारो वर्त्तमान, ए दोनूं सरीखा पिछान॥
- ३८४ गया काल रो साधुपणो थारो, ज्यूं वर्त्तमान रो म्हारो।
ज्यूं थे पिण महोच्छवादिक करता, तिण में टाळोकर दोष कहंता॥
- ३८५ पिण थे दोष जाण न सेव्यो कोय, तिण सूं दोष न सरधो सोय॥
ज्यूं थे पिण हिवडां दोष कहे, पिण म्हांनै दोष न भ्यासेह॥
- ३८६ थारै गया काळ रा टालोकर तेह, ज्यूं हिवडा टाळोकर थेह।
ते पिण कहिता छोड्या म्हे ढीळां नै, ज्यूं थे पिण कहो छोड्या थानै॥
- ३८७ ते पिण कहिता आगी नो चिमतकार, ज्यूं थे पिण कहो इणवार।
ते पिण कहिता साधां में दोष, ज्यूं थे पिण कहो छो फोक॥
- ३८८ ते पिण गण नीं निंदा अति करता, थे पिण इम पिंड भरता।
क्षेत्रे रहिता तेपिण नाणंता संक, थामै पिण योहिज वंक॥
- ३८९ त्यां पिण लिखत सूस दीया भांग, थारो पिण ओहिज सांग।
उणां री थारी सरीखी बात, ते प्रगट दीसै विख्यात॥
- ३९० ते बिखर गया मूआ भूंडी रीत, ज्यूं थे पिण होसो फजीत।
एक भाई साधां नै कब्बो एम, म्हे समझाया धर प्रेम॥
- ३९१ दांत सोभै छै मूंहडा रै मांय, पिण बारै पड्या न सोभाय।
जद कहै ओर भारी दंड दीजै, पिण नवी दीक्षा किम लीजै॥
- ३९२ किणनै कहै अवरां नै तो अै घेरै, तिण चेलां नै क्यूं न अवैरै।
एक श्रावक कब्बो साधां नै आय, तीजा अविनीत री वाय॥

- ३९३ इण विधि मोनै कह्यो त्यां जाण, पाट विराजत पांण।
दोनूं भायां चिंतव्यो मन मांहि, भोमियापणो राखणो नांहि॥
- ३९४ पोथी पांना संत नै अज्जा, सहु गणपति ना छै सकज्जा।
संत सत्यां कन्है राखण नांही, तिण सूं ममत भाव न बंधाई॥
- ३९५ हाकम नी परै राखण हेर, रहै संत सती इम जेर।
तो गुरु कहै जठै करै चउमास, बले शेष काळ सुविमास॥
- ३९६ चौमासो उतरियां पछै तेह, वैगा दर्शण करै जेह।
तिण कारण पोथी पांना मुनि अज्जा, ले लीया सर्व सकज्जा॥
- ३९७ ए तो माल छै सहु गणपति रो, और नहीं छै किण रो।
मुरजी आवै तो म्हेलै चउमासो, मुरजी विण न फळै आसो॥
- ३९८ भरती मांहि पडिया रहे एम, जोर न लागै तेम।
बडो बहु भणियो-गुणियो होय, तिण नै छोटा लारै म्हेलै सोय॥
- ३९९ ते पिण मुरजी हुवै तो म्हेलीजै, मुरजी विण कार्य न सीझै।
कदा सिंघाडो करी विचरावै, तो बंधवस्ती बोलण री करावै॥
- ४०० बोलै तो पाछी हाजरी लेवै, याद इती किम रहेवै।
इम बंधवस्ती सूं गण मांही, रह्या बारै वर्ष तांइ॥
- ४०१ घणा दोहरा दिन कादया तांही, कोइ संढावालो^१ मिलियो नांही।
एकलो टळवा रो नहीं देख्यो टांण^२, तिण सूं इम दिन कादया जाण॥
- ४०२ बीजू इती बंधवस्ती मांय, कवण रहै दुख पाय।
तीजा अविनीत तणा ए धार, एक श्रावक कह्या समाचार॥
- ४०३ इण विधि संकडाई रै मांहि, रहिणी न आवै ताहि।
तिण कारण न्यारा निकळिया, तो दोष कहै क्यूं अळीया^३॥
- ४०४ दूजो अविनीत काती में ताय, साधा कनै कही इम वाय।
छमास उपरंत हुआ इण नै, तिण सूं दीक्षा विण न लेणो तिण नै॥
- ४०५ दीक्षा विण मांहि लेसो अन्यावो, थे पिण ठागा सूं काम चलावो।
बलि गणपति पास जोधाणै आय, एक गृहस्थ बोल्यो इम वाय॥
- ४०६ दूजा अविनीत तणों ले नाम, मो पासै कहिवाया तांम।
थे जोधाणै जावो स्वामीजी नै कहिजो, दीक्षा विण यानै मांहि म लीजो॥
- ४०७ छमास थी अधिक थया है इण नै, तिण सूं दीक्षा विण न लेणो तिण नै।
त्यारै जूं न्हाखवा री श्रद्धा छै तांम, तिण सूं सम्यक्त्व रो काठो काम॥

१. साथी।

२. झूठा

३. अवसर।

- ४०८ थया छमास थी अधिक विशेषो, दीक्षा विण गण में किम लेसो।
 इण ने दीक्षा विण मांहि न लेसै, तो बाप दादा रो घर गिणैसै॥
- ४०९ जो दीक्षा विण लेसो इणवार, तो जाणसां भरत में थयो अंधार।
 म्हारो गण में आवा रो मन होय, तो दीक्षा ले आसां जोय॥
- ४१० म्हे तो कपूत सपूत उणांरा, पिण नहीं अवर किणां रा।
 उतावळो बोली नै बात आखी, इम गृही गणि पै दाखी॥
- ४११ इण लेखै नव मास गण में रही आयो, दीक्षा विण किम लै मांढ्यो।
 यां नीकळ्यां पछै छठो अवनीत, गण में रढ्यो नव मास सुरीत॥
- ४१२ तिण नै दीक्षा विण यां मांहि लीधो, बले आहार पांणी भेलो कीधो।
 जो साधुपणो जाणे गण मांहि, तो पोता में चारित्र नांही॥
- ४१३ जो गण में कहै छठो गुणठांणो, तो न्यारा रढ्यां दोष जाणो।
 गण में असाधु सरधै जो ताहि, तो छठा अविनीत नै लेणो नांहि॥
- ४१४ साधु पणो सरधै गण मांय, तो पोतै जुदा रहै कांय।
 दोनूं प्रकारे बंध में आय, साप ग्रही छछुंदरी न्याय॥
- ४१५ जो साढा छमास तर्णी मर्याद, न मान्या ए अपराध।
 कितो काल रहै असाधां मांहि, तथा आज्ञा बारै रढ्यां तांहि॥
- ४१६ तो साधुपणों तिण नै देणो सुवैद, किता काल पछै तप छेद।
 रहै इतरो काल असाधां मांय, तठा तांड छेद तप आय॥
- ४१७ तेहथी अधिक चारित्र आपो, थारै किसी छै थापो।
 इम हिज जुदा रढ्यां पहिछांण, चरण छेद तप जाण॥
- ४१८ साढा छमास नीं थाप है म्हारै, कहो कवण थाप है थारै।
 इम कढ्यां सुद्ध जाब नहीं आवै, तब पग-पग झूठा थावै॥
- ४१९ इम शासन बारै नीकळै सोय, ज्यारै इण विधि दोघट होय।
 बात-बात मांहि नहीं छै संघ, त्यांरी बोली में नहीं बंध॥
- ४२० जिलो करी पांचूं नीकळ्या साथ, पछै जू जूआ हूआ साख्यात।
 फूट-फजीती इण विधि होय, फळ प्रत्यक्ष देखो सोय॥
- ४२१ परभव नरक निगोद निवास, इण भव आपद पास।
 इम जाणी शासन रै बार, कोई म होज्यो लिगार॥
- ४२२ औ जू जूआ हूआ ते प्रश्न पूछीजै, प्रभु तीर्थ किण मांहि कहीजै।
 थामै यांमै कै म्हांमै उदार, इण रो उत्तर देवो विचार॥
- ४२३ प्रवचन सूत्र पिण तीर्थ सार, कढ्यो रैसी इक्कीस हजार।
 तिण री तो पूछा करी नहीं कोय, पूछा चरण तीर्थ री जोय॥

- ४२४ कदा कहै म्हां टळियां साढा षटमास, तठा तांइ तीर्थ गण में तास।
साढा छमास पछै गण मांहि, चरण तीर्थ कहै नांहि॥
- ४२५ तिण नै कहिणो थे अविनीत हुय गया जूआ, गण में असाधु किहां थी हुआ।
थे टळियां पछै साढा छमास तांई, जो चरण तीर्थ गण मांहि॥
- ४२६ तो तठा पछै पिण चारित्र तेही, थाप बोल मुनि जेही।
थे टळियां ते पिण हुआ जू जूआ ताहि, हिवै चरण तीर्थ किण मांहि॥
- ४२७ कदा आप-आप में कहि दीयै मूढ, निज मत री राखण रूढ।
पिण समदृष्टी मानै नहीं कोय, यानै झूठबोला जाणां सोय॥
- ४२८ कदे चरण तीर्थ उण मांहि जाय, कदा दूजां में पाय।
इम उडतो फिरै थांरो तीर्थ असार, तिण में कदे नहीं भळी वार॥
- ४२९ भेळा होय बले होय जावै न्यार, थांरै ए पिण नहीं छै विचार।
विविध प्रकारे त्याग दिया भांग, बले टळिया पछै हुआ सांग॥
- ४३० आज्ञा लोप हुआ अपछंदा, बिगडायल जैन रा जिंदा।
स्वाम भिक्षु नीं बांधी मर्यादा, ते पिण लोपी अगाध॥
- ४३१ नित्य-नित्य त्याग करता था अनेक, ते पिण भांग्या विशेष।
संकडाई में रहिणी न आयो, तिण सूं ओ ठागो बणाओ॥
- ४३२ ते पिण ठागो जाणै लियो सोय, फिट-फिट करै बहु लोय।
एहवा झूठबोला रै मांय, चरण तीर्थ किम थाय॥
- ४३३ चरण तीर्थ गण शासण रूडो, तिण सूंतो पड़िया दूरो।
शासण नंदन वन उपमान, तिण में च्यार तीर्थ गुणखान॥
- ४३४ हिवै किसो गण शासण मांनो, प्रभु पंथ किसो जानो।
ए गण चिन्तामणि कल्पवृक्ष, अवगुण बोलवै छोडी पक्ष॥
- ४३५ हिवै शासण गण किसो गिणेतो, सरण किसै हिव रहेसो।
शासण सकल कल्याण निकेत, तिण सूं थे थया अचेत॥
- ४३६ हिव थांरै कवण मंदर सुख स्थान, थांरै ए पिण नहीं छै पिछाण।
शासण गण में थे 'भणिया' गुणिया,' टलनै अवगुण थुनिया॥
- ४३७ थांनै भणावा रो ओही प्रताप, प्रगट दिखायो आप।
गण में थया थांरै आछा थोक, त्यांसूइज द्वेष नो फोक॥
- ४३८ इतरा वर्स पाल्यो संजम भार, गण गुरु नै आधार।
हिवै नीसर नै अवगुण ताणै, सुण उत्तम स्यूं जाणै॥

१. पढ लिखकर तैयार हुए।

४०२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ४३९ जिण तरु छाया बैठो सुख पावै, ऊठी उखारवो चावै।
गुरु भणी कहिता सीमंधर सागै, आप भिक्षु जिम आगै॥
- ४४० तिण हिज जीभ सूं अवगुण बोले, इम द्वेष तणै वस झोलै।
गुरु नै कहिता तीर्थकर जेम, बिहु टक में धर प्रेम॥
- ४४१ त्यांरा पिण लोकां में अवगुण गावै, थानै ए पिण लाज न आवै।
छतीस गुणां सहित कहंता, त्यांरा अवर्णवाद वदंता॥
- ४४२ दिवस पहिलै कह्या सुद्ध आचारी, हिवै कहिवा लागा अणाचारी।
पहिलै दिवस तो जाण्यो पुरस मोटा, पछै किसै दोष थया खोटा॥
- ४४३ टाळोकर नै कहिता नित्य खोटा, हिवै किण विध जाण्यो मोटा।
अवगुण रा नित्य त्याग करंता, हिवै तेहिज त्याग भागंता॥
- ४४४ क्षेत्रां में एक रात्रि उपरंत, नित्य रहिवा रा त्याग करंत।
अंस अवगुण बोलण रा त्याग, औ तो नित्य करता धर राग॥
- ४४५ पांना ले जावण रा पचखांण, ते पिण भांग्या जाण।
सहु अनंत सिद्धां री साखे पचखांण, बले पंचपदां री आण॥
- ४४६ घणा हरष सूं लिख्यो म्हे जाणी, वदता इम नित्य वांणी।
सरमा सरमी थी लिख्यो नहीं कांइ, इम नित्य लिखता त्यांही॥
- ४४७ ए सहु त्याग किया चकचूर, ते गया वहती रै पूर।
एक ही त्याग भांगै दिल व्यापी, तिण नै कह्यो महा पापी॥
- ४४८ तो नित्य-नित्य त्याग भांगो बहुवार, थारो किम होसी निस्तार।
एहवा सुंसां रा भागलां मांय, चरण तीर्थ किम थाय॥
- ४४९ ओस बिंदु जिम नर भव जाणो, ओ तो तिरवा रो दुर्लभ टांणो।
किंचित् कष्ट वेदी विप्रतारयो, मानव भव कांय हारयो॥
- ४५० नरक निगोद ना दुख अगाद, क्यूं नवी कीधा औ याद।
जनम मरण रा दुख वीसरिया, ते तो उलटै मारग पडिया॥
- ४५१ सम्यक्त्व चरण अमोलक पायो, ते तो अैहलै साटे गमायो।
तुज मति ए किम ऊपनीं मादठी, थारी छाती हुई किम कादठी॥
- ४५२ सतगुरु नै तो अनुकंपा आवै, औ कर्मां सूं भारी क्यूं थावै।
शासन सूं तो जगत तिरै छै, ए पाप पिंड क्यूं भरै छै॥
- ४५३ स्वाम भिक्षु संत अधिक सनूरा, ए बापड़ा क्यूं पड़्या दूरा।
शिव सुख हेतु सुखदाई, यानै कुमति ईसी क्यूं आई॥
- ४५४ शासन वन मुनि फूल्यो नै फळिया, औ जवासिया कांय टळिया।
काल अनंत भ्रमत मग पायो, यां सैहज में कांइ गमायो॥

४५५ सम्यक्त्व चरण देश-व्रत आथ, औ तीनूं छै आपरै हाथ।
 इह विधि गुरु नै कहिता बहुवारी, ते पिण घाल्यो वीसारी॥
 ४५६ इण बात रो म्हांनै अचर्य आयो, यां चारित्र केम गमायो।
 ए पिण जिण तिण नै नहीं सोहरी, थारै ए पिण दीसै दोहरी॥
 ४५७ सतगुरु सीख सहु सांभळजो, यां जिम कोइ म रुळजो।
 संत सत्यांरा गुण उच्चरजो, अवर्णवाद म करजो॥
 ४५८ ए तो बात न छै कोइ सारै, कर्म बलवंत पछाडै।
 वीर प्रभु नो जमाइ जमाळी, कर्म करी मति काळी॥
 ४५९ वीर छद्मस्थ नो शीस गोसाळो, थयो कर्म वसै मतवाळो।
 दिशाचरा^१ षट कर्म प्रतापो, कियो गोसाळा थी मिलापो॥
 ४६० तो ए तो बापड़ा छै कुंण रंक, यांनै कर्मा लगाया कळंक।
 कर्म कटक झाली समसेर, यांनै चिहुं दिशि लीधा घेर॥
 ४६१ तिण कारण यांनै सवळी न सूझै, दिन-दिन अधिक अळूझै।
 कदाचित् कर्म विवर^२ जो देवै, फिर पाछी संवळी वेवै॥
 ४६२ गुरु पै दीक्षा लई सल्य काढै, निज काम सिराडै चाढै।
 हिवड़ां तो कर्म तणै वश डोलै, चढिया मोटे चखडोलै॥
 ४६३ विविध प्रकार ना अवगुण बोलै, मोह कर्म झकझोलै।
 विविध प्रकार ना दोष बतावै, यांनै लाज सरम नहीं आवै॥
 ४६४ अवर दंड लेइ नै टोळा मझारी, औ तो हुंता आवा नै त्यारी।
 जद दोष री बात न रही सोय, यांनै ए पिण समझ न कोय॥
 ४६५ दीक्षा दियां विण न लियां मांय, तिण सूं करै बकवाय।
 आगै टाळोकर हुआ अनेक, त्यां पिण अवगुण बोल्या विशेष॥
 ४६६ भिक्षु स्वाम त्यांनै रास मझार, ओळखाया सुविचार।
 ए रास नीं गाथा कहूं छूं कोई, सांभळजो चित देइ॥

भिक्षु कृत रास नी गाथा

- “१ अवगुण सुण-सुण ने समदृष्टि, यांनै जाणै धर्म सूं भृष्टी।
 यांरो बोल्यां री प्रतीत न आणै, झूठ में झूठ बोलता जाणै॥
 २ सगळा श्रावक सरीखा नाहि, अकल जुदी-जुदी घट मांहि।
 समदृष्टि री साची हुवै दिष्ट, तो यांनै करै थोड़ा में खिष्ट॥
 ३ तो यांनै न्याय सूं देवै जाब, पारै घणा लोका मांहे आब।
 यांरी मूळ न आणै संक, यांनै देखाळ दै यांरो बंक॥

१. भगवई शत १५।

२. पय।

- ४ थे घणा दोष कहो गुरु मांहि, घणा वर्सा रा जाणो छो ताहि।
तो थे पिण साधु किम थाय, जाण-जाण भेळा रह्या मांय॥
- ५ जो यांमै दोष घणा छै अनेक, कदा दोष नहीं छै एक।
ते तो केवळ ज्ञानी रह्या, देख, पिण थे तो बूडा ले भेष॥
- ६ जो यांमै दोष कह्या थे साचा, तोही थे तो निश्चै नही आछा।
जो झूठा कह्या तो विशेष भूडा, थे तो दोनूं प्रकारे बूडा॥
- ७ थे दोषीला नै वांधां कहो पाप, भेळा पिण रह्यां कहो संताप।
दोषीला नै देवै आहार पाणी, बले उपधादिक देवै आंणी॥
- ८ हर कोई वस्तु देवै आण, करै विनय वियावच जाण।
दोषीलां सूं कोइ करै संभोग, तिण रा जाणो छो माठा जोग।
- ९ इत्यादिक दोषीलां सूं करंत, तिण में पाप-कहो छो एकंत।
अ थे जाणे सारा किया काम, ते पिण घणां वर्सां लग ताम॥
- १० घणा वर्स किया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो धर्म।
दोष निरंतर सेवण लागा, हुआ विरत विहूणा नागा॥
- ११ ओ थे कीधो अकार्य मोटो, छानै-छानै चलायो खोटो।
बांध्या थे तो बहु कर्म रा जाळो, आतमा नै लगायो काळो॥
- १२ थे गुरु नै निश्चै आप्या असाध, त्यांनै वांधां जांणी असमाध।
त्यांराइज वांधा नित्य-नित्य पाय, मस्तक दोनूं पग रै लगाय॥
- १३ यांसूं कीधा थे बारै संभोग, ते पिण जाण्या सावध जोग।
सावध सेव्यो निरंतर जाण, थे पूरा मूढ अयांण॥
- १४ थे भण-भण नै पानां पोथा, चारित्र विण रहि गया थोथा।
थे कहो अर्थ करां म्हे गूढा, तो थे भण-भण नै कांय बूडा॥
- १५ विहार करता थे गांम गांम, शिष्य शिष्यणी वधारण कांम।
किण नै देता बंधो कराय, किण नै देता घर छोडाय॥
- ११६ बले कर-कर गुरु रा गुण ग्राम, चढावता लोकां रा परिणाम।
जब गुरु नै खोटा थे जाणता ताहि, ओरा नै क्यूं न्हांखता यां मांहि।
- १७ पोतै पडिया जाणो खाड मांय, तो औरां नै डबोवण रो उपाय।

(जाण-२ करता था ताय)

- पांच पद री वंदणा सीखावता ताह्यो, तिण में गुरु रो नाम घलायो॥
- १८ तिण गुरु नै वांधां जाणता पाप, तो औरां नै कांय डबोया आप।
ज्यूं नकटो कोइ नकटा हुआ चाहै, असुभ उदै माठी मति आवै॥
- १९ ज्यूं थे डूबता दोषीलां मांहि, तिम औरां नै डबोवता ताहि।
औरां सूं करता एहवो उपगार, थारे भणियां रो योहिज सार॥

- २० इसडो कूड कपट चलायो, थारो छूटको किणविधि थायो।
जिण मारण में हुआ थे ठगो, थे तो दीयो घणा नै दगो ॥
- २१ ठग-ठग खाधा लोकां रा माल, थारो होसी कवण हवाल।
आछी वस्तु हुंती घर मांहि, आहार पाणी कपडादिक ताहि ॥
- २२ थानै गुरु जाणे हरष सूं देता, सो अै थारा नीकळ गया पैता।
म्हे थानै वांदता वारंवार, जद म्हानै हुंतो हरष अपार ॥
- २३ थानै जाणता सुद्ध आचारी, थे छानै रह्या अणाचारी।
म्हे तो थानै जाणता पुरुष मोटा, पिण थे तो होय नीवडिया खोटा ॥
- २४ म्हे थानै जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवडीया असाध।
जाण रह्या दोषीळां मांढ्यो, थे ठागा सूं कांम चलायो ॥
- २५ थे तो जीतब जनम बिगाड्यो, नर नो भव निरथक हास्यो।
घणा दिनां रा कहो थे दोष, थारी बात दीसै छै फोक ॥
- २६ साच झूठ केवळी जाणै, छद्मस्थ प्रतीत न आणै।
थे हेत मांहै तो दोषण ढंक्या, हेत तूटै कहिता नहीं संक्या ॥
- २७ किम आवै थारी परतीत, थानै जाण लिया विपरीत।
दोषीलां सूं थे कीधो आहार, जद पिण नहीं डरिया लिगार ॥
- २८ तो हिवै आळ देता किम डरसी, थारी प्रतीत मूर्ख करसी।
अै थे दोष क्यांनै किया भेळा, अै थे कयूं न कह्या तिण वेळा ॥
- २९ जो थामै साध तणी रीत हैतो, जिण दिन रों जिण दिन कहीतो।
दोषीलां सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग ॥
- ३० थारी परतीत न आवै म्हानै, यांरा दोष राख्या थे छानै।
थे तो कियो अकार्य मोटो, छानै-छानै चलायो खोटो ॥
- ३१ भृष्ट हुइ थारी मति सुद्ध बुद्ध, हिव प्राछित ले हुय सुद्ध।
उणां री तो थारा कह्या सूं संक, पिण थे दोषीला निसंक ॥
- ३२ इम कहि उणनै घालणो कूडो, घणा बैठां देणी मुख धूडो।
ज्यूं कोई बले न दूजी वार, किणराई दोष न ढांकै लिगार ॥
- ३३ दोष ढांक्या हुवे धणी खुवारी, टांको झलै तो अनंत संसारी।
संका सहित नै राखै मांय, तो और साधु दोषीला न थाय ॥
- ३४ थाप रा दोषीला नै जाणी राखै मांय, तो सगळा असाधु थाय।
इम कह्या यानै जाब न आवै, जब झूठी-झूठी बातं बणावै ॥
- ३५ यांरा दोष न कह्या म्हे डरतै, गुरु सूं पिण लाजां मरते।
रखे करदै मोनै टोळा बारे, मुदै तो ओहिज डर रह्यो म्हारै ॥

- ३६ म्हे दोष सेव्यां थारै कहौ जाण, यां सेव्यां री न कर ताण ।
कदे देतो हुं दोष बताय, जब म्हारी देता बात उडाय ॥
- ३७ मो एकळा री आसंग नहीं कांय, तिण सूं रह्यो दोखीलां माहि ।
जब थानै पाछो कहिणो एम, थारो साधुपणो रह्यो केम ॥
- ३८ थे तो डरता अकारज कीधो, तिण रो प्राछित पिण नहीं लीधो ।
कदाचित गुरु कांचा पाणी मंगावत, थे डरता थका भर ल्यावत ॥
- ३९ करावत पाप हर कोई, थे तो डरता करता सोई ।
कदा गुरु भारी पाप करता, तोही थे तो भेंळा रहिता डरता ॥
- ४० भागलां मांहै रहिता खूता, पिण थे एकळा कदेयन हूता ।
ईसडी थारी गीदडाई, थेज थारा मुख सूं बताई ॥
- ४१ इसडो प्राक्रम थां मांहै पावै, थारी आगा सूं परतीत नावै ।
साधां नै डरतो मूळ नहीं रहिणो, दोष देख्यां सताब सूं कहिणो ॥
- ४२ डरतां न कह्या तो थे गीदड़ पूरा, हिवै किण विध होसो थे सूरा ।
एकळा होयवा सूं थे डरतै, दोष न कह्या लाजां मरतै ॥
- ४३ तो हिवै ढांकोला दोष अनेक, जाणै होय जावां एक-एक ।
थारै तो मांहोमा दोष देख, हिवै तो ढांकसो थे विशेष ॥
- ४४ एकला होयवा रो डर थानै, मांहोमां दोष राखसो छानै ।
जो हिवै कहो म्हे न राखा छानै, तो हिवै बात थारी कुण मानै ॥
- ४५ थे तो बैठा प्रतीत गमाय, थारी मूरख मानै वाय ।
जिम किण ही चोर रो हुआ उघाडो, फिट-फिट हुआ सैहर मझारो ॥
- ४६ घणां लोकां जाणे लीयो तास, पछै कुण करै तिण रो विश्वास ।
ज्युं थारो पिण हूओ उघाडो, दोषीलां भेलो काढ्यो जमारो ॥
- ४७ प्रगट न किया त्यांरा दोख, थे जनम गमायो फोक ।
थाप रो एक दोष सेवै नित्य साध, तिण संजम दियो विराध ॥
- ४८ तिण नै गुरु जाण नै वांदै कोय, तो उ अनंत संसारी होय ।
तो थाप रा बहु दोष जाणो थे साख्यात, त्यानै जाणे वांधा दिन रात ॥
- ४९ तो थे पूरा अज्ञानी बाल, थे रुळसो कितो एक काळ ।
थाप रा एक दोष रो सेवणहार, तिण वांधां वंधै अनंत संसार ॥
- ५० थे घणा दोष जाण्यां त्यां मांय, त्यांराइज वांधा नित्य-नित्य पाय ।
भागलां वांधा जाणे पायो, जिण मारग में ठागो चलायो ॥
- ५१ रह्या थे कूड कपट मांहै झूल, हिवै थारो होसी कुण सूल ।
जो थे गुर मांहि दोष बताया, घणा वर्स थे राख्या छिपाया ॥

- ५२ तिण लेखे पिण थे इज भूडा, ज्ञानादिक गुण खोइ बूडा।
जो थे दोष कहा यांमै कूडा, जब तो थे जाबक पूरा बूडा॥
- ५३ थे गुरां रै दिया अणहुंता आळ, हिवै रुळसो कितोएक काळ।
थे दोनूं विधि बूडा इण लेखै, साच झूठ तो केवळी देखै॥
- ५४ छद्मस्थ ते तो यां अहिलाणै, थानै जाबक झूठा जाणै।
यां कनै पहिला अवगुण कहिवाय, पछै कष्ट करै इण न्याय॥
- ५५ यांरा वचन नै सैठा झालै, यानै पग-पग झूठा घालै॥”

मूल :-

- ४६७ भिक्षु स्वाम इम रस रै मांय, अवनीतां नै इम ओळखाय।
बले बुद्धिवंत है ते कहै, इम वाय दंड ओढ जाता गण मांय॥
- ४६८ तीजै अविनीत पंचपदरै मांहि, नाम घाल्यो घणां दिन ताहि।
गणपति रै मुख वंदणा कीधी, मांहि आवा री इम धार लीधी।
- ४६९ अधिक अविनीत रै तिण सूं संभोग, गण में इण पिण धारोपरयोग।
पंचम अवनीत पिण गण मांय, आवा नै तयारी अथाय॥
- ४७० कह्यो आप तो दीक्षा विण त्यागज लीधा, पिण स्वरूपचंदजी न कीधा।
इण विधि गण में आवा री धारी, जद दोष न रह्या लिगारी॥
- ४७१ पिण दीक्षा विण थानै मांहि न लीधा, तिण सूं अवगुण अछता कीधा।
छठो गुणठाणो कहिता धर प्रेम, बले अवगुण बोले केम॥
- ४७२ इण विधि थे तो प्रत्यक्ष अन्याई, थारी बोली में संधि न काई।
बुद्धिवंत हुवै तिके इण रीत, यानै कष्ट करै धरी प्रीत॥
- ४७३ स्वाम भिक्षु बले रास रै मांहि, तयारो संग परचो वरज्यो ताहि।
ते रास नीं गाथा कहूं सूं सोय, ते सांभळजो सहु कोय॥

भिक्षुकृत रास :-

- ५६ “अवनीत अवगुण बोलै अनेक, बुद्धिवंत न मानै एक।
यानै जाणै पूरा अवनीत, यांरी मूल न आणे प्रतीत॥
- ५७ अवनीतां रो करे विश्वास, तो हुवै बोध बीज रो नास।
च्यार तीर्थ सूं पड़िया कानै, त्यांरी बात अज्ञानी मानै॥
- ५८ अवनीतां रो करै परसंग, तो साधां सूं जायै मन भंग।
औ साधां नै असाधु सरधावै, झूठा-झूठा अवगुण बतावै॥
- ५९ अवनीतां रो जाय सुणै वखांण, तिण लोपी जिनवर आण।
अवनीतां री तहत करै कोई वाणी, आ दुरगति नी अहलांणी॥
- ६० किण रै अशुभ उदै हुवे आण, ते करै अवनीतां री तांण।
त्यां झूठा नै साचा दे ठेहराई, तयारै अनंत संसार री साई॥
- ४०८ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ६१ अवनीतां नै कहि बतलावै, स्वामी, तिण में पिण जाणो मोटी खामी।
अवनीतां नै ऊंचो करै कोइ हाथ, तिणरै निश्चै बंधै कर्म सात॥
- ६२ अवनीतां रो जाय वखांण मंडावै, बले और लोकां नै बोलावै।
जे कोइ इसडी करै दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जायै खाली॥
- ६३ अवनीतां नै च्यार तीर्थ मांहे जाणै, ते पिण पहिले गुणठाणै।
अवनीतां री कोइ करै पखपात, तिण रै आय चूको मिथ्यात॥
- ६४ अवनीतां सूं करै आलाप संलाप, तिण रै पिण बंधै चीकणा पाप।
अवनीतां नै वंदणा करै जोड़ी हाथ, तिण रै वेगो आवै मिथ्यात॥
- ६५ अवनीतां री भाव भक्ति करै कोई, बले आदर सनमान दै सोई।
तिण रै सरधा न दीसै साची, गुरु री पिण प्रतीत काची॥
- ६६ अवनीतां सूं करै विनय नरमाई, तिण रै लागी मिथ्यात री साई।
घणो-घणो जो यां कनै जावै, तो सम्यक्त्व वैगी गमावै॥
- ६७ अवनीत नै भागल पूरा, बले आळ दे कूडा-कूडा।
अवनीतां री मानै कोइ बात, ते तो बूड चूका साख्यात॥
- ६८ कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यारै कने जायै कोई चाल्यो।
ते तो गुरु रौ न मानै हटको, तिण रो तो हूंतो दीसै छे गटको॥
- ६९ चरचा बोल सीखै त्यां आगै, तिण रै डंग मिथ्यात रो लागै।
अवनीतां रो संसतो' परचो न करणो, यांरो संग जाबक परहरणो॥
- ७० सम्यक्त रा अतिचार संभाळो, तो अवनीतां नै दीजौ टाळो।
जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखै सूत्र री परतीत॥
- ७१ अै अवगुण बोलै चिठाय-चिठाय, किण ही भोळा रै संक पडै जाय।
जो उ न करै त्यांरी पखपात, तिण रो काटणो सोहरो मिथ्यात॥
- ७२ अवनीतां री गाढी झालै पख कोई, ते नहीं छोडै झूठा जाणै तोही।
ते बूडसी अवनीतां रै लारै, त्यां अैहलै दीयो जनम बिगाडै॥
- ७३ कोई लीधी टेक न म्हेलै, आपरै मन मानै ज्यूं ठेलै।
श्री जिन धर्म री रीत न जाणै, मूढ मूर्ख थको यूंही ताणै॥
- ७४ यां कनै करै पोसो समाई, यां कनै करै पचखांण जाई।
तिणरी पिण जाणजो मति काची, जिन मारग में न कीधी आछी॥
- ७५ जे अवनीतां रा पखपाती, त्यांरी सुण-सुण बळ ऊठै छाती।
अवनीतां रो करै उघाड़, जब पिण मूंहढो देवै बिगाड॥

- ७६ जे कोइ गण में हुवै अवनीत, तिण सूं गाढी बांधै प्रीत ।
ते पिण अवगुण बोलावण रै कांम, इसडा छै मैळा परिणाम ॥
- ७७ जिण रै द्वेष छै घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणामी जीव छै मेळो ।
तिण रै उदै हुवै कर्म मिथ्यात, ते तुरत मांनै त्यांरी बात ॥
- ७८ ते अवनीतां री करे पखपात, तिण रै आय चूको मिथ्यात ।
खप^१ करै त्यांरी करीवा थाप, तिण रै असुभ उदै हुआ पाप ॥
- ७९ जाणै अभिमानी अनै अवनीत, तोही राखै त्यांरी परतीत ।
प्रत्यक्ष तिण रै पूरो अंधारो, बूडै छै अवनीतां रै लारो ॥
- ८० अवगुण जिण नै गुरां रा सुहावै, ते अवनीतां नै मूंहडै लगावै ।
अवगुण गुरु रा त्यां पास बोलावै, पछै लोकां में आप फैलावै ॥
- ८१ जिण तिण आगै करे जे बात, करै अवनीतां री पखपात ।
अवनीतां नै साचा सरधावै, गुरु में अवगुण दरसावै ॥
- ८२ वंदणा करै गुरु नै शीस नांम, करै अकरां रा गुण ग्राम ।
ते होय बैठा अवनीतां री लारी, औरां नै खपै करि खुवारी ॥
- ८३ गुरु सूं लोकां रा परिणाम फारै, आप बिगड़्यो ओरां नै बिगाडै ।
श्रावक एहवो विश्वासघाती, ते पिण होय चूको मिथ्याती ॥
- ८४ गुरु री साची बात दै ठेली, अवनीतां रो होय जाय बेली ॥
हर कोइ अवनीत छूटै, तिण रो बेली होय ऊठै ॥
- ८५ सांधां रा अवगुण बोलै, तिण सूं बात करै दिल खोलै ।
अवनीतां नै मिलै अवनीत, त्यांरी तेहिज करै प्रतीत ॥
- ८६ गुरु सूं पिण जाबक नहीं तोड़ै, अवनीतां सूं सठ नहीं जोड़ै ।
धरपाधर रह्या छै देख, छल छिद्र जोवै छै शेष ॥
- ८७ जो अवनीतां नै लोक न मांनै, तो आप पिण होय जाय कांनै ।
अणसरतै दबीया रहै मांहि, पिण लक्षण जांणे लीया ताहि ॥
- ८८ केइक श्रावक दोपड़पीटा, ते पिण पड़ीयां यारै संग फीटा ।
जो कोइ बंध निकाचित पाड़ै, ते पिण अनंत संसार बधारै ॥
- ८९ श्रावक केइ भागल साख्यात, करै भागलां री पखपात ।
जाणै चोर सूं मिल गइ कुत्ती, झूठी बातां करै अणहुंती ॥
- ९० ते भागलां नै कहै उत्कृष्टो, तिण री पिण मति होय गई भृष्टो ।
तिण भागल नै भागल मिलियां, किम पूरीजै मन रंग रलियां ॥

१. विशेष प्रयत्न ।

- ९१ असाधु टालोकर नै सरधै साध, साधां नै सरधै असाध।
 दोनूं प्रकारै मूरख बूडै, ते पिण जाय बैसती तूडै॥
- ९२ एहवा अभिमानी नै अविनीत, होसी चिहुं गति मांहि फजीत।
 यानै भूंडा कह्यां लोकां आगै, यां रा पखपाती रै दाह लागै।
- ९६ ए अवनीतां रा कह्या अहलाण, कोई आप म लीजो तांण।
 अवगुण एहवा छै जिण मांय, ते छोड्यां विण सुख नहीं थाय।
- ९४ अविनीत तो बके घणा दिन रात, कूड कपट सहित करै बात।
 विविध पणै देवै छै आळ, कर रह्या झूठी झंखाल॥
- ९५ रास माहै टालोकर नै तांम, इम ओळखाया भिक्खु स्वाम।”

मूल :-

- ४७४ अधिक अविनीत प्रमुख चिहुं ताहि, बीजा चोथा सूं करि निरमाइ^१।
 पोतै प्राछित ले संभोग रो नाम, कीधो प्रपंच रै कांम॥
- ४७५ तीजो^२ चउथो^३ अविनीत तिवार, कर दियो तुरत विहार।
 इण विधि करै जुदा कदे भेळा, जाणै नाचै कुबुद्धि खेला॥
- ४७६ ए कपट अर्थे कीयो नाम संभोग, पोतै दंड लेई घाल्या सोग।
 ते पिण ठागो बिखर जासी तांम, घणी फूट फजीती पांम॥
- ४७७ चोथो अविनीत जसोल थी धार, आयो गणि पै ‘वीठोजै’ वे वार।
 बे कर जोड़ खमावै सोय, कहै आपरो सरणो मोय॥
- ४७८ काळवादी प्रमुख नीकळ्या ताय, गया थोड़ा मांहि विललाय।
 ओहिज शासन छै सुविसाल, रहितो दीसै बहु काळ॥
- ४७९ आपरा अवगुण बोलूं न कांई, बले पर नै बोलण देऊं नांही।
 शासन सन्मुख हूं तो छूं सार, भलो बांछूं शासन रो उवार॥
- ४८० आप तो मौनै साता उपजाई, काम काज असणादिक ताही।
 मघराजजी रा पुन्य अति भारी, यानै अडचल न हुवै लिगारी॥
- ४८१ पोथी पांनां हूं उपाडूं जेह, मघराजजी रा छै एह।
 महां दोयां सूं निरमाइ बहु करी तांम, तिण सूं संभोग रो कीयो नाम।
- ४८२ ते पिण बीजा ने दंड दिराय, कियो संभोग रो नाम ताय।
 जय कहै—थे निकळिया सोय, नव मास पछै अवलोय॥
- ४८३ छठो अवनीत निकळियो ताय, थारै लेखै नवी दीक्षा आय।
 दोय मांहि आया एक वंदणा में नाम, त्यानै दंड दिरायो ताम॥

१. नम्रता।

३. सन्तोजी।

२. कपूरजी

- ४८४ सो इम नाम संभोग रो करी तिवार, तुरत कीयो बिहुं जणा विहार।
नव मास पछै निकळियो बार, तिण नै दीक्षा न दीधी लिगार॥
- ४८५ ओ पिण थारै पूरो अंधारो, थारै लेखै थां में न विचारो।
उण नै भेलो राखै ज्यांसूं किम कीजै आहार, मन मांहे करो विचार॥
- ४८६ इम कहां सुद्ध जाब नहीं आयो, कहै आफेइ हुय जासी ताह्यो।
म्हामें पूज पदवी रो नाम न कांइ, वंदणा में नाम घालणो नांही॥
- ४८७ इच्छा आवै ज्युं विचरां ताही, इण में आज्ञा रो कारण नांही।
किण रै ई नाम प्रणामै सोय, गुरु न करावणा कोय॥
- ४८८ पंच महाव्रत पाळै सार, ते गुरु कहिणा उदार।
किण रै नामै दीक्षा नहीं देणी, बले चेला री बात न कैहणी॥
- ४८९ सगळां रै सीर मांहे अवलोय, दीक्षा दैणी सोय।
एक कागद में लिखी बातां अनेक, ते शासन सन्मुख पेख॥
- ४९० न्यातीलां नै दर्शण देवा मेलंता, तो गण बारै क्यानै टलंता।
टोळा बारै नीकळवा रां तांम, यांरा रती नहीं परिणाम॥
- ४९१ पिण होणहार टळै नहीं कोय, कर्म तणी गति जोय।
कोई रै न्यातीलां री हुवै ताय, तो दर्शण दीजै दिराय॥
- ४९२ कोई रै विचरवा री मन मांय, तो जुदो दीजै विचराय।
कोई रै आहार रो कष्ट देखीजै, तो विहार कराई दीजै॥
- ४९३ इण बात सूं आडबोढ न आवै, इण तें आप तणों स्युं जावै।
इत्यादिक बात कही घणी ताय, पछै आयो जिण दिशि जाय॥
- ४९४ बीजै^१ अवनीत सरलपणै बहु बात, कीधी तेजसी आगै विख्यात।
ते पिण गण सन्मुख सुखदाई, बात सुणीयांइ अचर्य थाइ॥
- ४९५ बलि कहै यां दलदस्थां नै सोय, कहै चोडै निषेधो जोय।
वंदणा करवा रा पिण त्याग करावो, निसंकपणै चित चावो॥
- ४९६ स्वामीजी सूं मिलवा रा भाव है ताय, पिण ठच्चो सो किम रहूं जाय।
स्वामीजी मोनै पूछै कदा त्यांही, यांनै श्रद्धो छो कांई॥
- ४९७ हूं कहिसूं आप श्रद्धो जिण रीत, हूं पिण श्रद्धूं वदीत।
बले पूछैला म्हानै श्रद्धो थे कांई, तिण रो तो जाब देवूं नांही॥
- ४९८ नवी दीक्षा लेउं धर भाव, तिण रों म्हारै नहीं अटकाव।
यां सूं पूरो पड़तो दीसै न कोय, हूं जाण रह्यो छूं सोय॥

- ४९९ ऋषि बीजरज पिण निषेद्यो विशेष, तो पिण न धर चो धेष।
श्रद्धा रा क्षेत्रां मांहि नहीं रहिणो, वचन उत्तरतो नहीं कहिणो॥
- ५०० ए दोय सीख बीजरजजी दीधी, बीजै अवनीत माने लीधी।
हीरालाल नै कही बहु वाय, ते पिण सरल जणाय॥
- ५०१ ऋषि हीरालाल नै कहै सुविशेष, थारी म्हारी दृष्टि एक।
त्यारै आहार पाणी भेळो कहै ताहि, पिण इतरो फेर मांहो मांहि॥
- ५०२ ते पिण तिण री न करै पिछांण, घणी फूट फजीती जाण।
साधु तो यांनै असाधज श्रद्धै, ते प्रत्यक्ष पिण नहीं पड़दै॥
- ५०३ दीक्षा विण लेवा तणां पचखांण, ते पिण चोड़ै जाण।
तो पिण ए कर जोड खमावै, बलि स्वामीजी कही बोलावै॥
- ५०४ बलि शासन सूं अनूकूल केई, बात कहै स्वमेई।
कोई कहै प्रतिकूल अधिक विशेष, इम आपस में नहीं एक॥
- ५०५ श्रावक समझू आरै किया नांय, जब गया अधिक मुरझाय।
कहै चारित्र पिण म्हे लेवां अमूल, करां नवी दीक्षा पिण कबूल॥
- ५०६ पिण कांयक तो म्हारी राखीजै, पांच च्यार बोल तो छोडीजै।
एहवा गृहस्थ कागद में लिख्या समाचार, जब जयगणि बोल्या तिवार॥
- ५०७ यांनै लेवा अर्थे यांरा कहिण सूं जाण, इक पिण बोल छोडण रा पचखांण।
नवी दीक्षा ले आवै गण मांहि, पोता में संजम सरध्यो नाहि॥
- ५०८ पोता में चारित्र सरधै जो एह, तो नवी दीक्षा किम लेह।
मान बडाई नै काजै अयांण, करै बोल छोडावण री तांण॥
- ५०९ दूजी वार सुण्यो बोल छोडो जो एक, तो म्हे नवी दीक्षा ल्यां विशेष।
नवी दीक्षा पिण करै अंगीकार, पिण यांरो मिटियो नहीं अहंकार॥
- ५१० मान अहंकार पिण थोथो अथाय, ते तो विवेक विकळ कहिवाय।
किण ही चोर नै महिपति प्रसिद्धो, सूळी तणों हुकम दीथो॥
- ५११ चोर कहै सूळी पिण अंगीकार, पिण नवी पाग बंधावो अबार।
सूली चढवो अंगीकार करै छै, बले थोथो अहंकार धरै छै॥
- ५१२ तिण सरिखा औ पिण मूरख धार, नवी दीक्षा करै अंगीकार।
जाणै बोल छोडायां म्हारो रहै मान, इण लेखै विकळ समान॥
- ५१३ नवी दीक्षा लेणी धारी पिछांण, जब गळ गयो जाबक मान।
बले करै बोल छोडावण री बात, तिण लेखै मूरख साक्षात॥
- ५१४ अधिक अविनीत दोय वार टळियो, नीकळ-नीकळ बोल्यो अळियो।
बीजो अविनीत टळयो चिहुं वेला, नीकळ-नीकळ कीधा हेला॥

- ५१५ तीजो अविनीत टळ्यो वार तीन, नीकळ-नीकळ बोल्यो मत्नीन।
चोथो अवनीत टळ्यो वार तीन, नीकळ-नीकळ नै हुआ दीन॥
- ५१६ पंचम अवनीत टळ्यो वार च्यार नीकळ-नीकळ हुआ खुवार।
छठो अवनीत टळ्यो दोय वार, नीकळ-नीकळ बोल्यो विकार॥
- ५१७ इसडा अनंत हुआ नै होसी, परभव सांहमो विरला जोसी।
बलि आरा अजूणा मांहि, म्हे पिण देख लिया छै ताहि॥
- ५१८ ए भाव कह्या केई मुनि पै सुणीया, केइ मुंहठी शुणीया।
गृहस्थ पास केइ समाचार, सांभळ जोड्या विचार॥
- ५१९ केइ देखी आसरो उनमान, कोइक मुदो पिछान।
अधिको ओछो विरुद्ध आयो ह्वै कोय, तो मिच्छामि दुक्कडं मोय॥
- ५२० कही भिक्षु नीं जोड तणी गाथा केई, बाकी जयजश जोड करेही।
उगणीसै इकवीसै उदार, वैशाख सुदि चोथ शनिवार॥
- ५२१ निन्हव भागलां रो अधिकार, जोड्यो मरुधर देश मझार।
५२२ संवत उगणीसै बाइसै री बात, चोमासो उत्तरीयां विख्यात।
बालोतरा कनै 'वीठोजो' गांम, त्यां थी दोय जणा चाल्यां तांम॥
- ५२३ चोथो छठो मन करी विचार, आया मेइता सैहर मझार।
ईडवै गणपति पासै ताय, आवण हर्ष अधिकाय॥
- ५२४ एक गृहस्थ बोल्यो इमवाय, थे टळ टळ फिर गण आय।
थानै लेसी कैन लैसी मांय, कह्या इत्यादिक वाय॥
- ५२५ इम सुण छठा रा फिरिया परिणाम, वचन परिसह पांम।
ईडवै गणपति पासै सोय, तीन कोस रह्यां आया दोय॥
- ५२६ पछै छठो न आयो नै चोथो आयो, हरष घणो मन मांढो।
गणपति शासण री परतीत, धारी रूडी रीत॥
- ५२७ माह विद बीज बहु जन मांहि, नवी दिख्या लीधी ताहि।
छेदोपस्थापनीक ग्रहो ताह्यो, पिण ते तो समझ्यो नाह्यो॥
- ५२८ चोथो आयो गणपति पास उदार, छठो कीयो दूजी दिश विहार।
गणपति विहार करी सुखदाया, देघाणै^१ होय बाजोळी आया॥
- ५२९ ग्राम ग्राम रा बहुजन आया, दर्शन करण ऊम्हाया।
जनवंद अधिक हुवा तिहां भेळा, च्यार तीर्थ रा मेळा॥
- ५३० छठो नव कोस रो करी विहार, आय गयो तिण वार।
अधिक हरष आणी मन मांय, पगां पड़ियो छै आय॥

१. डेगाणे ग्राम।

- ५३१ सरधा आचार सर्व बात सीधी, पक्की आसता धार लीधी ।
 च्यार तीर्थ देखंता प्रसिधी, माह विद अष्टम दीक्षा दीधी ॥
- ५३२ निज आतम ना अवगुण गावै, वारुंवार अपराध खमावै ।
 कर्म जोग करि गण सूं टळीया, अवगुण बोल्या अलीया ॥
- ५३३ भाग्य दिशा अधिकेरी कहाय, तिण सूं आया शासन मांय ।
 तसूं न्यारा थका अवगुण बोलंता, हिव निज आतम निदंता ॥
- ५३४ आप तीर्थकर देव समान, गुण इत्यादिक प्रधान ।
 आगै छोटा हुंता त्यां संतां नै जान, करै नमस्कर तज मान ॥
- ५३५ शासन री सहु रीत प्रसिधी, अंगीकार सहु कीधी ।
 बडै मोती ऋष चैत्र मास रै मांहि, कह्यो अधिक अविनीत नै ताहि ॥
- ५३६ थे कुलवंत जातिवंत धार, किम निकळिया गण बार ।
 जद कहै मन में जांणी हुंती कांई, और री और हुय गई त्यांही ॥
- ५३७ गण बार मै रहिसां यांही, आ सुपनैई जांणी नांहि ।
 मोती ऋष कह्यो अवैई विचारी, आतम भणी सुधारो ॥
- ५३८ अधिक अविनीत बोळ्यो इम वाय, अब तो धार लीधो मन मांय ।
 भीखणजी स्वामी नै श्रद्धो स्यूं जाणो, जद कह्यो तीर्थकर समाणो ॥
- ५३९ भिक्षु भारीमाल ऋषिराय आराधूं, म्हां निकळियां पहिला सऊ साधू ।
 चैत्र मास में ए हुइ बात, मोती ऋषि सूं साख्यात ॥
- ५४० अधिक अविनीत नै पंचम अविनीत, जद दोनूं भेळा कुपीत ।
 थोडै दिवस तूटण हुई प्रसिद्धो, अधिक अविनीत नै छोडी दीधो ॥
- ५४१ पंचम अविनीत तिहां थी सीधी, गणपति नहीं दिशि लीधी ।
 घणां कोसां थी आयो चलाय, गणपति पासै ताय ॥
- ५४२ गणपति पूछ्यां उत्तर दियो एम, सांभळजो धर प्रेम ।
 अढी द्वीपना तस्कर घोर, त्यां सूं टाळोकर अधिका चोर ॥
- ५४३ हूं पिण अढी द्वीपना चोर, ज्यांसूं अधिको घोर ।
 इम कहीनै नवी दिख्या लीधी, छेदोपस्थपनीक प्रसिधी ॥
- ५४४ वैशाख विद सातम लीधी दिख्या, घणा संत देखंता सु सिख्या ।
 अधिक अविनीत री बहु कपटाई, तिण सूं जाणी दियो छिटकाई ॥
- ५४५ ऊपर सूं तो मीठो बोलंतो, पिण मन में छल खेलंतो ।
 बलि मुझ कहितो वच एम, थारै म्हारै ए प्रेम ॥
- ५४६ जाणक पूर्व भवनो रागो, तिण सूं मिल्यो ए सागो ।
 बलि कहितो थे बाजोट ऊपर बैसो नांहि, तो हूं पिण न बैसूं ताहि ॥

- ५४७ थे मोनै बतळावो नहीं किणवारो, जब घणो दोहरो रहै जीव म्हारो।
तिण सूं थे मुझनै बतळावो, मोनै कदे मति छिटकावो॥
- ५४८ इत्यादिक अधिक धुरताई, ते देखी घणी कपटाई।
म्हानै पाना में अक्षर लिख दीधा, ते पिण लोप्या प्रसिद्धा॥
- ५४९ त्याग कीया ते पिण दीधा भांग, एहवा देख्या सांग।
मायावियो धूर्त जाण्यो कूडो, तिण सूं छोड़ आयो आप हजूरु॥
- ५५० तिण री संगत सूं हूओ खुराब, गई लोकां मांहि आब।
हिवै हूं आप तणै सरणै आयो, चरण अमोलक पायो॥
- ५५१ शेष रह्या जे तीन गण बारै, कदा मांहि आवण री धारै।
आर्जियांनै वंदणा किया विण ताहि, गण मांहि लैणा नांहि॥
- ५५२ जय गणी त्याग किया इम तांम, पाड़ण यांरी मांम।
इतरै पश्चिम थली सूं आया समाचार, तीजा अवनीत ना तिणवार॥
- ५५३ ते पिण कहै छै हूं पिण लेउं दिख्या, धारुं सतगुरु नी शिख्या।
अवगुण वाद न बोलै दाम, गावै शासण रा गुण ग्राम॥
- ५५४ इण विधि भायां लिख्यो तिण वार, कागद में समाचार।
जोधाण सैहर तणो चउमास, तेजसी नै भळायो सुवास॥
- ५५५ साधा नै भेळा करी सुखदाय, जय गणपति कहे वाय।
दोयां नै दिख्या देवा री न आणा, राखजे याद सयाणा॥
- ५५६ तेजसी नै इम वचन कही तासो, करायो जोधाण चोमासो।
चोमासो मांहि भायो इक आय, कहै गणपति नै वाय॥
- ५५७ बीजै अवनीत मोनै कह्यो ताम, म्हारै दिख्या लेवा रा परिणाम।
स्वामीजी आज्ञा देवै सुखदाय, तूं कीजै अर्ज अधिकाय॥
- ५५८ ए गुण थारो भूलसूं नांय, चरण साहज्य सुखदाय।
इत्यादिक विविध अर्ज तिण कीधी, जब जय गणी आज्ञा दीधी॥
- ५५९ चउमासो उत्तरियां धर खंत, तेजसी आदि दे संत।
पश्चिम थली कांनी विचरी तिवार, कियो पाली सैहर कांनी विहार॥
- ५६० बीजो तीजो बिहुं अवनीत ताहि, मिलिया गांम दूदाडा मांहि।
बीजै अवनीत कह्यो तिणवार, मोनै दीजै संजम भार॥
- ५६१ दोय दिवस बहु कीधी अर्ज, इण री चारित्र लेवा री गरज।
परभव री इण रै चिंता प्रसिद्धी, तिण सूं आतमा सूधी कीधी॥
- ५६२ अर्जियां नै भाव सूं बे कर जोड, वंदणा कीधी मांन मोड।
नरमाई विनय भक्ति बहु कीधी, तब तेजसी दीक्षा दीधी॥

- ५६३ नरक निगोद ना दुख सूं धडक्यो, तिण सूं चारित्र लेई हरख्यो।
 संवत उगणीसै तेवीसै वास, माह सुद बीज उजास॥
- ५६४ इम बीजै अवनीत नवी दिख्या लीधी, तेजसी कनै प्रसिद्धी।
 पछै विहार करी आया गणपति पायो, देश थली रे माह्यो॥
- ५६५ तीजो अविनीत पिण साथै आयो, गणपति पासै ताह्यो।
 बीजो अविनीत आत्म निज निंदै, पूर्व पाप निकंदै॥
- ५६६ सइकडां लोक सुणंता तांम, करै शासण रा गुण गांम।
 गण मांहि बहु विधि दोष बताया, मोह कर्म उलझाया॥
- ५६७ गण बारै नीकळ डूबण रो पंथ लीधो, मोटो अकार्य कीधो।
 म्हे गण बारै निकळिया ताह्यो, पिण हूं संजम सरधत नाह्यो॥
- ५६८ टाळोकर में नहीं चरण रो खेरो, इम बोलै वचन सुमेरो।
 भाग्य जोगै मोनै तेजसी मिलियो, तिण सूं मन रो मनोरथ फळियो॥

अन्य मार्ग नी गाथा—

- हरिदास नै हरि मिल्या रे, आडै रसते आय।
 खावण दीधी मोठ बाजरी, दूध पीवण नै गाय॥
 लजा हर राख लेही॥
- ज्यूं तेज ऋषी मुझनै मिल्या रे, आडै गेलै आय।
 मुंह मांग्या पासा ढळ्याजी, चरण दीयो चित ल्याय॥
 चरण जुग गणपति नाजी, हूंतो वांदू बे कर जोड़॥
- ५६९ इम विविध प्रकार शासण नै दिढावै, बहु लोक सुणी हुलसावै।
 तीजा अवनीत भणी इम ताह्यो, जय गणि बोल्या वायो॥
- ५७० तूं अधिक अविनीत तणी दिल धार, जो तिण दिस कियो विहार।
 तो शासण मांहि लेवा रा जाण, जावजीव पचखांण॥
- ५७१ मुझ पट्ट ए मघराज महा भाग्य, जावजीव तिण रै पिण त्याग।
 गिंवार नै जिम चरण न देवां, तिम तोनै पिण मांहि न लेवां॥
- ५७२ जब तीजै अविनीत हीया बीचतोली, गांठ अभ्यंतर खोली।
 विद पक्ष चैत तेरस दिन सारो, बोल्यो गणपति नै तिण वारो॥
- ५७३ आर्जियानै वंदणा करी मान मोड, बोल्यो गणपति नै कर जोड़।
 चरण अमोलक सखरी शिख्या, दीजै मोनै दीक्षा॥

१. लय-दलाली लालन की.....

२. लय-पुन्यवंतो जीव पाछल भव.....

- ५७४ गणपति पूछी श्रद्धा अमूल, आप कहो ते सर्व कबूल।
आज्ञा बारै त्यांनै जाणूं महा पापी, स्थिर चित एहवी स्थापी॥
- ५७५ गणि कहै-अढी द्वीपना चोरो, तिण सूं टाळोकर अधिकेरो घोरो।
जब ओ कहै आप श्रद्धो ते सोय, तेहिज श्रद्धा मोय॥
- ५७६ जब छेदोपस्थापनीक चरण दीधो, सफल जमारो कीधो।
सर्व संता रै आगै मान मोड़, बांदै बे कर जोड़॥
- ५७७ गुण गणपति ना गावै तज मान, कहै आप तीर्थकर समान।
षट जणा निकळिया तिण वार, अधिक अविनीत रह्यो गण बार॥
- ५७८ पंच जणा इम गण में आय, नवो चरण लियो चित ल्याय।
गण बारै थकां तो अवगुण बोलंता, हिव गण रा गुण गावंता॥
- ५७९ अन्यमती स्वमती आगै अगाध, बहु बोलता अवर्णवाद।
हिव सईकड़ां लोकां में शासण दिढावै, निज अपराध खमावै॥
- ५८० कह-टाळोकर गधा समान, त्या में चरण रो खेरो म जान।
गधा रै मुंहपति बांधै कोय, तो चारित्र कदेय न होय॥
- ५८१ तिम गण बार टाळोकर ताहि, त्यामें पिण चारित्र नाहि।
इह विधि टाळोकरां नै निषैधै, कर्म पूर्व कृत भेदै॥
- ५८२ उगणीसै तेवीसै बर्स उदारू, सुदि वैशाख अष्टम चारू।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसायो, जयजश जोड़ सुहायो॥

टाळोकरों की ढाळ

दूहा

- १ भीखणजी स्वामी भला, करिवा जग उद्धार।
भवि जीवां रा भाग सूं, अवतरिया इण आर॥
- २ सिख सिखणी करणा सहु, इक गणपति रै नाम।
संवत् अठार बतीस में, धुर मर्याद तांम॥
- ३ कर्म जोग इक दोय तिण, नीकलै गण थी बार।
तीरथ में गिणवा न तसु, ए भिक्खू वच सार॥
- ४ कहुं पैताळीसै लिखत, गण माहै वा जाण।
निकळ्यां अवगुण अंस ही, बोलण रा पचखांण॥
- ५ गण थी निकळ्यां अन्य प्रति, ले जावणां नहीं साथ।
ए पिण तसु पचखांण छै, इम भिक्षु आख्यात॥
- ६ कहुँ गुणसठै लिखत फुन, कर्म जोग गण बार।
निकळै तास न सरधवूं, तीरथ च्यार मझार॥
- ७ कदा सर्व साधु भणीं, असाधु सरधावा ताहि।
फैर दीक्षा लै तेह नै, साधु सरधवूं नाहि॥
- ८ कर्म उदय गण थी टळ्यां, हुंता अणहुंता जाण।
अवगुणवाद ज अंस ही, बोलण रा पचखांण॥
- ९ किण ही मुनि अज्जा तणीं, संक पडै ज्यूं सोय।
बोलण रा पचखांण छै, ए भिक्षु वच जोय॥
- १० (कदा) त्याग भांग विटळ हुवै, हळुकर्मी न मानै ताहि।
मानै उण सरीखो विटळ, ते लेखा में नाहि॥
- ११ श्रद्धा रा क्षेत्रां मझे, रहिवा रा पचखांण।
इक भाई बाई हुवै, त्यां पिण त्याग सुजाण॥
- १२ बाटै बहितां एक निशि, रहै कारणै जाण।
ते पांच विगै नै सूखडी, खावण रा पचखांण॥
- १३ गण में जाचै फुन लिखै, जो निकळै गण बार।
साथै ले जावण तणां, तसु पचखांण विचार॥
- १४ इत्यादिक भिक्षु भली, बांधी वर मर्याद।
हळुकर्मी हरखै सुणी, पामै अति अह्माद॥
- १५ भारीकर्मा जीवड़ा, सांभळ धरता द्वेष।
ऊंधा अर्थ करै तिकै ज्यां रे, काळी कर्म कुरेख॥

ढाल १

- १६ 'कर्म उदय गण थी नीकळ नै, साधां रा अवगुण गावै रे।
विविध प्रकारै दोष परूपै, मन मानै ज्यूं गोळा चलावै रे॥
निंदक टाळोकर रो संग न कीजै॥
- १७ स्वाम भीखणजी री मर्यादा भांगी, अवगुण बोलण लागो।
बलि साधुपणा रो नाम धरावै, करै विविध प्रकारै ठागो॥
- १८ कह्यो लिखत पैताळीस अवर भणी जे, साथै ले जावण रो त्यागो।
ते पिण भिक्षु री मर्यादा भांगी, कुळ नै लगायो दागो॥
- १९ हुंता अणहुंता अवगुण अंश पिण, बोलण रा पचखांणो।
ए लिखत गुणसटै भिक्षु मर्यादा, ते पिण भांगी मूढ अयाणो॥
- २० इण सरधा रा क्षेत्रां विषै रहिवा रा, त्याग कह्या भिक्षु स्वामी।
ए पिण वचन उथाप्यो अज्ञानी, क्षेत्रां में रहिवा लागो हरांमी॥
- २१ गण माहै पत्र लिखै फुन जाचै, ते पिण साथै ले जावणा नाहि।
ए पिण भिक्षु नी मर्यादा भांगी, कुमति हिया में वसाइ॥
- २२ अनंत सिद्धां री साख करी नै, नित्य प्रति हाजरी मांह्यो।
अवगुण बोलण रा त्याग करतौ थो, ते पिण दिया उड़ायो॥
- २३ बलि मुख सूं हुं तो भीखणजी नै, सरधु ववहार में साधो।
त्यां रा वचन उथापै अज्ञानी, तिण रै किण विधि होसी समाधो॥
- २४ दोष अनेक बतावै टोळा में, तिण नै पूछा करै कोई।
थे दोषीला भेळा घणा वर्ष रहि नै, आत्मा काय बिगोई॥
- २५ थे घणा वर्षा लग दोषण सेवी, साधुपणा रो नाम धरायो।
एहवो कपट करी नै लोकां नै डबोया, थारो छूटकौ किण विधि थायो॥
- २६ बलि टाळोकरै किण ही पूछा कीधी, थे गण थी नीकळ ताह्यो।
फैर दीक्षा लीधी कै नहि लीधी, जब औ कै दीक्षा लीधी नाह्यो॥
- २७ म्है इतरा वर्ष रह्या दोषीला भेळा, तिण रो चिहुं मास नो दंड लीधो।
फैर दीक्षा म्हानै नही आवै, इह विधि उत्तर दीधो॥
- २८ रिसिराय थकां इक गण थी नीकळीयो, ते नंदी उतरयां कहितो पापो।
साधु मात्रो परठ्यां पिण पाप सरधतो, कीड़ी पूंज्या पिण पाप री थापो॥
- २९ तिण रा श्रावक साधां रा धेष रा घाल्या, जावा लाग़ा है इण रै पासो।
पिण औ तो नंदी उतरीयां धर्म सरधै, त्यानै इतरो विवेक न तासो॥

१. लय—चतुर विचार करी नै देखो.....

४२२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ३० उण टाळोकर रा श्रावक इण नै पूछै, थे उण नै साधु सरधो कै नाह्यो।
जब कहै पाळयो है तो ते साधु छै, म्हे तो देख्या नहीं ताह्यो॥
- ३१ गण मांहिलै एक साधु तसु पूछ्यौ, थे सरधो भिक्षु नै कांइ।
जब कहै चोखा साधु सरधू छूं, इम सुद्ध बोल्यो त्यां ही॥
- ३२ नंदी उतरयां पाप सरधतो तिण रौ, नांम लेइ पूछा कीधी।
जद कह्यो तिण नै हुं असाधु सरधू छूं, बात कही इम सीधी॥
- ३३ जब टाळोकर नै तिण साधु कह्यौ बलि, थे मन में तो असाधु जाणो।
लोक नै कहै पाळ्यो है तो साधु छै, इसड़ी क्यूं कह्यौ कपट थी वाणो।
- ३४ जब कहै द्रव्य क्षेत्र काळ भाव, देखी नै बोलणी वायो।
जब साधु जाण्यौ ओ तो कपट कर नै, लोकां नै न्हाखै फंदा माह्यो॥
- ३५ जो नंदी उतरयां पाप सरधतो तिण रा, श्रावकां रे मूहदे कहै असाधो।
तो उण रा श्रावक इण नै नही मानै, तिण सूं करतो कपट विवादो॥
- ३६ नंदी उतरयां पाप सरधतो तिण रा, श्रावका नै कहै अवधारी।
किण नै कहै उवे हुंता आचारी, किण नै कहै क्रियावंत भारी॥
- ३७ बलि किण नै कहै उवे तो उत्तम पुरुष छा, किण नै कहै कहां साधो।
किण नै कहै उणां रा बोल देखता, साधु कहां निराबाधो॥
- ३८ किण नै कहै यां रा पोथी पाना, ए देख लेवो म्हारै पासो।
किण नै कहै भाया कहै ज्यूं पाळो, साधु कहां छा तासो॥
- ३९ इम झूठ कपट करै विविध प्रकारै, मायावियो डाकोत ज्यूं बोलै।
तिण नै पर भव री चिन्ता नहीं दीसै, मोह कर्म वशि झोलै॥
- ४० जे टाळोकर नंदी उतरया पाप सरधतो, तिण नै मन में तो असाध जाणै।
पिण चौड़े असाधु परुपतो सँकै, तिण रा श्रावकां कनै उण नै वखाणै॥
- ४१ स्वाम भिक्षु कह्यौ महाजन विण जे, अवर नै दीक्षा म दीजै।
दुषम काल प्रभाव है तिण सूं, चरण पाळणौ दुकर कहीजै॥
- ४२ ते पिण भिक्षु रौ वचन लोपी नै, दीधी अवर नै दीख्या।
मोह कर्म मदमस्तपणै रे, छोड़ दीधी वर भिरख्या॥
- ४३ गण थी नीकळ्यां जाझा तीन वर्ष थया, सिरदारगढ़ थी ताह्यो।
नंदी उतरया पाप सरधतो तिण रो, श्रावक सुजाणगढ़ आयो॥
- ४४ जयाचार्य तिण नै पूछा कीधी, थे इण नै सरधो छो कांई।
जब कह्यो म्हे तो साधु सरधा छां, इम दीयो उत्तर त्यांही॥
- ४५ नंदी उतरीया पाप सरधतो, बलै तिण री पूछा कीधी ताह्यो।
जब कह्यो त्यां नै इ साधु सरधा छां, जब जयाचार्य कही वायो॥

- ४६ उ वे तो म्हांनै असाध सरथता, ए इता वर्ष रह्या म्हां मांही।
उणां रै लेखै तो यां मांहे, पिण साधुपणो थो नाही॥
- ४७ थारे लेखे तो साधुपणो न हुंतो, नीकळीया पछै दीक्षा न लीधी।
हिवै साधुपणो या में किण विधि आयो, आ देख लेवो बात सीधी॥
- ४८ थे संसार में करो लाखां रा लेखा, थानै इतरी समझ पड़ै नाह्या।
जब इण कह्यौ दीक्षा नवी तो नही लीधी, नवी लेणी तो चाहीजै ताह्यो॥
- ४९ पछै ते सिरदारगढ़ में जइ नैं तिण नै, नवी दीक्षा, दिवरावी।
दीक्ष न लेवै तो श्रावक न मानै, तिण रै मोटी विपति पड़ी आवी॥
- ५० महाजन विण पहिला दीक्षा दीधी थी, तिण नै पिण पाछी दीक्षा दीधी।
श्रावक श्राविका रे अर्थे अज्ञानी, एहवी कपटाइ कीधी॥
- ५१ जद सिरदारगढ़ में आर्यावां हुंती, त्यां नै तिण श्रावक कही आयो।
यां नै तो म्है सुद्ध कर दीधी छै, इम नवो साधुपणो दिवराव्यो॥
- ५२ साधुपणों ते नवो अबै लीधो, गण थी नीकळ इता वर्ष ताह्यो।
असाधु थका साधु नाम धरायो, एहवो मोटो ठागो चलायो॥
- ५३ गण मांहे तौ बहु दोष बतावता, मुख सूं कहता म्है साधो।
लोकां नै समाई में वंदणा कराई, डबोया बहु जन नै बाधो॥
- ५४ पोता नै बहिराया में धर्म परुपता, जब तौ देता अन्न पाणी।
पेट रै काजै बहु लोक डबोया, आ दुर्गति नी नीसाणी॥
- ५५ साधुपणों तौ अबै लीधो छै, इतरा वर्ष तौ ठागो चलायो।
यां ठग-ठग लोकां रा माल खाधा, यां रौ छूटकौ किण विधि थायो॥
- ५६ इतरा वर्ष ठागो करता नही संक्या, साधु वाजतां ते भूसावायो।
बलै गण रा साधा में दोष बतावै, यां री प्रतीत किण विधि आयो॥
- ५७ इतरा वर्ष ठागा सूं काम चलावतां, डरिया नही मन मांह्यो।
तो गण मांहे दोष अणहुंता बतावता, ए किण विध डरसी ताह्यो॥
- ५८ ते साधां में दोष कहे ते मन में, दोष न जाणतां होसी ताह्यो।
एक ओ पिण ठागो चलावता होसी, यां री प्रतीत किण विधि आयो॥
- ५९ जद कहै म्हानै तो खबर पड़ी नही, तिण सूं पहिला लियो छैदो।
खबर पड़्या पछै नवौ साधुपणो, लीधो है आण उमेदो॥
- ६० जो खबर पड़ी नही तो गण थी नीकळ, किम बहु दोष बताया।
ते पिण जाझा तीन वर्ष लग, दोष कही बहु जन भरमाया॥
- ६१ बलि लोकां नै कहता सूत्र में तौ, बरज्यो ए दोष सेवै छै विशेषो।
बलि कहै म्हानै तो खबर पड़ी नही, ए प्रत्यक्ष झूठाबोला देखो॥

- ६२ साधां रै स्थानक आर्या नै वेसणो, वज्ज्यो कहैता सूत्र मांही।
बलि कहै मौ नै तो खबर पड़ी नही, यां झूठा नै किम होसी मोखो॥
- ६३ ते पिण जाझा तीन वर्ष लग, खबर पड़ी नही केमो।
ते पिण भोळा लोकां नै ठगवा काजै, झूठ बोलै छै एमो॥
- ६४ कोइ राजसभा में आयो धुतारो, एक मिनका नै साथै लेइ।
कहै लाख रुपया कोइ देवो मोनै, तो देवू मिनको एही॥
- ६५ जद किण ही पूछ्यौ— इण में स्यूं गुण एहवो, जद कहै बारै कोस रे मांही।
इण री बास थकी नही आवै उंदर, एहवो बोल्यो झूठ बणाई॥
- ६६ उण मिनका री कान कट्यौ देखी तिण नै, किण ही बुद्धिवंत पूछ्यो ताह्या।
थां रे इण मिनका री कान कट्यौ किम, ते कारण मोय बतायो॥
- ६७ जब कहै इक दिन नींद में सूतां, कान कुरट्यो उंदर आवी सीधो।
तू कहतो बारै कोस में नही रहै मूसो, इण रा ठागा री उघाइ कीधौ॥
- ६८ तिम जाझा तीन वर्ष लग दोष कह्या बहु, सूत्र रो नाम लेइ अज्जणो।
बलि कहै खबर पड़ी नही मौने, ए प्रत्यक्ष ठागो पिछाणो॥
- ६९ कहै बारै कोस में नही उंदर, कान कुरट्यां री खबर न पाई।
ज्यूं गण मांहे थाप रा दोष केहतो बहु, बलि कहै खबर पड़ी नाही॥
- ७० सिरदारगढ़ वाळा नै लेखे, जो साधु बतावता नाही।
तौ घणां वर्षा लग तयारै लेखे, ए ठागो चलावतो दीसै त्यांही॥
- ७१ न्याय मार्ग लेखे तौ गण सूं टळिया, तेहिज दिन सूं ठागो।
नवी दीक्षा लीधी ते पिण ठागौ, गण धी नीकळ लगायो दागो॥
- ७२ बलै कहै टाळोकर भीखणजी नै, सरधू ववहार में साधो।
बलै त्यांरा बोला में दोष पसूपै, करै घणो विखवादो॥
- ७३ स्वाम भिक्षु छतां साधा रे स्थानक, अज्जा वेसती आयो।
तिण में सूत्र नां अर्थ री समझ पड़्यां विण, अणहुंतो दोष बतायो॥
- ७४ कियो प्रथम चौमासो तिण ग्रामे, बलि द्वितीय वर्ष अवधारा।
तिण ग्राम चौमासो करै बडां लारे, इम दोष कहै अविचार्यो॥
- ७५ वर्ष सत्तावनै भिक्षु रै साथै, हेम कीधौ पुर चउमासो।
हेम दीक्षा बड़ा वैणराम जी साथै, पुर कियो अठावनै बासो॥
- ७६ ए पिण स्वाम भिक्षु री बांध्यौ, सुद्ध जीत ववहारो।
तिण मांहे मूर्ख दोष बतावै, कर-कर तांण गिमारो॥
- ७७ आसरै वर्ष पचासै टळिया, रूपचंद अखेरामो।
त्यां दोढ सै आसरै, दोष बताया, स्वाम भिक्षु में तामो॥

- ७८ तिहां पहिले दिवस साधां घर फरस्या छै, दिन बीजै नवा आयां पासो।
आगला साधां अर्थे घर पशविता, स्वाम भिक्षु सुबिमासो॥
- ७९ साधां रे स्थानक बेसे साधवियां, ए भिक्षु छतां रीत ताह्यो।
बलि छोटो किमाइचो खोलाय बहिरता, असणादिक मुनिरायो॥
- ८० ए पिण भिक्षु में दोष बतायो, रूपचंद अखेरांमो।
तेहिज दोष हिवै ए भाषै, सुद्ध ववहार में तामो॥
- ८१ बोल इत्यादिक भिक्षु छतां रा, तिण में कहै निश्चै दोषो।
सुद्ध जीत ववहार उथाप्यो अज्ञानी, ते किणविधि जासी मोखो॥
- ८२ छोटो किमाइचो खोलाइ अनादिक, भिक्षु छता लेता ताह्यो।
निश्चै दोष कहै छै तिण माहै, कुड़ा कुहेत लगायो॥
- ८३ ते टाळोकर झूठी हुंडी वणाइ, छोटी मोटी लुगाइ री जाणो।
किमाइ नै किमाड़ीया ऊपर, दृष्टांत दीधो अयाणो॥
- ८४ किमाइ नै किमाड़ीया ऊपर, छोटा मोटा गर्भ रो दृष्टांतो।
स्वाम भिक्षु दियो तेह उथापी, कर रह्यो खेंच अत्यंतो॥
- ८५ कहै छोटी लुगाई सरीषो किमाइयो, मोटी बाई सरीषो किमाइो।
छोटी मोटी रौ संघटो साधु नै न करणो, तिम बिहुं खोलाइ न लेणो आहारो॥
- ८६ बाबीस 'टोळा तणां भेषधारी, भिक्षु स्वाम छता तेहो।
किमाइ अने किमाड़ीया उपर, दृष्टांत देता एहो॥
- ८७ टाळोकर पिण तेहीज दृष्टांत, देवा लागो मूढ बाळो।
बले कहै भिक्षु ने साधु सरधु छूं, इण रे आयो अभ्यंतर जाळो॥
- ८८ बलै किमाड़ीयो निषेद काजै, मोटी छोटी लुगाई रौ दृष्टांत देवै।
यां दोया रौ साधु नै संघटो नही करणो, ज्युं किमाड़ीयो इ आहार न लेवै।
कुगुरु चिरत सुणो भव जीवां॥
- ८९ संवत् अठारै वर्ष तेतीसै, जेठ सुदि बारस मंगलवार।
ए कुगुर तणां चारित्र प्रकट कीधा, सैहर पीपाइ तिण रै मझार॥
- ९० छोटी लुगाई ज्युं कहै किमाइयो, बले कहै भीखणजी सो साधो।
आप री भाषा रो आप अजाण, तिण रे मोटी मिथ्यात री व्याधो॥
- ९१ छोटी लुगाई सरीषो किमाइयो केहतो, मूर्ख मूळ न लाजै।
बलै कहै भीखण जी नै साधु सरधु छूं, तिण रा अपजस बाजा बाजै॥
- ९२ छोटी लुगाई सरीखो किमाइयो थाप्यो, दी उपमा अति भूडी।
एहवो अजोग तिण दृष्टांत दीधो, तिण री प्रत्यक्ष खोटी हुंडी॥
- ९३ छोटी लुगाई सरीखो किमाइयो थाप्यो, ते तो असुभ कर्म प्रतापो।
अधिक तांण करी दोष बतावै, तिण रै प्रगट्या पूर्व पापो॥
- ४२६ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

- ९४ अनैक टाळोकर आगै हुआ था, केइ कह्यो किमाइया में दोखो।
पिण इसडो दिष्टांत दीधो नहीं सुणियो, इण ओ दृष्टांत दे घाली तोखो॥
- ९५ भिक्षु संथारो सीझौ ते वर्ष तणें, दिन करै टाळोकर उपवासो।
उपवास न करै तो विगय छ टाळै, बले साधु कहै गुण रासो॥
- ९६ ते भिक्षु तौ किमाइयो खोलाए बहिरता, तिण ऊपर भेषधारी।
छोटी मोटी लुगाई रौ दृष्टांत देता, ओ पिण कहिवा लागौ अविचारी॥
- ९७ भेषधारी तो भिक्षु नै साधु न सरथै, तिण सूं लुगाई रो दृष्टांत देवै।
पिण ओ तौ साध सरथै, दृष्टांत देइ इतरी पिण मूढ न बेवै॥
- ९८ ते टाळोकर ने कोई पूछा करै इम, कोइ छोटी लुगाई रो तेहो।
जाणी संघटो करै ते साधु कै असाधु, जब कहै असाधु छै जेहो॥
- ९९ तूं छोटी लुगाई सरीखो कहै छै किमाइयो ते किमाइयो खोलाए आहारो।
स्वाम भीखणजी लैता जिणां ने, तूं किम सरथै अणगारो॥
- १०० जब कहै ते तो किमाइया रो लैता, जाणी नै सुद्ध ववहारो।
त्यां तो दोष जाणी नही सेव्यो, तिण सूं ते सुद्ध अणगारो॥
- १०१ तिण नै कहिणो त्यां दोष न जाणो, जो त्यांनै दोष नहीं लागै।
तो हिवड़ा पिण साधु दोष न जाणे, त्यां रो व्रत किम भागै॥
- १०२ तिण टाणै तो रूपचंद टाळोकर, किमाइया में दोष बतायो।
स्वाम भिक्षु तो निर्दोष जाण्यो, तिण सूं त्यां नै दोष नहीं थायो॥
- १०३ ज्यूं हिवड़ां टाळोकर किमाइया में, दोष कहै छै सोयो।
पिण वर्तमान गणी दोष न जाणै, तो त्यांनै दोष किम होयो॥
- १०४ इम पहिले दिन घर फरस्था, दूजै दिन नवा साधा पासो।
और साधां अर्थे घर फरस्थावता, स्वाम भिक्षु सुविमासौ॥
- १०५ बोल इत्यादिक भिक्षु सेवंता, निरदोष जाणी सोयो।
ते स्वाम भीखणजी नै दोष न लागो, तो हिवड़ा दोष किम होयो॥
- १०६ इम पूछ्यां थकां सुद्ध जाब न आवै, जब अकल-विकल मुख बौले।
न्याय री बात कह्या बक ऊठै, मोह कर्म वस झोळे॥
- १०७ शतक अष्टम अष्टमुदैशै भगवती, बली सूत्र ववहार मझारो।
बलि पंचमै ठाणा रे द्वितीय उदैशै, प्रभु कह्या पंच ववहारो॥
पंच ववहार सुणो भव जीवा॥
- १०८ आगम सूत्र आज्ञा नै धारणा, पंचमो जीत पिछाणो।
ए पंच ववहार प्रवचतो साधु, आज्ञानो आराधक जाणो॥

पांच व्यवहार—

- १०९ केवल—अवधी ज्ञानीर मन—पञ्जव३ चउद४ पूर्व दस५ सारो।
नव६ पूर्वधर ए षट विधि, है धुर—‘आगम-व्यवहारो’।
आगम व्यवहार सुणो भव जीवां ॥
- ११० जघन्य थकी जे सूत्र निशीथज, तास जाण सुविचार।
आठ पूर्वधर उत्कृष्ट कहियै, द्वितीय-‘सूत्र-व्यवहार’ ॥
- १११ देशांतर जे रह्या गीतार्थ, तेह नै पासे ताम।
जेह अगीतार्थ साधू नै मूकीजै, तिण ठाम ॥
- ११२ मूढै अर्थ- पद करि दूसन नो, प्रायश्चित पूछावै।
तास आज्ञा थी दीयै प्रायश्चित, ते- ‘आज्ञा-व्यवहार’ कहावै ॥
- ११३ स्थविरादिक नै पास धारयो, जे प्रायश्चित पिछाणी।
तेह ‘धारणा-व्यवहार’ चउथो, धारणा थी करै जांणी ॥
तुर्य- ‘धारणो- व्यवहार’ कह्युंए ॥
- ११४ पक्षपात रहीत स्थापै आचार्य, ते पंचम- ‘जीत- व्यवहारो’।
द्रव्य क्षेत्र काळ भाव देखी नै, बलै संघयणादि विचारो ॥

सोरठा—

- ११५ ठाणांग पंचम ठाण रे, द्वितीय उद्देशक वृत्ति में।
जीत व्यवहार सुजाण रे, आख्यौ इम कहिये तिको ॥
- ११६ जे बहुश्रुत बहु बार रे, प्रवर्त्यौ वज्यौ नथी।
वर्ते वर्त्या लार रे, कार्य है ए जीत करी ॥
- ११७ ए^१ पंच व्यवहार प्रवर्ततो साधु, आज्ञा नो आराधक होयो।
एहवो श्री जिनराज कह्यो छै, पाठ विषै अवलोयो ॥
- ११८ सूत्र व्यवहार नी टीका विषै कह्यो, धुर च्यासूं व्यवहारो।
तीर्थ अंत ताई नहीं रहसी, जीत तीर्थ लग सारो ॥
- ११९ पंच व्यवहारपणें प्रवर्ततो आज्ञा नों, आराधक आख्यो।
इण लेखे धुर व्यवहार आगम छै एहवो, जीत प्रभु दाख्यो ॥
- १२० नवकार ना पद पंच परुण्या, पांचू इ छै बंदनीको।
तिमहीज ए व्यवहार पंच है, तंत न्याय तहतीको ॥
- १२१ साधु-साधवी रे लांबी पिछेवड़ी, सूत्र विषै कही नाहि।
लांबी पंच हाथ नी थापी, जीत व्यवहार थी त्यांही ॥

१.लय—चतुर विचार करी नै देखो।

४२८ तेरापंच : मर्यादा और व्यवस्था

- १२२ चौथे ठाणै आर्यावा नै, पछैवड़ी च्यार कही जग तारो।
एक पिछेवड़ी बे कर चौड़ी, एक चोड़ी कर च्यारो॥
- १२३ दोय पिछेवड़ी तीन हाथ नी, सूत्र विषै वच एहो।
जीत ववहार थी च्यारुं पिछेवड़ी, चौड़ी तीन हाथ नी करेहो॥
- १२४ बावन अणाचार कह्या सूत्र में, अंजन घाल्या अणाचारो।
कारण अकारण रो नाम न खोल्यो, समचै वज्यो जग तारो॥
- १२५ कारण पड़िया अंजन घालै, साधु नै दोष नै लागै।
ए पिण जीत ववहार थी जाणो, साधु रौ व्रत न भागै॥
- १२६ सुंगध सूंध्यां अणाचार कह्यौ प्रभु, बलि लियां अणाचारो।
ते जीत ववहार थी कारण सेवै, दोष नहीं छै लिगारो॥
- १२७ गळा हेठला जे केश उपाड़ै, तौ सूत्र में कह्यो अणाचारो।
ते जीत ववहार थी कारण पड़्यां थी, उपाड़्यां नहीं दोष लिगारो॥
- १२८ दंत धोयां अणाचार कह्यो प्रभु, ते कारण पड़िया सोयो।
जीत ववहार थी दांत धोवै, तो दोष नहीं छै कोयो॥
- १२९ आरीसादिक में मुख देखै तो, अणाचार अवलोयो।
जीत ववहार थी कारण पड़िया, मुख देख्यां दोष न जोयो॥
- १३० नित्य पिंड, लिया अणाचार कह्यो प्रभु, ते जीत ववहार थी जासो।
कारण पड़िया नितपिंड लैवै, दोष न कहियै तासो॥
- १३१ सूत्र में तो समचै नित्य पिंड वज्यो, कारण पड़िया लेणो कह्यो नाहि।
जीत ववहार थी स्वाम भीखणजी, लेणो कह्यौ कारणै त्यांही॥
- १३२ इमहिज नवा आया मुनि पासै, पहिलै दिन फरस्या घर फरसावै।
इमहिज अन्य क्षेत्रे लियै नित्य पिंड, ए जीत ववहार कहावै॥
- १३३ इमहिज चौमासा ऊपर चौमासो, करै बड़ां रै लारै।
ए पिण जीत ववहार भिक्षु रो, बुधवंत न्याय विचारै॥
- १३४ छोटो किमाड़्यो खोलाइ वहिरै, असणादिक चिहुं आहारो।
ए पिण जीत ववहार बाध्यौ छै, स्वामी भीखणजी सारो॥
- १३५ सवा हाथ रे आसरै बारी खोली, नै सैहर कांकरोली मांढ्यो।
स्वाम भिक्षु निशि दिशां पधार्यां, दोष कह्यो नहीं ताह्यो॥
- १३६ आर्यावां विहार करी नै आवै, उतरै खोली किमाड़ो।
अथवा तालो खोली नै उतरै, ए भिक्षु बांध्यो जीत ववहारो॥
- १३७ सोजत सैहर में सात ठाणां सु, अज्जा बरजूजी आया।
स्वाम भीखनजी किमाड़ खोलाए, सायै आय उतराया॥

- १३८ शेषै काळ सोल हाथ खंडियो, चौमासा में अणगारो॥
 वीस हाथ खंडियो राखै, ए भिक्षु बांध्यो जीत ववहारो॥
- १३९ शेषै काळ बीस हाथ खंडियो, चौमासै कर पणवीसौ॥
 अज्जा राखै ते भिक्षु नो बांध्यो, जीत ववहार जगीसो॥
- १४० हाथ रा पनां जे नव हाथ नो, नवौ बिछावणौ जाणी॥
 साधु-साधवियां राखै ते पिण जीत, ववहार पिछाणी॥
- १४१ खंडिया रा कळप रो करै, बिछावणो नै पड़ला दोयो॥
 तिण पेटी चौथी पिछेवड़ी चवदै हाथ नी, जीत ववहार थी जोयो॥
- १४२ अधिक उपधि ग्यारै थिवर रै, कह्या ववहार आठमें बाणो॥
 तेह विषै राखणौ भाख्यौ, पिण न कह्यो तास प्रमाणौ॥
- १४३ जीत ववहार थी जोगपटौ ए, साढा सात हाथ उनमानो॥
 तेह थकी शिर वा पग बांधै, अथवा पहिरै ओढै जानो॥
- १४४ आचारंगादिक कालिक सूत्र नी, दिवस रात्रि नी ताह्यो॥
 प्रथम चरम पैहर सज्झाय करणी, विचलै पहर करणी नाह्यो॥
- १४५ जीत ववहार थी विचलै पहर पिण, सूत्र अर्थ बिहु सोयो॥
 वांचै सुणावै तो दोष नही छै, निकेवल पाठ गुणवुं न कोयो॥
- १४६ साधां रै चोलपटो प्रभु भाख्यो, पिण तास प्रमाण 'न' निरणो॥
 जीत ववहार थी लांबो पंच कर, चौड़ो देह प्रमाणै करणो॥
- १४७ इमहिज आर्यावां रे साड़ी सूत्र में, नहीं कह्यो प्रमाणो॥
 जीत ववहार थी लांबी आठ करै, चौड़ी देह प्रमाणे पिछाणो॥
- १४८ कह्यो उदक हाथां सूं लेणो, धुर अंगै ते जीत ववहार थी बेणो॥
 सूंखड़ी अन्य विगय नहीं लेणी, उपधि कारणे सूं लेणो॥
- १४९ द्वितीय आचारंग द्वितीय अध्ययनै, दूजा उद्देशा मझारो॥
 मास खमण रहि पाछौ आवै तौ, दुगणा दिन काढणा बारो॥
- १५० जीत ववहार थी दुगणा दिन जे, विण काढ्यां आवै ताह्यो॥
 तो एक दोय रात्रि रहै साधु जी, दोष नही तिण मांह्यो॥
- १५१ आवश्यक चौथे भंड उपधि बिहु टक, कह्या पड़िलेहणा सारो॥
 बिण वावरया उपधि पोथ्यां, इकटक ए पड़िलेहै जीत ववहारो॥

भिक्षु कृत

- १५२ राख रेत पोथी आखो थान कपड़ा रौ, विण वावर्यौ थान उपधि छै मांहि॥
 ते पिण एक बार तौ अवश्य पड़िलेहै, विण पड़िलेह्यां न राखै कांइ॥
- झूठ बोलां रो संग न कीजै॥

- १५३ बेहरी आया पछै आगली वस्तु, बलि वैहरै जइ बहु बारो ।
ए पिण स्वाम भीखणजी बांध्यो, निरदोषण जीत ववहारो ॥
- १५४ शिर धोबा रो उदक, ढाळादिक रो-जळ गोबर कारखाना रौ पाणी ।
पछै नीपनौ ते पिण बेहरै, जीत ववहार थी जाणी ॥
- १५५ चौलपटा रो मुंहढो सीवै, सूत्र विषै नही वायो ।
जीत ववहार थकी ए जाणो, दोष नहीं तिण माझो ॥
- १५६ मुहपोतीयां तौ कही सूत्र में, पिण नहीं कछा पुड़ तासो ।
जीत ववहार थी डोरो आठ पुड़, वाउकाय नी जयणां विमासो ॥
- १५७ पाटी पटड्यां टोपसी प्रमुख, त्यां रंग रोगांन लगावै ।
ते पिण जीत ववहार थी, जाणो, तिण रो कुण दोष बतावै ॥
- १५८ ताव प्रमुख नै मूच्छा मिटावण, राति रा राख लगावै ।
ए पिण जीत ववहार थी जाणौ, बुद्धिवंत न्याय मिलावै ॥
- १५९ धुर पोहर तमाखू वहिरी पाड़ियारी, बलै ओषद वहिस्थो पाड़ियारो ।
दुजैपोहरआज्ञा ले चौथे पोहर भोगवै, ए पिण जीत ववहारो ॥
- १६० इमहीज पाड़िया रा ओषधि तमाखू री, धणी री दोय कोस रै मांझो ।
आज्ञा लेवै कोस उपरंत भोगवै, ए पिण जीत ववहार कह्यो ॥
- १६१ ओषधि रौ धणी जो और ग्रहस्थनै, कहै तूं आज्ञा दे दीजै ।
तौ तिण री आज्ञा दूजै पोहर लियै मुनि, ते पिण जीत ववहार कहीजै ॥
- १६२ ओषधि रौ धणी जो कहै साधां नै, आप दूजा पोहर रे मांझो ।
अन्य ग्रहस्थ री आज्ञा ले लीजो, ओषधि री तो आज्ञा लेइ भोगवणो नाझो ॥
- १६३ तड़कौ सीत टाळण दिन रात्रि, पिछेवड़ी बांधैहो ।
बलै पाट बाजोटादिक आडा मेलै, जीत ववहार थी एहो ॥
- १६४ शेषै काळ चौमासो उतरिया बेहरी, सेज्जातर नो आहारो ।
पछै जागा भौळावै ते पिण, जीत ववहार विचारो ॥
- १६५ सेज्जातर नौ बहरी ब्यार कियो मुनि, पाछा आया जइ गाम बारौ ।
नवी आज्ञा लेइ तेह जागा भोगवै, ए पिण जीत ववहारो ॥
- १६६ केइ साधु घर फर्सी नै विहार कियो छै, थयो असूझतो घर जेहो ।
पाछै साधु रह्या त्यां नै जे कल्पै, जीत ववहार थी एहो ॥
- १६७ स्याही दिशां अर्थे जळ नित्यपिंड ल्यावै, बलै खंड्या धौवा नै काजो ।
मुंहपति प्रमुख धौवा नै अर्थे, ए जीत ववहार समाजो ॥
- १६८ मेण रोगांन नै राते राखै, बलै लेइ लगायो पानो ।
स्याही बणावै ते आली रहै निशि, ए जीत ववहार थी जानो ॥

- १६९ खंडिया रा कळप रौ कपडो धोवै, ते धोयो ओढे पहिरै रातो।
मुंहपति पडला रस्तानांदि धावै, ए जीत ववहार विख्यातो॥
- १७० पात्रादिक रंग उतारण काजै, गोबर राख लगावै।
साजी लगावै ते आली रहै निशि, ए जीत ववहार में आवै॥
- १७१ तन गूंबड़ा रे आटादिक लगावै, तै पिण रहै छै रातो।
तावादि कारण तंतू अधिक ओढै, ए जीत ववहार कहातो॥
- १७२ अमल सूंठादि सिर रे लगायां, रहै निशि जूं आदि रक्षा काजो।
इमहिज तंतू रे साजी गुगलादिक, ए जीत ववहार समाजो॥
- १७३ इत्यादिक जीत ववहार तणां जे, कहि कहि किता कहूं बोलो।
तिण मांहि दोष कहो किम कहिये, आंख अभितर खोलो॥
- १७४ अतीत अब्दा अथवा वर्त्तमानज, अथवा अनागत काळो।
जीत ववहार थी बाधै आचार्य, ते अंगीकार करणां न्हालो॥
- १७५ अतीत आचार्य जीत बाध्यां में, पछला आचार्य ताही।
दोष देखै तो तुरत छोड़ देणो, ए तसु आज्ञा सदाइ॥
- १७६ निरदोष जाण नै सेव्यो आचार्य, त्यां नै तो दोष न होई।
पछला पिण निर्दोष जाण सेवे तो, त्यां नै पिण दोष न कोई॥
- १७७ कोइ कहै जै सूत्र में वज्यो, तेहनो जीत ववहारो।
आचार्य बांधै ते किण विधि मानणो, हिव तसु उत्तर सारो॥
- १७८ नित्यपिंड अंजण सुगंध झाड़ में, सूत्र विषै अणाचारो।
कारण पड़िया आज्ञा दीधी आचार्य, ते किम मानो जीत ववहारो॥
- १७९ उद्देसिक रात्रि भोजन सिय्यातर, ने पिण कछो अणाचारो।
कारण पड़्यां पिण सेवणो नहीं छै, बुद्धिवंत न्याय विचारो॥
- १८० पक्षपात रहित नीत वाळा जे, गणपति महागुणवांनौ।
ते जीत ववहार असुद्ध किम थापै, समझो चतुर सुजानो॥
- १८१ ते माटे भिक्षु बांध्यो जीत ववहार, जे किमाड़ियादिक बोलो।
तिण नै छोटी लुगाई रो दृष्टांत देवै, तिण नै जाणजो फूटो ढोलो॥
- १८२ असम्यक् पिण सम्यक् जाणी सेवै, ते मुनि नै सम्यक् आख्यो।
आचारांगे^१ पंचमझयणे, पंचम उद्देसे दाख्यो॥
- १८३ आधा कर्मी निर्णय कर लीधु, भोगवै निर्दोषण जाणी।
सुगडांग इकसम अध्ययेन, पाप न भाख्यो नाणी॥

१. आयारो ५।५।९६

- १८४ आचार्य कहै ज्युं करणो, त्यांरो वचन उलघणो नाही।
दसवैकालिक नवमे अध्ययने, दूजा उद्देशा मांहि॥
- १८५ उत्तराध्येन रै चौथे अध्ययने निज छांदो रुध्यां कही मोखो।
तौ जीत ववहार बांध्यो जे गणपति, तिण मांहे क्युं कहो दोषो॥
- १८६ आचारंग रे पंचमे अज्झयणे, चौथे उद्देशे पिछाणो।
आचार्य नी दृष्ट प्रमाणै, प्रवर्त्ते मुनि गुणखाणो॥
- १८७ सर्व कार्य में आचार्य नै, आगल करी विचरणो।
ए आज्ञा तीर्थकर के री, तिणहिज ठामे निरणो॥
- १८८ आचार्य रा ज्ञान प्रमाणै, वर्त्ते मुनि गुणमाळो।
पिण आपणी मतिकरि नही प्रवर्त्ते, तिणहिज ठाम निहालो॥
- १८९ इत्यादिक बहु सूत्र विषै कहु, गणपति जे गुणवानो।
तेह तणां अभिप्राय प्रमाणै, प्रवर्त्तेवुं सुविधानो॥
- १९० ते माटै स्वाम भीखणजी उजागर, आचार्य गुणधारी।
निरदोष जांणी जीत त्यां बांध्यो, जोय लो हृदय विचारी॥
- १९१ किमाडियादिक जीत है त्यांरो, तिण नै क्युं दो खोटा दृष्टांतो।
छोटी लुगाई रो सरीषो कह्यो ते, प्रत्यक्ष दुर्गति पंथो॥
- १९२ जीत ववहार बांध्यो, तिण री आज्ञा दीधी जिनरायो।
जिण जीत ववहार भणी नहीं मान्यो, तिण प्रभु वच मान्या नाह्यो॥
- १९३ इम सांभळ उत्तम नर नारी, प्रभु कह्या पंच ववहारो।
तेह विषै कोइ दोष म थापो, थे अंतर आंख उघाड़ो॥
- १९४ कदाचित् कोइ हीये न बेसै, तो केवळियां नै भळावो।
पिण किमाडिया में दोष थापी, मति कोइ झूठ लगावो॥
- १९५ असाता वेदनी बांधणी सोहरी, भोगवणी अति दोहरी।
ते माटै मति सवळी राखौ, छोड़ देवौ झकझौड़ी॥
- १९६ एक दिवस तो निश्चै करि नै, परभव मांहि जांणो।
ते माटै ऊंची तांण न करणी, थे दुख तणों डर आणो॥
- १९७ संवत् उगणीसै वर्ष तेतीसै, सुदि बीज चैत मास जांणो।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय प्रशादै, जयजश हर्ष कल्याणो॥

परिशिष्ट

सं० १८३२ रो लिखत

(युवराज-पद अरपण रो)

१-(पृष्ठ ३ से संबंधित)

ऋष भीखण सर्व साधा नै पूछ नै सर्व साध साधवियां री मरजादा बांधी। ते साधा नै पूछ नै साधां कनां थी कहवाय नै, ते लिखीये छै—

- १ सर्व साधु-साधवी भारमल जी री आज्ञा माहै चालणो।
- २ विहार चोमासो करणो ते भारमल जी री आज्ञा सूं करणो।
- ३ दिख्या देणी ते भारमल जी रा नाम दिख्या देणी।

मर्यादा निर्माण का उद्देश्य

चेला री कपड़ा री साताकारिया खेतर री आदि देइ नै ममता कर कर नै अनंता जीव चरित्र गमाय नै नरक निगोद माहै गया छै। तिण सूं शिषादिक री ममता मिटावण रो नै चारित्र चोखो पाळण रो उपाय कीधो छै। विनय मूल धर्म नै न्याय मार्ग चालण रो उपाय कीधो छै। भेखधारी विकला नै मूंड भेळा करै, ते शिषां रा भूखा एक-एक रा अवर्ण वाद बोले, फारा तोड़ो करै, कजिया राड़ करै, एहवा चरित देख नै साधां रे मर्यादा बांधी। शिष साधा रो संतोष कराय नै सुखे संजम पालण रो उपाय कीधो।

समर्थन

साधां पिण इमहिज कह्यो—१. भारमल जी री आज्ञा में चालणो।

२. शिष्य करणा ते भारमल जी रे करणा।

३. भारमल जी घणां रजाबंध होय नै ओर साध नै चेलो सूपै तो करणो, बीजूं करण रो अटकाव कीधो छै।

४. भारमल जी पिण आप रे चेलो करै ते पिण तिलोकचंद जी चंदरभाण जी आदि बुधवान साध कहै— ओ साधपणा लायक छै बीजा साधां नै परतीत आवै तेहवो करणो, परतीत नहीं आवै तो नही करणो।

कीधां पछै कोई अजोग हुवै तो पिण तिलोक चंद चंदरभाण जी आदि बुधवान साधां रा कह्यां सूं छोड़ देणो, माहै राखणो नहीं।

५. नव पदार्थ ओळखाय नै दिख्या देणी।

६. आचार पाळां छा तिण रीते चोखो पाळणो, एहवी रीत परंपरा बांधी छै।

७. भारमलजी री इच्छा आवै गुरु भाइ चेलादिक नै टोळा रो भार सूपै ते पिण कबूल छै। ते पिण रीत परंपरा छै, सर्व साध-साधवियां एकण री आज्ञा माहै चालणो एहवी रीत बांधी छै।

८. कोइ टोळा मां सूं फारातोरो कर नै एक दोय आदि नीकळे, घणी धुरताइ करै बुगलध्यानी हुवै, त्यां ने साधु सरधणां नहीं। च्यार तीर्थ माहै गिणवा नहीं,

यां नै चतुरविध संघ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वादै पूजै तके पिण आज्ञा बारै छै।

९. चरचा बोल किण नै छोडणो, मेलणो, तिलोकचंद जी चंदरभाणजी आदि बुधवान नै पूछ नै करणो, सरधा रो बोल इत्यादिक पिण तिमहीज जाणवो।

१०. बलै कोइ याद आवै ते पिण लिखणो ते पिण सर्व कबूल कर लेणो।

ए सर्व साधां रा परिणाम जोय नै रजाबंध कर नै यां कनां सूं पिण जुदो-जुदो कहवाड नै मरजादा बांधी छै। जिण रा परिणाम मांहिला चोखा हुवै ते मतो घालज्यो, कोइ सरमासरमी रो काम छै नहीं। मूढै और नें मन में और इम तो साधु नै करवो छै नहीं, इण लिखत में खूंचणो काढणो नही। पछै कोइ और रो और बोलणो नहीं, अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै।

संवत १८३२ मृगसिर विद ७ लिखतू ऋष भीखन रो छै।

साख १ थिरपाल री छै।

लिखतू वीरभाण जी उपर लिख्यो सही।

लिखतू हरनाथ उपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष सुखराम उपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष तिलोकचंद उपर लिख्यो सही।

लिखतू चंदरभाण उपर लिख्यो सही।

लिखतू अखेराम उपर लिख्यो सही।

लिखतू अणदा उपर लिख्यो सही।

सं० १८३४ रो लिखत

(साधवियां रो)

२. (पृष्ठ ६ से संबंधित)

आर्या सर्व रे एक लिखत कीधो—

१. माहां मांहि आर्या आर्या नै तूकारो दे तिण नै पांच दिन पांचू विगै रा याग छै।

२. जितरा तूकारा काढ़ै जितरा पांच-पांच दिन रा विगै रा त्याग।

३. तूं झूठा बोली छै, एहवा वचन काढ़ै जितरा पांच पांच दिन विगै रा त्याग।

४. प्रायछित आयो तिण रो मोसो बोले, जितरा पांच-पांच दिन रा त्याग।

५. ग्रहस्थ आगै टोळा रा साध आर्या री निंछा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पांचू विगै रा त्याग। जितरी वार करै जितरा मास पांचू विगै रा त्याग।

६. आर्या री मांहो मांहि री बातां कराय नै उणरो परतो वचन उण कनै कहै, उणरो मन भागै जिसो कहि नै, मन भागै तो १५ दिन पांचू विगै रा त्याग।

७. मांहोमांहि कहै तूं सूंसां री भागल छै, एहवो कहै तिण रे १५ दिन विगै रा त्याग छै। जितरी वार कहै जितरा १५ दिनां रा त्याग छै।

आंसू काढ़ै जितरी वार १० दिन विगै रा त्याग छै, कै पनरे दिन मांहि बेलो करणो। इत्यादिक करलो काठो वचन कहै तिण नै यथा जोग प्रायछित छै।

स्पष्टीकरण

ए विगै रा त्याग छै ते उण री इच्छा आवै जद साधां सूं भेळा हुवां पहिली टाळणा। जो नहीं टाळै तो बीजी आर्या यूं कहिण पावै नही तूं टालइज। साधां नै कहि देणो। साधां री इच्छा आवै तो द्रव्य क्षेत्र काळ भाव जाण नै और दण्ड देसी, अनै साधां री इच्छा आवसी तो विगै रो त्याग घणो करावसी।

८. बलै आर्या रे मांहोमांहि साध-साधवियां नै न कल्पै न शोभे तका लोकां नै अणगमती लागै उण री जातदिक रो खूंचणो काढणो, जिण भाषा रो पिण साधां री इच्छा आवै जितरा दिन विगै रा त्याग देवै ते कबूल करणो छै।

९. जिण आर्या नै और आर्या साथै मेल्या ना न कहिणो। साथै जाणो। न जावै तो पांचू विगै खावा रा त्याग, न जाय जितरा दिन। बलै और प्रायछित जठा बारै।

१०. साधां रा मेलीयां बिना आर्या ओर री और साथै जावै तो जितरा दिन रहै जितरा पांचू विगै रा त्याग, बलै और भारी प्रायछित जठा बारै।

११. जिण आय्या साथै मेल्या तिण आय्या भैली रहै, अथवा मांहिमांहि सेखे काळ भैली रहै, अथवा चोमासे भैली रहै, त्यांरा दोष है तो साधां सूं भेळा हुवां कहि देणो, न कहै तो उतरो ही प्रायछित उण नै छै। पछै घणां दिन आडा घाल नै कहै तो साचो कहै तो झूठो कहै तो उवा जाणै, कै केवली जाणे, पिण छदमस्थ रा व्यवहार में तो घणां दिन री बात उदेरे राग द्वेष रे वस, आप रे स्वार्थ न उदीरे, स्वार्थ न पूगां उदीरे तिण री प्रतीत मानणी नहीं आवै। ग्रहस्थां मांहे आमना जणाय नै मांहोमांहि एक-एक री आसता उतारै, तिण में तो अवगुण घणाइज छै। बलै फतूजी नै मांहे लीधा तिको लिखत सगळी आय्या रे कबूल छै।

बलै अनेक बोलां री करली मर्यादा बांधै ते पिण कबूल छै। ना कहिण रा त्याग छै। हिवै कर्म जोगे किण सूं इ आचार गोचार न पळै, मांहोमां स्वभाव न मिलै, तिण नै साध टोळा बारे काढै अथवा क्रोध वस टोळा थी अळगी परै तका तो कर्म वस अनेक झूठ बोलै कूड़ा-कूड़ा आळ दे अथवा के इ भेषधारायां मांहे जाए तिण तो अनंत संसार आरै कीधो ते तो अनेक विविध प्रकार रो झूठ बोलैइज, काइ नही पिण बोलै, एहवी भेषभंडां री बात भेषधारी भारीकर्मा मानै, पिण उत्तम जीव न मानै। टोळा सूं छूट-न्यारी हुवां री बात मानै, त्यां नै मूख कहीजै, त्यां नै चोर कहीजे अनेक-अनेक आळ दे, सूंस करण नै त्यारी हुवै, तो ही उत्तम जीव न माने इत्यादिक आंगुण घणा ज छै। एतावता टोळा मांहि सूं पिण टळ्यां पछै इ टोळा रा आंगुण बोलण रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै।

ए लिखत सगळी आय्या नै बचाय नै, पहिला कहिवाय नै, मरजादा बांधी छै।

ए लिखत प्रमाणै सगळी आय्या नै चालणो, अनंता सिद्धा री साख सूं सगळा रे पचखाण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै लिखत प्रमाणै चालै ते मतो घालजो। सरमासरमी रो काम छै नहीं। जावजीव रो काम छै।

संवत् १८३४ जेठ सुदी ९.

१. लिखतू सुजाण २. लिखतू मटु ३. लिखतू कुसाला
४. लिखतू कसूभा ५. लिखतू जीउ ६. लिखतू नंदू
७. लिखतू गुमाना ८. लिखतू फतु ९. लिखतू अखु
१०. लिखतू अजबा ११. लिखतू चंदू

सं० १८४१ रो लिखत (साधुवां रै पारस्परिक व्यवहार रो)

३. (पृष्ठ १२ से संबंधित)

साध-साध रे मरजादा री विध लिखिये छै—

साध साध माहां मांहि भेळा रहै, तिहां किण ही साध नै दोष लागै तो धणी नै सताब सु कहि देणो अवसर देखने। पिण दोष भेळा करणा नहीं। धणी नै कहां थकां प्राछित लेवे तो पिण गुरां नै कहि देणो।

२. जो प्राछित न ले तो प्राछित रा धणी नै आरै कराय नै जे जे बोल, लिखने उण नै संप देणो।

इण बोल रो प्राछित थाने गुरु देवै तो प्राछित ले जो, जो इण रो प्राछित न हुवै तो ही कहिजो। थे गाळो-गोळो कीजो मती। जो थे न कह्यो तो म्हारा कहिण रा भाव छै। म्हे थारा दोषा रो आगो काढ़सूं नहीं। संका सहित दोष भासै तो संका सहित कहिसूं, निसंकपणे दोष जाणू छूं ते निसंक पणे कहिसूं। नहीं तो अजे ही पाधरा चालो, इम कहिणो, पिण दोष भेळा करणा नहीं। जो उ आरै न हुवै तो ग्रहस्थ पका भाई हुवै, त्यां नै जणावणो उण बेठां इज कहिणो, पिण छानै न कहिणो।

ए तो चोमासो बंधीयो काळ हुवै जब छै। शेष काळ हुवै तो किण ही नै कहिणो नहीं, गुर हुवै जठे आवणो। पिण गुर कने आय नै वेदो घालणो नहीं। गुर किण नै साचो करै नै किण झूठो करै। गुरु तो इण बात मांहें नहीं। एनाणां सूं कदाच एकण नै झूठो जाणे, एकण नै साचो जाणे तो पिण निश्चै नहीं ते किणविध प्राछित देवै, आलोयां बिनां-पछै तो गुरु नै द्रव्य क्षेत्र काळ भाव जाण नै न्याय करणोइज छै। पिण उण नै तो एक थी दोय दोष भेळा करणां नहीं। घणा दोष भेळा कर नै आवसी तो उ तो हाथां सूं झूठो परसी।

पछै तो केवळी जाणे, छद्मस्थ रा व्यवहार मांहै तो 'दोष' भेळा करै तिण मांहै अवगुण नों भंडार छै।

लिखतू ऋष भीखन रो छै।

संवत् १८४१ चेत विद १३.

लिखतू ऋष हरनाथ ऊपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष भारमल उपर लिख्यो सही।

लिखतू अखेराम उपर लिख्यो ते सही।

लिखतू सामजी उपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष खेतसी उपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष रामजी उपरलो लिख्यो सही।

लिखतू संचजी उपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष नानजी।

सं० १८४५ रो लिखत (सेवा व्यवस्था रो)

३. (पृष्ठ १४ से संबंधित)

सर्व साधां रे एक मर्यादा बांधी ते कहै छै—

१ जो कोई साध कारणीक हुवै, आंखियादिक गरढो गिलाण हुवै, जद और साध उण री अगिलाणपणै वियावच करणी।

२ उणनै संलेखणा री ताकीद देणी नहीं उण नै वैराग वधै ज्यूं करणो।

३ उणरे विहार करण री रीत-निजर काची हुवै तो उणरे भरोसे निजर राखणी नही, उण नै घणी खप कर नै चलावणो।

४ रोगियो हुवै तो उणरो बोज उपारणो। उण रा घणां परिणाम चढता रहै ज्यूं करणो। पिण उण में साधपणो हुवै तो उण नै छेह देणो नही।

५ उ राजी दावै वैराग सुं संलेखणा करै तो पिण उणरी वियावच करणी। कदा एक जणो करतो उछट हुवै तो सगळा नै रीत प्रमाणे करणी। नहीं करै तो नषेध नै करावणी। जो उ न करै, तो उण नै बीजा आगा सूं करावणी किण लेखे।

६ कारणीक नै-रोगियो नै रीत प्रमाणे आहार सगळा भेळा होय नै कहै ते देणो।

७ बलै किण ही रो सभाव अजोग हुवै, तिण नै कोइ टोळा मांहे बैठण वाळो नही, साथै लै जावै नही, जद उण नै पेला ने घणी परतीत उपजावणी। घणी नरमाई करने हाथ जोड़नै कहिणो, थे मने निभावो यूं कहि नै साथे जाणो। आगलो चलावै ज्यूं चालणो। जको काम भळावे ते करणो। उणनै घणों रीझाय ने रहिणो। जो अतरी आसंग वितो नरमाइ करण री न हुवै तो संलेखणा मंडणो। वेगो कारज सुधारणो। जो दोयां बोलां मांहिलो एक बोल पिण आरे न हुवै तो उण सूं कलेश कर-कर नै कुण जमारो काढसी। उणनै साधु किम जाणीये—जो एकलो वैण री सरधा हुवै, इसरी सरधा धार नै टोळा मांहे बेठो रहै छै—म्हारी इच्छा आवसी तो मांहे रहिसु, म्हारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसूं, इसरी सरधा सुं टोळा मांहे रहै ते तो निश्चै असाध छै। साधपणो सरधै तो पहिला गुणठाणां रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सूं मांहे रहै, तिण नै मांहे राखै जाण नै, त्यां ने पिण महादोष छै। कदाच टोळा मांहे दोष जाणै तो टोळा मांहे रहिणो नही। एकलो होय नै संलेखना करणी। वेगो आत्मा रो सुधारो हुवै ज्यूं करणो। आ सरधा हुवै तो टोळा मांहे राखणो, गाळा-गोळो कर ने रहै तो राखणो नहीं, उत्तर देणो बारै काढ देणो, पछै इ आळ दे नीकळै तो किसान काम रो।

८ टोळा मांहे कदाच कर्म जोगे टोळा सूं न्यारो परै तो टोळा रा साध-साधवियां रा अंसमात्र आंगुण बोलण रा त्याग छै।

९ यां री अंस मातर संका पडै ज्युं, आसता उतरै ज्युं, बोलण रा त्याग छै।

१० टोळा मां सुं फार नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावण रा त्याग छै।

११ टोळा मां है थो बारै नीकळ्या पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। मां होमां मन फटै ज्युं बोलण रा त्याग छै।

१२ जे कोइ आचार रो, सरधा रो, सूतर रो अथवा कल्प रा बोल री समझ न परै तो गुर तथा भणणहार साध कहै ते मान लेणो नहीं तो केवळी नै भळावणो। पिण और साधां रे संका घाल नै मन भांगणो नही।

टोळा मां है पिण साधां रा मन भांग नै आप आप रे जिलै करै ते तो महाभारी कर्मो जाणवो। विसवासघाती जाणवो। इसरी घात-पावड़ी करै ते तो अनंत संसार री साइ छै। इण मरजाद प्रमाणै चालणी नावै, तिण नै संलेखणा मंडणो सिरै छै।

धनै अणगार तो नव मास मां है आत्मा रो किळ्याण कीधी, ज्युं इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो। पिण अप्रतीतकारियो काम करणो न छै, रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग नै मां हो राख्यो भूण्डो छै।

चेतावनी

ए पचखांण पाळण रा परिणाम हुवै ते आरे हुयजो। विनय मारग चालण रा परिणाम हुवै, गुरु नै रीझावणा हुवै, साधपणो पाळण रा परिणाम हुवै, ते आरै हुयजो। ठागा सूं टोळा मां है रहणो न छै जिण रा परिणाम चोखो हुवै ते आरै हुयजो

आगै साधां रे समचै आचार री मर्यादा बांधी ते कबूल छै।

बलै कोइ आचार्य मर्यादा बाधै तो याद आवै ते पिण कबूल छै।

लिखतू ऋष भीखन रो छै। संवत् १८४५ रा जेठ सुदि १.

१ ए मरजादा ऋष भारमल हरख सूं अंगीकार कीधी

२ मर्यादा ऋष सुखराम अंगीकार कीधी

३ ए मर्यादा ऋष अखेराम अंगीकार कीधी

४ ए मर्यादा ऋष सामजी अंगीकार कीधी।

५ ए मर्यादा ऋष खेतसी अंगीकार कीधी

६ ए मर्यादा ऋष राम जी अंगीकार कीधी।

७ ए मर्यादा ऋष नान जी अंगीकार कीधी।

८ ए मर्यादा ऋष नेमे अंगीकार कीधी।

९ ए मर्यादा ऋष वेणे अंगीकार कीधी छै।

सं० १८५० रो लिखत

(साधुवां री मरजादा रो)

५. (पृष्ठ १९ से संबंधित)

सर्व साधां नै सुध आचार पाळणो नै मांहोमां गाढो हेत राखणो, तिण ऊपर मरजादा बांधी-

१. कोई टोळा रा साध-साधवियां में साधपणों सरधो, आप माहै साधपणो सरधो तको टोळा मांहै रहिजो।

कोइ कपट दगा सूं साधां भेलो रहै, तिण नै अनंता सिद्धां री आण छै। पांचू पदां री आण छै।

साध नांव धराय नै असाधां भेलो रह्यां अनंत संसार बधै छै।

२. जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध साधवियां रा ओगण बोल नै किण ही नै फार नै मन भांग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण सूं इ साधपणों पळतो दीसै नहीं, अथवा सभाव किण सूं इ मिलतो दिसे नहीं, अथवा कषाय, धेठो जाण नै कोइ कने न राखै अथवा खेत्र आछो न बताया, अथवा कपड़ादिक रे कारण, अथवा अजोग जाण नै और साधु गण सुं दूरो करै, अथवा आपनै गण सुं दूर करतो जाण नै, इत्यादिक अनेक कारण उपनै टोळा सूं न्यारो परै तो किण ही साध साधवियां रा आंगुण बोलण रा हूंतो अधहूंतो खूंचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे-रहिसे लोकां रे संका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै।

३. कदा कर्म जोगे, अथवा क्रोध वस साधा नै साधवियां नै सर्व टोळा नै असाध सरधै आप में पिण असाधपणों सरधे, नै फैर साधपणो लेवै तो ही पिण अठीरा साध-साधवियों री संका घालण रा त्याग छै। खोटा कहिण रा त्याग छै ज्यूं रा ज्यूं पाळणा छै। पछै यू कहिण रा पिण त्याग छै-“म्हें तो फैर साधपणो लीधो अबै म्हारै आगला सूंसा रो अटकाव कोइ नहीं” यू कहिण रा पिण त्याग छै।

४. किण ही साध आर्या री आसता उतरै, साध आर्या री संका पड़ै ज्यूं, असाधपणो सरधै ज्यूं बोलण रा त्याग छै।

५. किण ही साध आर्या में दोष देखै तो ततकाल धणी नै कहिणो, अथवा गुरां नै कहिणो, पिण ओरा नै न कहिणो। घणां दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै। प्राछित रा धणी नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणो, नही लेवै तो उण नै मुसकल छै।

६. कोइ सरधा रो आचार रो नवो बोल नीकलै तो बड़ां सूं चरचणो पिण औरां सूं चरचणो नही। ओरां सूं चरचनै ओरां रै संका घालणी नही। बड़ा जाब देवै आप रे हीये

वैसे तो मान लेणो नही वैसे तो केवलियां ने भळावणो, पिण टोळा मांहे भेद पारणो नहीं।

७. मांहेमां जिलो बांधणो नहीं मिल-मिल नै। आप रो मन टोळा सूं उचक्यो, अथवा साधपणो पळे नहीं, तो किण ही नै साथे ले जावण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखांण छै।

८. कोइ दिख्या लेतो देख नै, अथवा जाण नै आप न्यारो हुवै नै, चेलो कर नै, नवो मारग काढ नै, आप रो मत जमावण रा त्याग छै। आ सरधा नै ओ आचार चोखो पाळणो छै। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै, जद ग्रहस्थ आगै पैला री परती करण रा त्याग छै।

९. जिण रो मन रजाबंध हुवै चोखी तरे साधपणो पळतो जाणो तो टोळा मांहे रहिणो। आप में अथवा पैला में साधपणों जाण ने रहिणो। ठागा सूं मांहि रहिवा रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखांण छै।

१०. टोळा मांहे रहि ने पाना लिखे, अथवा लिखावै, अथवा कोइ देवै ते लेवे, ते टोळा मांहे रहै जठा तांइ तो उण रा छै। टोळा सूं न्यारो हुवै जद पाना टोळा रा साधां रा छै। साथे ले जावण रा त्याग छै।

११. परत पाना जाचै ते पिण बडां री, टोळा री, नेश्राय जाचणा, आप री नेश्राय जाचण रा त्याग छै। जो कोइ अजाण पणै जाचणी आवै, तो पिण परत पाना बड़ा रा छै, टोळा रा छै, या नै पिण साथे ले जावण रा त्याग छै। पातरो लोट जाचै टोळा मांहे थकां, ते पिण बडां री नेश्राय जाचणो, बड़ा देवै ते लेणो। ते पिण टोळा मांहे छै जठा तांइ। टोळा बारै जाय तो साथे ले जावण रा त्याग छै। कपड़ो नवो हुवै ते पिण टोळा बारै ले जावण रा त्याग छै।

१२. दिख्या देणी ते पिण बड़ा रे नाव देणी, आप आप रै चेलो करवा रा त्याग छै।

चेतावनी

आगै पानो लिखीयो छै, तिण में साधा रै मर्यादा बांधी छै, तिण प्रमाणै सगळा रै त्याग छै। उवा मर्याद पिण उलंघण रा त्याग छै। जो किण ही साध मरजाद उलंघवो कीधो, अथवा आगन्यां मांहे नहीं चालीयां, अथवा किण ही नै अथिर परिणामी देख्यो, अथवा टोळा मांहे टिकतो न देख्यो, तो ग्रहस्थ नै जणावणरा भाव छै।

साध-साधवियां में जणावण रा भाव छै। पाछे कोइ कहोला म्हारी लोकां मांहे टोळा मांहे आसता उतारी, तिण सूं घणां सावधानपणै सुद्धपणै चालजो। एक-एक नै चूक पड्यां तुरत कहिजो, महां तांइ कजियो आणजो मती, उठै रो उठै निवेरजो, पूछ्यां अथवा अणपूछ्यां बीती बात कहि देणी, उठइज निवेरणी। कोइ टोळा मां सूं टळ नै साध-साधवियां रा दोष बतावै, अवर्णवाद बोलै, तिण री मानणी नही। तिण नै झूठाबोलो

जाणणो। साचो हुवै तो ग्यानी जाणै, पिण छद्मस्थ रा ववहार में झूठो जाणणो। एक दोष सूं बीजो भेलो करै ते अन्याइ छै। जिण रा परिणाम मेला होसी, ते साध आर्या रा छिद्र जोय-जोय नै भेळा करसी, ते तो भारीकर्मा जीवां रा काम छै। डाहो सरल आत्मा रो धणी होसी ते तो इम कहसी—कोई ग्रहस्थ साध-साधवियां रो सभाव प्रकृति अथवा दोष(कोइ ग्रहस्थ) कहै, बतावै, जिण नै सूं कहिणो-मौ ने क्यानें कहो, कहो तो धणी नै कहो, कै स्वामी जी नै कहो, जो यां नै प्राछित देने सुद्ध करै, नही कहिसो तो थे पिण दोषीला गुरां रा सेवणहार छो। जो स्वामी जो नै नहीं कहिसो तो था में पिण बांक छै। थे म्हानें कहां कांइ हुवै यूं कहि नै न्यारो हुवै पिण आप बैहिदा मांहै क्यानें परै। पेल्ला रा दोष धार नै भेळा करै ते तो एकंत मृषावादी अन्याइ छै।

१३. किण ही नै खेत्र काचो बतायां, किण ही नै कपड़ादिक मोटो दीधां, इत्यादिक कारणै कषाय उठै, जद गुरवादिक री निंदा करण रा, अवर्णवाद बोलण रा, एक एक आगै बोलण रा, मांहोमां मिल नै जिलो बांधण रा, त्याग छै। अनंतः सिद्धां री आण छै। गुरवादिक आगै भेलो तो आप रे मुतलब रहै, पछै आहारादिक थोड़ा घणां रो, कपड़ादिक रो, नाम लेइ नै अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै।

इण सरधा रा भायां रै कपड़ा रा ठिकाणा छै, बिना आग्या जाचण रा त्याग छै। नैड़ा दस बीस कोसां तांइ कपड़ो जाचै चोमासो उतरीयां, तो बड़ा आगै आण मेलणो, आप रे मते वावरणो नाही, वावरै तो सगळा कपड़ा मांहिलो ठलको^१ हुवै ते वावरणो, पिण महीं वावरणो नही। जो अळगा हुवै गुरआदिक, तो मांहोमां सरीखो बरोबर बांट लेणो इधिको चाहीजै जिण नै परतो^२ देणो। डाहा हुवै ते विचार जोयजो।

१५. लूखे खेत्र तो उपकार हुवै ते छोड़ नै न रहै, आछै खेतर उपकार न हुवै तो ही पर रहै, ते यूं करणो नहीं। चौमासो तो अवसर देखै तो रहिणो, पिण शेष काळ तो रहिणो। किण री खावा-पीवादिक री संका परै तो उण नै साध कहै, बड़ा कहै ज्युं करणो। दोय जणा तो विचरै, नै आछा-आछा मोटा-मोटा साताकारिया खेत्र लोळपी थका जोवता फिरै, गुर राखै तठै न रहै, इम करणो नहीं छै। घणा भेळा रहितो दुखी, दोय जणा में सुखी, लोळपी थको यूं करणो नही छै।

१६. आप किण ही नै परत पाना उपगरण देवै, ते तो आगाइज देणा, पिण न्यारो हुवै जद पाछा मांगण रा त्याग छै। जिण री आसंग हुवै ते देजो।

१७. आर्या सूं देवो लेवो लिंगार मातर करणो नही, बड़ा री आग्या बिना आगै आर्या हुवै जठै जाणो नहीं। जावै तो एक रात्रि रहिणो, पिण अधिको रहिणो नहीं। कारण पड़ियां रहै तो गोचरी ना घर बांट लेणा, पिण नित रो नित पूछणों नहीं। कनै वैसण देणी नहीं। ऊभी रहिण देणी नहीं। चरचा बात करणी नहीं। बड़ा गुरवादिक रा

१. मोटा।

२. सामान्य।

कह्यां थी कारण पड़्यां री बात न्यारी छै।

१८. सरस आहारादिक मिलै, तिहां पिण आज्ञा बिना रहिणो नही। बलै काइ करली मरजादा बांधा, तिण मै ना कहिणो नही।

१९. आचार री संका पड़्यां थी बांधा बलै कोइ याद आवै ते लिखां, ते पिण सर्व कबूल छै।

ए मरजादा लोपण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखांण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै, सूंस पाळण रा परिणाम हुवै ते औरै होयजो। सरमासरमी रो काम छै नहीं।

संवत् १८५० रा माह विद १० लिखतु ऋष भीखन रो छै।

सं० १८५२ रो लिखत (साधवियां री मरजादा रो)

५. (पृष्ठ २५ से संबंधित)

सर्व साधवियां रे मर्यादा बांधी छै आचार तो चोखो पाळणो नै मांहोमां गाढो हेत राखणो। तिण ऊपर मर्यादा बांधी-

१. टोळा रा साध-साधवियां में साधपणों सरधो, आप मांहै साधपणों सरधो तिका टोळा मांहै रहिजो। काइ कपट दगा सूं साधवियां भेळी रहै तिण नै अनंता सिद्धां री आंण छै। पांच पदां री आंण छै। साधवी नाम धराय नै असाधवियां भेळी रह्यां अनंत संसार बधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी प्रतीत उपजाओ।

२. किण ही साध साधवियां रा आंगुण बोल नै मन भांग नै फारण रा त्याग छै। खोटा सरधाय नै फारण रा त्याग छै। किण ही सूं साधपणो पळतो दीसै नहीं अथवा किण ही सूं सभाव मिलतो दीसे नहीं अथवा कषायण धेठापणो जाण नै कोइ कनै न राखै, तिण नै अळगी करै, अथवा खैत्र आछो न बतायां अथवा कपड़ादिक रे कारणै अजोग जाण नै टोळा सूं दूर करती जाणै इत्यादिक अनेक कारण ऊपनै टोळा सूं न्यारी पड़ै तो किण ही साध-साधवियां रा आंगुण बोलण रा त्याग छै।

३. हुंता अणहुंता खूंचणं काढण रा त्याग छै।

४. रहिसै-रहिसै लोका नै संका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै।

५. कदा कर्म जोगे तथा कषाय रे वस सर्व टोळा रा साध-साधवियां नै असाध सरधै, आप में पिण असाधपणों सरधै टोळा सूं न्यारी परै अथवा भेषधार्यां मांहै जाए तो पिण अठीरा साध-साधवियां रा आंगुण बोलण रा त्याग छै।

६. किण ही साध आर्यां मांहै दोष देखे तो ततकाळ धणी नै कहिणो, कै गुरां नै कहिणो, पिण औरां ने कहिणो नहीं।

७. किण ही रा टोळा सूं न्यारा होण रा परिणाम हुवै जब पिण ओरां री परती कहिण रा त्याग छै।

८. आप में टोळा रा साध-साधवियां में साधपणों सरधो तका टोळा मांहै रहिजो। ठागा सूं मांहै रहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर नै पचखांण छै।

९. टोळा मांहै पाना लिखै बलै कोइ साधु-साधवियां देवै अथवा ग्रहस्थ आगै जाचै ते टोळा सूं छूटै न्यारी हुवै ते साथै ले जावण रा त्याग। परत पाना साधां नै सूप देणा। पाना साधां रा छै, साथै ले जावणां नहीं।

१०. पातरा लोट टोळा मांहै करै, जाचै ते पिण साथै ले जावणां नहीं टोळा री नेश्राय छै, टोळा मांहै छै, त्यां लगै उणरा छै।

११. कपड़ो ऊजलो वावरीयो नही छै, नवो छै, ते पिण साथ लै जावणो नही, टोळा री नेश्राय छै।

१२. परत पाना जाचणा ते बड़ा री नेश्राय जाचणा आप री नेश्राय जाचणा नही।

१३. कर्म रे जोगे टोळा बारै नीकलै अथवा बारै काढै तो टोळा मांहे उपगरण कीधा ते टोळा री नेश्राय छै ते बारै ले जावण रा त्याग छै। बड़ा नै संप देणा।

१४. आगै कागद मांहे आय्या रे मर्यादा बांधी छै ते सर्व त्याग पाळणा छै।

१५. किण ही नै खेत्र आछो बतायां, रागधेष कर नै बात चलावण रा त्याग छै।

१६. खेत्र आश्री कपड़ा आश्री आहारपाणी आश्री ओषदादिक आश्री बात चलावण रा त्याग छै।

१७. चोमासो कहै तिहां चोमासो करणो, सेखे काळ बड़ा कहै तिहां विचरणो,

१८. कपड़ा जाचै ते बड़ा री आज्ञा विना वावरणो नही। कदा बड़ा अळगा हुवै कपड़ो जरूर चाहीजे तो ठलको-ठलको तो वावरणो महीं-महीं परियो राखणो।

१९. किण ही नै महीं मोटो दीधां री बात चलावणी नही।

२०. गुरां री आज्ञा विना साधा भेळी रहिणो नही, कनै बेसणो नही, उभी पिण रहिणो नही।

२१. उपगरण रो देवो लेवो करणो नही, साधा नै सांभलै तिण गाम में जाणों नही।

कदाच जाण्यां बिना जाए अथवा मारग मांहे गाम हुवै तो एक रात्रि सूं अधिको रहिणो नही। कारण परे जाए तो गोचरी रा घर बांट लेणा, पिण नित रो नित गोचरी पूछणी नही।

२२. वंदणा करण जाए तो अळगा थका वंदणा कर नै सताब सूं पाछो वळणो, ऊभो रहिणो नही।

२३. कोइ साधां रा समाचार पूछणां हुवे तो अळगा थी पूछ नै सताब सूं पाछो वळ जाणो, पिण उभो रहिणो नही। गुरां रा कहां थी, कारण पड़्यां री बात न्यारी।

२४. किण ही साधवी में दोष हुवै तो दोष री धणियाणी नै कहिणो, कै गुरां आगै कहिणो, पिण और किण ही आगै कहिणो नही। रहिसै-रहिसै और भूंडी जाणै ज्युं करणो नही।

२५. किण ही आय्या दोष जाण नै सेव्यो हुवे ते पाना में लिखिया बिना विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड़्यां न लिखे तो और आय्या नै कहिणो, सायद कर ने पछै पिण वैगो लिखणो, पिण बिना लिख्यां रहिणो नही। आय नै गुरां नै मूढ़ा सूं कहिणो नही, मांहोमां अजोग भाषा बोलणी नही।

२६. कोइ साध-साधवियां रा आंगुण काढै तो सांभळण रा त्याग छै। इतरो कहिणो—‘स्वामी जी नै कहिज्यो’। जिण रा परिणाम टोळा मांहे रहिण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोळा बारै हुवां पछै साध-साधवियां रा आंगुण बोलण रा अनंत सिद्धां री साख कर नै त्याग छै। कोइ टोळा बारै नीकळी री बात उण लखणो होसी ते मानै, भेषधारी भागल जिन धर्म रा द्वेषी होसी ते मानसी, पिण उत्तम जीव तो न मानै॥

२७. बलै कोइ याद आवै ते पिण लिखणो, बलै करली-करली मर्यादा बांधै त्यां में पिण अनंता सिद्धां री साख कर नै नां कहिण रा त्याग छै।

चेतावनी

ए मर्यादा पालण रा परिणाम हुवै ते अरै होयजो कोइ सरमासरमी रो काम छै नहीं।

किण ही आर्या आज पछै अजोगाइ कीधी तो प्रायछित तो देणो, पिण उण नै च्यार तीर्थ मांहे हेलणी निंदणी परसी, पछै कहोला मनै भांडै छै, म्हारो फितूरो करै छै, तिण सूं पहिलाज सावधान रहिजो। सावधान नहीं रही तो लोका में भूडी दीसोला, पछै कहोला म्हानै कह्यो नहीं।

लिखतू ऋष भीखन सं० १८५२ फागुण सुध १४

किण ही आर्या नै मांहे मां संका परै जाणै कारण पड़यां बिना कारण रो नाम लेनै और आर्या आगा सूं काम करावै छै, कारण रो नाम लेनै ओषध सूंठादिक उन्हो आहारादिक ल्यावै छै, इत्यादिक संका परै ते संका मेटण रो उपाय मर्यादा बांधी छै—

१. जितरे गोचरी आप न उठै तिण सूं विवणो ऊठणो।

२. विहार में बोझ उपड़ावै, जितरा दिन विगै रा त्याग छै। बलै उण रो बोझ पाछो विवणो उपारणो, आछो आहार लेवै तो पाछो विवणो^१ टाळ देणो।

३. किण रो इ वैहर नै मांग नै आणै तो पिण विवणो टाळ देणो तेहनी विगत लिखिये छै—

(१) पांच लूंग खायै तो एक दिन विगै टाळणो। टका भर आप री पांती आवै जद इम बीजा बोल लिखै छै—त्यां रो पिण—

(२) अधेला भर सूंठ रो

(३) अधेला भर अजमा रो

(४) खांड सूं विवणो घी

(५) निवात^२ सूं चौगुणो घी

(६) गूळ सूं विवणो गुळ के बरोबर घी

(७) दूध दही सूं विवणो दूध दही के अध सेर दूध दही रो एक दिन घी।

१. दुगुना। २. मिश्री।

- (८) पैला आगै उपगरण उपरावै तो एक दिन घी
 (९) आथण रो उन्हो आणै, (१०) आंख्यां माहै काजल,
 (११) पीपलामूळ टाक रो, (१२) आंख्यां माहै ओषध रो
 (१३) तीन बार दिसां जायै जब बीजै दिन एकासणो नै लूखो खाणो।
 (१४) रातै दिसां जाय, तिण रे दोय दिन लूखो।
 (१५) गतो^१ पीए तिण रे पनरै दिन विगै रा त्याग छै।

जिण रो उघाड़ो कारण जाणै, अथवा उण नै धेठी न जाणै, अथवा उण नै सरल जाणै, तिण नै अथवा गुर कहै तिण री बात न्यारी छै।

१. लिखतू आर्या मेणां २. लिखत आर्या सरूपां ३. लिखत आर्या बरजू ४. लिखत आर्या बीजा ५. लिखत आर्या बनां ६. लिखत आर्या धनु ७. लिखत आर्या सदा ८. लिखतू बनां ९. अजबा।

१. तत्कालप्रसवा गाय के फटे दूध से बना पदार्थ।

सं० १८५९ रो लिखत

(सामूहिक मरजादा)

७. (पृष्ठ ३३ से संबंधित)

ऋष भीखन सर्व साधां रे मरजादा बांधी, सं० १८३२ रे वरस, ते तो सर्व कबूल छै। तिण मर्यादा मां सूं वीरभाण त्रिलोकचंद चंदरभाण ए मरजादा लोपनै भागल हुवा, ते तो जिण मार्ग सूं टळिया, त्यां नै दसमो प्राछित दिया बिना मांहि लेवा रा त्याग सर्व साधां रे छै।

हिव आगली मरजादा नै कायक फैर नवी मरजादा बांधी छै ते लिखिये छै। सर्व साध-साधवियां नै पूछी ने या कनै सूं कहिवाय नै मरजादा बांधी छै ते लिखिये छै—

सर्व साध-साधवी भारमल जी री आगन्या मांहि चालणो।

शेखा काळ विहार चोमासो करणो ते भारमल जी री आगन्या सूं करणो। आगन्या लोप नै बिना आगन्या कठै इ रहिणो नही।

दीक्षा देणी ते पिण भारमल जी रे नामै देणी, दीख्या देने आण संपणो।

उद्देश्य—

चेला री कपड़ा री साताकारिया खेत्रां रो इत्यादिक अनेक बोला री ममता कर-कर नै अनंता जीव चारित्र गमाय नै नरक निगोद मांहै गया छै। बलै भेषधार्थ्यां रा एहवा चैह न देख्या तिण सुं शिषादिक री ममता मिटावण रो नै चारित्र चोखो पाळण रो उपाय कीधो छै। विनयमूल धर्म नै न्याय मारग चालण रो उपाय कीधो छै। भेषधारी विकळा नै मूंडे, भेळा करै ते शिषां रा भूखा एक-एक रा अवर्णवाद बोलै, फारा तोरो करै, मांहोमां कजिया राड झगड़ा करै एहवा चिरत देखनै साधां रे मरजादा बांधी छै। शिष्य साषा रो संतोष कराय नै सुखै संजम पाळण रो उपाय कीधो छै।

समर्थन—

साध साधव्यां पिण इमहीज कह्यो—

१ भारमल जी री आगन्या मांहै चालणो।

२ शिष्य करणा ते सर्व भारमल जी रे करणा।

३ औरां रे चेला करण रा त्याग छै। जाव-जीव लगै।

४ भारमल जी पिण चेलो करै ते पिण बुद्धिवंत साध कहै— ओ साधपणा लायक छै, बीजा साधां नै प्रतीत आवै तेहवो करणो, बीजा साधां नै प्रतीत नहीं आवै तो नहीं करणो, कीधा पछै कोइ अजोग हुवै तो पिण बुद्धिवंत साधां रा कह्या सुं छोड़ देणो किण ही धेषी रा कह्या सूं छोड़णो नही।

५ नव पदार्थ ओळखाय दिख्या देणी।

६ आचार पाळा छां तिण रीत चोखो पाळणो। इण आचार मांहे खामी जाणो तो अबारूं कहि देणो। पछे मांहे मां ताण करणी नहीं। किण ही नै दोष भास जाय तो बुधवंत साध री परतीत कर लेणी, पिण खांच करणी नहीं।

७ भारमल जी री इच्छा आवै जद गुर भाइ अथवा चेला नै टोळा रो भार सूपे जद सर्व साध-साधव्यां नै उणरी आगन्यां मांहे चालणो एहवो रीत परंपरा बांधी छै। सर्व साध-साधवी एकण री आगन्या मांहे चालणो। एहवी रीत बांधी छै साध-साधव्यां रो मार्ग चालै जठा तांइ।

८ कदा कोइ असुभ कर्म रे जोग टोळा मां सूं फारा तोड़ो करै नै एक दोय तीन आवि नीकळै, घणी धुरताइ करै, बगलध्यानी हुवै, त्यानै साध सरधणां नहीं। च्यार तीर्थ मांहे गिणवा नहीं। त्यानै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा, एहवा नै बांदै ते जिण आग्या वारै छै।

९ कदा कोइ फेर दिख्या लै, ओरां साधां नै असाध सरधायवा नैं तो पिण उण नै साध सरधणो नही। उण नै छेरवियां तो उ आळ दे काढ़ै। तिण री एक बात मानणी नहीं, उण तो अनंत संसार और कीधो दीसै।

१० कदा कर्म धको दीधां टोळा रा साध-साधव्यां रा अंसमात्र हुंता अणहुंता अर्णवाद बोलवा रा अनंता सिद्धां री नै पांचूं इ पदां री आण छै पांचूं इ पदां री साख सूं पचखांण छै।

११ किण ही साध-साधव्यां री संका पड़ै ज्यूं बोलण रा पचखांण।

साधारण नीति

कदा उ विटल होय सूस भांगै तो हळुकर्मी न्यायवादी तो न मानै उण सरीखो विटळ कोइ मानै, तो लेखा में नहीं।

१२ हिवै किण ही नै छोड़णो मेलणो परै, किण ही चरचा बोल रो काम परै तो बुधवान साध विचार नै करणो। बलै सरधा रो बोल पिण बुधवंत हुवै ते विचार नै संचै वैयाणणे। कोइ बोल न बैसे तो ताण करणी नहीं केवळिया नै भळावणो। पिण खांच अंसमात्र करणी नहीं।

१३ बीस कोष चालीस अथवा अळगो दूर चोमासो उतरियां अथवा सेखाकाळ कपड़ो जाचियो हुवै तो आप रै मते फार तोड़ नै बैट-बैट नै पैहरणो नहीं। कदा जरूर रो काम पड़ै तो जाडो-जाडो तो बांट लेणो। महीं तो आचार्य नी आगन्या बिना बांटणो नहीं। महीं तो आचार्य आगै आण नै मेलणो। आचार्य जथा जोग इच्छा आवै ज्यूं दे, ते लेणो, पिण तिण री पाछी बात चलावणी नही। इण नै महीं दीधो, इण नै मोटो दीधो, इम कहिणो नहीं।

१४ किण नै कर्म धको देवै ते टोळा सूं न्यारो परै, अथवा आपहीज टोळा सूं न्यारो हुवै, तो इण सरधा रा भाई बाई हुवै तिहां रहिणो नही।

४५२ तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

१५ बलै टोळा मांहै उपगरण करै ते, पाना परत लिखै ते, टोळा मांहि थकां परत पाना पातरादिक सर्व वस्तु जाचै ते साथै ले जावण रा त्याग छै। एक बोदो चोलपटो, मुहपती, एक बोदी पिछेवरी, खंडिया उपरंत बोदा रजोहरणां उपरंत साथै ले जावणों नहीं, उपगरण सर्व टोळा री नेश्राय रा साथां रा छै। और अंसमात्र साथै ले जावण रा पचखाण छै। अनंता सिद्धां री साख करनै छै।

धारा १४ वीं का स्पष्टीकरण

कोइ पूछे—यां खेतरां में रहिण रा सूंस क्यूं कराया, तिण नैं यूं कहिणो—रागा धेरखो वधतो जाण नैं, कलैश वधतो जाण नैं, उपगार घटतो जाण नैं, इत्यादिक अनेक कारण जाण नैं कराया छै।

१६ तिलोकचंद चंदरभाण नैं बशमा प्रायछित दीया विण मांहै लेवण रा त्याग छै। मांहै लेवा जोग नहीं छै।

१७ बलै कोइ याद आवै ते लिखणो, तिण रो पिण ना कहिण रा त्याग छै। सर्व कबूल छै।

चेतावनी

सर्व साथां रा परिणाम जोय नैं रजाबंध कर यां कनां सूं जूदो-जूदो कहिवाय नैं मरजादा बांधी छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते आ मर्यादा नैं ए सूंस आरै होयजो, कोई सरमासरमी रो काम छै नहीं। मूंडे और नैं मन में ओर इम तो साधु नैं करणो छै नहीं, इण लिखत में कोइ खूंचणो काढणो नहीं, पछै कोइ ओर रो ओर बोलणो नहीं। अनंता सिद्धां री साख कर नैं सारा रे पचखाण छै, ए पचखाण भांगण रा अनंता सिद्धां री साख सूं पचखाण छै। किण ही टोळा मांहै अनेरा किण ही मांहै जावा रा पचखाण छै। मर खपणो, पिण सूंस न भांगणो। ओ एहवी लिखत लिखतू ऋष भीखन रो छै।

संवत् १८५९ रा माह सुदि ७ वार शनीसर

- १ लिखतू ऋष सुखराम ऊपर लिख्यो ते सही।
- २ लिखतू ऋष अखेराम ऊपर लिख्यो ते सही।
- ३ लिखतू ऋष खेतसी ऊपरलो लिख्यो ते सही
- ४ लिखतू ऋष नान जी ऊपरलो लिख्यो सही
- ५ लिखतू ऋष सुखा ऊपरलो लिख्यो सही
- ६ लिखतू ऋष उदैराम ऊपरलो लिख्यो सही
- ७ लिखतू ऋष कुसाल ऊपरलो लिख्यो सही छै
- ८ लिखतू ऋष ओटे उपर लिखियो सही कर मान्यो छै
- ९ लिखतू ऋष रायचन्द उपरलो लिख्यो सही
- १० लिखतू ऋष झंगरसी उपरलो लिख्यो सही
- ११ लिखत ऋष भधा उपर लिख्यो ते सही।

सं० १८५९ रो दूसरो लिखत

(विगय आदिक री मर्यादा रो)

८. (पृष्ठ ४१ से संबंधित)

- १ एक दिन में दोय पइसा भर घी लेणो।
- २ च्यार पइसा भर मिष्ठान-खांड, गुळ, पतासा, मिश्री, बूरी, ओळा का लाडू
- ३ अध सेर दूध, दही, खीर, अधसेर आसरे धनागरो,
- ४ खाजा, साकुली, पापरीयादिक पाव सीरा, लाफसी, चूरमादिक भेळी पावरीया मांहिली थोड़ी-थोड़ी आवै तो पाव रा उनमान लेखव लेणा।
- ५ उपवास रे पारणे च्यार पइसा भर घी बीजा बोल उतराइज।
- ६ बेला तेला चोला रे पारणै घी छ पइसा भर बीजा उतराइज।
- ७ पांच उपवास आदि मोटी तपसा रै पारणै ८ पइसा भर घी बीजा उतराइज।

स्पष्टीकरण

कदाच टका भर सूं अधिकरो खाय तो बीजा दिन घी न खाणो।
और दूध दही सुंखरीयादिक नी मर्यादा उपरंत अधिको खावै जद बीजै दिन जे जे वस्तु भोगवण रा त्याग छै।

कदाचित दोय तीन दिन विचे विगै न खाधो हुवै तो घी च्यार पइसा भर रो आगार छै।

कदाच वांटता-वांटता अधेला पइसा भर वधै, तो एकण नै दे काढणों। तिण नै उतरो परो देणो, दूजै दिन पछै देण रो दावो नही।

कदाच आहार अणमिलियां आटादिक रो जोग मिलियां थी खांड गुळादिक अधिको लेवे तो अटकाव नहीं।

आचार्य कन साधु-साध्वी शेष काल अथवा चोमासो रहै, त्यां रे विगै पांच नै सुंखरीयादिक री मर्यादा नै सूंस नहीं छै।

साध-साधवी घणा हुवै थोड़ा हुवै कदेइ आहार थोड़ो आवै कदै घणो। तिण रो तो आचार्य अवसर देख लेसी, त्यांरो कोइ बीजा साध नाम लेण पावै नहीं।

८ आगन्या बिना शेखे काल चौमासे रहै तिण रे जितरा दिन रहै जितरा दिन पांचूइ विगै न सुंखड़ी रा त्याग छै। ए सूंस जाव-जीव तांड छै।

९ कोइ टोळा मां सूं टळै अथवा वारै काढै तो पिण ए सूंस जावजीव रा छै। यूं कहिणो नहीं—“म्हारै तो यां भेळा थकां सूंस था, पछै म्हारै सूंस कोइ नहीं,” यूं कहिण रा त्याग छै।

१० कदाच कोइ लोळपी थको खावां रे वास्ते बारै नीकळै तिण रे पिण ए सूंस छै।

४५४ तैरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

सं० १८२९ रो लिखत

(अखेराम जी रो)

९. (पृष्ठ ४४ से संबंधित)

अखेराम जी रा टोळा मांहे आवण रा परिणाम साधपणो पाळण रा परिणाम दीठा, पिण अप्रतीत धणीं ऊपनी तिण सूं एतली परतीत पूरी उपजावै अनंता सिद्धारी साखे तो मांहे लेणे ॥

१. सभाव आपरो फेरणो

२. बडा रे छोदे चालणो।

३. आचार चोखो पाळणो। साधां रो आचार दीठाईज छै।

४. ए टोळा सूं न्यारा थांय तो च्यार आहार नां पचखांण करै तो मांहे ल्यां।

५. खूंचणो काढ नै अळगा ह्वैण रा पचखांण करै तो ल्यां।

६. साधां री इच्छा आवे तो संलेखणा संधारो करावै जद करणो, ना कहण रा पचखांण करै तो ल्यां।

७. सभाव में धेठापणों देखे अथवा अवनीतपणों देखे, अथवा साधां रे चित न बेसै, इत्यादिक अनेक बोल सूं छोड़े तो च्यार आहार मुख मांहे घालण रा पचखांण करै तो ल्यां।

८. टोळा मांहे पानां लिखे ते साधां रा।

९. साध साधवी श्रावक श्रावक—त्यां नै खूंचणो, दोष, हूंती अथवा अणहूंतो पेला नै भास जाए तो पेला रा कढ्या थी प्राछित लेणो, ना कहण रा पचखांण करै तो ल्यां।

१०. जिण साध साथै मेलियां तिण रा हुकम प्रमाण चालणों, आगन्या लोपणी नहीं।

११. जे कोइ साध साथे ले जावै घणो रजाबंध (करणो विश्वास) उपजै ज्यूं चालणो, अंस मात्र ओळंभो आवै ज्यूं न करणो। आ प्रतीत पूरी उपजावणी।

१२. आज पांचमां आरा मांहे भारीकर्मा जीव घणां छै, त्यां सूं पोते आचार न पळै, सभाव न फिरै, पळै कर्म उदै एहवी भाषा बोले, एकला वैण रा परिणाम हुवै तरै बोले—‘टोळा मांहे साधपणो दीसै नहीं, हूं किम मांहे रहूं,’ इम कही अनेक उपद्रव करै, अनेक अवर्णवाद बोले छै, तिम करण रा पचखांण करै तो ल्यां।

१३. मांहेमांहे सरधा में किण ही बोल रो फैर पड़े तो और बुधवंत साधां री परतीत सू मान लेणों, नां कहण रा पचखांण करै तो ल्यां।

१४. ए आचार पाळा छां, जिण सूं विरुद्ध चालणो नही, जे कोइ चूक में पड़े तो ओरां साधा नै कहिणो, पिण तांण कर नै तोरण रा त्याग करै तो ल्यां।

१५. ओरा साधां री इच्छा आवै ज्यूं करणो, पाछो ओरो उत्तर करवा रा त्याग करै तो ल्यां।

१६. अथवा एतावता टोळा सूं न्यारो होणो नहीं, एकलो अथवा दोयां तीनां आदि देइ नै पिण अलंगो वैणो नही, एहवा पचखांण करै तो ल्यां।

१७. सर्व शरीर साधां रे कारजपणे, पेला नै अणहुंता आप रा मन सूं ढीला जाणै तो च्यार तीन आहार त्याग करणो, पिण किण सूं मिल नै टोळा माहै भेद पाइ नै अळगो न हुणो, ए पचखांण करै तो ल्यां।

१८. सझाय तवन सूत्र बखाण रो कहै तो छती सकत ना कहण रा पचखांण करै तो ल्यां।

१९. अंसमात्र धेठापणो तुरंग खिण रंग खिण विरंग न करणो।

२०. इत्यादिक अनेक बोल बलै याद आवै तो बलै लिख लेणो, तेहनां नां कहवा रा पचखांण करै तो ल्यां एहवी पूरी परतीत उपजावै तो सगळां नै परतीत उपजै।

२१. संवत् १८२९ रा फागुण सुदी १२ वार बहस्पत लिख ऋतु भीखन गांव वूसी मध्ये।

२२. ए लिखत श्री थिरपाल जी फतेचंद जी हरनाथ जी भारमल जी तिलोकचंद जी नै पिण सुणायो छै।

२३. ए पाछै कछा लिख्या ते सगळाइ बोल अखेराम सुण नै अंगीकार कीधा।

२४. चारित संघाते पचखांण कर नै साधां नै परतीत उपजाई। ऊपर लिख्यो सही। लिखत अखेराम।

सं० १८३३ रो लिखत

(आर्या फतूजी आदि रो)

१०. (पृष्ठ ४७ से संबंधित)

आर्या फतूजी आदि च्यारूं जणीयां नै दिख्या दीधां पैहली सीखामण आचार-गोचर बतावण री विध लिखिये छै। ते चारित्र संघाते त्याग।

१. उभी नै कीड़ी न सूझे जद संलेखणा मंडणो।
२. विहार करण री सगत नही, जद संलेखणा मंडणो।
३. आर्या रो विजोग पड़्यां न कल्पे जद संलेखणा मंडणो।
४. साध कहै जठे चोमासो करणो।
५. साध कहै जठै सेखा काळ रहिणो।
६. चेली करणी ते साधां रा कह्या सूं करणी आज्ञा बिना करणी नही।
७. शिष्यणी कीधां पछे पिण कोइ साधपणा लायक न हुवे साधां रे चित्त न वेसै तो साधां रा कह्या सूं दूर करणी।

८. साधां री इच्छा आवै जुदो विहार करावण री ओर आर्या साथै जुदी मेले तो ना कहिणो नही।

९. साध-साधवियां रो कोइ खूचणो दोष प्रकृतादिक रो ओगुण हुवै तो गुरां नै कहिणो पिण ग्रहस्थादिक आगै कहिणो नही।

१०. आहारपाणी कपड़ादिक में साधां नै लोळपणां नी संका उपजै तो साधां नै परतीत उपजै ज्युं करणो।

११. अमल तम्बाखू आदि रोगादिक रे कारण पड़्यां लेणो पिण विस्न रूप लेणो नहीं लीयांइज सझै ज्युं करणो नही।

१२. बलै सर्व साध-साधवियां ने आचार-गोचार मांहै ढीळा पड़ता देखे अथवा संका पड़ती जाणै जद समचै सर्व साध-साधवियां री करली मर्यादा बांधै तो पिण नां कहिणो नही। इत्यादिक सीखामण चारित्र संघाते अंगीकार कर लेणी ते जाव-जीव रा पचखांण छै।

१३. संवत १८३३ मिंगसर विद २ वार बुध ए लिखत बंचाय अंगीकार करायो नै सामायक चारित्र अंगीकार करियो छै। बलै फैर छेदोपस्थापनी चारित्र दीधो जद पिण लिखत नै अंगीकार कीधो छै हरष सूं च्यार इ आर्या।

गणपति सिखावण

११. (पृष्ठ ६१ टिप्पण ३ से संबंधित)

मर्यादा पत्र

(परिषद् में वाचन के लिए आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्राचीन मर्यादा पत्र के आधार पर संगृहीत)

सर्व साधु-साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखण्ड आराधना करें। ईर्या, भाषा, एषणा में विशेष सावधान रहें। चलते समय बात न करें। सावद्य भाषा न बोलें। आहार पानी पूरी जांच करके लें। शुद्ध आहार भी दाता का अभिप्राय देखकर हठ-मनुहार से लें। वस्त्र-पात्र आदि लेते व रखते समय तथा 'पूजने' व 'परठने' में पूर्ण सावधानी बरतें, प्रतिलेखन व प्रतिक्रमण करते हुए बात न करें।

भिक्षु स्वामी ने सूत्र सिद्धान्त देखकर सम्यक् श्रद्धा और आचार की प्ररूपणा की। त्याग धर्म, भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म, आज्ञा धर्म, अनाज्ञा अधर्म, असंयति के जीने की बांछा करना राग, मरने की बाच्छा करना द्वेष और संसार समुद्र से उस के तरने की बाच्छा करना वीतराग देव का धर्म है।

भिक्षु स्वामी ने न्याय, संविभाग और समभाव की वृद्धि के लिए तथा पारस्परिक प्रेम, कलह-निवारण और संघ की सुव्यवस्था के लिए अनेक प्रकार की मर्यादाएं की उन्होंने लिखा—

१ सर्व साधु साध्वियां एक आचार्य को आज्ञा में रहें।

२ विहार, चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।

३ अपना-अपना शिष्य (शिष्याएं) न बनाएं।

४ आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।

५ आचार्य अपने गुरु, भाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।

गण की एकता के लिए यह आवश्यक है कि उसके साधु-साध्वियों में सिद्धान्त या प्ररूपणा का कोई मत भेद न हो। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने कहा है—“कोई सरधा, आचार, कल्प या सूत्र का कोई विषय अपनी समझ में न आए अथवा कोई नया प्रश्न उठे वह आचार्य व बहुश्रुत से चर्चा जाए, किन्तु दूसरों से चर्च कर उन्हें शंकाशील न बनाया जाये। आचार्य व बहुश्रुत साधु जो उत्तर दे, वह अपने मन में जचे तो मान ले, न जचे तो उसे 'केवली' गम्य कर दें, किन्तु गण में भेद न डालें, परस्पर दलबन्दी न करें।”

गण की अखण्डता के लिए यह आवश्यक है कि कोई साधु-साध्वी आपस में दल

बन्दी न करें। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने पैतालिस के लिखत में कहा है “ जो गण में रहते हुए साधु-साध्वियों को फंटाकर दलबन्दी करता है, वह विश्वासघाती और बहुलकर्मी है। स्वामी जी ने स्थान-स्थान पर दल बन्दी पर प्रहार किया है। पचास के लिखत में उन्होंने लिखा है—“कोई साधु साध्वी गण में भेद न डाले और दलबन्दी न करे।” स्वामी जी ने चन्द्रभाणजी और तिलोकचन्द जी को इसलिए गण से अलग किया कि वे जो साधु-आचार्य से सम्मुख थे, उन्हें विमुख करते थे। छिपे-छिपे गण के साधु साध्वियों को फोड़-फोड़ कर अपना बना रहे थे, दल बन्दी कर रहे थे। हमारा यह प्रसिद्ध सूत्र है “जिल्लो ते संयम ने टिल्लो”। गण में भेद डालने वाले के लिए भगवान ने दसवें प्रायश्चित्त का विधान किया है। तथा भिक्षु स्वामी ने कहा—“जी गण के साधु-साध्वियों में साधु-पन सरधे, अपने आप में साधु-पन सरधे, वह गण में रहे। छल कपट पूर्वक गण में न रहे।” पचास के लिखत में उन्होंने कहा—“जिस का मन साक्षी दे, भली भांति साधुपन पलता जाने, गण में तथा आप में साधुपन मानें तो गण में रहे, किन्तु वंचनापूर्वक गण में रहने का त्याग है।

गण में जो साधु-साध्वियां हो, उन में परस्पर सौहार्द रहे। कोई परस्पर कलह न करे तथा उपशान्त कलह की उदीरणा न करे। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने कहा—“गण के किसी साधु-साध्वी के प्रति अनास्था उपजे, शंका उपजे वैसी बात करने का त्याग है। किसी में दोष देखे तो तत्काल उसे जता दे तथा आचार्य को जता दे किन्तु उस का प्रचार न करें। दोषों को चुन-चुन कर इकट्ठा न करें। जो जान पड़े उसे अवसर देख कर तुरंत जता दे। वह प्रायश्चित्त का भागी है जो बहुत समय बाद दोष बताए। विनीत अविनीत की चौपाई में उन्होंने कहा है—

“दोष देखे किण ही साध में, तो कह देणों तिण नैं एकन्त।

जो मानैं नहीं तो कहणों गुरू कने, ते श्रावक छै बुद्धिवन्त॥

सुविनीत श्रावक एहवा ॥१॥

प्राश्चित दराय नैं सुद्ध करै, पिण न कहै अवरां पास।

ते श्रावक गिरवा गम्भीर छै, वीर बखाण्यां तास॥

दोष रा धणी नैं तो कहे नही, उण रा गुरू नैं पिण न कहै जाय।

और लोकां आगै बकतो फिरै, तिणरी प्रतीत किण विध आय॥

अविनीत श्रावक एहवा ॥३॥

तथा किसी साधु-साध्वी को जाति आदि को लेकर ओछी जबान न कहे। आपस में मन मुटाव हो, वैसा शब्द न बोले, एक दूसरे में सन्देह उत्पन्न न करे।

तथा गण और गणी की गुण रूप वार्ता करे। कोई गण तथा गणी की उतरती बात करे, उसे टोक दे और वह जो कहे उसे आचार्य को जता दे। कोई उतरती बात करता है

और कोई उसे सुनता है, वह दोनों अविनीत है, विनीत वह होता है जो आज्ञा को सर्वोपरि माने—

जिन शासन में आज्ञा बड़ी, आ तो बांधी रे भगवंता पाळ।

सहु सज्जन असज्जन भेळा रहे, छान्दो रून्धे रे प्रभु वचन सम्भाळ॥

बुद्धिवन्ता एकल संगत न कीजिए।

छान्दो रून्ध्या विण संजम नीपजै, तो कुण चालै रे पर ही आज्ञा मांय।

सहु आप मते हुवै एकला, खिण भेळा रे खिण बिखर जाय।

भगवान ने कहा है—“चइज्ज देहं न हु धम्म सासणं” मुनि शरीर को छोड़ दे, किन्तु धर्म—शासन को न छोड़े। जयाचार्य ने उसे पुष्ट करते हुए लिखा है—

नन्दन वन भिक्षु गण में बसोरी, हे जी प्राण जाये तो पग म खिसौरी-१

गण मांहे ज्ञान-ध्यान शोभै री, हे जी दीपक मन्दिर मांहे जिसोरी-२

टाढोकर नों भणवो न शोभै री, हे जी नाक बिना ओ तो मुखड़ो जिसोरी-३

भाग्य बले भिक्षु गण पायोरी, हे जी रतन चिन्तामणी पिण न इसोरी-४

गण पति कोप्यां ही गाढा रहोरी, हे जी समचित शासण मांहे लसोरी-५

किन्तु कोई साधु-साध्वी क्रोधादिवश आज्ञा और अनुशासन का पालन नहीं कर सकने पर अथवा अन्य किसी कारण से गण से अलग हो जाये अथवा किसी को अलग किया जावे तो किसी साधु-साध्वी का मन भंग कर अपने साथ ले जाने का त्याग है। कोई जाना चाहे तो भी उसे साथ ले जाने का त्याग है। गण के साधु-साध्वियों की उतरती बात करने का त्याग है। अंशमात्र भी अवर्णवाद बोलने का त्याग है और छिपे-छिपे लोगों को शंकाशील बना गण के प्रति अनास्था उपजाने का त्याग है, तथा वस्त्र, पात्र, पुस्तक-पत्रे आदि गण के होते हैं, इसीलिए उन्हें अपने साथ ले जाने का त्याग है।

गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्तियों के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए, उसे स्पष्ट करते हुए भिक्षु स्वामी ने लिखा है—“गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्ति को साधु न सरधा जाये, चार तीर्थ में न गिना जाये, साधु मान वंदना न की जाये। श्रावक श्राविकाएं भी इन मर्यादाओं के पालन में सजग रहे।

भिक्षु स्वामी ने गण की सुव्यवस्था के लिए, मर्यादा की और उन्हें दीर्घ दृष्टि से देखा कि भविष्य में वर्तमान मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन आवश्यक हो सकता है, इसीलिए उन्होंने लिखा कि आगे जब कभी भी आचार्य आवश्यक समझे तो वे इन मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन करें और आवश्यक समझे तो कोई नई मर्यादा करें। पूर्व मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन हो अथवा नई मर्यादाओं का निर्माण हो, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।

सफल साधु वही होता है जो साधना में लीन रहे। निर्लेप रहने के लिए यह आवश्यक

है कि साधु-साध्वियां गृहस्थों के संग-परिचय में न फंसे। जयाचार्य ने लिखा है:-

- १ “थे तो चतुर सीखो सुध चरचा रे, थे तो परहर देवो परचा।
ए तो परचा आछा नांही, तूं तो समझ राख हिया मांहि॥
- २ परचो राखे ते नर भोळा, तिण रो जीव करे डाळा डोळा।
परचा स्यूं ओळंभो पावै, तिणरी क्यां ही शोभा नहीं थावे॥
- ३ परचा वाळो जो क्षेत्र भोळावै, तो मन रळियायत थावे।
परचा वाळे क्षेत्र नहीं मेलै, दो दाव कपट बहु खेलै॥
- ४ पछै आमण-दुमण थको जावे, पिण मन में तो बहु दुख पावे।
रात-दिवस जाये हिंजरतां, परचावाळां रो ध्यानज धरतां॥
- ५ एहवा परचा रा फळ जाणी, तिण ने परहरे उत्तम प्राणी।
जिणरे परचा रो पड़ियो सभावो, छूटण रो कठण उपायो॥
- ६ जबर समझ हुवै हिया मांहयो, तो उ तुरंत देवै छिटकायो।
तिण रे प्रीत औंरा स्यूं पूरी, गणपति स्यूं प्रीत अधूरी॥
- ७ परचावाळा साहमों नहीं जोवै, बले नयण वयण नहीं मोवै।
परचो छूटण रो एह उपायो, जय गणपति एम जणायो॥
- ८ परचा वाळा री भावना भावे, जाणै दरक्षण करवा कद आवै।
आयां देख हिये अति हरषे, जाणै जंवरी नग नै परखै।
- ९ उगणीसे वर्ष उगणीसे, मृगसर विद सातम दिवसे।
प्रथम मरजावा दिन सुखदायो, परचा नै जयजश ओलखायो॥

निद्रा, हास्य, विकथा, ये साधना के विघ्न हैं, इसलिए नींद को बहुमान न दें, हास्य और विकथा का वर्जन करें तथा ध्यान और स्वाध्याय के द्वारा आत्मा को भावित करें।

निहं च न बहुमन्नेज्जा, सप्पहासं विवज्जे।

मिहो कहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया॥

सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो, अपावभावस्स तवे रयस्स।

विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणो॥

महाव्रतों, समिति-गुप्तियों तथा गण की छोटी बड़ी सभी मर्यादाओं का सम्यग् पालन करने वाला मुनि आचार्य की आराधना करता है, श्रमणों की आराधना करता है, और सब लोगों की दृष्टि में वह पूज्य होता है। तथा जो उनका सम्यग् पालन नहीं करता, वह न आचार्य की आराधना करता है और न लोकों की दृष्टि में पूज्य होता है।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।

गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥

आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसो।

गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इसीलिए विनीत साधु-साध्वियां आज्ञा, मर्यादा, आचार्य, गण और धर्म की सम्यक् आराधना करें और धर्म-शासन की गौरव-वृद्धि करें।

आंण	सम्मं	आराहइस्सामि।
मेरं	सम्मं	पालस्सामि॥
आयरियं	सम्मं	आराहइस्सामि।
गणं	सम्मं	अणुगमिस्सामि।
धम्मं	न	कयावि जहिस्सामि॥
आणं	सरणं	गच्छामि।
मेरं	सरणं	गच्छामि॥
आयरियं	सरणं	गच्छामि॥
गणं	सरणं	गच्छामि।
धम्मं	सरणं	गच्छामि॥

लेखपत्र

मैं सविनय बध्वांजलि प्रार्थना करता हूँ कि श्री भिक्षु, भारीमाल आदि पूर्वज आचार्य तथा वर्तमान आचार्य श्री तुलसीगणी द्वारा रचित सर्व मर्यादाएं मुझे मान्य है। आजीवन उन्हें लोपने का त्याग है। आप संघ के प्राण हैं, श्रमण परम्परा के अधिनेता है, आप पर मुझे पूर्ण श्रद्धा है। आपकी आज्ञा में चलने वाले साधु-साध्वियों को भगवान महावीर के साधु-साध्वियों के समान शुद्ध साधु मानता हूँ। अपने आपको भी शुद्ध साधु मानता हूँ। आपकी आज्ञा लोपने वालों को संयम मार्ग के प्रतिकूल मानता हूँ।

- (१) मैं आपकी, आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूंगा।
- (२) प्रत्येक कार्य आपके आदेश पूर्वक करूंगा।
- (३) विहार चातुर्मास आदि आपके आदेशानुसार करूंगा।
- (४) शिष्य नहीं करूंगा।
- (५) दलबन्दी नहीं करूंगा।
- (६) आपके कार्य में हस्तक्षेप नहीं करूंगा।
- (७) आपके तथा साधु-साध्वियों के अंशमात्र भी अवर्णवाद नहीं बोलूंगा।
- (८) किसी भी साधु-साध्वी में दोष जान पड़े तो उसका अन्यत्र प्रचार किये बिना स्वयं उसे या आचार्य को जताऊंगा।
- (९) सिद्धान्त मर्यादा या परम्परा के किसी भी विवादास्पद विषय में आप द्वारा किये निर्णय को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करूंगा।
- (१०) गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्ति से संस्तव नहीं रखूंगा।
- (११) गण के पुस्तक पत्रों आदि पर अपना अधिकार नहीं करूंगा।
- (१२) पद के लिए उम्मीदवार नहीं बनूंगा।
- (१३) आप के उत्तराधिकारी की आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य करूंगा।

पांच पदों की साक्षी से मैं इन सबके उल्लंघन का प्रत्याख्यान करता हूँ। मैंने यह लेख-पत्र आत्मा-श्रद्धा व विवेकपूर्वक स्वीकार किया है। संकोच, आवेश या प्रभाववश नहीं।

स्वीकर्ता

संवत् मास तिथि

टहुका

शेख अब्दुल मुफ्त रो साथी

१३ (पृष्ठ १६१ से संबंधित)

एक शहर के बाहर धर्मशाला के पास कुछ भटियारिनें रहती थीं। राहगीर उनसे भोजन पकवाते थे। वहां पर शेख अब्दुल नामक मुफ्तखोर रहता था। ज्यों ही यात्री भटियारिनों से रसोई बनवा कर भोजन के लिए बैठते त्यों ही वह बिना बुलाये जा धमकता और भोजन को चट कर जाता। यात्रियों के बचा खुचा हाथ आता। अच्छे गहने कपड़े देखकर उसे कोई कहने का भी साहस नहीं करता था। यह उसका रोज का धन्धा था। इस कारण वह 'शेख अब्दुल मुफ्त' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भटियारिनें यात्रियों को पहले से ही जता कर एक व्यक्ति का अधिक भोजन बनवाने के लिए कह देती थीं।

एक दिन एक पठान आया। भटियारिनों ने जब शेख के लिए भोजन बनाने का पूछा—तो उसने कहा—वह मेरे क्या लगता है? अगर जबरदस्ती करेगा तो मैं उसे देख लूंगा। तुम भोजन परोसो। सुरक्षा के लिए पास में अपने नये जूते रखकर बैठ गया।

इधर दिन भर का भूखा शेख चक्कर लगा ही रहा था ज्यों ही भोजन की थाली आई कि उचक कर आ बैठा और दबादब भोजन करने लगा। क्रोधित पठान ने आव देखा न ताव जूते हाथ में लेकर मरम्मत करनी शुरू कर दी। पर शेख को तो इसकी परवाह ही नहीं थी। पूरा भोजन करके हाथ धोते हुए बोला—आज तबियत खुश भोजन हुआ है। पठान—यह कैसे? शेख—मैं बचपन में भोजन नहीं करता तब मुझे मेरे माता पिता जूते मार-मार कर भोजन करवाते थे। आपने आज मुझे वैसा ही भोजन करवाया। यह सुनकर, पठान ने सोचा—यह तो महा निर्लज्ज है, और दूसरा आटा मंगवा कर रोटियां बना कर खाई।

—००—

रूपचंदजी अखेरामजी द्वारा आचार्य भिक्षु में निकाले गये
दोषों की विगत :-

- १ रज्जूहरण सूं माखी उडावणी नहीं।
- २ सूर्य उगां विण पड़िलेहण करणी नहीं।
- ३ पांणी मोरो चुकावणो नहीं।
- ४ गोचरी नीकळ्या पछै ठिकाणे आंयां पेहिलां कठेइ वैसणो नहीं।
- ५ बायां ने थानक में बेसण देणी नहीं।
- ६ बायां सू चरचा बात करणी नहीं।
- ७ बायां साहो जोवणो नहीं।
- ८ बायां नै वैसाणे ते आछो खावा रे अर्थे।
- ९ आर्यां ने थानक में बेसाणणी नहीं।
- १० आर्यां सूं चरचा बात करणी नहीं।
- ११ आर्यां ने सूतर री वाचणी देणी नहीं।
- १२ आर्यां साहो जोवणो नहीं।
- १३ कारण विना आर्यां नें आहार देणो नहीं।
- १४ वैतकल्प में जाबक आर्यां ने साधा रे थानक वरज्या छै १७ बोल।
इम साधु नें पिण १७ बोल आर्यां रै थानक वरज्या।
- १५ रात री आर्यां नें नेरी उतारे।
- १६ रात री बायां नें थानक में बैसारे नाथदुवारे।
- १७ गृहस्थ साथे विहार करै।
- १८ गृहस्थ साथे गोचरी जाए।
- १९ गृहस्थ जागां जोवै।
- २० गृहस्थ आय ने जागां बतावै।
- २१ गृहस्थ आय ने कहै अमकडियै घर अनादिक छै।
- २२ रोगिया नें नितपिंड न लेणो।
- २३ खेतसीजी रे आथण रा तीन च्यार दिस दाल नें जाता।
- २४ रोगी रै वासते आण्यो ते वधै तो बीजां नै खाणो नहीं।

- २५ छते पाणी रोगिया रे खातर नितपिंड ल्यावै।
- २६ इंदरगढ़ रो थानक असुध भोगव्यो।
- २७ पातरा रंगणा नहीं।
- २८ रोगान लगावणो नहीं।
- २९ सुगंध रो दुगंध करणो नहीं।
- ३० सुवर्ण रो दुवर्ण करणो नहीं।
- ३१ हींगलू धोवणो नहीं।
- ३२ आर्या नें मेली पछेवरी देणी नहीं।
- ३३ काली धारी वालो लूँकार राखणो नहीं।
- ३४ पडला रे बदले कपड़ो राखे।
- ३५ स्याही उधाड़ी सुकावै।
- ३६ सुधिया पडिलेहण करै।
- ३७ सुधिया पड़िकमणौ करै।
- ३८ पड़िलेहण करै जठा ताँइ जाबक बोलणो नही।
- ३९ गोचरी सूं आयां पछै सझाय करणी।
- ४० पोहर-२ री च्यार काल री सझाय करणी।
- ४१ पोहर सूं इधिकी नींद लेणी नहीं इधिकी लेवे तो अठारै पाप रो सेवणहार छै।
माठा-माठा सुपना आवै पांच वैरी जागै छै।
- ४२ सझाय बिना यूँही बेठो रहै तिण रा जोग सावज्ज छै। माठी लेस्या नें माठो
ध्यान छै। इत्यादिक चारित रो धको छै।
- ४३ कारण पड़ियां नित आहार पांणीयादिक आणै तो छ काय रो मारण हार छै।
- ४४ खंडिया धोवण नें नित पाणी ल्यावै।
- ४५ स्याही रै खातर पाणी ल्यावे वधै ते पीयै ते नित (नितपिंड)
- ४६ आंथण रो पाणी घणो-२ पीयै।
- ४७ आथण रो पांणी घणो परठै।
- ४८ आथण रो पाणी मोरो चुकावै।
- ४९ सरस आहार घणौ करै।
- ५० पातरो कपड़ो कारण पड़ियां पिण दोढ मास सूं इधिको राखणो नहीं।
- ५१ कोइ नवो दिख्या ले तिणरै वास्ते पिण न राखणो।
- ५२ नव चोकीयां जोवा गया।
- ५३ एक एक रा आंगुण दूजा आगे बोलै।
- ५४ केलूरी जायगां में चौमासो करै।

- ५५ दिख्या ले तिण रो रोगांन हींगलू बधै तो लेणो नहीं, इधिको लवै छै।
 ५६ जिण में जाणपणो थोड़ो तिण ने दिख्या दै।
 ५७ अजोग ने दिख्या दे छै, सुरतो, विगतो।
 ५८ धारवा जोग कपड़ो परठै।
 ५९ बे लंकार जैपुर मांहे परठ्या।
 ६० उपगरण बिखरीया राखै।
 ६१ थान आखौ राखै।
 ६२ विना फास्यां राखै।
 ६३ चिलमिलि राखै।
 ६४ पाणी ठारै।
 ६५ ऊंची जाण्ण रहै।
 ६६ सेज्यातर भोगवै।
 ६७ दोय रोटी परूपै।
 ६८ दोय वार दिसां जायै।
 ६९ टोळा रा आया छै ए।
 ७० काना फार-२ दिया।
 ७१ तीन पाव सपी खाए।
 ७२ वायरा में चालै।
 ७३ कसूंबल कपड़ो धोयो।
 ७४ आर्या बेठां मात्रो करै।
 ७५ गेले खेतसी जी सूए।
 ७६ माथो ढांक नें चालै।
 ७७ भारी पाट उपारै।
 ७८ पुर मांहे परठै जठै।
 ७९ शरीर न पूंजै।
 ८० वीयावच घणी करावै।
 ८१ राजनगर रा मैल जोया।
 ८२ दूजी वार धोवण ल्यावै।
 ८३ कवाड़ी रो आहार लै।
 ८४ विना पूज्या उटीगण लै।
 ८५ विना पूंज्यां खाज खणै।
 ८६ सेवडी उतारै, भारमल।

- ८७ सुतर अडड बडड छै।
 ८८ मेह बरसतो रद्यां तुरत उठे।
 ८९ फुहरा(परठै)
 ९० गुठली आंबा री आंबली री परठै।
 ९१ पड़िकमणो आछी तरै करै नहीं।
 ९२ आमना जणावै समाचार री।
 ९३ अंजणा प्रमुख निषेधता ते कहै।
 ९४ रामचरित निषेधता ते जोवै छै।
 ९५ किण हीने प्राछित थोड़ो दै किण नें घणो।
 ९६ घणा साध साधवी भेळा रहै।
 ९७ चिणा रा होळा नै सेक्या मकिया रा कण लै।
 ९८ नाथदुवारा रो आहार मासखमण रद्या पछै खाधौ।
 ९९ गोधूदा में ओषद रो लकरी वासी राखी।
 १०० चालतां बोलै।
 १०१ आधाकर्मी पांणी वैहरे कंवरजी प्रमुख रे।
 १०२ पाछली रात रा पग मात्रा सूं छोटै चोपडै।
 १०३ डावडो पड़ेला आमना जणाइ खेतसीजी।
 १०४ गृहस्थ री हाट माहै उपगरण पात्र मेल्या पुर माहै।
 १०५ हाट में उतरे कुणका उठावै।
 १०६ लिखत करावणौ नही।
 १०७ कोठार्या में पाणी रा ठांव मांहे चव्यो तिहां राते रद्या।
 १०८ पाणी रो ठाम खाली आफणी उरो ले ने मेलणो ठैहरायौ।
 १०९ कपड़ो विना पडिलेद्या न वैहरणो।
 ११० कपड़ो रात रो ओढ़णो जब पूंजणो।
 १११ विना जोयां हाथ घालणो नही।
 ११२ आर्या रे कपड़ो कढ्यो ज्यूं पनो राखणो इत्यादिक घणा कह्या।
 ११३ खजूर वैहर्या।
 ११४ रंगा चंगा नै डीळां सनूरा रहै।
 ११५ घी री मरजादा नही।
 ११६ आहार किती बार री मरजादा नहीं।
 ११७ आहार ने घी सूं चूरे तो सवाद आवै।
 ११८ कोरी रोटी न भावे तो तरकारी ल्यावै।

- ११९ दूध सूं रोटी मसलणी नहीं।
 १२० किवाड़ जड़े जठै रहै।
 १२१ बोता जयणा नहीं करै।
 १२२ धानक में कुणका उठावै।
 १२३ देव गांम में आर न ल्याया पिण मन में तो भाव।
 १२४ दोय साधां ने न रहिणो चौमासा माहै।
 १२५ तीन आर्यां ने न रहिणो चोमासा माहै।
 १२६ आर्यां ने आडो न जड़णो कवाड़।
 १२७ आथण रा उचार पासवण री तीन जांगा जोवणी।
 १२८ आहार करै तरै जगा जोवणी।
 १२९ विना वचायां सुतर वाचै।
 १३० नसीत वाच्यां विना चौमासो करै।
 १३१ सुतर अनुक्रमै वाचणा।
 १३२ जोरी दावै हाथ जोड़ावै।
 १३३ आर्यां रे गुरणी नही।
 १३४ गाम में धोवण पाणी बहिर नें विहार कीधो पाछो आवै तो त्यांरो बेहरणो नहीं।
 १३५ ईर्यां जोवतो बहरावण आयो पाछो जातो अजणा करे तो बहिरणो नहीं।
 १३६ सुखजी आश्री रूपचंद सोगांणी निषेध्या।
 १३७ भारमल जी ने नषेध्या बायां आश्री।
 १३८ भारमल जी ने वेणोजी नेडा बैठा त्यां निषेध्या नेणवा माहै।
 १३९ लाडीजी न अजोग दिष्टंत सीखाया।
 १४० माधोपुर में पाणी री जोड़ कीधी।
 १४१ गुजरमल फेर ब्रत भांग्या।
 १४२ रोछाड में आहार कीधो छांटां आइ।
 १४३ कोठारिया री नदी रो पांणी धोवण दाखल कइयो।
 १४४ विरधमानजी रूपचंदजी री लोकां में घणी आसता उतारी लोगां आगै।
 १४५ दिख्या दीधी तरे ओर पछे ओर।
 १४६ बोल घणा पूछां तो कोइ जाब न देअठी उठी उतार दै।
 १४७ बोल पूछां तरे खेध धणी करता।
 १४८ कांकरोली में कुणका उठावण री चरचा कीधी तरे घणो हुबो।
 १४९ पुर में आर्यां नें बोल पूछ्या जाब नाया।

- १५० बूंदी में मैणाजी नै परमाद आश्री चरचा पूछी जाब नाया।
- १५१ राबलियां में च्यार गावां रो आधाकर्मी ल्यावता।
- १५२ म्हने घणी चास पावता जको म्हारी आंख्या रो तेज हीण परयो।
- १५३ टोळा रा आर्या री परतीत कोई नहीं यूं कढ्यो।
- १५४ खेतसीजी रे आहार थोरो तेवरावै म्हने खबर नहीं, जिण सूं म्हे घणो तेवरां, कपटाइ कर-कर दूध घणौ पावै, चोखो आहार वधै ते मनैभावै नहीं, तरै खेतसीजी नें देता। पछै म्हे पिण यांरो कपट जाण ने बरोबर तेवरता।

प्रज्ञापुरुष जयाचार्य

छोटा कद, छरहरा बदन,
छोटे-छोटे हाथ-पांव, श्यामवर्ण, दीप्त
ललाट, ओजस्वी चेहरा--यह था जयाचार्य
का बाहरी व्यक्तित्व।

अप्रकंप संकल्प, सुदृढ़ निश्चय,
प्रज्ञा के आलोक से आलोकित अंतःकरण,
महामनस्वी, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, इष्ट के
प्रति सर्वात्मना समर्पित, स्वयं अनुशासित,
अनुशासन के सजग प्रहरी, संघ व्यवस्था में
निपुण, प्रबल तर्कबल और मनोबल से
संपन्न, सरस्वती के वरदपुत्र, ध्यान के
सूक्ष्म रहस्यों के मर्मज्ञ--यह था उनका
आंतरिक व्यक्तित्व।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक
आचार्य भिक्षु के वे अनन्य भक्त और उनके
कुशल भाष्यकार थे। उनकी ग्रहण-शक्ति
और मेधा बहुत प्रबल थी। उन्होंने तेरापंथ
की व्यवस्थाओं में परिवर्तन किया और
धर्मसंघ को नया रूप देकर विकास का
दीर्घायु बना दिया।

जयाचार्य ने राजस्थानी भाषा में
साढ़े तीन लाख श्लोक प्रमाण साहित्य
लिखा। साहित्य की अनेक विधाओं में
उनकी लेखनी चली। उन्होंने भगवती जैसे
महान् आगम ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में
पद्यमय अनुवाद प्रस्तुत किया। उसमें ५०१
गीतिका है। उसका ग्रंथमान है--साठ हजार
पद्य प्रमाण।

• जन्म—वि.सं. १८६०, रोयट (पाली मारवाड़)

• दीक्षा—वि.सं. १८६६ जयपुर

• युवाचार्य पद—वि.सं. १८६४, नाथद्वारा

• आचार्य पद—वि.सं. १९०८, बीदासर

• निर्वाण—वि.सं. १९३८, जयपुर



भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी समारोह के निर्दिष्ट पांच अवदान सूत्र

- अनुशासन की चेतना का जागरण
- सहिष्णुता की चेतना का जागरण
- सामुदायिक चेतना का जागरण
- साधन शुद्धि के प्रति ध्यानाकर्षण
- सार्वभौम धर्म का व्यापक प्रसार



जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.)